

Anexture - 1**शारीर रचना –**

सांख्य नुसार सूक्ष्म शारीर तत्व –18 –पंचज्ञानेंद्रिय, पंचकर्मेंद्रिय, पंचतन्मात्रा, मन बुधी अहंकार

प्रमाण शारीर –

सुश्रुत- दोषधातुमलानां परिमाणं न विदयते ।

चरक व वाग्भटानुसार-

मज्जा मेदो वसा मूत्र पित्त इलेष्य शकृन्ति असृक् ।

रसो जलं च देहे अस्मिन एकैक अण्जलि वर्धितम् ॥ अ.हु. शा 3/

धातुनाम	अंजली प्रमाण	धातुनाम	अंजली प्रमाण
जल	10	वसा	3
रस	9	मेद	2
रक्त	8	स्तन्य	2
पुरीष	7	मज्जा	1
कफ	6	मस्तिष्क	1/2
पित्त	5	शुक्र	1/2
मूत्र	4	अपर ओज	1/2
आर्तव	4	पर ओज	अष्टबिंदु –(चक्र) षडबिंदु(अ.दत्त)

काश्यपानुसार ओज का प्रमाण कफ के अनुसार है = 6 अंजली

डल्हण – अपर ओज प्रमाण = 1 अंजली व वाग्भट 1 प्रसृत मानते हैं ।

शरीरवृद्धीकर भाव- 4

बलवृद्धीकर भाव- 13

आहारपरीणामकर भाव – 6

जात्यादी प्रकृति – 6

मानस प्रकृति – 16

भौतिक प्रकृति – 5

प्रत्यंग – चरक – 56

अस्थी संख्या -1) चरक व वेदानुसार- 360

2) सुश्रुत- 300 (शाखा –120, मध्य शारीर –117., ग्रीवोर्ध्व –63)

3) आधुनिक- 210

4) शारंगधर व भावप्रकाश- 300

5) काश्यप – 360

संधि – चरक –200 सुश्रुत –210 काश्यप- 381

सुश्रुतानुसार 210 विभाजन – शाखा – 68 कोष्ठ –59 जन्मुर्ध्व –83

संख्या- 900

- 1) शाखा- 600 (एक शाखा में 150 इस प्रकार $150 \times 4 = 600$)
- 2) कोष्ठगत- 230 (कटी-60, पृष्ठ-80, पार्श्व-60, उर्द्ध- 30)
- 3) उर्ध्वजनुगत- 70 (ग्रीव-36, मूर्धा - 34)

पेशी - संख्या- सुश्रुत-500 चरक-400 आधुनिक-519

- पेशी विभाजन -
- 1) शाखागत- 400
 - 2) कोष्ठगत- 66
 - 3) उर्ध्वजनुगत- 34

स्त्रीयों में पुरुषों की अपेक्षा 20 पेशीया अधिक होती है

- 1) उभय स्तनों में (5+5) =10
- 2) अपत्यपथ में - 4 (आभ्यंतरः 2 और बाह्यतः मुखाश्रीत -2)
- 3) गर्भचिद्रसंश्रित - 3
- 4) शक्रार्तव प्रवेशीनी स्थाने - 3

स्नायु - चरक - 900 सुश्रुत - 900 (शाखा $150 \times 4 = 600$, मध्य शरीर -230, ग्रीवोर्ध्व -70)

मूल सिरा - 40 वातवह -10 पित्तवह- 10 कफवह - 10 रक्तवह - 10

एकुण सिरा - 700 (वातवह 175 + पित्तवह 175 + कफवह 175 + रक्तवह 175)

सक्षिय -100 + कोष्ठ 34 + जनुर्ध्व 41 = 175 इस प्रकार चारों का विभाजन

षडंगानुसार सिरा विभाजन



शाखा ($4 * 100 = 400$)

मध्य शरीर (कोष्ठ)-136

शिर व ग्रीवा (उर्ध्वजनु)-164

अवेद्य सिरा - 98

सुश्रुतानुसार दुर्वेद्य सिरा -20

- 1) शाखा - 16
- 2) कोष्ठ - 32
- 3) उर्ध्वजनुगत - 50

केश- 29956 रोम-3 1/2 करोड़ रोमकूप-(बाह्य व आभ्यंतर)- 2 लाख (काश्यपानुसर)

आंत्र दीर्घता -सुश्रुतानुसार 1) पुरुष-साडेतीन व्याम 2) स्त्रीयों में - तीन व्याम

कोष्ठांग - चरक - 15 काश्यप - 13 सुश्रुत -8 अष्टांगसंग्रह -8

आशय - सुश्रुत - 7 स्त्रीयों में - 8 काश्यप - 7

त्वचा भेद - चरक -6 सुश्रुत - 7

बहिर्मुख स्त्रोतस - सुश्रुत - 9. शारंधर - 10 (स्त्रीयों में 13) योगवाही स्त्रोतस - 11

महामर्म- काश्यप द्वारा वर्णन- -3

हृदय, बस्ती, मूर्धा

अष्टांगसंग्रहानुसार महामर्म- 7

मूर्धा, कंठ, जिह्वाबंधन, हृदय, बस्ती, नाभी , बस्ती, गुद

स्त्रोतस – मूल स्थान

स्त्रोतस	चरक	सुश्रुत
प्राणवह स्त्रोतस	हुदय व महास्त्रोतस	हुदय व रसवाही धमनीया
उदकवह स्त्रोतस	तालु क्लोम	तालु क्लोम
अन्नवह स्त्रोतस	आमाशय वामपाश्च	आमाशय अन्नवाही धमनीया
रसवह स्त्रोतस	हुदय व रसवाही धमनीया	हुदय व रसवाही धमनीया
रक्तवह स्त्रोतस	यकृत प्लीहा	यकृत प्लीहा रक्तवाही धमनीया
मांसवह स्त्रोतस	स्नायु व त्वचा	स्नायु त्वचा , रक्तवाही धमनीया
मेदोवह स्त्रोतस	वृक्कक व वपावहन	कटी व वृक्क
अस्थीवह स्त्रोतस	मेद व जघन	-
मज्जावह स्त्रोतस	अस्थी व संधी	-
शुक्रवह स्त्रोतस	वृष्ण व शोफ (मेढ़)	स्तन व वृष्ण
आर्तववह स्त्रोतस	-	गर्भाशय आर्तवाही धमनीया
मूत्रवह स्त्रोतस	बस्ती वंक्षण	बस्ती मेढ़
पुरीषवह स्त्रोतस	पक्वाशय स्थूलगुद	पक्वाशय गुद
स्वेदवह स्त्रोतस	मेद रोमकूप	-

रचनानुसार मर्म प्रकार

प्रकार	संख्या	मर्मनाम
मांसमर्म	11	तलहुदय (4), इन्द्रबस्ती(4), गुद (1), स्तनरोहीत (2)
सिरामर्म	41	नीला (2), मन्या (2). मातृका (8), शृंगाटक (4), अपांग (2), स्थपनी (1), पार्श्वसंधि(2) फणा (2), स्तनमूल (2), अपलाप (2), अपस्तंभ (2), हुदय (1), नाभी (1), बृहती (2) लोहिताक्ष (4), उर्वा- बाहवी (4)
स्नायुमर्म	27	आणि (4), विटप (2), कक्षधर (2), कूर्च (4), कूर्चशिर (4), बस्ती (1), क्षिप्र (4), अंस (2), विधुर (2), उत्क्षेप (2)
अस्थीमर्म	8	कटीकतरूण (2), नितम्ब (2), अंसफलक (2), शंख (2)
संधिमर्म	20	जानु (2), कूर्पर (2), सीमन्त (5), अधिपति (1), गुल्फ (2), मणिबंध (2), कुकुंदर (2), आवर्त (2), कृकाटिका (2).
धमनीमर्म	9	अपस्तंभ (2), शृंगाटक (4), विधुर (2), गुद (1)

परिणामानुसार मर्म प्रकार –

प्रकार	संख्या	मर्मनाम
सद्यप्राणहर	19	शृंगाटक (4), अधिपति (1), शंख (2) ,मातृका (8), गुद (1), हुदय (1), बस्ती (1), नाभी
कालान्तर प्राणहर	33	अपलाप (2), अपस्तंभ (2), स्तनरोहीत (2), स्तनमूल (2), सीमन्त (5), तलहुदय (4) क्षिप्र (4), इन्द्रबस्ती (4), कटीकतरूण (2), पार्श्वसंधि (2), बृहती (2), नितम्ब (2)
वैकल्यकर	44	लोहिताक्ष (4), आणि (4), जानु (2), उर्वा (4), विधुर (2), कृकाटिका (2), अंस (2) अंसफलक (2), कूर्च (4), विटप (2), कूर्पर (2), कुकुंदर (2), कक्षधर (2) अपांग (2) नीला (2), मन्या (2), फणा (2), आवर्त (2)
रूजाकर	8	गुल्फ (2), मणिबंध (2), कूर्चशिर (4).
विशल्यघ्न	3	उत्क्षेप स्थपनी

शरीर लंबाइ – चरक व अष्टांगसंग्रह – 84 अंगुल
सुश्रृत – 120 अंगुल वाग्भट – साडेतीन हस्त
क्लोम मतमतांतर –

- 1) फुफुस व ऊँडुक – गंगाधर
- 2) हुदय – चक्रपाणी
- 3) पित्ताशय – डल्हण
- 4) कंठनाडी व श्वासनाडी – गणनाथ सेन

सिराओं का मूल –

- 1) सुश्रृत – नाभी
- 2) वाग्भट – हुदय

Cranial nerves -

1) Olfactory	7) Facial
2) Optic	8) Vestibulocochlear (auditory)
3) Oculomotor	9) Glossopharyngeal
4) Trochlear	10) Vagus
5) Trigeminal	11) Accessory
6) Abducent	12) Hypoglossal

Largest cranial nerve – 5th = Trigeminal

Thickest nerve of the body - Sciatic nerve (L4,5 S1, S2, S3)

Thickest cranial nerve of the body -- 5th (Trigeminal)

Thinnest cranial nerve – 4th (Trochlear)

Pharyngeal reflex through – 10th cranial nerve

Palatal reflex through – 5th and 10th cranial nerve.

In Herpes Zoster – involvement of 5th cranial nerve.

In polio – involvement of - 6th cranial nerve.

In meningitis - involvement of 8th cranial nerve.

Types of nerves –

- 1) Sensory nerves (3) – 1st, 2nd and 8th
- 2) Motor nerves (5) - 3rd, 4th, 6th, 11th, and 12th
- 3) Mixed nerves (4) - 5th, 7th, 9th, 10th

Femoral nerve (L2,3,4) – largest branch of lumbar plexus.

Sleeping foot – compression of sciatic nerve against femur

Coronary Bypass surgery – use of great saphenous vein.

Femoral vein – IV infusion in infants

Pressures	In mm of Hg
1) Superior vena cava	0 – 6
2) Right atrium	0 – 6
3) Right ventricle	25/ 0- 6
4) Pulmonary artery	25/10
5) Left atrium	6 – 10
6) Left ventricle	80 – 120 / 5 – 10
7) systemic arterial pressure	80 – 120 / 60 – 85

8) Pulmonary arterial wedge pressure	Pressure is indirect on left atrial
9) jugular venous pressure	Not more than 2 – 3 cm
10) CSF pressure	50 – 150
11) Portal venous pressure	8 – 12
12) Intra ocular pressure	10 – 20

Main Glands –

1) Moll's gland	Modified sweat gland at the edge of the eyelid
2) Zeis's gland	Differentiated sebaceous follicles in the eyelashes
3) Meibomian gland	Tarsal plate
4) Krause's gland	Accessory lacrimal gland
5) Bartholins gland	Present in Labia majora
6) Cowper's gland	Present in bulbous part of urethra
7) Montgomery's gland	In the areola of the breast
8) Brunner's gland	In the duodenum

Main muscles

1) Muscle of smiling/ laughter	Zygomaticus major
2) Muscle of grief	Depressor angularis
3) Longest muscle	Sartorius
4) Smallest muscle	Stapedius
5) Climbing muscle	Lattismus dorsi
6) Locking muscle	Popliteus
7) Boxer's muscle	Seratus anterior
8) Muscle of anger	Dilator naris and depressor septi
9) Muscle of horror / terror	Platysma
10) Muscle of surprise	Frontalis
11) Muscle of doubt	Mentalis
12) Muscle of grinning	Risorius
13) Locking muscle	Quadratus femoris
14) unlocking muscle	Popliteus
15) Longest muscle in the body	Sartorius
16) Strongest muscle in the body	Quadriceps femoris

Soft organs size and weight

Organ name	Size/length	Weight
1) Larynx	L – male 4.40cm Female – 3.6 cm	
2) Trachea	L – 10 – 11 cm Diameter – male 20cm Female – 15 cm	
3) Lung		Right -620 left – 570
4) Pharynx	L – 12- 14 cm	
5) Oesophagus	L – 25 cm	
6) Stomach	L – 10inch	
7) Thoracic duct	L – 18 inch	
8) Small intestine	L – 6 meter	
9) Large intestine	L – 1.5 meter	
10) Vittilo intestinal duct	L – 2 inch	

11) Inguinal canal	L - 4 cm	
12) Duodenum	L - 20- 25 cm	
13) Appendix	L - 10 – 20 cm av- 9 cm	
14) Mekel's diverticulum	L - 5 cm	
15) Caecum	L - 6 cm	
16) Ascending colon	L - 5 inch	
17) Transverse colon	L - 20 inch	
18) Descending colon	L - 10inch	
19) Sigmoid colon	L - 15 inch	
20) Rectum	L - 15 cm	
21) Anal canal	L - 4 cm	
22) Pancreas	15x3x2	Wt – 90gms
23) Liver	L - 20 cm	Male – 1.5 gm F – 1.250gm Infant – 1/25 X body wt Adult – 1/50 X body wt
24) Gall bladder	L – 10cm B – 3 cm	
25) common bile duct	L – 10cm	
26) Spleen	12X7x 3.4 cm (5x3x1 inch)	Wt – 150gms
27) Kidney	12x6x3	Wt – rt -150gms Lt – 135 gms
28) ureters	L – 250 m, diameter – 3mm	
29) Urethra	L – M -15 to 20cm Female – 4 cm	
30) proststic urethra	L – 4 cm	
31) Memberanus urethra	L – 2 cm	
32) Testes	4x3x2 cm	15 gm
33) prostste gland	3x4x2	10- 15 gm
34) Epidydarnis	L – 7 cm	
35) Ductus deference	L – 45 cm	
36) seminal vesicle	L – 2 inch	
37) Ejaculatory duct	L – 2 cm	
38) Ovary	3x1.5X 1 cm	
39) Fillopian tube	L – 10cm	
40) Uterus	7.5 X 5 X 2.5	50 gms pregnant – 900 gm
41) cervical canal	L – 2.5 cm	
42) vagina	Anterior wall – 3 inches Posterior wall – 4,inches	
43) Heart		M- 300 F – 250 gm
44) pituitary gland	8x12x6 mm	500 mg
45) Thyroid gland	5x2.5x2.5	25 gms
46) parathyroid gland	6x4x2 mm	3-4 gms
47) thymus gland		Adult – 10gm At birth – 10-15gm At puberty – 30-40gms
48) supra renal gland	50x30x6 mm	
49) sub parotid gland	L- 5 cm	15 gm
50) sub lingual gland		3-4 gms
51sub mandibular gland	L – 5 cm	

शारीरक्रिया –

धातु – उपधातु

धातु	उपधातु	
	चरक	शारंगधर
रस	स्तन्य रज	स्तन्य
रक्त	सिरा कण्डरा	रज
मांस	वसा, षट त्वचा	वसा
मेद	स्नायु, संधि	स्वेद
अस्थी	-----	दंत
मज्जा	-----	केश
शुक्र	-----	ओज

ओज –

- 1) सर्व शरीर मे व्याप्त – सुश्रुत
- 2) हृदय मे स्थित – चरक व वाग्भट
- 3) ओज शुक्र का सार है -- अष्टांग संग्रह
- 4) ओज शुक्र का मल है – अष्टांग हृदय
- 5) ओज शुक्र का स्नेह है – डल्हण
- 6) ओज शुक्र की उपधातु है – शारंगधर
- 7) ओज के पर व अपर भेद – चक्रपाणी व अरुणदत्त द्वारा
- 8) ओज का पर्याय बल – सुश्रुत – व ओज व बल मे अंतर – डल्हण
- 9) ओज को पंचरसात्मक कहा है – काश्यप

धातु – मल

धातु	मल	
	चरक	शारंगधर
रस	कफ	जिहा नेत्र कपोल स्थान का जल
रक्त	पित्त	रंजक पित्त
मांस	ख मल	कर्णमल
मेद	स्वेद	रसना कक्षा दंत मेद्र स्थानातील मल
अस्थी	केश लोम	नख
मज्जा	अक्षि विट त्वक स्नेह	नेत्रमल
शुक्र	---, ओज (वाग्भट)	युवानपिटिका

Gland	Hormone	Function
Hypothalamus	Thyroprotein releasing hormone – TRH	Stimulates secretion of TSH And prolactin
Anterior pituitary	Growth hormone (GH)	Stimulates protein synthesis And overall growth of cells
	Thyroid stimulating hormone (TSH)	Stimulates synthesis and secretion of thyroid hormone.
	Adrenocorticotrophic hormone (ACTH)	Stimulates synthesis and Secretion of adrenal cortical Hormones (cortisol, androgen And aldosterone)
	Prolactin	Controls proliferation of mammary gland and initiation of milk.
	Follicle stimulating hormone (FSH)	Causes growth of follicles in the ovaries and sperm maturation in sertoli cells of Testes. (spermatogenesis)
	Luteinizing Hormone (LH) Interstitial cell stimulating hormone (ICSH)	On testis –stimulates testosterone synthesis in interstitial cells. On ovaries- stimulates Ovulation. Formation of corpus luteum, estrogen and progesterone synthesis.
Posterior pituitary	Antidiuretic hormone (ADH)/ Vasopressin	Increases water reabsorption By the kidneys and causes Vasoconstriction and Increased blood pressure.
	Oxytocin	Stimulates milk ejection from Breast and uterine contraction
Thyroid	Thyroxine (T_4) triiodothyronine (T_3)	Increases BMR
	Calcitonin	Promotes deposition of Calcium in the bones and decreases extracellular fluid Calcium ion concentration. Thus lowers calcium and Potassium levels.
Adrenal cortex	Cortisol	Has multiple metabolic functions for controlling metabolism of proteins, carbohydrates and fats; also anti-inflammatory effects.
	Aldosterone	Increases renal sodium reabsorption, potassium secretion and hydrogen ion

		secretion.
Adrenal medulla	Epinephrine	Vasodilation, mydriasis
	Norepinephrine (stress hormone)	Vasoconstrictor- increases BP, Heart rate and glucose from energy stores.
Pancreas	Insulin (B cells)	Promotes glucose entry in many cells and in this way controls carbohydrate metabolism.
	Glucagon (α cells)	Increases synthesis and release of glucose from the liver into the body fluids.
Parathyroid	Parathyroid hormone (parathormone)	Controls serum calcium conc.
Testes	Testosterone	Promotes development of male reproductive system and male SSC .
Ovaries	Estrogen	Promotes development of female reproductive system and SSC .
	Progesterone	Ovulation and role in thiniking the lining of uterus in each month.
Placenta	Human chorionic gonadotropin (HCG)	Promotes growth of corpus luteum and secretion of estrogen and progesterone by corpus luteum.
	Human somatomammotropin	Promotes development of some fetal tissues as well as mother's breasts.
Kidney	Renin (act as an enzyme)	Catalyzes conversion of angiotensinogen to angiotensin 1. Increases BP.
	1,25-Dihydroxycholecalciferol or 1,25-Dihydroxyvitamin D 3	Increases intestinal absorption of calcium and bone mineraliation.
	Erythropoietin	Increases erythropoietion production.
Heart	Atrial natriuretic peptide (ANP) – Release by myocytes in atrial wall	Increases sodium excretion by kidneys and reduces BP
Stomach	Gastrin	Stimulates HCL secretion by parietal cells.
Small intestine	Secretin	Stimulates pancreatic acinar cells to release bicarbonate and water.
	Cholecystokinin (CCK)	Stimulates gall bladder contraction and release of pancreatic enzymes.

Lung volumes – 4

- 1) Tidal volume (TV) - – 500 ml.
- 2) Inspiratory reserve volume (IRV) – – 3000 ml.
- 3) Expiratory reserve volume (ERV) – – 1100 ml.
- 4) Residual volume (RV) – 1200 ml.

Lung capacities - 4

- 1) Inspiratory capacity (IC) – TV (500) + IRV (3000) = 3500 ML
- 2) Functional residual capacity (FRC) – . ERV (1100) + RV (1200) = 2.3 Lit
- 3) Vital capacity (VC) – is the maximal volume of air which can be moved into and out of the lungs. $VC= TV(500) + IRV (3000) + ERV (1100) = 4600 \text{ ml} = 4.6 \text{ lit.}$
- 4) Total lung capacity (TLC) = TV +IRV+ERV+RV = $500+3000+1100+1200= 5800 \text{ ml}$

Cardiac cycle - Time of cardiac cycle – 0.8 sec.

- 1) Atrial systole – contraction of atria. Initiates the cardiac cycle and is 0.1 sec.
- 2) Atrial diastole – relaxation of atria. 0.7 sec.
- 3) Ventricular systole – 0.3 sec.

Isometric contraction – 0.05 sec
Rapid ejection (ejection period) – 0.11 sec.
Reduced ejection period – 0.14 sec.

- 4) Ventricular diastole – 0.5 sec.
 - Protodiastolic period - 0.04 sec.
 - Isometric relaxation – 0.08 sec.
 - First rapid filling phase – 0.113 sec
 - Diastasis or slow inflow phase – 0.167 sec
 - Last rapid inflow phase – 0.100

Stroke volume (SV) - Amount of blood pumped out by each ventricle at each beat. 70 ml.

Cardiac output / Minute volume – Stroke volume x heart rate = 5 liter /ventricle/min

- Pulse Rate** -
- | | |
|------------------|-------------------|
| In foetus | - 150 – 180 / min |
| At birth | - 130 -140 / min |
| At 10 yrs of age | - 90 / min |
| After puberty | - 72/min |

पदार्थविज्ञान –

इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष ज्ञान प्रकार – 6 (बाह्य)

- 1) संयोग सन्निकर्ष – चक्षुरिन्द्रिय से घट का प्रत्यक्ष ज्ञान (द्रव्यज्ञान)
- 2) संयुक्त समवाय सन्निकर्ष – घट के रूप का (वर्ण) ज्ञान (गुणज्ञान)
- 3) संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष – घट का रूपत्व इस जाती का ज्ञान (जातीज्ञान)
- 4) समवाय सन्निकर्ष – शब्द का प्रत्यक्ष ज्ञान श्रोत्रेंद्रिय को समवाय सन्निकर्ष से (शब्दज्ञान)
- 5) समवेत समवाय सन्निकर्ष – शब्द में शब्द की जाती का ज्ञान (शब्दजातीज्ञान)
- 6) विशेषण विशेष्याभाव – अभाव का ज्ञान (अभावज्ञान)

अर्थाश्रय – भटटारहरिश्चन्द्र – 21 अरुणदत्त – 20

तन्त्रदोष – चक्रपाणी – 14 अरुणदत्त – 15

व्याख्या – पंचदश (15)

तंत्रयुक्ती – चरक – 36

सुश्रुत – 32

वाग्भट – 36

भट्टारहरिश्चंद्र – 40

स्वस्थवृत्त –

धूमपान भेद – चरक – 3,

सुश्रुत – 5

शारंगधर – 6

प्रायोगिक धूमपान काल –

1) चरक – 8

वाग्भट – 8

सुश्रुत – 12

धूमनेत्र परिमाण –**चरकानुसार**

1) प्रायोगिक – 36 अंगुल

2) स्नैहिक – 32 अंगुल

3) वैरेचनिक – 24 अंगुल

सुश्रुतानुसार

48 अंगुल

32 अंगुल

24 अंगुल

कासघ्न – 16 अंगुल

वामक – 16 अंगुल

वाग्भटानुसार – 1) स्निग्ध – 32 अंगुल

2) मध्यम – 40 अंगुल

3) तीक्ष्ण – 24 अंगुल

व्रणधूपन नेत्र लंबाइ – सुश्रुत – 8 अंगुल

वाग्भट – 10 अंगुल

निदा प्रकार – 1) चरक – 6

सुश्रुत – 3

अष्टांगसंग्रह – 7

लंघन प्रकार – 10

शमन प्रकार – 7

अधारणीय वेग – चरक – 13 वाग्भट – 13

चरकोक उदगार के स्थान पर वाग्भट ने कास माना है

कालविभाग

सुश्रुतानुसार 11 विभाग	
1) लघु अक्षर उच्चारनमात्र काल	1 अक्षिनिमेष
2) 15 अक्षिनिमेष	1 काष्ठा
3) 30 काष्ठा	1 कला
4) 20 कला	1 मुहुर्त
5) 30 मुहुर्त	1 अहोरात्र
6) 15 अहोरात्र	1 पक्षा
7) 2 पक्षा	1 मास
8) 2 मास	1 ऋतु
9) 3 ऋतु	1 अयन
10) 2 अयन	1 संवत्सर (1 वर्ष)
11) 5 संवत्सर	1 युग

मधु भेद –

1) चरक – 4

भ्रामर पौत्रिक माक्षिक क्षोद्र

2) सुश्रुत – 8

चरकोक 4 + दाल आर्ध औद्यालक छात्र

ऋतु हरीतकी सेवन (भावप्रकाश)

सिंधुदृथ शर्करा शुंठी कणा मधु गुड़ेः ॠमात् । वर्षादिषु अभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥

ऋतु नाम	-	अनुपान	ऋतु नाम	-	अनुपान
वर्षा	-	सैंधव	शिशिर	-	कणा (पिप्पली)
शरद	-	शर्करा	वसंत	-	मधु
हेमंत	-	शुंठी	ग्रीष्म	-	गुड़

चरक – सौवीरांजन श्रेष्ठ – नित्य उपयोग

सुश्रुत – स्त्रोतोंजन श्रेष्ठ

चरकानुसार – रसांजन – स्त्रावणार्थ – पंचरात्रे वा अष्टरात्रे

ऋतुसंधी – संग्रह / वाग्भट – 14 दिन शारंगधर – 16 दिन

अंतरिक्ष जल गुण – 6 (चरक) प्रकार – 4 धार कार तौषार हेम

भोम जल प्रकार – वाग्भट – 8 सुश्रुत – 7

योग अंग –

1) पतंजलीनुसार – 8

2) घेरंड संहितानुसार – 7

1) बहिरंग योग – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार

2) अंतरंग योग – धारणा, ध्यान, समाधि

संयम – धारणा, ध्यान, समाधि

चरकानुसार योगी लोगो मे एश्वर्य – अष्टविधि

योगसिद्धीकर भाव – 6

योगशास्त्रानुसार प्राण प्रकार – 10

नाडीशुद्धी प्राणायाम – अनुपात 1:4:2

पूरक = 16 मात्रा

कुंभक = 64 मात्रा

रेचक = 32 मात्रा

प्राणायाम मात्रा – 1) प्रवर प्राणायाम – 20:80:40

2) मध्यम प्राणायाम – 16:64:32

3) अवर प्राणायाम – 12:48:21

षट्चक्र

चक्र	स्थान	महाभूत	देवता	वर्ण	दलसंख्या
मूलाधार	गुदसमीप	पृथ्वी	गणेश	रक्ताभ	4
स्वाधिष्ठान	लिंगोर्ध्व	आप	ब्रह्मा	अरुणाभ	6
मणिपूर	नाभी	तेज	विष्णु	नील	10
अनाहत	हृदय	वायु	शिव	सुवर्ण	12
विशुद्ध	कंठ	आकाश	रुद्र	चंद्रसमान	16
आज्ञा	भ्रूमध्य			रक्ताभ	02
सहस्राधार	मस्तिष्क		परब्रह्म		1000

1) हठयोगप्रदीपीका कर्ता – स्वात्माराम

मुद्रा – 12 महामुद्रा – 10 बंध – 3 उड़डीयान, जालंधर मूल

- 1) पंचयम – अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह
- 2) पंचनियम – शौच संतोष तप स्वाध्याय इश्वरप्रणिधान
- 3) पंचक्लेश – अविदया अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश
- 4) पंचचित्तवृत्ति – प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृति
- 5) पंचचित्ताभूमिका – क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र विरुद्ध (पंचचित्त अवस्था)

Daily requirement

Minerals	Daily requirement		
1) Calcium	400 – 500 mg		
2) Iron	Adult male – 0.9 mg	Adult females = Pregnancy First half – 0.8 mg second half – 3.5 mg Lactation – 2.4 mg	
3) Iodine	150 micrograms per day		
4) Fluorine	0.5 to 0.8 mg per liter. Fluorine content in drinking water – 0.5 mg/lit		

Hardness of water

Classification	Level of hardness (mEq/liter)
1) Soft water	Less than 1 (< 50mg/liter)
2) Moderately hard	1 – 3 (50 – 150 mg / liter)
3) Hard water	3 - 6 (150 – 300 mg / liter)
4) Very hard water	Over 6 (> 300 mg / liter)

Drinking should be moderately hard. Softening of water is recommended when the hardness exceeds 3 mEq/L (300 mg per liter)

Oral rehydration therapy

ORS bicarbonate		ORS citrate	
1) Sodium chloride	3.5 gram	1) Sodium chloride	3.5 gram
2) Sodium bicarbonate	2.5 gram	2) Trisodium citrate dehydrate	2.9 gram
3) Potassium chloride	1.5 gram	3) Potassium chloride	1.5 gram
4) Glucose (dextrose)	20.0 gram	4) Glucose	20.0 gram
5) Potable water	1 litre	5) Potable water	1 litre

Pathogens and diseases (sexually transmitted diseases)

Pathogen	Disease or syndrome
1) Neisseria gonorrhoeae	Gonorrhoea, urethritis, cervicitis, epididymitis, salpingitis, PID, Neonatal conjunctivitis.
2) Treponema pallidum	Syphilis
3) Haemophilus ducreyi	Chancroid
4) Chlamydia trachomatis	LGV, urethritis, cervicitis, proctitis, epididymitis, infant pneumonia, Reiter's syndrome, PID, Neonatal conjunctivitis

5) Calymmatobacterium Granulomatis	Donovanosis (granuloma inguinale)
6) Herpes simplex virus	Genital herpes
7) Hepatitis B virus	Acute and chronic Hepatitis
8) Human papillomavirus	Genital and anal warts
9) Candida albicans	Vaginitis

Occupational diseases

A) diseases due to physical agents

- a) Heat – heat exhaustion, heat syncope, heat cramps, burns.
- b) Cold – Trench foot, frost bite, chilblains
- c) Light – occupational cataract, miner's nystagmus
- d) Pressure – Cassion disease, air embolism, blast

B) Diseases due to chemical agents

a) Inorganic dust –

- 1) Coal dust – Anthracosis
- 2) Silica – Silicosis
- 3) Asbestos – Asbestosis, cancer lung
- 4) Iron – Siderosis

b) Organic (vegetable) dust –

- 1) Cane fibre – Bagasosis
- 2) Cotton dust – Bysinosis
- 3) Tobacco – Tobacosis
- 4) Mouldy Hay or grain dust – Farmer's lung

Incubation periods

1) Influenza	1 to 3 days (18 – 72 hours)
2) Anthrax	1 to 3 days
3) Cholera	1 to 5 days
4) Bacillary dysentery	1 to 7 days
5) Diphtheria	2 to 5 days
6) Plague	2 to 6 days
7) Typhoid	10 to 14 days
8) Yellow fever	3 to 6 days
9) Dengue	3 to 15 days
10) Tetanus	6 to 10 days
11) Measles	10 days from exposure to onset of fever & 14 days to appearance of rash
12) Leptospirosis	10 days
13) Malaria	Not less than 10 days Falciparum – 12 (9 to 14) Vivax – 14 (8 to 17) Ovale – 17 (16 to 18) Quartan – 28 (18 to 40)
14) Pertussis	7 to 14 days
15) Polio	7 to 14 days
16) Q. fever	7 to 14 days

17) Chicken pox	2 to 3 weeks (14 -16 days)
18) Rubella	2 to 3 weeks (ave. 18 days)
19) Mumps	2 to 3 weeks (ave.18 days)
20) Brucellosis	1 to 3 weeks
21) Amoebiasis	2 to 4 weeks
22) Hepatitis A	15 to 50 days
23) Hepatitis B	50 to 160 days (45 – 180 days)
24) Tuberculosis	Weeks to months (tuberculin +ve = 3 to 6 weeks)
25) Kala Azar	1 to 3 months
26) Filariasis	8 to 16 months
27) Elephantiasis	10 years
28) Trachoma	5 to 12 days
29) Rabies	3 to 8 weeks
30) Leprosy	3 to 5 years
31) Aids	Uncertain (few months to 10 years)

विष वर्गीकरण –

- 1) चरक व सुश्रुतानुसार – 1) स्थावर –वानस्पतीज 2) जांगम – प्राणीज
 2) अष्टांगहृदयानुसार– 1) स्थावर 2) जांगम 3) कृत्रिम (गरसंज्ञक)
 3) काश्यपानुसार– 1) स्थावर 2) जांगम 3) संयोगज –अ) गरविष (अविष) ब) कृत्रिम विष (सविष)
 4) शारंगधरानुसार – 1) स्थावर 2) जांगम 3) कृत्रिम –अ) गरविष ब) दूषिविष क) विष ड) उपविष
 5) रसशास्त्रीय ग्रन्थानुसार – 1) विष 2) उपविष
 कृत्रिम विष प्रकार – 1) गरविष 2) दूषिविष
 6) भावप्रकाश / शारंगधर/ धन्वन्तरि निघट्ट नुसार – विष – 9 उपविष – 7
 7) रसतरंगिणीनुसार – विष – 9 उपविष –11 रसोपनिषदनुसार उपविष –40
 विष – 1) हालाहल 2) कालकूट 3) जैंगक 4) प्रदीपन 5) सौराष्ट्रीक 6) ब्रह्मपूत्र
 7) हारिद्रक 8) सकुक 9) वत्सनाभ

स्थावर विष अधिष्ठान – 10

जांगम विष अधिष्ठान – 16

स्थावर विष संख्या – चरक -21 सुश्रुत – 55 भावप्रकाश –9

स्थावर विष अधिष्ठान संख्या –

अनु	अधिष्ठान	संख्या
1	मूलविष	8
2	पत्रविष	5
3	फलविष	12
4	पुष्पविष	5
5	त्वक 6 सार 7 निर्यास	7
8	क्षीरविष	3
9	धातुविष	2
10	कन्दविष	13

विष गुण वर्णन – च.चि. 23/23 सु. क. 2/19 अ.हु. 35/7 शा पू. 4/22

चरक - 10	सुश्रुत - 10	अष्टांगहुदय-11	शारंगधर- 8
रूक्ष	रूक्ष	रूक्ष	
उष्ण	उष्ण	उष्ण	आग्नेय
तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	छेदी
सूक्ष्म	सूक्ष्म	सूक्ष्म	सूक्ष्म
आशु	आशु	आशुकर	मदावह
व्यवायी	व्यवायी	व्यवायी	व्यवायी
विकासी	विकासी	विकासी	विकासी
विशद	विशद	विशद	
लघु	लघु	लघु	
अनिर्देश्य रस	अपाकी	विषमपाकी	जीवितहर
-	-	अव्यक्तरस	योगवाहि

विष गुण प्रभाव –

विष गुण	चरक	सुश्रुत
1) रूक्ष	वातप्रकोप	वातप्रकोप
2) उष्ण	अशैत्य (उष्ण) – पित्तप्रकोप	पित्तप्रकोप , रक्तप्रकोप
3) तीक्ष्ण	मर्मघ्न	मर्ती मोहयेत् , मर्मबंधन छेदन
4) सूक्ष्म	रक्तप्रकोप	शरीरगूँवयव प्रवेशन
5) आशु	आशु व्याप्नोति केवलं देहम्	शीघ्र प्राणहरण
6) व्यवायी	आशु व्याप्नोति केवलं देहम्	प्रकृतिं भजेत् (सर्व शरीर प्रसरण)
7) विकासी	प्राणघ्न	दोषधातुमल क्षण
8) विशद	असक्तगतीदोष	अतिरिच्यते (कहीपर रुक्ता नहीं)
9) लघु	दुरुपक्रम	दुश्कित्स्य
10)	अव्यक्तरस- कफप्रकोप	अविपाकित्वात् - दुर्हरं

TIERRA

वेगानुसार विषलक्षण –

वेग	चरक च. चि. 23/18	सुश्रुत सु.क. 2/35
प्रथम वेग	तृष्णा मोह दन्तहर्ष प्रसेक वमथु क्लम	स्तब्ध इयाव जिङ्हा, मूर्च्छा ,श्वास
द्वितीय वेग	वैवर्य, भ्रम वेपथु मूर्च्छा जृम्भा चिमचिमायन	वेपथु साद दाह कणठर्जा, आमाशय प्राप्त विषद्वारे हुदय वेदना
तृतीय वेग	मण्डल, कण्डू शोथ कोठ	तालुशोष आमाशयशू नेत्रदुर्बर्ण हरीत व शोथयुक्त
चतुर्थ वेग	दाह छर्दि अंगशूल मूर्च्छा (वातादीसे)	पक्वामाशयतोद, हिकका आंत्रकूजन शिरोगौरव
पंचम वेग	नीलादीनां तमसश्च दर्शन	कफप्रसेक वैवर्य पर्वभेद सर्वदोषप्रकोप पक्वाधाने वेदना
षष्ठ वेग	हिकका	प्रज्ञाप्रणाश, भृश अतिसार
सप्तम वेग	स्कंधभंग	स्कंधपृष्ठकटीभंग, सन्निरोध (श्वासावरोधसे मृत्यू
अष्टम वेग	मृत्यू	-----

वेगानुसार चिकित्सा –

वेग	चरक	सुश्रुत
प्रथम वेग	त्वक मासगत- दहन, सद्यविषपान- वमन	वमन, शीताम्बुसेचन
द्वितीय वेग	रक्तगत – विरेचन, हुदयरक्षण-मधुसर्पिमज्जा गैरीक सुपक्व इक्षु आदी पान	वमन + विरेचन
तृतीय वेग	लेखन व शोथेधन गुणयुक्त क्षारागद मध्वम्बुसह	अगदपान , नस्य, अंजन
चतुर्थ वेग	गोमय रस व कपित्थ सर्पि मधुसह पान	स्नेहमिश्रित अगदपान
पंचम वेग	काकाण्ड व शिरीष का नस्य व अंजन	मधुक (यष्टी) क्वाथ मधुसह अगदपान
षष्ठ वेग	संज्ञास्थापन- गोपितरजनीमंजिष्ठापिप्ली सेवन	अतिसारवत चिकित्सा, अवपीड नस्य
सप्तम वेग	दंष्ट्रा विषार्थ- स्थावरविषपान स्थावर विषार्थ- दंशानं (विषेले जन्मु का दंश)	मूर्ध्नि स्थाने काकपद कर उसपर रक्तमिश्रीत मांस आस्थापन, अवपीड नस्य

सर्पभेद-

- 1) दिव्य- वासुकि तक्षक आदी पौराणिक
 2) भौमिक – भूमी पर विचरण करनेवाले
- 1) चरक -3 1) दर्वाकर 2) मण्डली 3) राजीमान
 2) सुश्रुत -5 1) दर्वाकर 2) मण्डली 3) राजीमान 4) वैकरंज 5) निर्विष
 3) अ.हुदय- 3 1) दर्वाकर 2) मण्डली 3) राजीमान
- | | | | |
|-------------|------------|-------------|-----------|
| दर्वाकर -26 | मण्डली -22 | राजीमान- 10 | वैकरंज- 3 |
|-------------|------------|-------------|-----------|

सर्पदंश भेद –

- 1) सुश्रुत – 3 1) सर्पित 2) रदित 3) निर्विष (केचित मतानुसार सर्पागाभिहत)
 2) वृद्धवाग्भट- 5 1) तुण्डाहत 2) व्यालीढ 3) व्यालुप्त 4) दष्टक 5) दंष्ट्रानिपीडीत
 सर्पागाभिहत – सुश्रुत – वातप्रकोप
 शंकाविष – चरक – वातप्रकोप

वृश्चिक विष –

सुश्रुतानुसार संख्या -30

प्रकार	महाविष / तीव्र विष	मध्य विष	मन्दविष
संख्या	15	03	12

लूताविष –

- उत्पत्ती – सुश्रुत- वसिष्ठ ऋषि के स्वेद बिंदु से
 अष्टांगसंग्रह- भुक्त दुष्टान्न से उत्पन्न विषविस्फोट से
- भेद – सुश्रुत – 2 1) कष्टसाध्य -8 2) असाध्य – 8
 अष्टांगहुदय – 4 1) आग्नेयी -7. 2) वायव्यी-7. 3) सोम्य -4. 4) उपपादीक-4

संख्या –

सुश्रुत -16 वाग्भट – 28

लूता विष अधिष्ठान – सुश्रुतानुसार -7 – शुक्र, दंश, नख, मूत्र, मल, लाला, रस

अष्टांगहुदयानुसार – 8- श्वास, दष्ट्र, मल, मूत्र, शुक्र, लाला, रस, आर्तव

लूताविष व्यक्त होने में 7 दिन का समय लगता है।

लूताविष मारकता -

- 1) तीक्ष्ण विष लूता - 7 दिन में
- 2) मध्य विष लूता - 10 दिन में
- 3) हीन विष लूता - 15 दिन में मारकता

चिकित्सात्म दुष्टी से लूता भेद -

- 1) कष्टसाध्य - 8
- 2) असाध्य - 8

मूषक विष -

मूषक विष भेद - 18 (सुश्रुत व संग्रहानुसार)

मूषक विष अधिष्ठान - शुक्र

Specific symptoms of poisons :

1) Sudden death -	1) Potassium cyanide	2) Hydrocyanic acid
	3) Carbon monoxide	4) Carbon Dioxide
	5) Ammonia	6) Oxalic acid
2) paleness of face -	1) Antifebrin	2) Delerium
	3) bhanga	4) Dhatura
	5) Alcohol	6) Atropa belladonna
3) Heart failure -	1) Strong acids	2) Alkalies
	3) Arsenic	4) Aconite
	5) Garcinia Morella	6) Antimony
4) Delirium -	1) Cannabis indica	2) Thorn apple
	3) Alcohol	4) camphor (karpur)
	5) Henbane (khurasani ajavayn)	6) Atropa belladonna
5) Tetanum like convulsion -	1) Nux- vomica	2) Arsenic
	3) Antimony	
6) Dilation of pupil	1) Thorn apple	2) Atropa belladonna
	3) Aconite	4) Alcohol
	5) Chloroform	6) Henbane
	7) Opium	8) Cyanides
7) Constriction of pupils -	1) Morphine	2) Carbolic acid
	3) Chloral hydrate	
8) Dryness of skin -	1) Thorn apple	2) Henbane
	3) Atropa belladonna	
9) Humidity of skin -	1) Aconite	2) Alcohol
	3) Tobacco	4) Antimony
10) Bleached face -	1) corrosive acids and alkalis	
	2) Calomel	3) Carbolic acid
11) Vomiting	1) Arsenic	2) Antimony
	3) Aconite	4) Digitalis
	5) Ammonia	6) Phosphorus
12) Loss of consciousness -	1) Morphine	2) Alcohol
	3) Camphor	4) Chloroform
		5) Chloral hydrate

- | | | |
|-----------------|------------|------------|
| 13) Paralysis - | 1) Aconite | 2) Arsenic |
| | 3) Lead | 4) Conium |

Classification of poison :

1) Corrosives : a) ACIDS :

- 1) Inorganic – Sulphuric acid, Hydrochloric acid and Nitric acid
- 2) Organic – Acetic acid, Salicylic ,Oxalic and Carbolic acid
- 3) Vegetable – Hydrocyanic acid, cyanids – potassium cyanide

b) ALKALIS :

- 1) Hydroxides : of sodium, potassium and Ammonium
- 2) Carbonates : of sodium potassium and Ammonium

2) Irritants : a) Inorganic :

- 1) Non metal – Phosphorus, Flourine, chloride, Bromine, Iodine and boron
- 2) Metals - Arsenic, lead, mercury, copper, iron, zinc, Manganese Magnesium, thalium and radioactive substances.

b) Organic :

- 1) Vegetable : castor oil, croton oil, abrus precatorius, marking nut Calotropis, colocynth, aloe, capsicum.
- 2) Animal – snakes, scorpions, spiders, cantharides, insects.
- c) Mechanical – powdered glass, diamond dust, dry sponge, hair, pins, needles, nails.

3) Neurotoxics : a) cerebral

- 1) Narcotic - opium and its alkaloids like morphine, codeine, thebaine Papaverine, noscapine, narcine.
- 2) Inebriants – alcohol, anesthetic agents like chloform nitrous oxide Fuels like kerosene and petrol, sedatives like chloral Hydrate barbiturates and paraldehyde. Insecticides like organophosphorus compound DDT , Endrine, Tik 20, malathion, parathion. Naphthalene
- 3) Delirants : dhatura, cannabis, atropa belladonna, hyoscyamus niger Cocaine and camphor

TIERRA

b) Spinal :

- 1) Excitants : nux vomica and its alkaloid strychnine.
- 2) Depressants : Lathyrus sativus (keshari dal), gelsemium (jasmine)
- 3) Peripheral : conium and curare

4) Cardiac poisons :

Aconite, digitalis, oleander, Tobacco.

5) Respiratory poisons : (Asphyxiants) – CO, CO₂, SO₂, H₂S, NH₃, Phosphine (PH₃) war gases and sewer gases

6) Miscellaneous : analgesics, Antipyretics, Antihistaminics, Tranquillisers, Stimulants, Antidepressants, Hallucinogens, food poisoning Drug dependence

Medico legal aspects of age :

Aspect	IPC	Law
1) Criminal responsibility	82	a child below 7 years is not held responsible on the belief that he cannot understand act.
	83	Child between 7-12 years is normally held responsible unless he did not attain mental maturity of his age.
2) consent	87	A child below 18 cannot give consent for any act that can lead to by chance death or grievous injury.
	89	A child below 12 cannot give consent for an act done in good faith or benefit of the child.
		A child above 12 can give consent for all medical examination and treatment except MTP for which minimum age is 18.
3) Judicial punishment		Capital punishment is not given to one below 18
4) witness		Oath is administered only to those above 12.

Extent of burn – Rule of nine / Wallace's formula

Head neck and face	9 %	Head – 7% neck – 2%
Each upper limb	9 %	Arm – 4%, forearm – 3%, hand – 2 %
Chest and abdomen	18 %	Chest – 9 % abdomen – 9 %
Back	18 %	Upper half – 9 % lower half – 9 %
Perineum and genitals	1%	
Each lower limb	$9 \times 2 = 18 %$	Thigh – 10, % leg – 5 %, foot – 3 %

In children less than 5 years

- 1) Head, neck and face – 15 %
- 2) Each lower limb – 15 %
- 3) Rest is same

Various acts and codes

- 1) Bombay medical act – 1912
 - 2) Indian medical degrees act – 1916
 - 3) Indian medical council act – 1956
 - 4) Poisons act – 1919
 - 5) Bombay anatomy act – 1949
 - 6) MTP act – 1971
 - 7) The prenatal diagnostic techniques (regulation and prevention of misuse) Act – 1994.
 - 8) Workmen's compensation act – 1923
 - 9) Drug and cosmetic act – 1940
- After the amendment of 1964 it also included ayurvedic and unani drugs.

10) Drug and cosmetic rules – 1945

These rules have classified drugs into various schedules

- 1) **Schedule H drugs** – contains a list of drugs (poisons) which are subject to Restriction of labeling, sale and prescribing.

SCHEDULE 'H' DRUG – warning – to be sold by retail on the prescription of a RMP only.

- 2) **Schedule 'L' drugs** – contains a list of antibiotics, anti histaminic, and other Chemotherapeutic agents.

Other schedules-

Schedule 'C' = Biological and special products.

Schedule 'E' = List of poisons.

Schedule 'F' = Vaccines and seras

Schedule 'G' = Hormone preparations

Schedule 'H' = Drugs to be sold on prescription of RMPs only

Schedule 'J' = Disease for the cure of which no rug should be advertised.

Schedule 'L' = Antibiotics, antihistaminics, other chemotherapeutic agents to be Sold on prescription of RMP only.

12) Pharmacy act – 1948

13) Drug control act – 1950

Organ send to be for laboratory examination

1) Metallic poisoning	Hair
2) Arsenic	Bones, nails, hairs.
3) Antimony	Nail, skin, shaft – 6 inch piece.
4) Strychnine	Brain and heart
5) Co., alcohol, chloroform	Blood in heart chamber, lungs without preservation
6) Rabies	Negri bodies (brain) in 50% glycerol saline

Fatal period of poisons

1) Sulphuric acid	10 – 15ml
2) Nitric acid	10 – 15 ml
3) Hydrochloric acid	15 – 20 ml
4) KOH, NaOH	5 – 10gms
5) Oxalic acid	15 – 20 gms
6) Carbolic acid	10 – 15 gms
7) Hydrocyanic acid	60 mg
8) Potassium Cyanide	200 mg
9) Phosphorus	100 – 150 mg
10) Arsenic	180 – 200 mg
11) Lead	0.5 – 20gms
12) Copper sulphate	15 – 30 gms
13) Mercury	1 gm
14) Abrus precatorius (gunja)	1 – 2 crushed seeds
15) Marking nut (bhallatak)	10 gms
16) Croton seeds (jayapal)	4 – 5 crushed seeds
17) Castor seeds (eranda)	10 crushed seeds
18) Opium	2 gms
19) Morphine	200 mg
20) Pethidine	2 gm
21) Methyl alcohol	60 – 200 ml
22) OPP	25 mg – 25 gms
23) D.D.T.	30gms
24) Dhatura	100 – 125 crushed seeds
25) Cannabis (bhanga)	2 – 10gm / kg body
26) Cocaine	1 gm
27) Nux vimoca (kuchala)	1 – 2 crushed seeds
28) Curare	30 – 60mg

29) Conium	1 cm of plant part
30) Digitalis	2 – 3 gms
31) Aconite	1 gm root
32) Nicotine	1 – 2 drops
33) Tobacco	15 – 30 gms
34) Oleander	15 – 20 gms of root

Fatal period

1) Carbolic acid	1- 2 hours
2) Cyanides	Immediate
3) Phosphorus	Variable
4) Arsenic	2 – 3 hours
5) Lead	Variable
6) Copper	1 – 3 days
7) Mercury	2 – 3 days
8) Abrus precatorius (gunja)	3 – 5 days
9) Marking nut (bhallatak)	12 – 24 hours
10) Castor seeds	Variable
11) Croton oil and seed	Variable
12) Opium	6 – 12 hours
13) Methyl alcohol	1 – 3 days
14) Barbiturates	1 – 2 days
15) OPP	½ - 3 hours
16) D.D.T	24 hours
17) Endrine	½ - 3 hours
18) Dhatura	24 hours
19) Cannabis	12 hours
20) Cocaine	2 hours
21) Strychnine	1 – 2 hours
22) Curare	1 – 2 hours
23) Conium	Few hours
24) Digitalis	1 – 24 hours
25) Aconite	6 hours
26) Nicotine	1 – 10 minutes
27) Oleander	24 hours

Poisons leading to constriction of pupils

- | | | |
|----------------|------------------|------------|
| 1) Opium | 2) Morphine | 3) Tobacco |
| 4) OPP | 5) Carbolic acid | 6) Curare |
| 7) Anesthetics | 8) Alcohol | 9) Fuels |

Poisons causing alternate constriction and dilation of pupils

- | | |
|----------------|------------|
| 1) Barbiturate | 2) Aconite |
|----------------|------------|

Poisons leading to dilatation of pupils

- | | | |
|-------------------------------------|---------------------|----------------|
| 1) Cyanides | 2) Datura | 3) Cocaine |
| 4) Alcohol | 5) Digitalis | 6) Cannabis |
| 7) Atropa beladonna | 8) Hyoscyamus | 9) Co |
| 10) Nicotine | 11) Antihistaminics | 12) Strychnine |
| 13) Calotropis | 14) fuels | 15) Oleander |
| 16) Corrosives except carbolic acid | | |

Poisons causing typical P.M. lividity

- | | |
|-----------------------------|---|
| 1) Cyanide – pink | 2) Opium – Almost black |
| 3) CO – Bright cherry red | 4) Hydrogen sulphide – Bluish green |
| 5) Phosphorus – Dark brown | 6) Potassium chlorate – chocolate brown |
| 7) Nitrites – Reddish brown | |

Antidotes

1) Mineral acids	CaO, MgO
2) Alkalies	Weak acids, Acetic acid, Vinegar, lemon juice
3) Oxalic acid	Lime
4) Carbolic acid	Magnesium sulphate
5) Cyanides	Nitrates, kelocyanor, PAPP, Hypo
6) Phosphorus	Copper sulphate
7) Arsenic	Ferric oxide and BAL
8) Iodine	Starch, Hypo
9) Lead	Sodium or magnesium sulphate and EDTA
10) Copper	Potassium ferrocyanide and penicillamine
11) Mercury	Sodium formaldehyde sulphonylate and Penicillamine / BAL
12) Abrus	Antiabrin
13) Snakes	Anti snake venom serum
14) Scorpion	Antivenin and local narcotics
15) Methyl alcohol	Ethyl alcohol
16) Opium	Naloxone / nalmefene
17) Opium (chronic)	Methadone / LAAM
18) CPP	Atropine and oximes
19) Datura	Prostigmine / pilocarpine
20) Cocaine	Amyl nitrate inhalation
21) Strychnine	Barbiturates, Chloroform
22) Oleander	Anesthetics, morphine
23) Curare	Prostigmine
24) Thallium	Pot. Heacyanoferrate (Prussian blue)

Poisons with characteristic smell

1) Cyanides	Bitter almond
2) Phosphorus	Gariicky
3) OPP	Kerosene like/ garlicky
4) opium	Raw flesh
5) Cannabis	Burnt rope
6) H ₂ S	Rotten egg
7) CO	Burnt coal

Poisons used as arrow poisons

- | | | |
|----------------------|----------------|-------------------|
| 1) Abrus precatorius | 2) Aconite | 3) Strychnine |
| 4) Croton | 5) Snake venom | 6) scorpion venom |
| 7) Curare | 8) Calotropis | |

Poisons resisting putrefaction

- | | | |
|---------------|---------------|---------------|
| 1) Dhatura | 2) Phosphorus | 3) All metals |
| 4) Strychnine | 5) Nicotine | 6) Endrine |
| 6) D,D,T. | 7) Alcohol | 8) Oleander |

Poisons that are stored in the body

- 1) Organophosphorus compounds
- 2) Organochlorous compounds
- 3) Strychnine
- 4) Thiopentone
- 5) heavy metals
- 6) Radio active substances

Tests for poisoning

1) Sulphuric acid	Carbonization
2) Nitric acid	Xanthoproteic reaction
3) Carbolic acid	Green urine, Prussian blue test
4) Arsenic	Marsh's test, Reinsh's test
5) Lead	Punctate basophilia
6) Opium	Marquis test
7) Alcohol	Mac ewan's test
8) Datura	Mydriatic test
9) CO gas	Spectroscopic test

Some important features in poisoning –

- 1) Blotting paper like stomach – sulphuric acid
- 2) Black stool – lead poisoning
- 3) Blue vomitus and stool – copper
- 4) Froth from mouth – opium
- 5) Tactile hallucinations – Ergot, cocaine
- 6) Carboluria (oigurea, albuminurea, hematuria) – Carbolic acid
- 7) Leather bottle appearance of stomach – carbolic acid
- 8) Phossy jaw – glass jaw – phosphorus
- 9) Red velvety appearance of stomach – Arsenic
- 10) Mees lines on finger and nails – Arsenic
- 11) Colicky pain and blue line on gums – Lead
Lead line or Bertonian line
Wrist drop and foot drop (lead palsy)
- 12) Blue line on gums, pink disease (acrodynia) – Mercury
- 13) The triad of coma, pin point pupil and depressed respiration – opioid poisoning
- 14) Hippus reaction (alternate dilatation & constriction of pupils) – Aconite

Food poisoning

Types –

- 1) Infection type – Salmonella group of organisms, other may be e.coli, Streptococci and staphylococci.
- 2) Toxin Type – Enterotoxin formed by staphylococcus, other may be E. coli or vibrio
- 3) Botulinism – Clostridium botulinum

द्रव्यगुण – सुश्रुतोक्त गुण –1) **व्यावायी** – व्यावायी च अखिलं देह व्याप्य पाकाय कल्पते । – सुश्रुत

पूर्व व्याप्याखिलं कायम ततः पाकं च गच्छति ।

व्यावायी तद् यथा भंगा फेनाण्चाहि समुद्द्रवम् ॥ – शारंगधर

शरीर मे प्रविष्ट होनेपर पाक होने के पूर्व ही शरीर मे शोषीत होकर व्याप्त हो जाता है । उदा. अहिफेन एवं भंगा

2) विकसी - विकासी विकसन्नेव धातुं सन्धिबन्धान् विमोक्षयेत् ।

सन्धिबन्धांश्च शिथिलान् करोति हि विकासि तत् ।

विश्लिष्योजश्च धातुभ्यो यथा ऋमुककोद्रवौ ॥

सर्व शरीर मे व्याप्त होकर ओज को क्षीण कर धातुओ मे एवं सन्धियो मे शैथिल्य उत्पन्न कर दे। ऋमुक एवं कोद्रव

गुर्वादी गुण परिभाषा

गुरु- बृहणे गुरुः - हेमाद्री सादोपलेपकृद् गुरुस्तर्पण बृहणः - सुश्रुत गुरु वातहरं पुष्टिश्लेष्मकृच्छ्रिपाकि च - भा.प्र.	लघु - लंघने लघु - हेमाद्री लेखनो रोपनो तथा - सुश्रुत लघु पथ्यं प्रोक्तं कफधनं शीघ्रपाकी च - भा.प्र.
शीत - स्तम्भने हीमः - हेमाद्री हादनः स्तम्भनः शीतो मूर्छातृटस्वेददाहजित-सु. शीतस्तु हादनः स्तम्भी मूर्छातृटस्वेददानुत् - भा.प्र.	उष्ण- स्वेदने उष्णः - हेमाद्री उष्णस्तद्विपरीतः स्यात् पाचनश्च विशेषत - सुश्रुत उष्णो भवति शीतस्य विपरीतश्च पाचनः - भा.प्र.
स्निग्ध- क्लेदने स्निग्धः - हेमाद्री स्नेहमार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा - सुश्रुत स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम् - भा.प्र.	रूक्ष- शोषणे रूक्षः । हेमाद्री रूक्षस्तद्विपरीतः स्याद् विशेषात् स्तम्भनः खरः - सु. रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् भा. प.
मन्द - शमने मन्दः - हेमाद्री मन्दो यात्राकरः स्मृतः - सुश्रुत न शोधयति यद दोषान् भा. प्र.	तीक्ष्णा - शोधने तीक्ष्णः - हेमाद्री दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्त्रावणः - सुश्रुत तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायोलेखनं कफबः तद्वृत् - भा.प्र.
स्थिर - धारणे स्थिरः - हेमाद्री स्थिरो वातमलस्तम्भी - भा.प्र.	सर - प्रेरणे सरः - हेमाद्री सरोजनुलोमनो प्रोक्तः - सुश्रुत सरस्तेषां प्रवर्तकः - भा.प्र.
मृदू - श्लथने मृदूः - हेमाद्री विशद- क्षालने विशदः - हेमाद्री विशदो विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषणरोपणः - सुश्रुत क्लेदच्छेदकरः ख्यातो विशदो व्रणरोपणः - भा.प्र.	कठिन - दृढीकरणे कठिनः - हेमाद्री पिच्छिल- लेपने पिच्छिलः - हेमाद्री पिच्छिलो जीवनो बल्यः संधानः श्लेष्मलो गुरुः - सु. पिच्छिलस्तन्तुलो बल्यः संधानः श्लेष्मलो गुरुः - भा.
श्लक्षणः- रोपणे श्लक्षणः - हेमाद्री श्लक्षणः पिच्छिलवत् ज्ञेयः - सुश्रुत श्लक्षणः स्नेहं विनाडपि स्यात् कठिनोऽपि हि चिकित्सः	खर- लेखने खरः - हेमाद्री सुश्रुत ने खर को 'कर्कश' लिखा है
सूक्ष्म- विवरणे सूक्ष्मः - हेमाद्री सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मेषु स्त्रोतःस्वनुसरः स्मृतः देहस्य सूक्ष्मछिद्रेषु विशेषात् सूक्ष्ममुच्यते - भा.प्र	स्थूल- संवरणे स्थूल(आकार से बड़ा होने के कारण स्त्रोतो मे अवरोध(संवरण) करता है। -हे. स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्त्रोतसामवरोधकत् - भा.प्र
सान्द- प्रसादने सान्दः - हेमाद्री सान्दः स्थूलः स्याद् बन्धकारकः - सुश्रुत	द्रव - विलोडने द्रवः - हेमाद्री द्रवत्वं स्यंदनकर्मकारणम् - प्र. पा. भा. द्रवः प्रक्लेदनः - सु. द्रवः क्लेदकरो व्यापी - भा.प्र

मिस्त्रक गण

गण	घटक द्रव्य	गुणकर्म
बृहतपंचमूल	बिल्व अग्निमिंथ श्योनाक पाटला काश्मरी	तिक्त मधुरानुस लघु दीपन कफवातध्न
लघुपंचमूल पंचगण(राजनिधंट)	त्रिकंटक(गोक्षुर), बृहतीद्वय, पृथकपर्णी, विदारीगंधा	कषायतिक्तमधुर, वातपित्तध्न, बृंहण, ग्राही ज्वरहर, श्वासहर अश्मरीभेदन
कंटकपंचमूल	करमर्द, त्रिकंटक सैरेयक शतावरी गृध्रनखी	रक्तपित्तहर शोफत्रयविनाशन सर्वमेहहर
वल्लीपंचमूल	विदारी सारीवा रजनी(मंजिष्ठा) गुडूचि अजशङ्गी	शुक्रदोषविनाशन
तृणपंचमूल	कुश काश नल दर्भ काण्डेक्षु	मूत्रदोषविकार रक्तपित्त पित्तशामक
मध्यमपंचमूल	बला पुनर्नवा एरंड शूर्पपर्णीद्वय (मुदग व माषपर्णी)	कफवातध्न नातिपित्तध्न
जीवनीयपंचमूल	अभीरु (शतावरी), वीरा (काकोली) जीवंती, जीवक ऋषभक	चक्षुष्य वृष्य पित्तानिलापह
पंचवल्कल /गंचक्षीरीवृक्ष	वट उदुम्बर अश्वत्थ पारीष प्लक्ष राजनिधंटु पारीष के स्थान पर वेतस	कषाय रसात्मक स्नानभन
पंचशूरण	अत्यम्लपर्णी काण्डीर मालाकन्द द्वीशूरण(वन्य ग्राम्य)	यकृदविकार अर्श
त्रिकंटक	बृहती कंटकारी धन्वयास	
त्रिवल्कल	पूतिक कृष्णगंधा तिल्वक	विरेचक
क्षीरनय (र.त.)	अर्क वट स्नुही	मारणादी मे प्रयुक्त
पंचपल्लव	आम्र जम्बु कपित्थ बीजपूरक बिल्व	गंधकर्मार्थ
चतुर्बाँज	मेथिका चंद्रशूर कालाजाजी यवानिका	अजीर्ण शूल आध्मान पार्श्वशूल कटीव्यथा पवनामयम
त्रिफला	हरीतकी बिभितकी आमलकी. प्रमाण - भाग्न- सम शारंगधर- 1 हरीतकी(2 कर्ष) 2 बिभितकी(1कर्ष) 3 आमलकी (अर्धा कर्ष)	कफपित्तध्नी चक्षुष्य मेहकुष्ठहर सर दीपन रुच्य विषमज्वरनाशन
आदयपृष्ठ	चंदन हीबेर केशर	
स्वल्प त्रिफला	गंभारी खर्जुर फालसा	पित्तशमन
सुगंधी त्रिपला	जातीफल पूगफल लवंगफल	मुखदौर्गंध्य नाशन
मधुरत्रय	शर्करा मधु घृत तरंगीणी – शर्करा एवजी गुड	
त्रिशर्करा	गुड मधु हिम	
त्रिकटू/कटुत्रिक/व्योष त्यूषण	शुंठी मरीच पिप्पली	दीपन श्वास कास त्वगामय गुल्म मेह कफ स्थौल्य मेद इलीपद पीनस नाशन
चतुरुषण	त्रिकटू+पिप्पलीमूल	
कटूचातुर्जाति	एला त्वक(दालचिनी) तेजपत्र मरीच	
पंचकोल. पंचोषण	पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागर. कोल- पिप्पली पर्याय, कोल(आधा कर्ष) परिमाण मे.	तीक्ष्ण कटूरसविपाकी, कफवातध्न पित्तकर गुल्मप्लीह आनाहोदरशूलध्न
षडूषण	पंचकोल + मरीच	रुक्ष उष्ण विषापहम
पंचतिक्त	गुडूचि निम्बमूलत्वक वासा कंटकारी पटोलपत्र	

त्रिजातक	त्वक एला तेजपत्र	रोचन तीक्ष्णोज्ज मुखगंधहुत लघु दीपन
चातुर्जात	त्रिजात+नागकेशर	वर्ण्य विषष्ठ दीपन वातकफष्ठ पित्तकर
पंचसुगंधिक	कर्पुर कंकोल लवंग पूग जातीफल	
समन्त्रितय	हरीतकी शुंथी गुड समभाग	
त्रिकार्षिक	शुंथी अतिविषा मुस्ता प्रत्येकी 1 कर्ष	
चातुर्भद्र	त्रिकार्षिक + गुडूचि	
त्रिमद	विडंग मुस्ता चित्रक	
क्षारद्वय	सज्जीक्षार यवक्षार	
क्षारत्रय	क्षारद्वय +टंकण	
क्षारपंचक	यव मुष्कक सर्ज पलाश तील	
क्षारषट्क	धव अपामार्ग कुटज लांगली तिल मुष्कक	
क्षारष्टक	पलाश वज्री शिखरी चिंचा अर्क तिल +क्षारद्वय	
महापंचविष (रा.)	शृंगिक कालकूट मुस्तक वत्सनाभ सकुक	
उपविष (रा.)	अर्कक्षीर स्नुहीक्षीर लांगली करवीर गुंजा अहिफेन धन्तुर	
पण्चामृत (रा.)	गुडूचि गोक्षुर मुशली गुंडी शतावरी	
पण्चामृत(र.त.)	गोदुग्ध गोदधि गोधृत मधु शर्करा	रसकर्मप्रसाधक
पित्तपंचक (रसार्णव)	मत्स्य गो अश्व नर बर्हि इनका पित्त	
पंचमृत्तिका	इषिटिकाचूर्ण भस्म वल्मिकमृतिका गैरिक लवण	
उपधातु	सुवर्ण रजत तुथ कास्य रिति सिन्दुर शिलाजतु	

द्रव्यसंग्रहण

चरक	संग्रहण	सुश्रुत	संग्रहण
वनस्पती अंग		वनस्पती अंग	
शाखा	वष्ट वसंत		
पत्र (पलाश)	वर्षा वसंत	पत्र	वर्षा
मूल	ग्रीष्म या शिशीर	मूल	प्रावृट
त्वक	शरद	त्वक	शरद
कन्द	शरद		
क्षीर	शरद	क्षीर	हेमंत
विसार	हेमंत	सार	वसन्त
पुष्प फल	यथऋतू	फल	ग्रीष्म

राजनिधंडुनुसार संग्रहण - कन्द - हेमंत मूल - शिशीर , पुष्प - वसंत पत्र- ग्रीष्म पंचांग – शरद

वीर्यनुसार द्रव्यसंग्रहण - सुश्रुत

सोम्य औषधी – सोम्य ऋतु (विसर्ग काल) एवं सोम्य भूमी से

आग्नेय औषधी – आग्नेय ऋतु (आदान काल) आग्नेय भूमी से ग्रहण

शारंगधरानुसार संग्रहण

शरदि अखिलकार्यार्थ ग्राव्यं सरसमौषधम् । विरेकवमनार्थं च वसन्तान्ते समाहरेत ॥

रस	लक्षण	गुणकर्म	अतियोग लक्षण
मधुर	स्नेहन प्रीणन मार्दव आल्हादन मुखलिम्पति परितोषमुत्पादयति, तर्पयति, जीवयति, इलेष्माणमभिवर्धयति ,इन्द्रियानि प्रसादयति षटादपिपीलिकानाम इष्टतग,अक्षप्रसादन	शरीरसात्म्याद्रसरूपिरमांसमेदोअस्थीमज्जाओजश क्राभिवर्धन, बलवर्णकर षडिदियप्रसादन, पित्तविषमारूप्तद्धन, त्वच्य, केश्य, कंठय, प्रीणन, जीवन, तर्पण, स्थैर्यकर, क्षीणक्षतसंधानकर, घ्राणमुखकंठओष्ठजिह्वाप्रल्हादन, दाहमूर्च्छाप्रशमन, कृमीकफकर, स्तन्यकर, सन्धानकृत,	स्थौल्य, मार्दव, आलस्य, अतिस्वप्न, गौरव, अनन्नाभिलाषा, अग्नेदौर्बल्य, आस्यकण्ठयोः मासाभिवृद्धी, श्वास कासा प्रतिश्याय अलसक शीतज्वर आनाह आस्यमाधुर्य, वमथु संज्ञाप्रणाश गलगण्ड गण्डमाला इलीपदगलशोफ बस्तीधमनीगलोपलेप अभिष्ठंद कृमी अर्बुद संन्यास
अम्ल	दतहर्ष रोमहर्ष मुखस्त्राव स्वेदन मुखबोधन आस्य कण्ठविदाह श्रद्धाश्वातोदायति, क्षालयते मुखम, अक्षिभ्रुवनिकोचन	भक्तं रोचयति, अग्निं दीपयति, देहं बृहयति, उर्जयति, क्लेदयति मनो बोधयति, इन्द्रियाणि दृढिकरोति, बलं वर्धयति वातानुलोमन हुदयम तर्पयति, आस्यमास्त्रावयति, भुक्तमपकर्षयति, जरयति प्रीणयति, पाचन, कोष्ठविदाही, बहिःशीत, प्रायः हृद्य उष्णवीर्य हीमस्पर्श	दत्तान हर्षयति, तर्षयति, संमीलयत्यक्षिणी, संवेजयति लोमानि, कफं विलापयति, पित्तमभिवर्धयति, रक्तं द्रूषयति, मांसं विदहति, कायं शिथीलीकरेति, क्षीणक्षत कृशदुर्बलानां श्वयथुमापादयति, क्षताभिहतदष्टदग्धभग्न शूनप्रच्युत अवमूत्रित परिसर्पित मर्दित छिन्न भिन्नविध्द विश्लिष्टादिनी पाचयति, परिदहति कण्ठमुरोहुदयं च तिमिर भ्रम पांडुत्व कंडु विसर्प विस्फोट तृटज्वर(अह.)
लवण	प्रलीयन (गीलापन), क्लेदविष्यंदमार्दवं कुरुते मुखे, विदाहान्मुखस्य च (च.) भक्तरुचिमुत्पादयति, कफप्रसेकं जनयति(सु स्यन्दयति आस्यं कपोलगलदाहकृत	दीपन पाच क्लेदन च्चावन छेदन भेदन तीक्ष्णा सर विकासी अथःस्त्रंस्यवकाशकरो स्तम्भबन्धसंधातविधमन, सर्वरसप्रत्यनिक, आस्यमास्त्रावयति, कफम विष्यंदयति, मार्गन विशोधयति, सर्वशरीरावयवान् मृदूकरोति, रोचयति आहारम्, आहारयोगी. संशोधन,	पित्तं कोपयति, रक्तं वर्धयति, तर्षयति, मूर्च्यति, तापयति दारयति, कुञ्जाति मांसानि, प्रगालयति कुष्ठानि, विषं वर्धयति, शोफान् स्फोटयति, दत्ताश्वावयति, पुस्तंमुपहन्ति इन्द्रियाणि उपरूणिधि, वलिपलित्यखालित्यमापादयति, लोहितपित्ताम्लपित्त विसर्पवातरक्तविचर्चिका इन्द्रलुत प्रभृति विकारजनन,(च)

	(अहं)		गात्रकण्डूशोफवैवर्ण्य, बलक्षण.
कटू	संवेजयेद् यो रसानां निपाते तुदतीव च मुखविदाह, नासाअष्टिसंस्त्रावी (च) जिक्षाग्रं बाधते शिरो गृहणीते (सु) कपोलौ दहतीव (अहु)	वक्त्रं शोधयति अग्निं दीपयति भुक्तं शोषयति घ्राणमास्त्रावयति चक्षुविरिचयति स्फुटिकरोति इंद्रियाणि अलसक श्वयथु उपचय उदर्द अभिष्यन्द स्नेह स्वेद क्लेद मलानुपहन्ति , रोचयति अशानं, कण्डूविनाशयति, व्रणान अवसादयति, क्रिमीन हीनस्ती, मांसं विलिखति, शोणितसंघातं भिनती, बन्धांशीन्नती, मार्गान विवृणोती (च) स्तन्यशुक्रमेदसामुपहन्ति,	विपाकप्रभावात् पुस्त्वं उपहन्ति, रसवीर्यप्रभान्मोहयति, ग्लापयति, सादयति, कर्शयति, मूर्छयति, नमयति, तमयति, भ्रमयति, कण्ठं परिदहति, शरीरतापमुपजनयति, बलं क्षीणोति, तष्णां जनयति, वाय्वाग्निबाहुल्यादभ्रमदवथुकम्प तोदभेद चरणभुजपार्श्वपृष्ठप्रभृतिशु मारूतजान विकारान् उपजनयति (च) तृष्णा शुक्रबलक्ष्यम्, मूर्छामाकुण्ठनं कटिपृष्ठादिषु व्यथाम (अहु)
तिक्त	प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च, मुखवैशद्यशोषप्रलहाद कारक (च) गले चोषमुत्पादयति, भक्तरुचिमुत्पादयति हर्षण्च विशदयति आस्यं रसनं प्रतिहन्ति (अहु)	स्वयमरोचिष्णु अपि अराचक्घनो, विषधनं, कृमीघ्न, मूर्छादाह कण्डूदुष्टतृष्णाप्रशमन, त्वकमांसयोः स्थिरीकरणः, ज्वरधन दीपन पाचन स्तन्यशोधन लेखन क्लेदमेदवसामज्जालसीका पूयस्वेदमूत्रपुरीषपित्तश्लेष्मोपशोषण (च) लघु मेध्य हीम, स्तन्यकणठविशोधन (अहु)	खरविशदस्वभावात् रसरूधिरमांसमेदास्थीमज्जाशुक्राणि उपशोषयति, स्त्रोतसां खरत्वं उत्पादयति, बलमादते, कर्शयति, ग्लपयति, मोहयति, भ्रमयति, वदनमुपशोषयति, अपरांश्व वातविकारनुपजनयति(च) गात्रमन्यास्तंभार्दित आक्षेपकशिरःशूलभ्रमतोदभेदाआ स्यवैरस्य उत्पत्ती (सु) धातुक्षयानिलव्याधीन करोति
कषाय	वैशद्य स्तंभजाडयोः रसनं, बध्नातीव कण्ठं, विकासी(च), वक्त्रं परिशोषयति जिक्षां स्तंभयति, हुदयं कर्शयति पीडयति (सु) जडयेज्जिक्षां कण्ठस्त्रोतोविबन्धकृत (अहु)	संशमन संग्राही, संधानकर, पीडन रोपण, शोषण स्तंभन श्लेष्मरक्पित्तप्रशमन शरीरक्लेदस्योपयोक्ता (च) अस्त्रविशोधन क्लेदमेदविशोषण आमस्तंभन ग्राही अतित्वक प्रसादन (अहु)	आस्यं शोषयति हृदयं पीडयति उदरमाध्मापयति वाचं निगृहणाति, स्त्रोतांस्यवबध्नाति, श्यावत्वमापादयति, पुस्त्वं उपहन्ति, विष्टभ्य जरां गच्छति, वातपुरीषमूत्रास्यवगृहणा, कर्शयति ग्लपयति, तर्षयति, स्तम्भयति, खरविशदरूक्षा त्वात् पक्षवधग्रहापतानकार्दितप्रभृतिश्च वातविकारान उपजनयति(च) वाक्यग्रह मन्यास्तंभ गात्रस्फुरण

		चुमचुमायन आकंचन आक्षेपण जनयति(सु) हुदृजा पौरुषभंशस्त्रोतोरोधमलग्रहान (अहु)
--	--	---

द्रव्य नामकरण एवं पर्याय

राजनिघंटुसार पर्याय के आधार – 7

- 1) रुढी – आटरूषक, गुडूची, टुण्टुक, इ.
- 2) प्रभाव – क्रिमिधन, हयमार,
- 3) देश्योक्ती – मागधी, वैदेही, कलिंग, कैरात,
- 4) लांच्छन -- राजीफल, चित्रपर्णी,
- 5) उपमा – शालपर्णी, मेषशंगी, अजकर्ण
- 6) वीर्य – उषण, कटुका, मधुक
- 7) इतराह्वय – शक्राह्व, काकाहा

द्रव्य व प्रथान कर्म

द्रव्य	प्रथान कर्म (शा)	द्रव्य	प्रथान कर्म
मिशी	दीपन	शुठी जीरक गजपिप्पली	ग्राही
नागकेशर	पाचन	कुटज	स्तंभन
चित्रक	दीपन पाचन	अमृता रूदन्ती गुगुल हरीतके	रसायन
देवङ्कली	उभयतोभागहर (शोधन)	नागबला कपिकच्छु	दाजीकरण
मरीच वचा	प्रसाथी	अश्वगंधा मुशली शतावरी	शुक्रल
उष्ण नीर वचा यव मधु	लेखन	दुग्ध माष भल्लातक फल	
त्रिवृत	सुखविरेचक	मज्जा, आमलकी	शुक्रप्रवर्तक जनक
आरग्वध (चतुरंगुल)	स्त्रांसन / मृदूरेचक	शुक्रप्रवर्तक	डन्नी
कुटकी	भेदन	शुररेचक	बृहतीफल
हरीतकी	अनुलोमन	शुक्रस्तंभक	जातीफल
भंगा अहिफेन	व्यवायी	शुक्रशोषण	हरीतकी
ऋमुक कोद्रव	विकासी	सेंधव क्षोद्र निब व एरंडतैल	सूक्ष्म
अमृता	शमन	आदर्श	कूटज
क्षार मरिच शिलाजतु	छेदन	शुष्कार्श	भल्लातक

1) त्रिफला	हरीतकी बिभितकी आमलकी
2) मधुर त्रिफला	खर्जुर द्राक्षा गंभारी
3) सुगंधी (सुरभी) त्रिफला	जातीफल पूगफल लवंगफल
4) स्वल्प त्रिफला	खर्जुर परूषक गंभारी (काश्मरी)



निघंटू व वर्ग संख्या -

- 1) राजवल्लभ निघंटू - 6
- 2) धन्वन्तरी निघंटू - 7
- 3) कैयदेव निघंटू - 9
- 4) मदनपाल निघंटू - 13
- 5) द्रव्यगुण संग्रह - 15
- 6) भावप्रकाश - 22 + अभाव वर्ग
- 7) राज निघंटू - 23

औषध सेवन काल - चरक - 10 सुश्रुत - 10 वाग्भट - 10 अष्टांगसंग्रह - 11
काश्यप - 10 शारंगधर - 5

क्षारद्वय	सज्जीक्षार	यवक्षार			
क्षारत्रय	सज्जीक्षार	यवक्षार	सौभाग्य (टंकण)		
क्षारपंचक	सज्जीक्षार	यवक्षार	पलाशक्षार	तिलनालक्षार	मुष्कक्षार
क्षाराष्ट्रक	सज्जीक्षार	यवक्षार	पलाशक्षार	तिलनालक्षार	
	सुधाक्षार	शिखरीक्षार	चिंचाक्षार	अर्कक्षार	

अम्लवर्ग - अम्लवेतस जम्बिरीनिम्बु मातुलुगाम्ल नारंग चांगेरी अम्लिका चणकाम्ल

अम्लपंचक - अम्लवेतस जम्बिरीनिम्बु मातुलुगाम्ल नारंग निम्बुक

पंचामृत	गोक्षीर	गोदधि	गोघृत	मधु	शर्करा
पंचगव्य	गोक्षीर	गोदधि	गोघृत	गोमूत्र	गोमय

द्रावक गण - गुंजा मधु गुड सर्पि सौभाग्य गुगुलु - समभाग - धातु द्रावणार्थ

मित्रपंचक - गुंजा मधु - घृत सौभाग्य (टंकण) गुगुल - लोह द्रावणार्थ

मधुत्रय / त्रिमधुर / मधुरत्रय - घृत गुड माक्षिक

क्षीरत्रय - अर्कक्षीर वटक्षीर स्नुहीक्षीर

त्रिलोह - सुवर्ण रजत ताम्र

पंचलौह - त्रिलोह + नाग वंग

त्रिगंधक - गंधक हरताल मनशिला

अंजनत्रितय - कालांजन पुष्पांजन रसांजन

महारस - 8	अभ्रक वैक्रान्त माक्षिक विमल शिलाजतु सस्यक चपल रसक
उपरस - 8	गंधक गैरिक कासीस कांक्षी हरताल मनशिला अंजन कंकुष्ठ
साधारण रस - 8	कंपिल्लक गौरीपाषाण नवसादर कपर्दिक अग्निजार गिरीसिंदुर हिंगुल मृदरशंग
रत्न - 9	माणिक्य मौक्किक विद्रुम ताक्ष्य पुष्पराग वज्र नीलम गोमेद वैडूर्य
उपरत्न - 6	वैक्रान्त सूर्यकान्त राजावर्त चन्द्रकान्त पेरोजक स्फटिक
धातु - 7 / 9	सुवर्ण रजत ताम्र लौह वंग नाग यशद पित्तल कास्य

दोष -

1) पारद दोष – 12

1) नैसर्गिक – 3 विष वन्हि मल

2) योगिक – 2 नाग वंग

3) औपाधिक – 7 (सप्तकंचुक दोष)

1) पर्पटी (भूमीज) - कुष्ठ 2) पाटिनी (गिरीज) – जाह्नवा

3) भेदी (वारीज) – वातसंघात 4) द्रावी (नागज) – दोषाढय

5) मलकारी (नागज) – दोषाढय 6) अंधकारी (वंगज) – दोषाढय

7) ध्वांक्षी (वंगज) – दोषाढय

2) लौह दोष – 7 सप्त आयस दोष

3) ताम्र दोष – 8 अष्ट ताम्र दोष

4) रलदोष – 5 पंचरलदोष

5) वज्रदोष – 5 पंचवज्रदोष

6) मुक्ता दोष – 10 महादोष – 4 सप्तान्य दोष – 6

मूर्च्छना भेद - 4

सगन्थ मूर्च्छना	निर्गंध मूर्च्छना	अग्निमूर्च्छना	अनग्निमूर्च्छना
कज्जली	-	-	कज्जली
रससिंदुर	-	रससिंदुर	-
-	रसकर्पूर	रसकर्पूर	-
-	मुग्धरस	-	मुग्धरस
मकरध्वज		मकरध्वज	
मल्लसिंदुर		मल्लसिंदुर	
तालसिंदुर		तालसिंदुर	
शिलासिंदुर		शिलासिंदुर	
समीरपन्नग		समीरपन्नग	
रसपर्पटी		रसपर्पटी	
आरोग्यवर्धीनी			

TIERRAकल्क मे प्रक्षेप मान -

मधु घृत तैल = द्विगुण

सिता गुड = सम भाग

द्रव (दुग्धादी) = चतुर्गुण

चूर्ण मे प्रक्षेप मान -

गुड = समभाग

शर्करा = द्विगुण

मधु घृत = द्विगुण

आलोडनार्थ द्रव = चतुर्गुण

भर्जीत हिंग = न उत्क्लेदकृत



चूर्णादी में अनुपान -

वातरोग - 3 पल

पित्तरोग - 2 पल

कफरोग - 1 पल

क्वाथ में प्रक्षेप मान -

प्रक्षेप	वातरोग	पित्तरोग	कफरोग
शर्करा	1/4	1/8	1/16
मधु	1/16	1/8	1/4

जीरक गुगुलु क्षार लवण शिलाजतु हिंगु त्रिकटू - 1 शाण

क्षीर धृत गुड तैल मूत्र व अन्य द्रव - 1 तोला

वटी में प्रक्षेप प्रमाण -

1) चूर्ण की अपेक्षा सिता चनुर्गुण

2) गुड द्विगुण

3) गुगुल एवं मधु सम भाग

मोदक मे द्रव द्विगुण लेना चाहिए

वटी मात्रा - 1 कर्ष या रोग रोगी अनुसार निर्धारण

भैषज्य कल्पना व उसके पर्याय -

1) कल्क - प्रक्षेप आवाप

2) स्वरस - निर्यास

3) क्वाथ - निर्यूह श्रुत कषाय

4) चूर्ण - रज क्षोद

स्नेहपाक प्रकार एवं लक्षण - 3

स्नेहपाक प्रकार	चरकोक्त लक्षण	शारंगथरोक्त लक्षण
मृदूपाक	तुल्ये कल्केन निर्यासे	इषत्सरसस कल्कस्तु
मध्यपाक	संयाव इव निर्यासे मध्ये दर्वा विमुण्चति	कल्के नीरस कोमले
खरपाक	शीर्यमाणे तु निर्यासे	ईषतकठिण कल्कश
दग्धपाक	-	स्यादाहकृद निष्प्रयोजनः

आसवारिष्टो मे जल गुड एवं प्रक्षेपादी का मान

अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणे तुला गुडम् ।

क्षोद्रं क्षिपेद् गुडादर्थं प्रक्षेपं दशमांशिकम् ॥ शा.

आसवारिष्ट मे मान अनुक्त होने पर -

1 द्रोण जल मे - गुड 1 तुला

गुड के आधा भाग - मधु

प्रक्षेप द्रव्य - गुड का दशमांश

व्याधी मार्ग - त्रयो रोगमार्गा इति शाखा मर्मास्थिसंधि कोष्ठश्च । च.सू. 11/48

शाखामार्ग	कोष्ठमार्ग	मध्यम मार्ग
बाह्य रोगमार्ग	आभ्यंतर रोगमार्ग	मध्यम रोगमार्ग
रक्तादयो धातवः त्वक् च	महास्त्रोत, शरीरमध्य, महानिम्न आमपक्वाशय	बस्ती, हुदय, मूर्धादी मर्म अस्थी संधि व तनिबध्द स्नायुकण्डरा
गलगंड, पिंडका, अलजी, अपची चर्मकील, अधिमांस, मषक, व्यंग कुष्ठ विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रुधि	ज्वर, अतिसार, छर्दि, अलसक विसूचिका, हिकका, श्वास, कास आनाह, प्लीह, उदर विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रुधि	पक्षवध, पक्षग्रह, अपतानक, अर्दित शोष, राजयक्षमा, अस्थीसंधिशूल गुदमध्यंश शिरोरोग, हुद्रोग, बस्तीरोग

) संतर्पणोत्थ व अपतर्पणोत्थ व्याधि -

संतर्पणोत्थ व्याधि	प्रमेह, प्रमेह पिंडका, कोठ, कण्डू, कुष्ठ, पांडू, ज्वर, आमप्रदोषज विकार, मूत्रकृच्छ्र अरोचक, तन्द्रा, क्लैब्य, अतिस्थोल्य, आलस्य, गुरुगात्रता, इन्ट्रियस्त्रोरसां लेप बुधदेर्मोह, प्रमीलक, शोफ
अपतर्पणोत्थ व्याधि	देहान्विनिवर्ण ओज शुक्रमांस परिक्षय, कासानुबंधी ज्वर, पार्श्वशूल, अरोचक श्रोत्रदौर्बल्य, उन्माद, प्रलाप, हुदयव्यथा, विटमूत्रसंग्रह, जंघा उरुत्रिकसंश्चित शूल पर्वास्थिभेद, संधिभेद, वातज रोग, उर्ध्ववात

स्त्रोतोदुष्टी हेतु व लक्षण -

स्त्रोतस	दुष्टि कारण	स्त्रोतोदुष्टी लक्षण
1) प्राणवह	क्षयात् (धातुक्षय से), संधारणात् (मलमूत्रादी वेग धारण से) रौक्ष्यात् (रूक्ष आहार सेवन से) व्यायामात् क्षुधितस्य (भूखं लगनेपर व्यायाम करने अन्यैश्च दारूणैः (शक्ती से बाहर कठिन कर्म)	अतिसृष्टि, अतिवध्द, कुपित अल्पाल्प अभीक्षण (पुनः पुनः), सशब्द शूलयुक्त श्वास लेना।
2) उदकवह	औष्ण्यात् (उष्ण आहार विहार से) आमाद् (आमदोष से), भयात् (भय से) पानात् (मटयान से) अतिशुष्कान्नसेवनात् तष्ण्यायाश्वातिपिङ्नात् (तष्ण्या वेग रोकने से)	जिक्का तालु ओष्ठ कंठ क्लोम शोष पिपासा च अतिप्रवृद्धां
3) अन्नवह	अतिमात्रस्य (अतिमात्रा मे भोजन) अकाले (भोजन समय न होनेपर भोजन) अहितस्य भोजनात् (अहितकर भोजन से) वैगुण्यात् पावकस्य च (अग्नि के वैगुण्य से)	अनन्नाभिलाषा, अरोचक अविपाक छर्दि
4) रसवह	गुरु शीत अतिस्निग्ध अतिमात्रं समश्नताम् चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्	अश्रद्धा अरुचि आस्यवैरस्य अरसज्जता हुल्लास गौरव तंद्रा अंगर्मद ज्वर तम पांडुत्व स्त्रोतसाण रोध क्लैब्य साद कृशांगता अग्निनाश अयथाकाल वली पलीत
5) रक्तवह	विदाही अन्नपान, स्निग्ध द्रव उष्ण अन्नपान, भजतां चातपानलौ	कुष्ठ विसर्प पिंडका रक्तपित्त असृग्दर गुदमेद्रस्यपाक प्लीहा गुल्म विद्रुधि निलिका कामला व्यंग पिप्लवस्तिलकलका दद्रु चर्मदल श्वित्र पामा कोठास्त्रमंडल



6) मांसवह	अभिष्यंदी स्थूल गुरु भोजन भुक्त्वा च स्वपतां दिवा	अधिमांस अर्बुद मांसकील गलशालूक गलशुंडिका पूतीमांस अलजी गलगंड गंडमाला उपजिह्विका
7) मेदोवह	अव्यायामात्, दिवास्वप्नात् मेदयानां चातिभक्षणात्, वारूण्याश्रातिसेवनात्	प्रमेह पूर्वरूप - दन्तादीनां मलाढयत्वं प्राग्रूपं पाणीपादयोः दाहः चिककणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते ।
8) अस्थीवह	व्यायामात्, अतिसंक्षोभात्, अस्थनामतिविघट्टनात् वातलानां च अतिसेवनात्	अध्यस्थि, अधिदन्त, दन्तभेद दन्तशूल अस्थिशूल अस्थिविवर्णता केशलोमनखशमशु दोष
9) मज्जावह	उत्पेषाद् (कुचल जाने से) अत्यभिष्यंदात् (कफ के भर जाने से), अभिघातात्, प्रपीडनात् विरुद्धदानां च सेवनात्	रुक् पर्वणां भ्रमो मूर्च्छा दर्शनं तमस्तथा अरुषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम्
10) शुक्रवह	अकालयोनीगमनात् निग्रहात् (शुक्रवेगनिग्रहात्) अतिमैथुनात्, शस्त्रक्षाराग्निभिस्तथा	क्लैब्य, अप्रहर्षण रोगी वा क्लीबं अल्पायुः विरुपं प्रजायते न चास्य जायते गर्भः पतति प्रस्त्रवत्यपि शुक्रं हि दुष्टं सापत्यं सदारं बाधते नरम्
11) मूत्रवह	मूत्रितोदकभक्ष्य स्त्रीसेवनात् मूत्रनिग्रहात् (मूत्रवेग रोककर जल पीने से, भोजन करने से, मैथुन करने से मूत्रवेग निग्रहसे) क्षीणस्याभिहतस्य (शरीर क्षीण होने से, अभिघात से)	अतिसृष्ट अतिबद्ध प्रकुपित अल्पाल्प अभीक्षण (पुनःपुनः) वा बहल सशूल मूत्रयन्तं,
12) पुरीषवह	संधारणात् (वेगधारण) अत्यशनाद् अजीर्ण अध्यशनात् वर्चोवाहिनी दुष्यन्ति दुर्बलाग्नेः कृशस्य च	कृच्छ्रेण अल्पाल्पं सशब्दशूलम् अतिद्रवम् अतिग्रथितं अतिबहु च उपविशन्तं
13) स्वेदवह	व्यायामाद् अतिसंतापात् श्वीतोष्णाक्रमसेवनात् स्वेदवाहिनी दुष्यन्ति क्रोधशोकभयैस्तथा	अस्वेदनं अतिस्वेदनं पारूष्यमतिश्लक्षणताम् अंगस्य, परिदाहं लोमहर्षं

स्त्रोतोदुष्टी चिकित्सा -

- 1) प्राणवह स्त्रोतस - प्राणवहानां दुष्टानां श्वासिकी क्रिया । (श्वास व्याधीसमान चिकित्सा)
- 2) उदकवह स्त्रोतस - उदकवहानां दुष्टानां तृष्णोपशमनी क्रिया (तृष्णा व्याधी चिकित्सा)
- 3) अन्नवह स्त्रोतस - अन्नवहानां दुष्टानां आमप्रदोषिकी क्रिया (आमदोषनाशक चिकित्सा)
- 4) रसवह स्त्रोतस - रसजानां विकाराणां सर्वं लंघनमौषधम् ।
- 5) रक्तवह स्त्रोतस - विधिशोणितिकेऽध्याये रक्तजानां भिषग्नितम् ।
- 6) मांसवह स्त्रोतस - मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च ।
- 7) मेदोवह चिकित्सा - अष्टोनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सितम् ।
- 8) अस्थीवह स्त्रोतस - अस्थ्याश्रयाणां व्याधीनां पंचकर्मणि भेषजम् । बस्तयः क्षीरसर्पिषी तिक्तकोपहितानि च ॥
- 9) मज्जावह व शुक्रवह स्त्रोतस - मज्जशुक्रसमुत्थानं औषधं स्वादुतिककम् ।
अन्नं व्यवायव्यायामो शुद्धिः काले च मात्रया ॥
- 10) मलज रोग चिकित्सा - न वेगान्धारणीय अध्यायोक्त चिकित्सा

उपशय प्रकार	औषध	अन्न	विहार
हेतुविपरीत	शीत कफ ज्वर मे शुंथि आदि उष्ण औषध	श्रम तथा वातजन्य ज्वर मे मांसरस एवं ओदन	द्विवास्वाप से उत्पन्न कफ मे रात्री जागरण
व्याधिविपरीत	अतिसार मे स्तंभनार्थ कूटज कुष्ठ मे खदिर प्रमेह मे हरिद्रा	अतिसार मे स्तंभनार्थ मसूर	उदावर्त मे प्रवाहण
हेतुव्याधिविपरीत	वातिक शोथ मे वातहर तथा शोथहर दशमूल क्वाथ	वातिक ग्रहणी मे तक्र शीतवातोथित ज्वर मे पेया	स्निग्ध आहरसेवनोत्पन्न व दिवास्वाप से उत्पन्न तंद्रा मे रात्री जागरण
हेतुविपरीर्थकारी	पित्तप्रधान व्रणशोथ मे उष्ण उपनाह प्रयोग	पित्तप्रधान व्रणशोथ मे विदाही अन्न	वातजन्य उन्माद मे भयदर्शन
व्याधि विपरीर्थकारी	छर्दि मे वमनकारक मदनफल प्रयोग	अतिसार मे विरेचनार्थ क्षीर का प्रयोग	छर्दि मे वमनार्थ प्रवाहण
हेतुव्याधि विपरीतार्थकारी	अग्नि से दहन पश्चात अगरू सदृश्य उष्ण द्रव्य लेप विषज रोग मे विषप्रयोग	मदयपानजनीत मदात्यय रोग मे मदकारक अन्न प्रयोग	व्यायाम से उत्पन्न संमूढ वात (उरुस्तंभ) मे जल मे तैरने का व्यायाम

पर्याय -

व्याधी - आमय, गद, आतंक, यक्षमा, ज्वर, विकार, रोग, याप्ता,

स्त्रोतस सिरा, धमनी, रसायनी, नाड़ी, पथ, मार्ति, शरीरछिद्र, स्वृत असंबृत स्थानानि, आशय, निकेतहेतु -

द्विमित्त, हेतु, आयतन, प्रत्यय, उत्थान, कारण मा.नि.

कर्ता, कारक, मूल योनी (अष्टांगसंग्रह)

रूप - संस्थान, व्यंजन, लिंग, लक्षण, चिन्ह, आकृतीसंप्राप्ति - जाति, आगति

Disease and etiological agent

Plague	<i>Yersinia pestis</i>
Gonorrhoea	<i>Neisseria gonorrhoeae</i>
Chancroid	<i>Haemophilus ducreyi</i>
Brucellosis	<i>Brucella melitensis</i>
Bacterial endocarditis	<i>Streptococcus viridans</i>
	<i>Staphylococcus aureus</i>
Chaga's disease	<i>Trypanosoma cruzi</i>
Dengue	<i>Toga virus</i>
Syphilis	<i>Treponema pallidum</i>
Kala Azar	<i>Leishmania major</i>
Filariasis	<i>Wuchereria bancrofti</i>
Rabies	Rabies virus – (Arbovirus)
Viral encephalitis	Anthropod –bone – virus
Rat bite fever	<i>Spirillum minus</i>

Diagnostic tests

Dick test	Scarlet fever
Montoux test	Tuberculosis
Mistunda test	Hansan's disease
Rose water test	Rheumatoid arthritis
Widal test	Enteric fever
Shilling test	Vit B 12 deficiency
Rose Bengal card test	Brucellosis
String test	Cholera
Schiller's test	Carcinoma cervix
ITO test	Chancroid
Shick test and Elek's test	Diphtheria
Von –Pirquest test	Tuberculosis

व्रण प्रकार – 1) निज व्रण प्रकार – 15 एकदोषज द्वंद्वज द्वंद्वज+रक्तज सन्निपातज

2) आगंतुज व्रण प्रकार – 6

3) चरकानुसार साध्यासाध्यत्व भेदाने प्रकार – 20

व्रणाकृति – 4 1) आयत 2) चतुरस्त्र 3) वृत्त 4) त्रिपुटक

व्रणवस्तु – 8 (अष्टो व्रणवस्तुनि)

व्रणगंध – 8 (अष्ट व्रणगंध) –चरकानुसार

व्रणस्त्राव – 14 (चतुर्दश व्रणस्त्राव)

व्रणोपद्रव –

चरकानुसार – 16 (षोडषोपद्रव) –विसर्प, पक्षाधात, सिरास्तम्भ, अपतानक, मोह उन्माद, ज्वर इ.

सुश्रुतानुसार – 15 व्रण के – 5 व्रणित के – 10

व्रण उपक्रम – चरक – 36 सुश्रुत – 60

शस्त्रकर्म – चरक – 6 सुश्रुत – 8 वागभट – 13

अष्टविध शस्त्रकर्म

TIERRA

शस्त्रकर्म	व्याधी
छेदन	भगंदर, इलैस्मिक ग्रंथी, तिलकालक, व्रणवर्त्म, अर्बुद, अर्श, चर्मकील, अस्थीमांसगत शल्य, जतुमणि, मांससंघात, गलशुंडिका, स्नायुमांससिराकोथ, वल्मीक, शतपोनक, अधुष, उपदंश मांसकदी, अधिमांसक,
भेदन	सान्निपातज व्यतिरिक्त इतर विद्रधी, वातपित्तकफज ग्रंथी, वातपित्तकफज विसर्प, वृद्धी, विदारीका प्रमेहपिडिका, शोफ, स्तनरोग, अवमंथक, कुंभिका, अनुशायी, नाडीव्रण, वृंद, एकवृंद, पुष्करीका अलजी, प्रायः सर्व क्षुद्ररोग, तालुअपुपुट, दंतपुपुट, तुंडीकेरी, गिलायु, मेदोहेतुज बस्ती अशमरी
लेखन	वातज पित्तज कफज सान्निपातज रोहिणी, किलास, उपजिह्विका, अधिजिह्विका मेदोज रोग, दंतवैदर्घ्य,
	अर्श, मंडलकुष्ठ, मांसकंदी, मांसोन्नति,
वेधन	बहुविधा सिरा, मूत्रवृद्धी, दकोदर, पक्वगुल्म, रक्तज गुल्म, शोणितरोग, विसर्प पीडकादी.
एषण	सशल्य व उन्मार्ग नाडीव्रण

आहरण मल	तीन प्रकार की शर्करा (मूत्रशर्करा, पादशर्करा, दंतशर्करा), कर्णमिल, अश्मरी, मूढगर्भ, गुदस्थानज
विस्त्रावण	सान्निपातज व्यतिरिक्त इतर विद्रधि, कुष्ठ, वेदनायुक्त वात, एकदेशज शोफ, कर्णपाली रोग, इलीपद विषजुष्ट शोणित, अर्बुद, विसर्प, ग्रंथी, त्रय उपदंश, स्तनरोग, विदारिका, सौषिर, गलशालूक, जिह्वाकंटक, कृमीदंत, दंतवेष्टक, उपकुश, शीताद, दंतपुपुटक, पिता रक्तज व कफज ओष्ठप्रकोप प्रायः सर्व क्षुद्ररोग.
सीब्बरोग	मेदसमुथ्य रोग, भिन्न सुलिखोत गद, सद्योव्रण, चलसंधीव्यपाश्रीत रोग.

सीवनकर्म प्रकार – 4

सूची प्रकार – 3

शस्त्रकर्म व्यापद – 4

चेद प्रकार – 3

शल्य प्रकार – 2

निज आगंतुज

शल्य गती – 5

उर्ध्व अथ तिर्यक ऋजु अर्वाचीन वाग्भट – 5

अवबध्द शल्य निर्हरण उपाय – 2

अनुलोम प्रतिलोम

अनवबध्द शल्य निर्हरण उपाय – 15

यंत्र प्रकार – 6

संख्या – 101

यंत्रगुण – 6

यंत्रदोष – 12

क्षारगुण – 8

क्षादोष – 8

अग्निकर्म विधी – सुश्रुत – 4

वलय बिंदु विलेश्वा प्रतिसारण

वाग्भट – सुश्रुतोक्त 4 + अर्धचांद्र स्वस्तिक अष्टापद

यंत्रकर्म –

सुश्रुत – 24

चतुर्विंशती यंत्रकर्माणि

वाग्भट – 15

यंत्र संख्या –

यंत्रनाम	सुश्रुतानुसार		वाग्भटानुसार
1) स्वस्तिक यंत्र	चतुर्विंशति स्वस्तिक यंत्राणि	24	24
2) संदंश यंत्र	द्वे संदंश यंत्रे	2	4
3) तालयंत्र	द्वे तालयंत्रे	2	2
4) नाडीयंत्र	विशती नाड्यः	20	23
5) शलाका यंत्र	अष्टविंशती शलाका	28	34
6) उपयंत्र	पंचविंशती उपयंत्राणी	25	29

शस्त्र –

संख्या – 1) सुश्रुत – 20 विंशती शस्त्राणि

2) वाग्भट – 26 (+6 कर्णवेधन खज कूर्च सर्पमुख लिंगनाशवेधनी कर्तरी)

उपयंत्र – सुश्रुतानुसार – पंचविंशती उपयंत्राणि (25) वाग्भटानुसार – 19

अनुशस्त्र – 14 (चतुर्दश अनुशस्त्राणि) वाग्भट – 12 (शुष्क गोमय, सूर्यकांत, समुद्रफेन)

शस्त्रसंपत – 6 (शस्त्रगुण) (सुश्रुतानुसार) शस्त्रदोष – 8



शस्त्रधारा – 4

- 1) भेदनानां – मासूरी
- 2) लेखनानां – अर्धमासूरी
- 3) व्यधन विस्त्रावनानां – कैशिकी
- 4) छेदनानां – अर्धकैशिकी

पायना –

निरुक्ती – निवृत्तानां शस्त्राणां तत्क्षणात् द्रवद्रव्येषु निर्वापणं पायना । सा च तत्तद्रवप्रभावात् कर्मविशेषोत्कर्षकरी भवति । हारणचन्द्र

- 1) क्षारपायितं – शारशल्यास्थिछेदनेषु
- 2) उदकपायितं – मांसछेदनभेदनपाटनेषु
- 3) तैलपायितं – सिराव्यधनस्नायुछेदनेषु

रक्तमोक्षण वयोमर्यादा – 16 – 70 वर्ष

रक्तमोक्षण पर प्रमाण – 1 प्रस्थ = 54 तोला = 13 1/2 पल (सार्धत्रयोदशपल)

दुष्टविधा प्रकार – 20

रक्तस्तंभन उपाय – 4

मूत्रमार्गग शाल्य निर्हर्णार्थ –

- 1) सुश्रुत – बडिश
- 2) वाग्भट – सर्जफणा

बंध –

प्रकार – सुश्रुत – 14

वाग्भट – 15 (+ उत्संगी)

1) कोश	तत्र कोशां अंगुष्ठ अंगुली पर्वसु विदध्यात्
2) दाम	दाम संबाधे अंगे (संबाधे – संकटे अंगे (अडचणीची जागा)
3) स्वस्तिक	संधिकूर्चक भू स्तनांतर तलकर्णेषु स्वस्तिकम्
4) अनुवेलित	अनुवेलितं शाखासु
5) मु(प्र)तोली	गीवा मेद्रयोः मुतोली
6) मंडल	वृत्ति अंगे मंडलम्
7) स्थगिका	अंगुष्ठ अंगुली मेद्रागेषु स्थगिका
8) यमक	यमलव्रणयोः यमकम्
9) खट्वा	हनु शंख गंडेषु खट्वा
10) चीन	अपांगयोः चीनं
11) वितान	मूर्धानी वितानं
12) विबंध	पृष्ठ उदर उरःस्सु विबंधम्
13) गोफणा	चिबुक नासा ओष्ठ अंस बस्तिषु गोफणां
14) पंचांगी	जन्रुण उर्ध्वं पंचांगी
15) उत्संग	विलंबीते अंगे उत्संगी

सुश्रुतानुसार अर्श प्रकार – 6 अश्मरी – 4 भगंदर – 5 वाग्भट नुसार भंगंदर – 8

अर्श के दूष्य – चरक – त्वक मेद मांस

भगंदरी पिंडका – वाग्भट – 6

ग्रंथी प्रकार – चरक – 6 (वा. पि. क. सिराज, मांसज, मेदोज)

सुश्रुत – 5 (वा. पि. क. सिराज, मेदोज)

वाग्भट – 9 (चरकोंक 6 + अस्थीज व्रणज रक्तज)

अर्बुद प्रकार – सुश्रुतानुसार – 6

गलगंड – 3 वृद्धी – 7

उपदंश – 5 श्लीषद – 3

अन्तःविद्रधी स्थान – चरक – 9

सुश्रुत – 10 चरक ने गुद नहीं माना है ।

क्षुद्रोग –

सुश्रुत – 44 माधव – 43 वाग्भट – 36 शारंगधर – 60

स्नायुक कृमी – माधवानुसार – 8 परिकर्तिका प्रकार – काश्यपानुसार – 3

प्रमेह पिंडका – चरक – 7 , सुश्रुत – 10, वाग्भट – 10, भोज – 9 काश्यप – 8

नेत्रोग संख्या संप्राप्ति –

- 1) सुश्रुत – 76
- 2) वाग्भट / अष्टांगसंग्रह – 94
- 3) योगरलाकर / भावप्रकाश – 78
- 4) माधवनिदान – 78
- 5) चरक – 96
- 6) शारंगधर – 94

दोषभेदाने वर्गीकरण –

- | | |
|----------------|-----------------------|
| 1) वातज – 10 | 4) रक्तज – 16 |
| 2) पित्तज – 10 | 5) सान्निध्यातज – 25 |
| 3) कफज – 13 | 6) आगंतुज / बाह्य – 2 |

आश्रयभेद से वर्गीकरण –

- | | |
|-----------------------|------------------|
| 1) संधिगत – 9 | 2) बर्त्मगत – 21 |
| 3) शुक्लगत – 11 | 4) कृष्णगत – 4 |
| 5) सर्वगत – 17 | 6) दृष्टिगत – 12 |
| 7) आगंतुज / बाह्य – 2 | |

चिकित्सानुसार वर्गीकरण – (साध्य 52 का वर्गीकरण)

छेदय – 11	लेख्य – 9	भेदय – 5	वेध्य – 15	अशस्त्रकृत – 12
पर्वणी	कुंभिका	उपनाह	पूयालस	प्रक्लिन्नवर्त्म
अर्शोवर्त्म	श्लिष्टवर्त्म	कृमीग्रंथी	सिरोत्पात	अक्लिन्न वर्त्म
शुष्कार्श	पोथकी	बिसवर्त्म	सिराहर्ष	अर्जुन
वर्त्मार्बुद	वर्त्माविबंधक	लगण	अभिष्यंद – 4	शुक्तिका

सिराजाल	बहलवर्त्म	अंजननामिका	अधिमंथ – 4	पिष्टक
सिराजपिडका	श्याववर्त्म		वातपर्याय	बलासग्रथित
अर्म – 5	वर्त्मकर्दम		अन्यतोवात	अव्रण शुक्र
	वर्त्मशर्करा		सशोफ अष्टिपाक	शुष्काक्षिपाक
	उत्संगिनी		अशोफ अष्टिपाक	अम्लाध्युषित
				कफविदग्ध दृष्टि
				पित्तविदग्ध दृष्टि
				धूमदर्शी
				बाह्य/आगंतुज लिंगनाश 2

याप्य रोग – 7

‘6 प्रकार के काच (वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, सान्निपातज, परिम्लायी)
पक्षमकोप

असाध्य / वर्ज्य रोग – 15

वातविकृती से उत्पन्न – 4 = हताधिमंथ, निमेष, गम्भिरिका, वातहत वर्त्म,
पित्तविकृती से उत्पन्न – 2 = ह्लस्वजाइ, पित्तज स्त्राव
कफविकृती से उत्पन्न – 1 = कफज स्त्राव
रक्तविकृती से उत्पन्न – 4 = रक्तजस्त्राव, अजकाजात, शोणितार्श, सत्रण शुक्र,
त्रिदोष विकृती से उत्पन्न – 4 = पूयास्त्राव, नकुलान्ध्य, अष्टिपाकात्यय, अलजी
बाह्यज – 2 सनिमित व अनिमित लिंगनाश

संधिगत रोग – 9

पूयालस	त्रिदोषज	कृमीग्रंथी	त्रिदोषज
पूयास्त्राव	त्रिदोषज ?	पर्वणी	रक्तज
रलेष्मास्त्राव	कफज	उपनाह	कफज
पित्तस्त्राव	पित्तज	अलजी	त्रिदोषज + रक्त
रक्तास्त्राव	रक्तज		

वर्त्मगत रोग – सुश्रुत – 21

बागभट – 24

TIERRA

उत्संगिनी	त्रिदोषज, वा. – रक्तज	श्याववर्त्म	त्रिदोषज
कुम्भिका	त्रिदोषज वा. पित्तज	प्रक्लिन्न वर्त्म	कफज
पोथकी	कफज वा. कफज	अक्लिन्न वर्त्म	त्रिदोषज
वर्त्मशर्करा	त्रिदोषज	वातहत वर्त्म	वातज
अशोवर्त्म	त्रिदोषज	वर्त्मार्बुद	त्रिदोषज
शुष्कार्श	त्रिदोषज	निमेष	वातज
अंजननामिका	रक्तज	शोणितार्श	रक्तज
बहलवर्त्म	त्रिदोषज	लगण	कफज
वर्त्मावबंध	त्रिदोषज	बिसवर्त्म	त्रिदोषज वा. त्रिदोषज
क्लिष्टवर्त्म	रक्तज	पक्षमकोप	त्रिदोषज
वर्त्मकर्दम	त्रिदोषज		

शुक्लगत रोग – सुश्रुत – 11 वाग्भट – 13

प्रस्तारी अर्म	त्रिदोषज	अर्जुन	रक्तज
शुक्लार्म	कफज	पिष्ठक	कफज
लोहितार्म	रक्तज	सिराजाल	रक्तज
अधिमांसार्म	त्रिदोषज	सिराज पिडका	त्रिदोषज
स्नाय्वार्म	त्रिदोषज	बलासग्रथीत	कफज
शुक्लिका	पित्तज		

वाग्भटोक – 12) सिरोत्पात – रक्तज

13) सिराहर्ष – रक्तज

कृष्णगत रोग – सुश्रुत – 4 वाग्भट – 5

सव्रण शुक्र	रक्तज	अजकाजात	रक्तज
अव्रण शुक्र	रक्तज	अक्षिपाकात्यय	त्रिदोषज
वाग्भटोक –			
क्षतशुक्र	पित्तज	अजकाजात	रक्तज
शुद्धशुक्र	कफज	तीव्रवेदन	त्रिदोष + रक्त
सिराशुक्र	त्रिदोष + रक्त		

सर्वगत रोग – सुश्रुत – 17

वाग्भट – 16

अधिमंथ व अभिष्यंद प्रत्येकी – 4

हताधिमंथ	वात	सिरोत्पात	रक्त
वातपर्यायि	वात	सिराहर्ष	रक्त
अन्यतोवात	वात	शुक्राक्षिपाक	वात वा. – वातपित्त
आम्लाध्युषित	पित्त	सशोफ अक्षिपाक	त्रिदोष
		अशोफ अक्षिपाक	त्रिदोष

वाग्भटोक अक्षिपाकात्यय – रक्तज

दृष्टिगत रोग – सुश्रुत – 12

वाग्भट – 27

लिंगनाश – 6

वापिकसा रक्तज

परिम्लायी – पित्त + रक्त

पित्तविदग्ध दृष्टी	पित्त	हस्वजाइय	पित्तज
कफविदग्ध दृष्टी	कफ	नकुलान्त्य	त्रिदोषज
धूमदर्शी	पित्त वा. – त्रिदोष	गांभीरीका	वातज

अधिमंथ मारकता –

अधिमंथ	सुश्रुत	वाग्भट
वातज	6 दिवस	5 दिवस
पित्तज	सद्य	
कफज	7 दिवस	7 दिवस
रक्तज	5 दिवस	3 दिवस

नासारोग संख्या संप्राप्ती-

सुश्रुत- 31 अष्टांगसंग्रह/वागभट/शा. - 18 चरक- 17 माधव/यो.र./भाष्म- 34

नासारोग	सुश्रुत	वागभट
अपीनस	वातकफ	कफज
पूतीनस्य	त्रिदोष + रक्त	वात + कफ
नासापाक	पित्त	त्रिदोषज
भ्रंशाथु	पित्त + कफ	
दीप्त	पित्त	रक्त + पित्त
नासाप्रतिनाह	वात + कफ	
नासापरिस्त्राव	कफ	
नासाशोष	वात + पित्त	वात
क्षवथु	वात + कफ	वात

पुटक – वागभट – त्रिदोष

दुष्टप्रतिशयाय – सुश्रुतानुसार – कष्टसाध्य वागभटानुसार – याव्य

नाराश्वर व नासाशोथ – प्रत्येकी – 4 नासाबुद्द – 7

शिरोरोग संख्या संप्राप्ती –

चरक संहिता

5

सुश्रुत संहिता

11

वागभट

शिरोरोग-10

कपालगत – 9

वापिकसा रक्तज शिरोरोग – तत तत दोषानुसार अधिक्य

क्षयज शिरोरोग – वातज कृमीज शिरोरोग – त्रिदोष + रक्त (वागभट)

सूर्यावर्त – सुश्रुत – त्रिदोषज

अर्थावभेदक – सुश्रुत – त्रिदोषज

वागभट – पित्तानुबंधी वात

वागभट – वातज

चरक – वात + रक्त

चरक – वात + कफ

अनन्तवात – त्रिदोषज (सु.)

शंखक – सुश्रुत – वातप्रथानत्रिदोष + रक्त

वागभट – पित्तप्रथान त्रिदोष+ रक्त

चरक – वात + पित्त + रक्त

कपालगत व्याधि –

1) उपशीर्षक – वात

2) अरूषिका – कफ + रक्त + कृमी (सु. वा)

3) दारूणक – वात+कफ (सु.)

4) इन्द्रलुप्त / खालीत्य – त्रिदोष + रक्त

5) शीर्षक – सान्निपातज (ड.)

कर्णरोग संख्या संप्राप्ती –

1) सुश्रुत – 28

2) वागभट – 25

कर्णगत – 15

कर्णपालीगत – 10 परिपोट उत्पात उन्मथ दुःखवर्धन परिलेही कूचीकर्णक कर्णपिप्पली
विदारिका पालीशोष तंत्रिका

3) चरक – 4 वातज पित्तज कफज सान्निपातज

कर्णपाली रोग – सुश्रुत – 5 वाग्भट – 10

कर्णसंधान विधि – 15 साध्य – 10 असाध्य – 5 (पंचदश कर्णसंधान विधि)

कर्णशूल	वात	कर्णस्त्राव	वातज
कर्णनाद	वातज	पूतीकर्ण	पित्त + कफ
कर्णक्ष्वेड	वातज	कृमीकर्ण	ड. – त्रिदोषज
कर्णबाधीर्य	वात + कफ	कर्णकण्डू	कफज
कर्णविद्रुधि	त्रिदोषज	कर्णगृथक	कफ + पित्त
कर्णपाक	पित्तज	कर्णप्रतिनाह	त्रिदोष (सु), वातकफज (वा)

मुखरोग संख्या संप्राप्ति –

सुश्रुत 65 वाग्भट – 75 योगरत्नाकर – 67 शारंगधर – 74 चरक – 64 मानि = 65

ओष्ठगत – सुश्रुत = 8 वाग्भट = 11 दंतमूलगत – सुश्रुत = 15 वाग्भट = 13

दंतगत – सुश्रुत = 8 वाग्भट = 10 जिव्हागत – सुश्रुत = 5 वाग्भट = 6

तालुगत – सुश्रुत = 9 वाग्भट = 8 कंठगत – सुश्रुत = 17 वाग्भट = 18

1) ओष्ठगत रोग – वापिकसा रक्तज मांसज व मेदोज मे तत दोषदुष्टी

अभिघातज – कफ + रक्त

सान्निपातज मांसज मेदोज – असाध्य

वाग्भटोक – अधिक 3 खण्डौष्ठ – वात

जलाबुद्द – वात + कफ

अबुद्द – असाध्य

2) जिव्हागत रोग – वातज पित्तज कफज जिव्हाकंटक – तत तत दोषानुसार

जिव्हागत रोग	सुश्रुत	वाग्भट
अलास	कफ + रक्त ड. – त्रिदोषज	कफ + पित्त
उपजिव्हिका	कफ + रक्त	कफ + पित्त + रक्त
अधिजिव्हिका – सु. कंठगत	कफ + रक्त	कफ + पित्त + रक्त

3) दंतगत रोग –

दंतगत व्याधी	दोषाधिक्य	साध्यासाध्यत्व
दालन	वात	असाध्य
कृमीदन्त	वात	साध्य
दन्तहर्ष	वात	साध्य वा. – याप्य
भण्जनक	वात + कफ	साध्य वा. – याप्य
शर्करा	वात	साध्य
कपालिका	वात	कष्टसाध्य वा. – साध्य
इयावदन्त	रक्त + पित्त रक्त + पित्त+वात (वा)	असाध्य
हनुमोक्ष	वात	साध्य
दन्तचाल (वा.)	वात	साध्य
कराल (वा.)		असाध्य

दन्तमूलगत व्याधी -

दन्तमूलगत व्याधी	दोषाधिक्य	साध्यासाध्यत्व	
शीताद	कफ + रक्त	साध्य	
दन्तपुपुट	कफ + रक्त	साध्य	
दन्तवैष्ट	रक्त	साध्य	
शौषिर	कफ + रक्त	पित्त + रक्त (वा)	साध्य
महाशौषिर	त्रिदोष		असाध्य
परिदर	कफ + रक्त + पित्त	साध्य	
उपकुश	पित्त + रक्त	साध्य	
दन्तवैदर्भ	वात + पित्त	साध्य	
वर्धन / अधिदन्त (वा)	वात		
अधिमांस	कफज	साध्य	

दतविद्रूधी – वाग्भटोक – त्रिदोष + रक्त – साध्य

तालुगत रोग -

तालुगत रोग	दोषाधिक्य	साध्यासाध्यत्व
गलशुंडिका	कफ + रक्त	साध्य
तुण्डिकेरी	कफ + रक्त	साध्य
अधुष	रक्त	साध्य
कच्छप	कफ	साध्य
अर्बुद	रक्त	असाध्य
मांससंधात	कफ	साध्य
तालुपुपुट	कफ	साध्य
तालुशोष	वात + पित्त	साध्य
तालुपाक	पित्त	साध्य

कंठगत रोग -

वातज पित्तज कफज सान्निपातज व रक्तज राहिणी – तत तत दोषाधिक्य

कंठगत रोग	दोषाधिक्य	साध्यासाध्यत्व
कंठशालूक	कफ (सु) कफप्रधान त्रिदोष (वा)	
अधिजिह्वा	कफ + रक्त	
बलय	कफ	असाध्य
बलास	वात + कफ	असाध्य
एकवृद्ध	कफ + रक्त	साध्य
वृद्ध	पित्त + रक्त	असाध्य (सु) साध्य (वा)
शतघ्नी	त्रिदोषज	असाध्य
गिलायु	कफ + रक्त	शस्त्रसाध्य
गलविद्रूधी	त्रिदोषज	साध्य
गलौघ	कफ + रक्त	असाध्य
स्वरध्न	वात + कफ	असाध्य
मांसतान	त्रिदोषज	असाध्य
विदारी	पित्त	असाध्य

दौहुद काल -

- 1) चरक काश्यप अष्टांगसंग्रह, हारीत – तृतीय मास
- 2) अष्टांगहृदय – द्वितीय मास
- 3) सुश्रुत, भावप्रकाश – चतुर्थ मास

गर्भनालछेदन – अर्धधार नामक शस्त्र से

- 1) चरक व सुश्रुत – 8 अंगुल अंतर पर
- 2) वाग्भट – 4 अंगुल अंतर पर

मासानुमासिक वृद्धी – सुश्रुत

- 1) तृतीय मास – इन्द्रिया सूक्ष्म
- 2) चतुर्थ मास – इन्द्रिया प्रव्यक्त
- 3) सप्तम मास – इन्द्रिया प्रव्यक्ततर

शारंग्धरानुसार गर्भव्यापद – 8

स्तन्यदोष --	चरक – 8	सुश्रुत – 4	हारीत – 5
शुक्रदोष --	चरक – 8	सुश्रुत – 11 (साध्य – 4, कष्टसाध्य – 5 असाध्य – 2)	
आर्तव दोष -- 8 (सुश्रुत)			
आर्तव काल -- चरक – 5 रात्रि,		सुश्रुत – 3 वाग्भट – 3 हारीत – 7	
ऋतुकाल -- चरक व सुश्रुत – 12 दिन (गणना मासिक स्त्राव के अंतिम दिन से)			
वाग्भट व भावप्रकाश – 16 दिन (गणना मासिक स्त्राव के प्रथम दिन से)			
रजोदर्शन आयु -- सुश्रुत – 12 वर्ष			काश्यप व भावप्रकाश – 16 वर्ष

सूतिका काल --

- 1) चरक – वर्णात नही
- 2) सुश्रुत – 45 दिन / अर्धधर्थ मास
- 3) वाग्भट – 45 दिन
- 4) काश्यप – 6 मास

5) भावप्रकाश – 45 दिन / 4 मास
6) हारीत – 45 दिन

क्लैब्य --	चरक – 4	सुश्रुत – 6
नपुंसक --	सुश्रुत – 5	भावप्रकाश – 7
मूढगर्भभेद -- 4 (सुश्रुत)		मूढगर्भ गती – 8

वय विभाजन --

- 1) चरक – अ) बाल – 0 – 30 वर्ष
 - 1) अपरिपक्व धातु – 1 – 16
 - 2) परिपक्व धातु – 16 – 30
 - ब) मध्यम – 30 – 60 वर्ष
 - क) जीर्णावस्था – 60 – 100 वर्ष
- 2) सुश्रुत – अ) बाल = 1 – 16
 - 1) क्षीरप – 1 वर्ष तक
 - 2) क्षीरान्नाद – 2 वर्ष तक
 - 3) अन्नाद – 2 – 16 वर्ष तक

- ब) मध्यम = 16 – 70 वर्ष 1) वृद्धी – 20 वर्ष तक
 2) यौवन – 30 वर्ष तक
 3) पूर्णता – 40 वर्ष तक
 4) हानी – 40 – 70 वर्ष तक

क) वृद्धावस्था – 70 वर्ष से ऊपर

अष्टांगसंग्रह व हुदय – वृद्धावस्था – 70 वर्ष से ऊपर

नामकरण संस्कार – चरक – 10 वे दिन सुश्रुत – 10 वे दिन अष्टांगसंग्रह – 10 वे या 12 वे दिन
 अष्टांगहुदय – 10 वे दिन

सीमन्तोनयन संस्कार – चतुर्थ मास

निष्क्रमण संस्कार – चतुर्थ मास

अन्नप्राशन संस्कार – सुश्रुत – 6 वा मास काश्यप – 6 वे मास में फलप्राशन अन्नप्राशन – 10 वा मास

चूडाकर्म संस्कार – जन्मपश्चात् = 3-5 वर्ष

कर्णविधन संस्कार – प्र्योजन – रक्षाभूषण निमित्त

सुश्रुत – 6/7 वे मास में बालक रक्षार्थ दैवकृत छिद्र स्थाने वेधन शुक्ल पक्ष में

वाग्भट – 6/7/8 वे मास में शिशिरागम पर

उपवेशन संस्कार – काश्यप – षष्ठि मास में

अष्टांगसंग्रह – पंचमे मासि पुण्ये अहनि धरण्यमुपवेशयेत्।

दंतोत्पत्ति प्रकार – 4

मूढगर्भ प्रकार – सुश्रुत – 4

हारीत – 8 (दोषज मूढगर्भ)

सुश्रुतानुसार मूढगर्भ गति – 8

ग्रहबाधा –

संख्या – 1) चरक – ग्रहोन्माद यह एक प्रकार

2) सुश्रुत – 9

1) स्कन्द 2) स्कन्दापस्मार 3) पूतना 4) अन्धपूतना 5) शीतपूतना

6) शकुनि

7) रेवती

8) नैगमेय

9) मुखमंडिका

3) वाग्भट – 12

पुरुष शारीरधारी – 5

स्त्री शारीरधारी – 7

1) स्कंद

1) शकुनि

2) स्कन्दापस्मार / विशाख

2) पूतना

3) मेष / नैगमेष

3) शीतपूतना

4) श्वग्रह

4) अन्धपूतना

5) पितृग्रह

5) मुखमंडिका

6) रेवती

7) शुष्करेवती

वाग्भटानुसार प्रमुख ग्रह – स्कंद ग्रह

काश्यपानुसार प्रमुख ग्रह – रेवती ग्रह – नाम – 20

- 1) वारूणी 2) माता 3) रेवती 4) शीतवती 5) ब्राह्मणी 6) कण्डु 7) कुमारी 8) पुतना
 9) बहुपुत्रिका 10) विरुद्धिका 11) शुष्का 12) रोदनी 13) घष्टी 14) भूतमाता 15) यमिका
 16) लोकमातामहि 17) धरणी 18) शरण्या 19) मुखमंडिका 20) भूतकिर्ति

रावणकृत बालतंत्र – 12

- 1) नन्दा 2) सुनन्दा 3) पूतना 4) मुखमंडिका 5) कटपूतना 6) शकुनिका
 7) शुष्करेवती 8) आर्यका 9) स्वस्तिमातृका 10) नित्रप्रतामातृका 11) पिलीपिच्छिका 12) कामुकामातृका
 यह ग्रह प्रथम दिन, प्रथम मास, प्रथम वर्ष, द्वितीय दिन, द्वितीय मास, द्वितीय वर्ष इस तरह 12 वर्षतक ग्रासते हैं

हारीतोक ग्रह – 8

- 1) लोहिता 2) शकुनि 3) रेवती 4) शिवाग्रह 5) वायसी 6) उर्ध्वकेशी 7) कुमारी 8) सेना
 यह ग्रह प्रथम ते आठ दिन तक ग्रासते हैं।

योगरत्नाकर – 9

- 1) स्कन्द 2) स्कन्दापस्मार 3) शकुनि 4) रेवती 5) पूतना 6) गंधपूतना 7) शीतपूतना
 8) मुखमंडिका 9) नागमेय

ग्रहबाधा पूर्वरूप –

तेषां ग्रहिष्यतां रूपं प्रततं रोदनं ज्वरः । अ. स. ३. ३/१२

स्नेह प्रविचारणा – चरक – 24

वाग्भट – रसानुसार – 64

काश्यप – 20

वमन – विरेचन शुद्धी बोधक सारणी

शुद्धी	प्रवर शोधन	मध्यम शोधन	जघन्य शोधन
वमन			
वेगिकी	8 वेग	6 वेग	4 वेग
मानिकी	2 प्रस्थ	1 1/2 प्रस्थ	1 प्रस्थ
आन्तिकी	पित्तान्त	पित्तान्त	पित्तान्त
विरेचन			
वैगिकी	30 वेग	20 वेग	10 वेग
मानिकी	4 प्रस्थ	3 प्रस्थ	2 प्रस्थ
आन्तिकी	कफान्त	कफान्त	कफान्त

वमन वेग प्रतिक्षा – 1 मुहुर्त

निरूह प्रत्यागम काल – 1 मुहुर्त

अनुवासन प्रत्यागम काल -- 3 याम

मात्रा बस्ती पीडन काल – 30 मात्रा

निरूह उत्तम मात्रा – 12 प्रसूत = 8 पल = 96 तोले

स्नेहबस्ती – मात्रा – निरूह के पादावकृष्ट (चतुर्थांश)

डल्हणानुसार स्नेहबस्ती मात्रा – उत्तम मात्रा – 6 पल (24 तोला)

मध्यम मात्रा – 3 पल (12 तोला)

हस्त मात्रा – 1 1/2 पल (6 तोला)

चक्रपाणीनुसार बस्ती मात्रा 1) स्नेह बस्ती – 6 पल

2) अनुवासन बस्ती – 3 पल

3) मात्रा बस्ती – 1 1/2 पल

मात्रा बस्ती - हस्वाया स्नेहमात्राया : मात्राबस्ति: समो भवेत् । च. सि. 4/53

आभ्यंतर स्नेहपान की हस्व मात्रा

नाम दोष	चरक	सुश्रुत
1) बस्ती नेत्र दोष	8	11
2) बस्ती पुटक दोष	8	5
3) बस्ती दाता दोष	10	6 (प्रणिधान दोष)
4) बस्ती दोष	12	-

उत्तरबस्ती -

नेत्रछिद्र - पुरुष - सर्षपसम (च.) सिद्धर्थकसम (वा.) स्त्रीयोमे- मुदगसम (च./वा.)

लांबी - पुरुष - 12 अंगुल (च./वा.) , 14 अंगुल (सु.) स्त्रीयोमे- 10 अंगुल

स्त्रीयो मे नेत्रप्रवेशन - अपत्यमार्ग मे - 4 अंगुल मूत्रमार्ग मे - 2 अंगुल बालिका मूत्रमार्ग- 1 अंगुल

बस्तीद्रव्य प्रमाण -

1) पुरुषा मे - 1) चरक = आधा पल (2 तोला)

2) सुश्रुत = स्नेहमात्रा 1 प्रकुंच (4 तोला) ; 25 वर्ष से अल्प वय मे वैदय अपनी बुधी से करे ।
3) वाग्भट- 1 शुक्ति (2 तोला)

2) स्त्रीयो मे - 1) चरक - निर्देश विधी मे वर्णन

2) सुश्रुत - स्नेहमात्रा स्वांगुलीमूलसमितम् (1 प्रसृत / अंजली)

गर्भाशय शोथनार्थ स्नेह से द्विगुण (उपरोक्त 1 प्रसृत से द्विगुण)

क्वाथ स्वरूप मे देनी हो तो 1) पुरुष मे - 1 प्रसृत 2) स्त्रीयो मे 2 प्रसृत

12 वर्ष से कम वय कन्या मे मूत्राशयगत उत्तरबस्ती मात्रा - 1 प्रसृत

3) वाग्भट - स्त्रीयो मे मध्यम मात्रा - 1 प्रकुंच (4 तोला)

बालिका - 1 शुक्ति (2 तोला)

बस्ती संख्या आधार पर बस्ती भेद

बस्ती प्रकार	आदि	मध्य	अन्त
कर्म बस्ती (30)	1 अनुवासन	12 अनुवासन व 12 निरूह	5 अनुवासन
काल बस्ती (16च)(15वा)	1 अनुवासन	6 अनुवासन व 6 निरूह	3 अनुवासन
योग बस्ती (8)	1 अनुवासन	3 अनुवासन व 3 निरूह	1 अनुवासन

प्रतिमर्श नस्य मात्रा - 2 बंदु

मर्श नस्य मात्रा - उत्तम - 10 बिंदु

मध्यम - 8 बंदु

हीन - 6 बिंदु

महादोषकर भाव संख्या - 8

शिलाजतु प्रयोग -

प्रयोग	कालावधी	मात्रा
उत्तम	7 सप्ताह	1 पल (4 तोला)
मध्यम	3 सप्ताह	1/2 पल (2 तोला)
अवर	1 सप्ताह	1 कष्ठ (1 तोला)

वर्धमान पिप्पली संख्यानुसार -

1) उत्तम बल - 10 पिप्पली 2) मध्यम बल - 6 पिप्पली 3) दुर्बल - 3 पिप्पली

रसायनपाद क्रम - 1) अभयामलकीय रसायनपाद 2) प्राणकामीय रसायनपाद

3) करप्रचितीय रसायनपाद 4) आयुर्वेद समुत्थानीय रसायनपाद

वाजीकरण अध्याय क्रम - 1) संयोगशरमूलीय 2) आसिक्कीरिकं वाजीकरण पाद

3) माषपर्णभृतीय वाजीकरण पाद 4) पुमाणजातबलादिकं वाजीकरण पाद

सुश्रुतानुसार रसायन सेव अयोग्य पुरुष - 7

मैथुन योग्य आयु - 16 - 70

चरकनुसार शुक्रक्षय कारण - 6

चरकानुसार शुक्रप्रवृत्ति कारण - 8

शास्त्रानुसार जातहारिणी भेद - 3

1) साध्य - 10

2) याप्य - 16 3) असाध्य - 8

लोकभेद से जातहारिणी प्रकार - 3 1) दैवी 2) मानुषी 3) तिरशीन

काश्यपानुसार यूष संख्या - 25 यूष योनी (उत्पत्ति) - द्रव (द्रवयोनयः)

यूष प्रकार (रसानुसार) - 3

1) कषायमधुर

2) कषायाम्ल

3) अम्ल

स्नेहयोगनुसार प्रकार - 3

1) कृत 2) अकृत 3) कृताकृत

कर्मानुसार यूष भेद - 3

1) पाचन

2) कर्षण

3) बृंहण

दोषभेदानुसार यूष प्रकार - $25 * 3 = 75$

यापनानुसार भेद - साध्य याप्य असाध्य नुसार = 75

रसाश्रयानुसार = 50

पंचकर्मार्थ प्रयुक्त यूष - 5

संहिता / कायचिकित्सा -

हुद्रोग प्रकार -

1) चरक - 5 वापिकसा कृमीज

2) सुश्रुत - 4 चरकसमान (केवल सान्निपातज नहीं माना है)

शोथ उपद्रव -

1) चरक - 7 2) सुश्रुत - 9

अग्न्य द्रव्य -

1) चरक - 152 2) अष्टांग संग्रह - 155 अष्टांगहुदय - 55



उदावर्त - चरक - 6 सुश्रुत - 13 काश्यप - 6

उन्माद -

1) चरक - 5 (वापिकसा, अगन्तुज)

2) सुश्रुत - 6 (चरकोक्त 6 + विषज)

श्लीपद - चरक - 1 सुश्रुत - 3

पाण्डु भेद - चरक - 5 (वापिकसा मृदभक्षणजन्य)

सुश्रुत - 4 (पानकी लाघरक अलसाख्य पाण्डु के पर्याय माने हैं)

माधव - 5 चरकनुसार

हारीत - 8 चरकोक्त 5 + कामला + हलिमक

हिकका भेद - 1) चरक - 5 (अन्नजा व्यपेता ध्रुद्धिकका महाहिकका गंभीरा)

2) सुश्रुत - 5 (चरकोक्त व्यपेता के स्थान पर यमला मानते हैं)

अतिसार भेद - 1) चरक - 6 (वापिकसा भयज शोकज)

2) सुश्रुत - 6 (चरकोक्त भयज के स्थान पर आमज माना है)

3) वाग्भट - 6 चरकनुसार

विसर्प भेद - 1) चरक - 7 (वापिकसा आग्नेय ग्रन्थी कर्दम)

2) सुश्रुत - 5 (वापिकसा क्षतज)

तृष्णा भेद - 1) चरक - 5 (वातज पित्तज आमज उपसर्वज क्षयज)

2) सुश्रुत - 7 (वातज पित्तज कफज आमज क्षतज क्षयज भक्तनिमित्तज)

मूर्च्छा - चरक - 4, सुश्रुत - 6, माधव - 6

मूत्राधात - चरक - 8/13, सुश्रुत - 12, माधव - 13, वाग्भट - 20

स्वज्ञ भेद - चरक - 7, काश्यप - 10

सारता - चरक - 8 काश्यप - 9 (ओजसार अतिरिक्त माना है)

मदनफल योग - चरक - 133 सुश्रुत - 31

विषमज्ज्वर भेद - चरक - 5, काश्यप - 7

विषमज्ज्वर धातुगतत्व	चरक	सुश्रुत
संतत	रसगत	संतत - रसगत
सतत	रक्तगत	सतत - रक्तगत
अन्येद्युष्क	मेदोगत	अन्येद्युष्क - मांसगत
तृतीयक - चतुर्थक	अस्थीमज्जागत	तृतीयक - मेदोगत
-----	-----	चतुर्थक - अस्थीमज्जागत

चरकनुसार श्विन् धातुगतत्व -

1) तक्तगत - रक्तवर्णी

2) मांसगत - ताम्रवर्णी

3) मेदोगत - श्वेतवर्णी

द्रव्यसंग्रह –

कुष्ठ (सप्तको द्रव्यसंग्रहः)	विसर्प (विज्ञेया सप्तधातवः)
त्रिदोष	त्रिदोष
त्वक	त्वक
रक्त	रक्त
मांस	मांस
अम्बु	लसिका

शुक्रदोष –

1) चरक – 8 (अष्टौ रेतोदोषाः)

फेनिल	तनु	रुक्ष	विवर्ण	पूर्ती	पिच्छिल	अन्यथातुपसंसृष्ट
-------	-----	-------	--------	--------	---------	------------------

2) सुश्रुत – 11

वातज	पितज	कफज
------	------	-----

रक्तज – कुणपगंधी

ग्रंथीभूत – वातकफज

पूर्तीपूय – पितकफज

क्षीण – वातपित्तज

मूत्रपुरीषगंधी – त्रिदोषज

कष्टसाध्य – कुणपगंधी, पूर्तीपूय, क्षीण

असाध्य – मूत्रपुरीषगंधी

साध्य – वातज पित्तज कफज

निद्रा – तम + कफ	तंद्रा – तम + कफ + वात
------------------	------------------------

भ्रम – वात + पित + रज	मूच्छा – पित + तम
-----------------------	-------------------

चरकानुसार मूलिनी – 16	फलिनी – 19
-----------------------	------------

सुश्रुतानुसार कुष्ठ मे पंचकर्म अंतराल

TIERRA

1) वमन – 15 – 15 दिन (पक्षात)

2) विरेचन (स्त्रंसन) – 1 मास

3) नस्य – 3 दिन

4) रक्तमोक्षण – 6 मास (संवस्तर मे दो बार)

अस्थी विकृती –

- 1) तरुणास्थिनी – नम्यन्ते
- 2) नलकास्थि – भज्यन्ते
- 3) कपालास्थिनी – विभिदयन्ते
- 4) रुचकास्थि – स्फुटन्ति
- 5) वलयास्थि – स्फुटन्ति

न्याय चन्द्रिका – / बृहत पंजिका – गयदास कृत सुश्रुत संहिता पर टीका

पदार्थ चन्द्रिका – चन्द्रनदनकृत अष्टांगहुदय पर

चरक चन्द्रिका – गयदासकृत चरक संहिता पर



ANNEXURE – 2

कषाय कल्पना –

- 1) चरक – 5 स्वरस, कल्क, शृत शीत फांट
- 2) सुश्रुत – 6 क्षीर, रस (स्वरस), कल्क, शृत, शीत, फांट (क्षीर कल्पना अलग)
- 3) काश्यप – 7 चूर्ण शीत स्वरस अभिषव (मद्य) फांट कल्क क्वाथ
चूर्ण व अभिषव अधिक मानी है।

कुक्षि भेद – चरक – 3 वाग्भट – 4, काश्यप – 4

आवरण भेद – चरक – 42. वाग्भट – 22, माधव – वर्णन नहीं किया

मैथुन निषिद्ध रात्र – सुश्रुत – प्रथम 3 दिन व 13 वीं रात्र, वाग्भट – प्रथम 3 दिन व 11 वीं व 13 वीं रात्र

मद्य गुण – चरक – 10, सुश्रुत – 8, वाग्भट – 10

मद अवस्था – चरक व सुश्रुत – 3 माधव – 4

गर्भिणी मे यवागु देने का विधान – चरक – 8 वा मास, सुश्रुत – 6 वा मास,

गर्भिणी मे यवागु –

सुश्रुत – अष्टम मास मे गर्भिणी को अनुवासन व आस्थापन

चरक – नवम मास मे गर्भिणी को केवल अनुवासन

गर्भनालछेदन – अर्धधार नामक शस्त्र से

चरक व सुश्रुत – 8 अंगुल अंतर पर वाग्भट – 4 अंगुल अंतर पर

दन्तोद्ब्रेद काल – काश्यप – 4-8 मास, वाग्भट – 8 मास

कृमी प्रकार –

चरक

4 भेद

मलज – 2

पुरीषज – 5

कफज – 7

20

सुश्रुत

3 भेद

पुरीषज – 5

रक्तज – 7

कफज – 6

20

वाग्भट

बहिर्मलजन्य – 2 भेद

कफज – 7

रक्तज – 6

पुरीषज – 5

20

सुश्रुतानुसार कुल बस्ती दोष – 76

1) वैद्यनिमित्त – 44

2) आतुरनिमित्त – 15

3)

4) स्नेह वापस न आने के कारण – 8

पूटपाक –

1) दोषानुसार – कफज रोग मे – 1 दिन

पित्तज रोग मे – 2 दिन

वातज रोग मे – 3 दिन

2) पुटपाक (कर्मानुसार)

1) लेखन – 1 दिन तक = 100 मात्रा तक धारण

2) स्नेहन पुटपाक – 2 दिन तक = 200 मात्रा तक धारण

3) रोपण पुटपाक – 3 दिन तक = 300 मात्रा तक धारण

सेक (पुटपाक से दुगुना काल)

- 1) लेखन – 200 मात्रा तक धारण
- 2) स्नेहन – 400 मात्रा तक धारण
- 3) रोपण – 600 मात्रा तक धारण

आश्वेतन –

- 1) लेखन – 7 या 8 बिंदु
- 2) स्नेहन – 10 बिंदु
- 3) रोपण – 12 बिंदु

शिरोबस्ती धारण काल तर्पण से 10 गुणा होता है

अंजन –

गुटिकांजन व रसांजन की मात्रा

- लेखन – 1 हरेणु
- प्रसादन – 1 1/2 हरेणु
- रोपण – 2 हरेणु

चूर्णांजन की मात्रा

- 2 शलाका
- 3 शलाका
- 4 शलाका

अंजन पात्र –

रस	पात्र
मधुर	सुवर्ण
अम्ल	रजत
लवण	मेषशंग
कट्टू	वैदूर्य
तिक्ति	कास्य
कषय	ताम्र / लोह

अंजन शलाका –

लंबी – 8 अंगुल

स्वरूप – वक्त्रयोर्मुकुलाकारा कलायपरिमंडला

कर्मानुसार अंजनशलाक – 1) लेखन कर्मार्थ – ताम्रशलाका

2) रोपण कर्मार्थ – लोह शलाका या अंगुली

3) प्रसादन व स्नेहनार्थ – सुवर्ण या रजत

मृदूत्वात् अंगुली एव प्रधानम् ।

श्रेष्ठ काल – 1) तर्पणार्थ – पूर्वान्ह व अपरान्ह

2) सेक व आश्वेतनार्थ – पूर्वान्ह मध्यान्ह व अपरान्ह

3) शिरोबस्ती – सायंकाल

मानस प्रकृति	चरक	सुश्रुत	काश्यप
1) सात्विक	7	7	8
2) राजस	6	6	7
3) तामस	3	3	3
कुल	16	16	18

वर्धमान पिप्पली रसायन –

चरक – रसायन	सुश्रुत – वातरक्त	काश्यप – राजयक्षमा व शोथ
मात्रा	चरक	सुश्रुत
उत्तम	10	10
मध्यम	6	7
हीन बल	3	5

विषमज्जर भेद – चरक – 5 काश्यप – 7

चरक केवल चतुर्थक विपर्यय मानते हैं

सुश्रुत तृतीयक व अन्येयुष्क का विपर्यय भी मानते हैं

गुल्म भेद – चरक, सुश्रुत, कश्यप – 5 वागभट – 8

कुष्ठ दोषाधिक्य –

कापाल – वात	औदुम्बर – पित्त	मण्डल – कफ
ऋषजिह्वा – वातपित्त	पुण्डरीक – कफपित्त	सिध्म – वातकफ

क्षुद्रकुष्ठ दोषाधिक्य –

एककुष्ठ चर्माख्य किटिभ विपादिका अलसक – वातकफज

ददु चर्मदल पामा विस्फोट शतारू – पित्तकफज

विचर्चिका – कफज

असाध्य महाकुष्ठ

चरक – काकणक कुष्ठ

सुश्रुत – पुण्डरीक व काकणक कुष्ठ

पामा – सास्त्राव कण्डुयुक्त

रकसा – निस्त्राव कण्डुरहीत

सुश्रुत मतानुसार स्नेह मात्रा – 5

- 1) चतुर्भाग गते अहनि – एक प्रहर मे पचनेवाली – आग्नेदीपक व अल्पदोषो मे हितकर
- 2) अर्धकोदिवस – 6 घंटे मे पचने वाली – वृष्य, बृंहण, मध्यम दोषे मे हितकर
- 3) चतुर्भागावशेष – 9 घंटे मे पचनेवाली – स्निग्धकारक = अधिक दोषो मे हितकर
- 4) संपूर्ण अह – 12 घंटे मे पचनेवाली = ग्लानी मूर्च्छा व मद को छोडकर सभी रोगो मे हितकर
- 5) अहकृत्स्न – 24 घंटे मे पचनेवाली = कुष्ठ विष उन्माद अपस्मार व ग्रहरोग मे हितकर

सर्पि संज्ञा –

1) चरक – पुराण घृत – 10 वर्ष तक का व उग्र गंध युक्त

प्रपुराण घृत – 100 वर्ष तक का व लाक्षा रस समान, सर्वरोगापह, मेध्य, विरेचनेषु अग्र्य

2) सुश्रुत – कुम्भ सर्पि – 111 वर्ष तक का = रक्षोघ्न

महासर्पि – 111 वर्ष से अधिक पुराण = तिमिर व वातनाशक

3) भावप्रकाश – पुराण घृत – 1 वर्ष पुराण

गुड हरीतकी – चरक – अर्श सुश्रुत – वातरक्त

इन्द्रायुधा जलौका से दृष्ट होनेपर होनेवाला रोग – असाध्य

ओज मत मतांतर -

- 1) अष्टांगसंग्रह – सार
- 2) वाग्भट – शुक्र का मल
- 3) डल्हण – शुक्र का स्नेह
- 4) शारंगधर – शुक्र का उपधातु
- 5) ओज व बल सुश्रुतानुसार = समान परंतु डल्हणानुसार भिन्न
- 6) ओज पंचरस युक्त – काश्यप

पंचकर्मात्तर परिहार काल –

चरक – द्विगुण काल

सुश्रुत – 1 मास या पुनः बलवान होने तक

अलर्क विष – चरक – त्रिदोष

सुश्रुत – वातकफज

सान्निपातज अतिसार मे प्रथम चिकित्सा –

चरक – प्रथम वात की

सुश्रुत – प्रथम पित्त की

समसान्निपातज ज्वर चिकित्सा

चरक – प्रथम कफ की चिकित्सा

सुश्रुत – प्रथम पित्त की चिकित्सा

अक्रियायां धूवो मृत्यु क्रियायां संशयो भवेत् सूत्र का संदर्भ

चरक – सान्निपातज उदर

सुश्रुत – अश्मरी निदान

हारीत – जलोदर मे

मदात्यय – कफस्थानानुपूर्व्या चिकित्सा

द्रव्य कार्यप्रणाली –

चरक

- 1) यत् कुर्वन्ति तत् कर्म
- 2) येन कुर्वन्ति तत् वीर्यम्
- 3) यत्र कुर्वन्ति तत् अधिकरणम्
- 4) यदा कुर्वन्ति स कालः
- 5) यथा कुर्वन्ति स उपायः

भस्मक मे श्रेष्ठ – चरक – नारीक्षीर

सुश्रुत – माहिषीक्षीर

सुश्रुतोक्त प्लुष्ट दग्ध को वाग्भट ने तुत्थ दग्ध नाम दिया है

सुश्रुतोक्त इततथा दग्ध को वाग्भट न प्रमाद दग्ध नाम दिया है

दशोमानि गण मे सर्वाधिक गणना – यष्टीमधु - 11 पिपली - 9

लेप परिणाह –

- 1) चरक – त्रिभाग अंगुष्ठ
- 2) सुश्रुत – आर्द्र माहिष चर्म उत्सेध

शारंगधरानुसार मुखलेप उत्सेध –

- 1) दोषधन लेप – 1/4 अंगुली
- 2) विषध लेप – 1/3 अंगुली
- 3) वर्ण लेप – 1/2 अंगुली

अक्रियायां धूवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत् यह संहितानुसार संदर्भ –

1) चरक – सान्निपातज उदर चिकित्सा

2) सुश्रुत – अश्मरी निदान

3) हारीत – जलोदर

फलो मे श्रेष्ठ – चरक – द्राक्षा

सुश्रुत – अमलकी

वाग्भट – द्राक्षा



TIERRA



विलेपी बहुसिक्था स्याद् यवागु विरलद्रवा – सुश्रुत
यवागु बहुसिक्था स्याद् विलेपी विरलद्रवा – शारंगधर

क्लोम मत मतांतर –

- | | | |
|------------------------------------|-------------------|---------------------|
| 1) फुफुस व उंडुक – गंगाधर | 2) हृदय – चक्रपणी | 3) पित्ताशय – डल्हण |
| 4) कंठनाडी व श्वासनाडी – गणनाथ सेन | 5) | |

सर्पांगाभेहत – सुश्रुत – वातप्रकोप
नवायस लोह – चरक – पांडु रोगाधिकार
मासानुमासिक परिचर्या – सुश्रुत

1) तृतीय मास – इन्द्रिया सूक्ष्म 2) चतुर्थ मास – प्रव्यक्त 3) सप्तम मास – प्रव्यक्तर
दौहृदावस्था – चरक – तृतीय
सुश्रुत – चतुर्थ मास
संग्रह – 3 पक्ष ते 5 मास
काश्यप – 3 रा मास

सिरा मूलस्थान – सुश्रुत – नाभी

वागभट – हृदय

सर्ववह संज्ञा – सिराओं को

जीवसाक्षिणी – धमनी को

श्रेष्ठ अंजन – चरक – सौवीरांजन

सुश्रुत – स्त्रोतों जन

व्याधी नामाभिधान –

एको महागद – अतत्वाभिनिवेश

जीवसाक्षिणी – धमनी को

महागदं महावेगं अग्निवत शीघ्रकारी – रक्तपित्त

सुश्रुत – स्त्रोतों जन

महामूला महावेगा महाशब्दा महाबला – हिकका

वागभट – सर्पफणामुख

महाव्याधी – हलीमक

प्रतिद्वन्द्व चिकित्सा – उन्माद मे

वागभट – हृदय

जुगुप्सा चिकित्सा – राजयक्षमा

जीवसाक्षिणी – धमनी को

त्रिरात्रं परमं तस्य जन्तोर्भवति जीवति – चरक – रेहिणी व्याधी संदर्भ मे

सुश्रुत – स्त्रोतों जन

त्व्यहात् जीवितं भैषज्यं – शंख क हेतु – माधवनिदान

वागभट – सर्पफणामुख

मूत्रमार्गगत शल्य निर्हरणार्थ – सुश्रुत – बडिश

वागभट – सर्पफणामुख

नेत्र मंडल – सुश्रुत – 5

वागभट – 4

मुष्कवत लंबते गले – गलगंड सामान्य लक्षण

वागभट – वेदोज गलगंड

आध्मान चिकित्सा – फलवर्ती प्रत्याध्मान – वमन

वागभट – वेदोविलापक

अभ्यंग – वातकफघ्न

वागभट – वातकफर मेदोविलापक

उद्धर्तन = सुश्रुत – वातकफहर

वागभट – वातकफर मेदोविलापक

सुश्रुत – पादप्रक्षालन – चक्षुप्रसादन ,

पादाभ्यंग – चक्षुप्रसादन

चरक – पादाभ्यंग – दृष्टिप्रसादन

पादुकधारन – चक्षुष्य

औषधीनां पति – सोम औषधाधिपति – चन्द्रमा

पादुकधारन – चक्षुष्य

पूर्वरूप –

स्वेदोज्ज्वर्त्त्वं अतिस्वेदो न वा – कुष्ठ पूर्वरूप

स्वेदोज्ज्वर्त्त्वं अतिस्वेदो न वा – कुष्ठ पूर्वरूप

स्वेदोज्ज्वर्त्त्वं अतिस्वेदो न वा – कुष्ठ पूर्वरूप

कपोत इव कूजन – अपतंत्रक का लक्षण
व्याधि मे संज्ञा – स्पर्शज्ञानाम् – कुष्ठ

पारावत इव कूजन – क्षतज कास
उदरामय – अतिसार

हिकका-

- 1) सर्वगात्रकम्पिनी हिकका – महाहिकका
- 2) विप्लुताक्ष – व्यपेता हिकका
- 3) सदय प्राणहरा – महाहिकका
- 4) प्राणान्तिकी – गम्भीरा हिकका
- 5) प्राणोपरोधिनी – व्यपेता हिकका

महामर्म – हुदय बस्ती नाभी
शस्त्रानुशस्त्राणां श्रेष्ठ – क्षार (सुश्रुत)

त्रिमर्म – हुदय बस्ती शिर
अनुशस्त्रो मे श्रेष्ठ – जलौका (चरक अग्न्य)

व्याधी व सिरावेद स्थान

व्याधी	सिरावेद स्थान	व्याधी	सिरावेद स्थान
पाददाह पादहर्ष अवबाहुक	क्षिप्र मर्म उपर 2 अंगुली	प्लीहरोग	वामबाहु मध्य
चिप्प विसर्प	क्षिप्र मर्म उपर 2 अंगुली		कनिष्ठिका अनामिक मध्य
वातरक्त वातकंटक	क्षप्र मर्म उपर 2 अंगुली	यकृतोदर	दक्षिण बाहु मध्य
विचर्चिका पाददारी	क्षप्र मर्म उपर 2 अंगुली	कास श्वास	दक्षिण बाहु मध्य
कोष्टुकशीर्ष खंजता पंगुता	गुल्फ उपरी 4 अंगुल	गलगंड	उरुमूलसश्रीत
अपचि	इंद्रबस्ती मर्म अथ 2 अंगुल	शूलयुक्त प्रवाहिका	श्रोणी समन्तात 2 अंगुल
गृध्रसि	जानु उर्ध्व/अथो 4 अंगुल	परिवर्तिका	उपदंश
		शूक्रदोष	
विश्वाचि	कूर्पर उर्ध्व/अथो 4 अंगुल	शुक्रव्यापद	मेढ़मध्ये
मूत्रवृद्धी	वृषणयोः पार्श्वे	दकोदर	नाभी अथ 4 अंगुल वाम
अंतविद्रुधि पार्श्वशूल	वामपार्श्व कक्षास्तनान्तरयोः	बाहुशोष अवबाहुक	अंसयोः अन्तरे
	अन्तरे	अपस्मार	हनुसंधी मध्य
तृतीयक ज्वर	त्रिकसंधी मध्य	उन्माद	शंखकेशान्त संधी उर अपांग ललाट
चतुर्थक ज्वर	अन्यतर पार्श्वसंस्थित	जिह्वारोग दंतरोग	अधोजिह्वायां
तालुगत रोग	तालुस्थाने	कर्णशूल कर्णरोग	कर्णयो उपरी समन्तात
नासारोग गंध अग्रहण	नासाग्रे	तिमीर अक्षिपाक अक्षिरोग	उपनासिका ललाट अपांग
शिरोरोग अधिमंथ		शिरोरोग अधिमंथ	उपनासिका ललाट अपांग

वातज शिलपद – गुल्फ के उर्ध्व 4 अंगुल अंतर पर

पित्तज शिलपद – गुल्फ अथ 4 अंगुल स्थान पर

कफज शिलपद –

श्रृंग यंत्र – वातदुष्टी मे – 10 अंगुल तक रक्तमोक्षण करता है

18 अंगुल लंबा 3 अंगुल परिघी होता है

सर्षपवत छिद्र होता है

अलाबु – कफज दुष्टी मे पयोग

12 अंगुल तक रक्तमोक्षण करता है



12 अंगुल लंबा व 18 अंगुल चौड़ा होता है

जलौका - पितज दुष्टी में एक हस्त परिमाण तक रक्तमोक्षण

- शस्त्र पकड़ने का स्थान -
- 1) भेदनार्थ - फल व वृंत्त के संयोग स्थल पर
 - 2) विस्त्रावणार्थ - वृंत्ताग्र स्थाने
 - 3) एषणी आरा व करपत्र को - मूल स्थान में पकड़े

सुश्रुतानुसार कुछ विशिष्ट मात्राएं -

क्वाथ - 1 अंजली (4 पल)

चूर्ण - 1 बिडालपदक (1 कर्ष)

कल्क - 1 अक्ष (1 कर्ष)

कर्मानुसार महाभूत प्राधान्य (सुश्रुत)

विरेचन - पृथ्वी + जल

वमन - वायु + अग्नि \

संशमन - आकाश

संग्राही - वायु , शारंगधारानुसार - तेज

दीपन - अग्नि

लेखन - अग्नि + वायु

एकादश इंद्रिय उत्पत्ती - सात्विक (वैकारिक) + राजस (तैजस) अहंकार से

पंचतन्मात्रा व पंचमहाभूत उत्पत्ती - भूतादी (तामस) + राजस (तैजस) अहंकार से

भोजन में उत्तरोत्तर गुरुत्वा ऋग -

पेय < लेह्व < चूष्य - भक्ष्य

औषध मात्रा बालक में -सुश्रुतानुसार

1) क्षीरप अवस्था - अंगुली पर्वद्वाव

2) क्षीरान्नाद - कोलास्थी प्रमाण

3) अन्नाद अवस्था कोलसंमिति

गर्भपोषण -

अ) असंजातसार अवस्था में - तिर्यकगामी धमनीयों से उपरनेहन न्याय से

ब) संजातसार अवस्था - गर्भनाभी नाड़ी / रसवह नाड़ी से

विस्तृद्ध की चिकित्सा में बस्ती कर्म का निर्देश नहीं है ।

ऋतु नाम

घनात्यय - शारद ऋतु

तापात्यय - प्रावृट ऋतु

शीतात्यय - वसंत ऋतु

गुल्म में कोइ दूष्य नहीं होता है

मसीर्वर्ण मूत्रप्रवृत्ती - कालमेह

चाषपक्षीनिभ मूत्रप्रवृत्ती - नीलमेह

द्वादश प्राण - अग्नि सोम वायु सत्व रज तम पंचज्ञानेद्वय भूतात्मा

द्रव्य ग्रहण -

नागबला ग्रहण - माघ फाल्गुन - (तप तपस्य)

आमलक ग्रहण - माघ फाल्गुन (तप तपस्य)

भल्लातक ग्रहण – ज्येष्ठ आषाढ (शुचि शुक्र)

भल्लातक प्रयोग – अग्रहन व पौष (सह सहस्य)

भल्लातक कल्प प्रयोग –

- 1) चरक – रसायन – 10 भल्लातक से शुरूवात
- 2) सुश्रुत – अर्श रोगाधिकार – 1 भल्लातक से शुरूवात
- 3) वाग्भट – 8 भल्लातक से शुरूवात

ज्वर लक्षण –

मुहुर्दाह मुहु शीत – कफपित्तज ज्वर
क्षणे दाह क्षणे शीत – सान्निपातज ज्वर

विविध व्याधी लक्षण –

- 1) वातपूर्णदृति स्पर्श शोथः – संधिगत वात
- 2) आध्मातदृति शब्दवत भवति – वातोदर (चरक)
- 3) यथा दृति क्षुभ्यते कम्पते च – जलोदर (सुश्रुत)
- 4) उदकपूर्णदृति क्षोभ संस्पर्श लक्षण – जलोदर (चरक)
- 5) जलबस्ती सम स्पर्श – पच्यमान व्रणशोफ (चरक)
- 6) आध्मात बस्तिरिव – पच्यमान व्रणशोफ (सुश्रुत)
- 7) अम्ब्यूर्णदृतिरिव क्षुभ्यति मूत्रकृच्छ्र – मूत्रज वृद्धी (सुश्रुत)
- 8) जीर्णजीर्यति आध्मानं भुक्ते स्वास्थ्यमुपैति च – वातज ग्रहणी चरक
- 9) भुक्ते शून्ये लभते शान्तिं जीर्णमात्रे प्रताम्यति – तीक्ष्णाग्नि (भस्मक) – चरक
- 10) जीर्णे जीर्यति अजीर्णे वा पथ्यापथ्य प्रयोगेण – अन्नद्रव शूल – माधव
- 11) भुक्ते जीर्यति यद शूलं तदेव परिणामजम – परिणामशूल – माधव
- 12) आहारपरिणामान्ते भूयश्च लभते बलम – व्यपेता हिकका
- 13) हरीत शीर्ण लोभा – पांडु
- 14) न वेत्ति गंधरसांश – अपीनस
- 15) न वेत्ति गंधम् – दुष्ट प्रतिशयाय

प्रधानतम यंत्र – हस्त

प्रधान यंत्र – कंकमुख

TIERRA

ज्वर वर्णन –

मंथरक ज्वर – योगरलाकर

तृणपूत्रक ज्वर – डल्हन

वातबलासक ज्वर – अष्टांगसंग्रह

प्रलेपक ज्वर – सुश्रुत

विषज / औषधगंधज ज्वर – माधवकर

अपप्रजाताजन्य ज्वर – सुश्रुत

एषाण ज्वर – काश्यप

आगंतुज ज्वर दोषाधिक्य –

1) अभिघातज ज्वर – वात + रक्त

2) अभिषंगज ज्वर – वात + पित्त

3) अभिचारज व अभिशापज ज्वर – सान्निपातज

आम बिल्व – वातकफशामक व औषधार्थ ग्राह्य

पक्व बिल्व – पूर्तीमारुतकृत

आर्द्र मरिच – मधुर विपकी व कफवर्धक

शुष्क मरिच – कटू विपकी व कफञ्ज

बाल मूलक – त्रिदोषघ्न

पक्व मूलक – त्रिदोषकर



चिकित्सा अर्धा भाग – चरक – बस्ती सुश्रुत – सिरावेद

शल्य विषय अर्धा भाग – सुश्रुतानुसार – मर्म

नष्टार्तवा – वंध्या योनीव्यापद का लक्षण

अनार्तवा – घंडी योनीव्यापद

दुष्प्रजाता – प्रसंसिनी योनीव्यापद

दुष्प्रजातामय – सूतिका रोग – काश्यपोक्त नाम

कीट इ. मे चरकानुसार दोषाधिक्य –

1) वातप्रधान – उच्चिटिंग वृश्चिक विष

2) वातपित्तप्रधान – कीटविष

3) कफप्रधान – कनभ विष

मूषक विष संख्या – 18

वृश्चिक विष संख्या – 30 (मन्द : मध्य : तीक्ष्ण = 12:3:5)

कीट सम्ख्या – 67

लूता संख्या – सुश्रुत – 16 वाग्भट – 28

लूता विष अधिष्ठान – 7

लूता विष सामान्य चिकित्सा उपक्रम – 10 (बस्ती रहीत)

लूता विष मारकता – तीक्ष्ण विष – 7 दिन मे मध्य – 10 दिन मे हीन विष – 12 दिन मे

कर्णसंधानविधि – 15 कर्णपाली उपद्रव – 10 कर्णपाली रोग – 5

शल्य भेद – 2, शल्य गति – 5 शल्य निर्हरण उपाय – अवब्ध – 2 अनवब्ध – 15

साध्यासाध्यत्व –

1 वर्ष पुराणा गलगण्ड व इलीपट – असाध्य

1 वर्ष पुराण अर्श – कष्टसाध्य

1 वर्ष वातगक्त – याप्य

3 वर्ष पुराणा अर्दित – असाध्य

13 वर्ष पुराणा उन्माद – असाध्य

गर्भोत्पादक भाव – 6

TIERRA

मातृज – 20

पितृज – 10

आत्मज – चरक 19

सुश्रुत 22

सत्वज – 18

रसज – 5

सात्यज – 8

व्रणगंध मे दोषभेद – कटू गंध – वातज तीक्ष्ण गंध – पित्तज विस्त्र गंध – पित्तज लोह गंध – रक्तज

अतसी सदृश – वात+कफ लाजा सदृश – वात+ पित्त तैल सदृश – पित्त+ कफ

कर्णपालीगत रोग व दोषप्राधान्य –

परिपोट – वातज

उत्पात – पित्त + रक्त

उन्मथ – वात+पित्त

दुःखवर्धन – त्रिदोष

परिलेही – कफ+रक्त+ कमी

चक्रपाणी मतानुसार – तरुण ज्वर – 7 रात्री तक

मध्य ज्वर – 7-12 रात्री तक

जीर्ण ज्वर – 12 दिन पश्चात

संसर्जन ऋग काल –

1) प्रधान शुद्धी – 12 अन्नकाल = 7 दिन

2) मध्यम शुद्धी – 8 अन्नकाल = 5 दिन

3) अवर शुद्धी – 4 अन्नकाल = 3 दिन

नरः पति काष्ठवत – मूर्च्छा काष्ठीभूतो मृतोपमा – संन्यास भग्न दार्वीव निष्क्रिय – उत्तम मद

शिरोरोग लक्षण –

शीतेन शान्तिं लभते कदाचित् उष्णोनजन्तुः सुखमाप्नुयात् – सूर्यावर्त

सर्वात्मकं कष्टतमं विकारः – सूर्यावर्त

व्याधिं वदन्ति उद्गतमृत्युकल्पं भिषक सहस्रेऽपि दुर्निवारं – शंखक

व्याधी प्रमाण –

तालुपुपुट, कदर, लगण – कोलप्रमाण

कंठशालुक – कोलास्थी प्रमाण

गिलायु व अपची – आमलकास्थी प्रमाण

कल्प –

पिण्ड तैल – वातरक्त

पिण्डासव – ग्रहणी

कंस हरीतकी – शोथ

चिन्नक हरीतकी - नासारोग / प्रतिश्याय

अगस्त्य हरीतकी – कास

दन्ती हरीतकी – गुल्म / अर्श

व्याघ्री हरीतकी – नासारोग / प्रतिश्याय

गुड हरीतकी – वातरक्त (सुश्रुत) अर्श (चरक)

सिध्दार्थक अगद – उन्माद

सिध्दार्थक घृत – अपस्मार

सिध्दार्थक स्नान – कुष्ठ

सिध्दार्थक तैल – अपरापतनार्थ

बाहुशाल गुड – अर्श गुडार्दक – शोथ गुडौदन – वातज स्वरभेद सर्पि गुड – क्षतक्षीण मे

प्रमेह मे विशिष्ट द्रव्य – उदकमेह – पारीजात

मधुमेह – श्वेत खदिर व पूगफल

भल्लातक – कषाय स्कंध मे वर्णित

भल्लातकास्थी – कटू स्कंध मे वर्णित

विशिष्ट कृमीघ्न द्रव्य –

स्फीतकृमी – दाढिमत्वक, कम्पिल्लक, पूग

अंकुश कृमी – भल्लातक तैल, यवानी सत्व

स्नायुक कृमी – निर्गूडी शिश्रू

इलीपद – शाखोटक क्वाथ

गण्डूपद कृमी – पलाश विडंग चौहार पारिभद्र इंद्रयव

पर्यायरलमाला, द्रव्यगुणरलमाला लेखक – माधवकर

गुणरलमाला – भावमिस्त्र

जनपदोध्वंस – चरक, मरक – सुश्रुत

जनमार – भेल

उपनाह = चरक निरग्नि स्वेद

सुश्रुत – साग्नि स्वेद

चक्रपाणी – साग्नि व निरग्नि दोनो मानते है

त्रिफला रसायन सेवन काल

चरक

भेल

भोजन जीर्ण होने पर

हरितकी

बिभितकी

भोजन पूर्व

बिभितकी

आमलकी

भोजन पश्चात

आमलकी

हरितकी

कुछ प्रमुख व्याधीयों में वर्जीत कर्म –

अपतन्त्रक मे – अपतर्पण वमन आस्थापन अनुवासन
 अवबाहुक मे – रक्तमोक्षण
 प्रमेह पिंडका मे – स्वेदन
 उदर मे – वमन व अनुवासन
 छिद्रोदर मे – स्वेदन
 क्षयज शिरोरोग मे – नस्य वमन स्वेदन धूमपान रक्तमोक्षण
 नवायस लोह घटक – त्रिफला त्रिकटू त्रिमद लोहभस्म – 9 भाग अनुपान – मधु व धृत
 अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम् – वातव्याधी
 अव्यक्तं लक्षणं तस्यां पूर्वरूपमिति स्मृतम् – क्षतद्वीण

1) लघु पंचमूल – वातपित्तशामक 2) बृहतपंचमूल – वातकफशामक 3) दशमूल – त्रिदोषशामक

4) तृणपंचमूल – पित्तशामक 5) वल्ली व कंटकपंचमूल – कफशामक

6) मध्यम पंचमूल – वातकफघ्न न अतिपित्तकर 7) जीवनीय पंचमूल – वातपित्तशामक

द्रव्य वर्गीकरण – चरक – आहार वर्ग – 12 सुश्रुत – द्रवद्रव्य – 10 अन्नद्रव्य – 13

वाग्भट – द्रव वर्ग – 5 अन्नवर्ग – 7

अष्टांग संग्रह – द्रव द्रव्य – 6 अन्नद्रव्य – 6

आवरण – चरक – 42 सुश्रुत – 13

वाग्भट – 22

अग्र्य द्रव्य – चरक – 152

अष्टांगसंग्रह – 155

दोष विशेष स्थान – :

1) वात – चरक – पक्वाशय
 वाग्भट – पक्वावधान

सुश्रुत – श्रोणी व गुद

काश्यप – अस्थी मज्जा

2) पित्त – चरक – अमाशय
 वाग्भट – नाभी

सुश्रुत – पक्वामाशय मध्य

काश्यप – अमाशय

3) कफ – चरक – उरः
 वाग्भट – उरः

सुश्रुत – अमाशय

काश्यप – हुटय

कमिटी स्थापना –

TIERRA

1) भोर कमिटी – 1945

2) चोपडा कमिटी – 1946

3) पंडित कमिटी – 1949

4) दवे कमिटी – 1955

5) उडुप कमिटी – 1958

6) व्यास कमिटी – शुद्ध आयुर्वेद अभ्यासक्रम का सुझाव

अष्टांग आयुर्वेद से संबंधित ग्रंथ –

1) शाल्य तंत्र – वृद्ध भोजतंत्र, भालुकी तंत्र, कपिलतंत्र, गौतम तंत्र

2) शालाक्य तंत्र – कांकायन तंत्र, गार्ग्यतंत्र, गालव तंत्र, कराल तंत्र, शौनक तंत्र, सात्यिक तंत्र

3) कोमारभृत्यतंत्र – पर्वतक तंत्र, बन्धक तंत्र, हिरण्याक्ष तंत्र

4) अगद तंत्र – सनक संहिता, आलम्बायन संहिता, बृहस्पती संहिता, गरुड संहिता

5) वाजीकरण – कुचुमार तंत्र, अनंगरंग, पंचसायक, वात्स्यायन कामसूत्र

प्रमुख स्थापना वर्ष –

- 1) अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन स्थापना – नासिक – 1907 अध्यक्ष – शंकर दाजी शास्ती पदे
- 2) तिब्बिया आयुर्वेद कॉलेज (दिल्ली) = 1921
- 3) जयपुर मे प्रथम आयुर्वेद कॉलेज स्थापना – 1946
- 4) जामनगर मे प्रथम स्नातकोत्तर प्रशिक्षण केन्द्र स्थापना – 1956
- 5) काशी हिन्दु विश्व विद्यालय मे स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम – 1963
- 6) गुजरात आयुर्वेद युनिवर्सिटी – 1969
- 7) सी.सी.आय.एम. ऑक्ट – 1970 सी.सी.आय.एम. स्थापना – 1971
- 8) राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर (NIA) – 1976
- 9) राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय – 24 मे 2003

Some programmes –

- 1) National malaria control programme – 1953
- 2) National malaria eradication programme – 1958
- 3) National TB control programme- 1962
- 4) National leprosy eradication programme – 1982-83
- 5) small pox eradication programme in world – 1974
- 6) small pox eradication programme in india – 1977
- 7) National family welfare programme- 1953
- 8) formation of indian red cross – 1920
- 9) WHO establishment – 7 th April 1948
- 10) UNICEF – 11 December 1946

प्रथम आयुर्वेद मासिक – आरोग्य सुधानिधि (1901) तत्पश्चात -सुधानिधि 1907

वनौषधी गुणादर्श – शंकर दाजी शास्त्री पदे

इण्डियन मेडिसिनल प्लांटस – पिरिकर व बासु

इंडियन मटेरिया मेडिका – के.एम. नाडकर्णी

इंडिजिनस ट्रांजस ऑफ इंडिया – रमनाथ चोपडा

शुद्ध आयुर्वेद अभ्यासक्रम निर्देश – व्यास कमिटी

भोर कमिटी – हेल्थ सर्वे अँड डेवलपमेंट कमिटी

इंडियन मेडिसीन ऑक्ट – 1939 मे पारीत हुआ (संशोधन-1956)

पिघ्पल्यादी योग – पिघ्पली + विडंग + टंकण = गर्भनिरोधक योग

ISM and H converted into 'AYUSH'

A- Ayurved Y- yoga u- unani

s – siddha

H – homeopathy

Main days –

- 1) World health day – 7 th April
- 2) Doctor's day – 1 July
- 3) World AIDS day – 1 December
- 4) World population day – 11 July
- 5) World thalassemia day – 8 May
- 6) National immunization day – 16 March

- 7) Pulse polio day – 22 february
- 8) Red cross day – 8 may
- MTP act passed in 1971
- Pulse polio started in india – 1995
- NTCP - 1962
- DOTS started in – 1992
- National blindness control programme started in – 1976
- National AIDS control programme – 1989

विविध संस्थान –

- राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ – दिल्ली
- नेशनल इन्स्टिट्युट ऑफ सिधा – चेन्ऩई
- चरक चतुरानन – चक्रपाणी सुश्रुत सहस्रनयन – चक्रपाणी
- बाल्हिक शिष्क – कांकायन
- प्रथम वैद्य रल – कविराज द्वारकानाथ सेन
- महामहोपाध्याय – द्वारकानाथ सेन, गणनाथ सेन
- कविराज – गंगाधर राय, यामिनी भूष
- चरकाचार्य – धर्मदास वैद्य
- पद्मभूषण – सत्यनारायण शास्त्री, पंडित शिवशर्मा
- पद्मश्री – के.एन. उडुपा, बृहस्पति देव त्रिगुणा, आशुतोष मुजुमदार, बालेन्दु प्रकाश, पी.के. तारीयर, सुरेश चतुर्वेदी
- Drug and cosmetic act – 1940
- Drug and cosmetic act rules – 1945 related to GMP (good manufacturing practices)
- TKDL – traditional knowledge digital library related to patent is under ISM and H
- भेल संहिता** – काल 7 वी शती
- सिराभी: हुदां याति तस्मात हुत्प्रभवा सिरा
- धर्मेषणा – तीन एषणा मे उल्लेख

योगरनाकर –

- मूत्रपरीक्षा विस्तृत वर्णन
- सितोपलादी चूर्ण – विषमज्वर के अन्तर्गत वर्णन
- ग्रहणी मे तक्रहरीतकी वर्णन तालीसादी चूर्ण ग्रहणी मे वर्णन
- सोमरोग मे कदलीकंद धृत वर्णन

भैषज्यरन्तावली –

- इच्छाभेदी रस का अनुपान – शीत जल वेग रोकने के लिए – उष्ण जल
- अहिफेनासव – अतिसार (10 बूँद की मात्रा मे जल मे मिलाकर दे)
- दुग्धवटी – ग्रहणी

पदार्थ विज्ञान –

- अंतःकरण के प्रत्यात्म लक्षण –
- 1) मन – संकल्प 2) बुध्दी – अध्यवसाय 3) अहंकार – व्यवसाय / वृत्ती
- भावप्रकाशानुसार कुछ प्रमुख द्रव्यो के भेद
- 1) कर्पूर – पक्व व अपक्व – अपक्व – श्रेष्ठ

- 2) कुंकुम – काश्मीरी, बाल्हिक, पारसिक – ऋग्वेदः उत्तम मध्यम कनिष्ठ
- 3) कस्तुरी – कामरूपीय, नैपाली, काश्मीरज – ऋग्वेदः उत्तम मध्यम कनिष्ठ
- 4) तगर – तगर प्पिंडतगर
- 5) करंज – 3 नक्तमाल, पूतिकरंज, करंजी

गुण्गल – 5 हिरण्य प्रकार श्रेष्ठ
 विषमज्वराणी – कुटकी फिरंगामयनाशिनी – द्वीपांतर वचा (चोपचिनी) वसामेहनाशक – शिंशापा
 विहार वर्ग वर्णन – कैयदेव निघंटू

रसरन्तसमुच्चय –

गलस्थ / कंठस्थ रसायन – रससिंदुर, रसकर्पूर, मल्लसिंदुर

तलस्थ – समीरपन्नग

उभयस्थ – पूर्णचंद्रोदय माणिक्य रस

सकलामयधन, सूतेन्द्रबन्धवधसदगुणकृत, मृत्युंजय – वज्र

सोमनाथी ताप्र निर्माणार्थ – गर्भ यंत्र

उत्तम कान्तलौह भस्म – पक्व जम्बु फलच्छाय

आयुष्मदाता बलवीर्यकर्ता रोगापहर्ता मदनस्य कर्ता – कांत लौह भस्म गुण

अशीतिवातजान रोगान, धनुर्वात, सर्वानुदकं दोषांश्च हन्ति – नाग रसायन

दृक् प्रसादन – कास्य

वज्राणां द्रावणार्थ – भूनाग सत्व

शुद्धावर्त लक्षण – यदा हुताशो दीपार्चि शुक्लोत्थानसमन्वितः शुद्धावर्तस्तदा ज्ञेयः स कालः सत्वनिर्गमे ।

अग्नि ज्वाला का शुक्लवर्ण होना यह सत्वनिर्गमन काल होता है

बीजावर्त – द्रव्य का विशेष रंग ज्वाला मे आना

जारणा भेद – 2 समुख व निर्मुख 3 चारण द्रावण जारण

कुछ यंत्र व उपयोग –

1) दीपिका यंत्र – पारद अधःपातन संस्कारार्थ

2) सोमानल यंत्र – अभ्रक जारणा

3) गर्भयंत्र – सोमनाथी ताप्र भस्म, पारद भस्म निर्माणार्थ ।

4) हंसपाक यंत्र – विडनिर्माणार्थ

5) वलभी यंत्र – मूर्छित पारद उत्थापनार्थ

6) पालिका व इटिका यंत्र – गंधक जारणार्थ

7) नाभी यंत्र – पारद व गंधक निर्धूम जारणा हेतु

गंधक सेवनकाल समये – अम्ल लवण रस द्विदल धात्य सेवन निषेध

गोधृत को सर्वविषनाशक माना है

पूट पर्याय –

वासह पुट – क्रोड पुट कपोत पुट – मृदू पुट, स्वल्प पुट, लघु पुट भांड पुट – कुम्भ पुट

अभ्रक के रसायन कर्मार्थ पुट – 100-1000 वाजीकरण कर्मार्थ पुट – 10-500

वज्र व गोस्तनी मूषा – सत्वद्रावणार्थ वृत्ताक मूषा – खर्पर सत्वपातनार्थ मल्लमूषा = पर्षटी स्वेदनार्थ

माधवनिदान –



संप्राप्ति भेद – 5

संग्रहणी – वेग 10,15 दिन या एक मास मे आते हैं दिवा प्रकोपौ रात्रि शान्ति
दुर्विज्ञेया दुस्चिकित्स्या चीरकालानुबंधिनी

सान्निपातज शूल – सुकष्टमेन विषवज्रकल्पं विवर्जनीयं प्रवदन्ति तज्जः

मूत्राधात – 13 अश्मरी – 4 मूत्रकृच्छ्र – 8 हुद्रोग – 5

Forensic medicine –

Medico legal injuries are of three types –

- 1) simple injury – which heals rapidly without leaving any scars. Eg. Bruises, abrasions
- 2) grievous injury – leaves permanent scar or deformity of any organs. Includes fractures
And dislocations
- 3) Dangerous injury – compound fracture of skull, wound of large arteries, rupture of Internal organs.

Phossy jaw – chronic phosphorous poisoning

Magnum's symptoms- chronic cocaine poisoning

IPC –

1) IPC – 193 - शपथ भंग

2) 309- आत्महत्या का प्रयास

375 – बलात्कार परिभाषा

376 – बलात्कार सजा

511 बलात्कार की कोशीश

354 – शील भंग

53 A - पुरुष की शारेस्क परीक्षा – बिना सहमती

377 – अप्राकृतिक यौन अपराध (गुद मैथुन मुख मथुन इ.)

497 – जारकर्म / परस्त्रीगमन

312 – स्त्री की सहमती से गर्भपात

जीवनक्षम होने से पूर्व – 3 वर्ष का कारावास

जीवनक्षम होने के पश्चात – 7 वर्ष का कारावास

313 – स्त्री की बिना सहमती गर्भपात

जीवनक्षम न होनेपर – 10 वर्ष सजा

जीवनक्षम होनेपर – अजीवन कारावास तक

314 – गर्भपात करते समय गर्भिणी की मृत्यु होने पर

डन्नी की सहमती होनेपर – 10 वर्ष कारावास

डन्नी की बिना सहमती – अजीवन कारावास

315 – गर्भ को जीवित पैदा होने से रोकने, गर्भ मे ही मार देने या जन्मते ही मारने के उद्देश से
गर्भपात करवाने पर

316 – गर्भस्थ शिशु के जीवनक्षम हो जाने पर उसका गर्भपात करते समय गर्भिणी की मृत्यु हो जाने
पर (मानव वध का अपराधी मानकर)

302 – शिशु वध (मानव वध के समान हेतु)

Sections –



TIERRA

- 1) 177 – झूठी सूचना देने पर लागू ।
 - 2) 191 – झूठी साक्ष्य देने परा
 - 3) 193 – झूठी साक्ष्य देने पर सजा
 - 4) 197 झूठा सर्टिफिकेट जारी करने या हस्ताक्षर करने पर लागू
केरोसीन विषाक्तता में वमन व अमाशय प्रक्षालन निषेध है
कुचला विषाक्तता में राडगर मोर्टीस जल्दी व आर्सेनिक विषाक्तता में देर से शुरू होता है ।
पुरुष में प्रोस्टेट ग्रंथि सबसे अन्त में व स्त्रीयों में गर्भाशय सबसे अन्त में पूरीभवीत होते हैं ।
क्रोनिक मर्क्युरी विषाक्तता में हातों की अंगुलिया सबसे पहल प्रभावित होती है

स्वस्थवृत्त -

Daily requirement –

Nacl -	10-15 gm
K --	1.0 gm
Cl -	3.5 gm
Phosphorus -	1.5 gm
Calcium -	1.5 gm
Iron -	15 gm
Iodine -	150 microgram
Copper -	105 mg
Magnesium -	0.4 gm
Manganese -	5.5 mg / day
Zink -	15.5 mg / day
Iodine (pregnancy) =	30 mg / day
Calcium in preqnancy -	1000 mg / day

Basal metabolic rate – males – 38.1 Kcal / hr
Females – 32.9 Kcal / hr

अगदतंत्र -

आत्महत्या के लिए आदर्श विष - सायनाईड

प्रहृत्या के लिए आदर्श विष- थैलियम

गंजाविष लक्षण – वाइपर विष समान

जिंक विषाक्तता लक्षण – मलेरिया के समान

कचला विषयता लक्षण – बिटेनस के समान

रोड साईड पोइंटन - धन्ना

ऋतकाल - चरक व सश्रत = 12 दिन

भावप्रकाश – 16 दिन

रजोदर्थन आय – सश्रत – 12

कार्यप व भावप्रकाश - 16

मन्त्राधार = चरक = 8/13

सश्रत - 12 माधव - 13

वाग्भट – 20

अंतिम चल भेद -

३८) उत्तर ३

धारा कार हैम

३) प्राप्त ।

धार कार तौषार हैम

फलों में श्रेष्ठ – चरक – द्राक्षा सुश्रुत – अमलकी वाग्भट – द्राक्षा
 विलेपी बहुसिक्था स्याद् यवागु विरलद्रवा – सुश्रुत
 यवागु बहुसिक्था स्याद् विलेपी विरलद्रवा – शारंग्धर

इतर महत्वपूर्ण –

स्वर्णविंग – तलस्थ रसायन

रसलिंग की स्थापना – पूर्व या अग्नेय कोन भे

संस्कार का वहन किसके द्वारा होता है – लिंग शरीर

चरक ने पित्त का विभाजन किया है – कर्मानुसार

वैश्वानर चूर्ण प्रयोग – अमवात मे

काश्यप संहिता का उपोद्धात लिखा गया है – पंडित हेमनाथ (हेमचंद्र शर्मा) द्वारा
 लोह भस्म हेतु श्रेष्ठ परीक्षा – वारितर

किस अर्ड के लक्षणों में प्रमेह सम्मिलीत है – कफज अर्श

एडिनोकार्सिनोमा का प्राथमिक लक्षण है – शूलरहीत मूत्ररक्ता

इन्ट्रोडक्शन टू कायचिकित्सा पुस्तक के लेखक है – डॉ सी द्वारकानाथ

आमवात का प्रथ वर्णन – माधव निदान

अहिफेन का सर्वप्रथम वर्णन – शारंग्धर

प्रथम आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र स्थापन हुआ – जामनगर

हठयोग प्रदिपिका के लेखक – स्वात्माराम

खरनाद संहिता का संबंध किस से है – भूतविद्या

मल्ल का फिरंग रोग मे प्रथम उल्लेख – त्रिमल्ल भट

आयुर्वेदानुसार मूत्र निर्माण होता है – अमाशय व पक्वाशय की नाड़ीयों मे

विड लवण प्रयोग – रस जारणार्थ प्रयोगार्थ योग्य पर्षटी – मध्यपाक

वज्र स्थान पर प्रयोग – वैक्रान्त

हेमगर्भपोटली रोगाधिकार – हुद्रोग

गंधक द्रुति मे निकटू चूर्ण की मात्रा होती है – गंधक से 1/16 दधि से परीक्षण किया जाता है – ताप्र

षडरसात्मक द्रव्य है – पारद, वैक्रान्त व वज्र कफकेतु निर्मानार्थ – नारी स्तन्य

एपोमोर्फिन है – अल्कलोइड सूरन कंद का निषेध है – ददृ ? संहिता पर्याय है – शतपुष्पा का

उशीर मूल जाना जाता है – वीरण नाम से बाहुशाल गुड मे बाहुशाल है – पादप का नाम

वातारि गुगुल घटक – एरंड तैल प्रभाकर वटी भावना द्रव्य – अर्जुन त्वक क्वाथ

शांग्धरानुसार अगस्त्य हरेतकी मात्रा – 2 हरीतकी वाग्भटानुसार ब्राह्म मुहुर्त है – सूर्योदय के पूर्व -14 कला

त्रिदोषप्रकोपक ऋतु – वर्षा मेजेन्टा रेड टंग का कारण – विटामीन बी 2 की कमी

नाभीनाल पश्चात सेचन – कुष्ठ तैल डल्हण नुसार स्वर्ण प्राशन कब तक – 1 वर्ष तक

गोधूम व यव है – स्थूल व कृश दोनों के लिए रलगिरी रस – तरुणज्वर मे

गुगुल मे नही है – अम्ल व लवण रस मायाफल व कर्कटश्रृंगी का प्रयोज्यांग – श्रृंगाकार कोष

अश्वत्थ का प्रयोज्यांग – फल शुंग व त्वक, लताकस्तुरी का प्रयोज्यांग – बीज

नासा हि शिरसो द्वारम कथन है – चरक का सुश्रुतानुसार पादांगुलियो कि संख्या – 25

लिगामेंटम तेरिङ्ग रूपान्तरण हि – अम्बालिकल वेन का सूक्ष्म महाभूत है – तन्मात्रा गुंजाभद्र रस – उरुस्तंभ

वाकदुष्टी मे श्रेष्ठ है – वचा , वर्धमान पिप्ली – प्लीहोदर मे वर्धमान भल्लातक प्रयोग – वसंत मे

स्वस्थस्य उर्जस्कर है – रसायन व वाजीकरण दोनों नारसिंह चूर्ण रोगाधिकार – वाजीकरण
वसन्तमालती रस का मुख्य घटक है – खर्र नागर्जुनभ्र रस उपयोगी है – हुद्रोग मे
क्षारधृत निर्देश है – ग्रहणी मे पुरुष के पुष्टीत होने पर अरिष्ट है – 1 वर्ष स्थोल्य मे श्रेष्ठ – रसांजन
वाग्भटानुमार पद्मकादी गण द्रव्य है =स्तन्यवर्धक सी सी आय एम के प्रथम अध्यक्ष – के.एन उडुपा
मूषकविष मे हित्कर है – अंकोल, लूताविष मे – इलेष्मातक, सर्पविष मे – पन्ना
डेजीटोक्सीन है – ग्लायकोसाइड , तुलसी वर्णन प्रथम – अष्टांग संग्रह मे भंगा का प्रथम प्रयोग – भाप्र
निवृत्ति का मार्ग है –अपवर्ग , उपप्लव का अर्थ है – दुःख की प्राप्ती, अर्म ग्रंथी मे नहीं करते हैं –जलौका
शटी का प्रयोज्यांग – कंद, खर सत्व होता है – भूनाग सत्व, जातीपत्री है – बीजावरण,
राशी पुरुष की परंपरा होती है – अनन्त , षोडशांग हुद्य के कर्ता – प्रियव्रत शर्मा
क्रिमीकोष्ठो अनिसार्येत मल सासूक लक्षण है – मृदभक्षनजन्य पांडु का अमृतकलश प्रयोग – हुद्रोग मे
गुल्म धातुप्रदोषज विकार है – रक्त, अभिनव शारीरम ग्रंथ के कर्ता – दमोदर शर्मा गौड देवी शुक्र – अभक

शोधनार्थ श्रेष्ठ काल –

- अनुवासन बस्ती – प्रदोष काल
 - आस्थापन बस्ती – मध्याह्न काल
 - वमन – इलेम काल
 - विरेचन – इलेमगते काले
- 1) कर्म के पूर्व मे स्वेदन योग्य स्थिती – नस्य, बस्ती, शोधनीय पुरुष
 - 2) कर्म के पश्चात मे स्वेदन योग्य स्थिती – मूढगर्भ व सामान्य प्रसव पश्चात
 - 3) कर्म के पूर्व व पश्चात दोनों बार स्वेदन योग्य स्थिती – अश्मरी अर्झ भगंदर

दूषिविष (विषे: मन्दैः वाताद्या) – सान्निपातज उदर का हेतु

दूषिविष का लक्षण – दकोदर ?

विषातुरो मे स्वेदन निषेध है – अपवाद – कीट विष व दूषिविष

लूताविष मे ‘वंसत्वगादी अगद’ देते हैं

उष्णवीर्य हिमस्पर्श – अम्लरस बहिशीत अन्तष्ट्र कांजी का गुणधर्म

प्लेग की जड़ी है – काण्डीर

सुश्रुत ने कर्षु व कूप स्वेद नहीं माने हैं

गदोद्वेग ताप्डवरोग उरस्तोय औपसर्गिक मेह खंजनिका क्लोमरोग का वर्णन – भैषज्यरलावली

नाभीकुंडल वर्णन – रसरलसमुच्चय

सदंशी जातहारिणी – पारिगर्भिक

पिशाची जातहारिणी – कामला

दन्तसंपत है – 15 अप्रशस्त दन्त है – 5

पुत्रजननी पर्याय – लक्ष्मणा का

वृद्धमाधव – (8 वी शती) – स्नायुकरोग

पारसिक यवानी का कृमीरोग मे वर्णन

सोढल – अर्क कल्पना व कुमार्यासव का निर्माण वर्णन

योगरलाकर – (17 वी शती) – शीतप्रमेह व उत्फुल्लिका वर्णन, भीमस्सेनी कापूर का नेत्ररोगो मे वर्णन

भावप्रकाश ने ‘हंसोदक’ के लिए ;अंशुदक’ शब्द का प्रयोग किया है



राजनिधन्तु – अभिधान चूडामणि (17 वी शती)
निघंटु शोष – अभिधान चिंतामणि (12 वी शती)

शल्य चिकित्सक के गुण – 6

कुमारागार वर्णन – चरक व वाग्भट

सान्निपातज ज्वर – चरक व काश्यप – 13 भेद सुश्रुत – 1 भेद

हारीत संहिता का नाम – वैदयकसर्वस्व

तुलसी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग – अष्टांगसंग्रह मे

धातुओं मे यशद का वर्णन सर्वप्रथम – शारंगधर

उर्ध्वगुद रोग का वर्णन अष्टांगसंग्रह मे मिलता है

सबसे प्राचीन संहिता – क्षारपाणी संहिता

अर्वाचिन काल की अंतिम संहिता – आयुर्वेद विज्ञान

चिकित्सा मे विष का सर्वप्रथम वर्णन – वाग्भट

त्रिफला के पर्याय – फलत्रिक वरा श्रेष्ठा उत्तमा

श्रेष्ठ वातप्रकार है – चरक वाग्भट – प्रानवायु सुश्रुत – उदान (पवनोत्तमः)

तैलबिंदू परीक्षा वर्णन – योगरलाकर

रोगः सर्वेऽपि मंदेग्नौ सूत्र – वाग्भट

दातप्रकृती मे बृहण चिकित्सा ही शमन चिकित्सा है – वाग्भट

आमाशय को चक्रपाणी ने 'मांसाशय' भी कहा है

रक्तपित्त मे – रजक पित्त दुष्टी पांडु मे – साधक पित्त दुष्टी

चक्रपाणी ने ओज को अष्टम धातु माना है

हेम चूर्ण (सुवर्ण) चरक ने विषनाशनार्थ बताया है

मुक्तादी चूर्ण – श्वास मे

गर्दभास्थो भस्म – श्विन्न मे लेपनार्थ गजास्थी भस्म .. अर्श मे लेपनार्थ

चरक – ध्वजभंग सुश्रुत – उपदंश माधव – फिरंग वर्णन

औपसर्गिक मेह वर्णन – भैषज्यरलावली

स्नायुक रोग वर्णन – वृद्धमाधव

स्नायुक कृमी वर्णन – शारंगधर

कालीयक शब्दप्रयोग – अग्न्याशय के लिए

कालखंड – यकृत

काश्यप ने ओज को 'पंचरस' कहा है

शीर्षाम्बु रोग का वर्णन – भैषज्यरलावली मे

चन्दन के लिए मलयज शब्द प्रयोग सुश्रुत ने किया है

आचार्य प्रियव्रत शर्माकृत ग्रंथ –

1) चरक समझा 2) चरक चिंतन 3) प्रिय निघंटू 4) वाग्भट विवेचन

5) षोडशांग हुदयम 6) नामरूपविज्ञानम

Annexure - 3

चरक चिकित्सा स्थान

ज्वर चिकित्सा –

असाध्य ज्वर लक्षण –

- 1) प्रलाप भ्रम श्वास तीक्ष्ण वेगी ज्वर
- 2) क्षीण व्यक्ति का ज्वर
- 3) शोथयुक्त व्यक्ति का गम्भीर व दैर्घरात्रिक ज्वर
- 4) केशसीमन्तकृत ज्वर

निष्ठत्यनिक के कारण संतत ज्वर सुदुर्सह-

कालदूष्यप्रकृतिभिर्देषस्तुल्यो हि सन्ततम् । निष्ठत्यनिकः कुरुते तस्माज्ज्ञेयः सुदुःसह ॥

ज्वर मे वमन व लंघन पश्चात – यवागू प्रयोग

ज्वर मे उर्ध्वग रक्पित हो तो – तर्पण प्रयोग

वातज ज्वर मे – जीर्ण ज्वर के उपक्रम करे ।

2) रक्पित–

रक्पित मे शोधन पश्चात चिकित्सा --

उर्ध्वग – तर्पण

अधोग – पैया

3) गुल्म चिकित्सा–

कफज गुल्म मे अग्निकर्म से लाभ –

औष्यात् तैक्ष्याच्च शमयेत् अग्नि गुल्मे कफानिलौ । तयोः शामाच्च संघातो गुल्मस्य विनिवर्तते ॥

गुल्म मे वेदना शान्त्यर्थ – मातुलुंग रस भर्जित हिंगु, दाढिम बिड सैंधव – सुरमंड के अनुपान से दे

गुल्म मे शिलाजतु प्रयोग – पंचमूली कषाय के अनुपान से दे ।

7) कुष्ठ चिकित्सा– लेलितक (गंधक) प्रयोग – जाती (आमलकी) व माक्षिकसह

माक्षिकधातु (सुवर्णमाक्षिक) गोमूत्रसह सेवन

कुष्ठ मे रस (पारद) वज्र शिलाजतुसह वा योगराज सह सेवन करे

8) राजयक्षमा–

कफप्रसेक होने पर वमन

9) उन्माद–

उन्माद विषमज्वर अपस्मार मे शंखकेशान्त सन्धि स्थाने सिरावेध

10) अपस्मार–

दुश्चिकित्स्यो ह्यपस्मारी कृताप्सदः । तस्माद् रसायनैरेनं प्रायशः समुपाचरेत् ॥

उन्मादी व्यक्ति के लिए जल अग्नि दृम शैल विषम स्थान सदय प्राणहर होते है ।

11) उरक्षत

ऋग्याद् मांसनिर्यूह् घृतभृष्ट कर सेवन

12) शोथ

शोथ मे गुरुभिन्न वर्च (अतिसार) होनेपर व्योषसोवर्चल माक्षिक सह तक्र पान आगंतुज (आघातज शोथ) मे – विसर्प व वात व रक्तहर उपचार करे ।

13) उदर-

दन्ती द्रवन्ती फलज तैल – दाय्योदर मे हितकर
उदर मे पार्श्वशूल हुद्ग्रह हो – बिल्वक्षार / अग्निमन्थ श्योनाक अपामार्ग क्षार प्रयोग

14) अर्श

शेषत्वात् आयुषस्तानि चतुषादसमन्विते दीप्तकायाग्ने – याप्य अर्श

अर्श का योग्य शमन न करने पर – बद्धगुदोदर उत्पत्ती

अर्श मे शस्त्र क्षार अग्नि विभ्रम (इन उपक्रमो को अयोग्य रिति से करना) से

पुस्त्वोपधात, गुदश्वयथु, वेगविनिग्रह, आध्मान, दारूण शूल, रक्तातिवर्तन, क्लेद, गुदभंश, मरण

अर्श मे तक्रप्रयोग से लाभ-

स्त्रोतःसु तक्रशुधेषु रसः सम्यगुपैति यः । तेन पुष्टिर्वलं वर्णः प्रहर्षश्वोपजायते ।

अर्श मे अनुवासन-

उदावर्तपरीता ये ये चात्यर्थ विरुक्षितः । विलोमवाताः शूलार्तास्तेषु इष्टं

अनुवासनम् ॥

19) अतिसार-

पित्तातिसार चिकित्सा मे पिच्छाबस्ती काल –

कृतानुवासनस्यास्य कृतसंसर्जनस्य च । वर्तते यद्यतीसारः पिच्छाबस्तिरतः परम् ।

पित्तातिसार मे अनुवासन देने पर व संसर्जन क्रम द्वा बाद भी अतिसार ना रहे तो उसे पिच्छाबस्ती देना चाहिए ।

गुद मे स्नेह प्रयोग-

प्रायशो दुर्बलगुदाश्विरकालातिसारिणः । तस्मादभीक्षणशस्तेषां गुदे स्नेहं प्रयोजयेत् ॥

अधिक दिन तक अतिसार मे गुदस दुर्बल हो जाती है इसलिए गुद मे स्नेह प्रयोजित करना चाहिए ।

अतिसार मे बस्ती-

पवनोऽतिप्रवृत्तो हि स्वे स्थाने लभते अधिकम् । बलं तस्य सपित्तस्य जयार्थं बस्तिरूल्तमः ॥

जब अतिसात ऐ पुनः पुनः मलप्रवृत्ती मे जाना पडता है तो वायु अपने स्थान मलाशय मे प्रबल हो जाता है

इसलिए पित्तसहित वायु शमन के लिए अनुवासन बस्ती उत्तम चिकित्सा है ।

वातरक्त-

निर्हिरेद्वा मलं तस्य सधृतैः क्षीरबस्तिभिः ।

मलविबंध मे घृतमिश्रीत क्षीरबस्ती

बस्तीवंक्षणपार्श्वजठरार्ति व उदावर्त मे – निरुह व अनुवासन

चरक सिद्धिस्थान – 2 पंचकर्मीय सिद्धि अध्याय

वमन अयोग्य में युक्ती-

- 1) क्षत - क्षतस्य भूयः क्षणनाद्रक्तातिप्रवृत्ती
- 2) क्षीण अतिस्थूल कृश बाल वृद्ध दुर्बल - औषधबल असहत्वात् प्राणोपरोथ
- 3) श्रान्त पिपासित क्षुधित -उपरोक्त परीणाम (औषधबल असहत्वात् प्राणोपरोथ)
- 4) कर्मभार अध्व हत उपवास मैथुन अध्ययन व्यायाम चिन्ताप्रसक्त क्षाम - रौक्ष्यात् वातरक्तच्छेदक्षतभयं
- 5) गर्भिणी - गर्भव्यापद आमगर्भभ्रंशाच्च दारूणा रोगप्राप्ति
- 6) सुकुमार - हुदयापकर्षणाद् उर्ध्वं अधो वा रूधिरातिप्रवृत्ती
- 7) संवृतकोष्ठ दुश्चर्दित - अतिमात्र प्रवाहणाद् दोषाः समुत्क्लिष्टा अन्तःकोष्ठे जनयन्ति विसर्प स्तंभ जाइं वैचित्यं मरणं वा
- 8) उर्ध्वग रक्पित - उदानं उत्क्षिप्य प्राणान् होरेद् रक्तं चातिप्रवर्तयेत्
- 9) प्रसक्त छर्दि (निरंतर छर्दि) - उपरोक्त परीणाम (उदानं उत्क्षिप्य प्राणान् होरेद् रक्तं चातिप्रवर्तयेत्)
- 10) उर्ध्ववात् आस्थापीत अनुवासीत - उर्ध्वं वातातिप्रवृत्ती
- 11) हुद्रोगी - हुदयोपरोथ
- 12) उदावर्त - घोरतर उदावर्त स्यात् शीघ्रतरहन्ता
- 13) मूत्राधात एलीह गुल्म उदर अष्टिलः - तीव्रतर शूलप्रादुर्भाव
- 14) तिमिरार्त - तिमिर अतिवृद्धी
- 15) शिरः शंख कर्ण अक्षिशूल - शूलातिवृद्धी

ब) विरेचन अयोग्य में युक्ती-

- 1) सुभग (सुकुमार) - सुकुमारोक्त वमन दोष (हुदयापकर्षणाद् उर्ध्वं अधो वा रूधिरातिप्रवृत्ती)
- 2) क्षतगुद - क्षते गुदे प्राणोपरोथकरीं रूजां जनयेत्
- 3) मुलनाल - अतिप्रवृत्या हन्यात्
- 4) अधोगरक्पित्तिनं - तद्वत् (अतिप्रवृत्या हन्यात्)
- 5) विलंघित दुर्बलेन्द्रिय अल्पाग्नि निरूढा - औषध वैगं न सहेरन्
- 6) कामादीव्यग्रमनसो - न प्रवर्तते कच्छेण वा प्रवर्तमानं अयोगदोषान् कुर्यात्
- 7) अजिर्णा - आमदोषः स्यात्
- 8) नवज्वर - अविपक्वान् दोषान् न निर्हरेत् वातमेव च कोपयेत्
- 9) मदात्यय - मद्यक्षीणे देहे वायुः प्राणोपरोथं कुर्यात्
- 10) आध्मान - अधमतो वा पुरीषकोष्ठे निचितो वायुर्विसर्पणं सहसा आनाहं तीव्रतरं मरणं वा जनयेत्
- 11) शल्यार्दित अभिहत - क्षते वायुराश्रितो जीवितं हिंस्यात्
- 12) अतिस्निग्ध - अतियोग भयं भवेत्
- 13) रुक्ष - वायुः अंगप्रग्रहं कुर्यात्
- 14) दारूण कोष्ठ - विरेचनेन उद्दतां दोषा हृच्छुल पर्वभेद आनाह अंगमर्द छर्दि मूर्च्छा क्लम जनयित्वा

प्राणान् हन्युः

- 15) क्षतादिनां गर्भिण्यन्तानां – वमनोक्त दोषः स्यात्
- क) निरूह बस्ती अयोग्य में युक्ती–
 - 1) अजीर्ण अतिस्निध पीत्स्नेहानां – दूष्योदरं मूर्च्छा श्वयथु वा स्यात्
 - 2) उत्क्लिष्ट दोष मन्दाग्नि – तीव्र अरोचक
 - 3) यानकलान्त – क्षोभव्यापनो बस्तिराशु देहं शोषयेत्
 - 4) अतिदुर्बल क्षृत् तृष्णा श्रमार्त – पूर्वोक्त दोष (क्षोभव्यापनो बस्तिराशु देहं शोषयेत्)
 - 5) अतिकृश – काश्यं जनयेत्
 - 6) भुक्तभक्त पीत उदक – उत्क्लिष्ट उर्ध्वं अधो वा वायुर्वस्तीमुत्क्षिप्य क्षिप्रं घोरान् विकारां जनयेत्
 - 7) वमित विरिक्त – रूक्षं शरिरं निरूहः क्षतं क्षार इव दहेत्
 - 8) कृतनस्त – विभ्रंशं संरूधस्त्रोतस कुर्यात्
 - 9) क्रुद्ध भीत – बस्तीं उर्ध्वं उपप्लवेत्
 - 10) मत मूर्च्छित – भृशं विचलितायां संज्ञां चित्तोपघातात् व्यापत् स्यात्
 - 11) प्रसक्त छर्दि निष्ठिविका श्वास दास हिकका – उर्ध्वभूतो वायु उर्ध्वं बस्तीं नयेत्
 - 12) बद्ध छिद्र दकोदर आध्मान – भृशतरं आध्माप्य बस्तिः प्राणाण् हिस्यात्
 - 13) अलसक विसूचिका आम, प्रजाता (सूतिका), आमातिसार – आमकृतो दोषः स्यात्
 - 14) मधुमेह कुष्ठ – व्याधीवृद्धी

ड) अनुवासन बस्ती अयोग्य में युक्ती–

- 1) अभुक्तभक्त – अनावृतमार्गत्वात् उर्ध्वमतिवर्तते स्नेहः
- 2) नवज्वर पांडु कामला प्रमेह – दोषान् उत्क्लिष्ट उदरं जनयेत्
- 3) अर्श – अर्शासि अभिष्यंदं आध्मानं कुर्यात् (अर्श में अभिष्यंद उत्पत्ति कर आध्मान)
- 4) अरोचक – अन्नगृधीं पुनः हन्यात (अन्न की रूची नष्ट होना)
- 5) मन्दाग्नि दुर्बल – मन्दतरं अग्निं कुर्यात्
- 6) प्रतिश्याय प्लीहरोग – भृशं उत्क्लिष्ट दोषाणां भूय ऐव दोषं वर्धयेत्

इ) नस्य अयोग्य में युक्ती–

- 1) अजीर्ण भुक्तभक्त – दोष उर्ध्ववहानि स्त्रोतांस्यावृत्य कास श्वास छर्दि प्रतिश्यायान् जनयेत्
- 2) पीतस्नेह मद्य तोय पातुकामानां कृते च पीबतां – मुखनासास्त्राव अद्वितपदेह तिमिर शिरोगान् जनयेत्
- 3) स्नात शिरसः कृते च स्नानात शिरसः – प्रतिश्यायं
- 4) क्षुधार्त – वातप्रकोप
- 5) तृष्णार्त – तृष्णाभिवृद्धी मुखशोष
- 6) श्रमार्त मत मूर्च्छित – अस्थापनोक्त दोष (भृशं विचलितायां संज्ञां चित्तोपघातात् व्यापत् स्यात्)
- 7) शस्त्र दंडहत – तीव्रतरां रूजां जनयेत्
- 8) व्यवाय व्यायाम पान(मदयपान) क्लान्त – शिरःस्कंध नेत्र उरः पीडनं
- 9) नवज्वर शोकाभितप्त – उष्मा नेत्रनाडीं अनुसृत्य तिमिरं ज्वरवृद्धी च कुर्यात्
- 10) विरिक्त – वायुः इन्द्रियोपघातं कुर्यात्

- 11) अनुवासित – कफः शिरोगुरुत्व कण्डू क्रिमिदोषान् जनयेत्
- 12) गर्भिण्या– गर्भ स्तभयेत् , स काणः कुणिः पक्षहतः पीठसर्पि स्यात्
- 13) नवप्रतिश्याय– स्त्रोतांसि व्यापादयेत्
- 14) अनृत दुर्दिने – शीतदोषात् पूतिनस्यं शिरोरोगश्च स्यात्

गर्भोपघातकर भाव

- 1) निरन्तर उत्तान शयन – गर्भ कंठनाडी से बंध जाता है
- 2) विवृतशायिणी, नक्तचारिणी – उन्मादी संतान
- 3) कलहशीला – अपस्मारी संतान
- 4) व्यावायशीला् दुर्वपुष अन्हीक स्त्रैणं (विकृत शरीर, स्त्री स्वभावयुक्त)
- 5) शोकनित्या – भीत अपचित अल्पायुष
- 6) स्तेन – आयासबहुल, अतिद्रोहिणकर्मशील
- 7) अमर्षिणी – चण्ड औपाधिक असूयक
- 8) स्वप्ननित्या -- तन्द्रालु, अबुध अल्पाग्नि
- 9) मध्यनित्या – पिणासालु, अल्पस्मृती, अनवस्थित चित्त
- 10) दराह मासा सेवन – रक्ताक्ष, क्रथन अतिप्रस्तु रोम युक्त
- 11) मत्स्य मांस नित्या – चिरनिमेष, स्तब्धाक्ष
- 12) मधुरनित्या – प्रमेही मूक अतिस्थूल
- 13) अम्लनित्या – रक्तपित्ती अक्षिगोगी
- 14) लवण नित्या – शीघ्र वलीपलित खालित्य
- 15) कटुनित्या – दर्ढल अल्पशुक्र अमपत्य
- 16) तिक्कनित्या – शौषिण अबलं अनुपचित
- 17) कषायनित्या – इयाव आनाह उदावर्ती

TIERRA

आगदतन्त्र

- 1) नरः व्यस्तशिरोहांग विलुनपद्ध – दूषिविष का लक्षण है
- 2) दूषिविष चिकित्सा – स्वेदन तत्पश्चात उर्ध्वाध शोधन व तत्पश्चात दूषिविषारी अगद पान
दूषिविषारी अगद का अनुपान – मधु
- 3) शुक्रवत् सर्वसर्पणां विषं सर्वशरीरगम् – सर्पविष शुक्रसमान सर्व शरीर में प्रसरीत होता है
- 4) कीटविष वातकफबहुल व नात्युष्ण होता है – इसलिए कीटविष में स्वेदन निषेध नहीं है
- 5) दर्वाकरणां विषं आशुधाती सर्वाणि च उष्णो द्विगुणीभवती ।
दर्वाकर विष आशुधाती होता है व उष्ण काल में द्विगुण मारक होता है
- 6) सर्पविष में सात वेग होते हैं = सप्तधातुकला का अनुसरण करते हुए
- 7) अजित अगद – स्थावर व जांगम दोनों विषों में हितकर है
- 8) पंचशिरीष अगद – शिरीष पंचांग, त्रिकटू , लवण , मधु = कीटविषनाशक है

- 9) क्षारगद – दुंडुभी (नगरा) पताका व तोरण पर लेपन से, श्रवण, दर्शन से विषधन कार्य करता है सर्पविष में उपयोगी
- 10) अगदों का राजा – महासुगंधी अगद
- 11) विषार्त में स्वेदन वर्ज्य – अपवाद कीटविष
- 12) अलक्किष्महर योग – शरपुंखा मूल + धर्तुर मूल
- 13) चक्रतैल – वृश्चिक विष में उपयोगी है

Sulphuric acid –

- Tongue is swollen, brown or black and at times may become a corroded shapeless mass
- Teeth are chalky white
- Perforation of the stomach is very common

Nitric acid –

- The lips tongue teeth skin and clothes are white initially and later yellow due to 'Xanthoproteic reaction'
- Vomitus is yellow brown
- Sometimes locked jaw
- Commonly oliguria or anuria and albumin and casts are present in urine

Vitriolage –

It is defined as throwing of any corrosive substance, not necessarily H₂SO₄ on the body of other person to cause injury, disfigurement or death. Since commonly used is sulphuric acid (oil of vitriol) hence called as vitriolage

oxalic acid –

- Hypocalcemia
- Oxaluria

Carbolic acid –

Appearance of stomach is 'Leather bottle appearance' called as 'Linitus plastica'

Alcohol poisoning –

Mac Ewan's test

In chronic poisoning – delirium tremens and Korsakoff's psychosis is seen
Wernicke's encephalopathy due to thiamine deficiency

नैगमेष ग्रह–

यः फेनं वमति विनम्यते च मध्ये सोद्देगं विलपति चोर्ध्वमीक्षमाणः ।

ज्वर्येत प्रततमयो वसागच्छि निःसंज्ञो भवति हि नैगमेषजुष्ट ॥ सुश्रुत्

आध्मानं पाणिपादस्य स्पंदनं फेननिर्गमः ।

तृण् मुष्टिबन्धतिसार स्वरदैन्यं विवर्णता ॥

कूजनं स्तननं छर्दिः कास हिध्मा प्रजागरः ।

ओष्ठदंशांग संकोचस्तंभ बस्ताभगन्धता ॥

उर्ध्वं निरिक्ष्य हसनं मध्ये विनमनं ज्वरः ।

मूर्च्छा ऐकनेत्रशोफश्च नैगमेषग्रहाकृतिः ॥ वाग्भट

Biomedical waste management – 1998

Biomedical waste management rules – 2016

Waste disposal and colour bags

- 1) Waste sharps – white bags
- 2) Discarded medicine vials – cardboard box with blue colour marking
- 3) Catheters – Red
- 4) Discarded linen – yellow

Epidemic - the 'unusual occurrence' in a community or region of a disease

Endemic – En – in demos – people

Constant presence of a disease or infection agent with a given geographic area or population group without imported from outside

Sporadic – the cases occur irregularly haphazardly from time to time and generally Infrequently

Pandemic – an epidemic usually affecting a large proportion of the population occurs

Over a wide geographic area e.g. corona

Exotic – diseases which are imported into a country in which they do not otherwise Occur e.g rabies in UK

Zoonosis - an infection or infectious diseases transmissible under natural conditions From vertrabate animals to man

Research methodology and statistics

Hypothesis – A hypothesis is an assumption that is made based on some evidence.

It includes components like variable, population and relation between variables

A research hypothesis is a hypothesis that is used to test the relationship between two or more variables.

Types of hypothesis –

1) Simple hypothesis – it shows relationship between one dependant variable and a single independent variable.

e.g. if you eat more vegetables you will loose weight faster.

Independent variable – eating more vegetable

Dependant variable – loosing weight

2) Complex hypothesis – it shows relationship between two or more dependant and Independent variables.

e.g. eating more vegetables and fruits leads to weight loss, glowing skin, heart diseases.

3) Directional hypothesis – the relationship between the variables can also predict its Nature .for e.g. children aged four years eating proper food over a five year

Period are having higher IQ levels than children not having a proper meal.

This shows the effect and direction of effect .

- 4) Non directional hypothesis** – it is used when there is no theory involved .it is a Statement that a relationship exist between two variables without predicting the Exact nature of the relationship.
- 5) Null hypothesis** – it is a negative statement and there is no relationship between Independent and dependant variable. It is denoted by H_0
- 6) Alternate hypothesis** – is a statement which states some statistical significance Between two variables. Denoted by H_1 or H_a
- 7) Associative and causal hypothesis** – associative hypothesis occurs when there a Change in one variable resulting in a change in other variable. The causal hypothesis proposes a cause and effect interaction between two or more variables.
- 8) Logical hypothesis** - a logical hypothesis is a planned explanation holding limited Evidence.
- 9) Statistical hypothesis** – statement about one or more parameters that are Measures of population under study
- 10) Empirical hypothesis** – when a theory is being put to the test using observation And experiment.

Sampling –

1) simple random sampling –

The method is applicable when the population is small, homogeneous and radially Available. The principle is that every unit of population has an equal chance of being selected.

2) Systematic sampling –

This method is popularly used in those cases when a complete list of population from which sample is to be drawn is available. It is more often applied to field studies When the population is large, scattered and not homogeneous. Systematic procedure is followed to choose a sample by taking every K th house or patient where K refers to the sample interval.

3) Stratified sampling –

The method is followed when the population is not homogeneous. The population under study is first divided into homogenous groups or classes called strata and the sample is drawn from each stratum at random in proportion to its size.
e.g sample from different area, ages, sexes, etc.

4) multistage sampling –

As the name implies the method refers to the sampling procedures carried out in several stages using random sampling techniques.

This is employed in large country surveys. In the first stage random numbers of district are chosen in all the states. Followed by random numbers of talukas, villages and units.

5) cluster sampling –

A cluster is a randomly selected group. This method is used when units of population are natural groups or clusters such as villages, wards, blocks, slums of a Town.

6) multiphase sampling –

In this method part of the information is collected from the whole sample and part from the subsample. Eg. In a tuberculosis survey physical examination or Mantoux test may be done in all cases of the sample in the first phase. In the second phase X-ray of the chest may be done by Mantoux positive cases and in those with clinical symptoms.

Paediatrics –**Storage of vaccines –**

Frozen vaccines – BCG, Polio, Measles, yellow fever

Cannot freeze – DPT, TT, Typhoid

Vaccines –

Schwartz vaccine – for measles

Sample vaccine – for rabies

Rabies vaccine – IM in deltoid region

Dose – 0,3,7,14,28 days

Vitamin A – 9 dose

-9m, 11/2 year, 2year, 3year, 31/2 year, 4year, 41/2year, 5 year

- 66000 microgram

Vitamin K – 0.1 ml IM

Neonatal reflexes

Reflex	Appearance	Disappearance
Moro's reflex	At birth	Up to 3 months
Stepping reflex	At birth	Up to 6 weeks
Placing reflex	At birth	Up to 6 weeks
Sucking and rooting	At birth	Up to 4to7 months
Palmer grasp	At birth	Up to 4 to 6 months
Planter grasp	At birth	Up to 10 months
Neck righting	4to6 months	2-3 months
Tonic neck reflex	At birth	2-3 months
Parachute reflex	9 month	Persist through life

Important signs

Trousseau and chvostek sign	VDDR type -1 vitamin D dependant rickets
-----------------------------	--

Sun set sign	Hydrocephalus
Gowors sign	Weakness of the pelvic girdle muscle
Double gas bubble sign	Duodenal atresia
Bronze baby syndrome	Phototherapy side effect
Hutchinson's teeth	Congenital syphilis
Crack pot resonance	Hydrocephalus
Barrel shaped chest	Pneumonia
Pigeon chest or fiddle shaped chest	Rickets
Flag sign	Kwashiorkar
Kerning sign	Tetanus neonatum
X –ray cupping & saucer like epiphyseal (wrist jt)	Rickets
Wimberger sign (bilateral erosion in upper end of tibia)	Congenital syphilis

Drug dose formula –

Young's formula = age of child (yrs)/ age +12 X adult dose

Dilling's formula = age (yrs) / 20 X adult dose

Fried Formula = age (in months) /150 X adult dose

Clark formula = wt in pounds X adult dose

धैरंड संहितानुसार सप्तांग योग-

- 1) षटक्रिया – देह शुद्धी के लिए
- 2) आसन = शरीर दृढ़ता के लिए
- 3) मुद्रा = स्थैर प्राप्ति के लिए
- 4) प्रत्यहार- धैर्य प्राप्ति के लिए
- 5) प्राणायाम- लाघव प्राप्त्यर्थ
- 6) ध्यान – प्रत्यक्षात्मन प्राप्ति के लिए

7) समाधी- निर्लिप्तता प्राप्त्यर्थ

सूर्यनमस्कार-

9 वर्ष से कम उम्र बालक में निषेध है

सूर्यनमस्कार के आसन =

- 1) उधर्वनमस्कारासन
- 2) हस्तपादासन
- 3) दक्षिणपादप्रसारणासन
- 4) द्विपादप्रसरणासन
- 5) भूजान्वासन
- 6) साष्टांगप्रणिपातासन
- 7) भूजंगासन
- 8) भूधरासन
- 9) भूजान्वासन
- 10) दक्षिणपाद संकोचासन
- 11) हस्तपादासन
- 12) नमस्कारासन

आसन व हठयोग प्रदिपिका नुसार उपयोग-

- 1) सर्वव्याधीनाशन = भद्रासन व पद्मासन
- 2) प्रचंडरूगमडलखडनास्त्रम् - मत्सेन्द्रासन
- 3) दिष्ठ पाचन - मयूरासन



National immunization schedule

Vaccine	When to give	Dose	Route	Site
For pregnant woman				
TT-1	Early in pregnancy	0.5 ml	IM	Upper arm
TT – 2	4 weeks after TT-1	0.5 ml	IM	Upper arm
TT – Booster	If received 2 TT doses in pregnancy within last 3 years	0.5 ml	IM	Upper arm
For Infants				

BCG	At birth or as early as possible till one year of age	0.1 ml	ID	Left upper arm
Hepatitis B	At birth or as early as possible within 24 hrs.	0.5 ml	IM	Antero lateral side of mid thigh
OPV -0	At birth or as early as possible within first 15 days	2 drops	Oral	Oral
OPV 1,2 & 3	At 6 weeks, 10 weeks, 14 weeks	2 drops	Oral	Oral
DPT 1,2 & 3	At 6 weeks, 10 weeks, 14 weeks	0.5 ml	IM	Antero lateral side of mid thigh
Hepatitis 1,2 ,3	At 6 weeks, 10 weeks, 14 weeks	0.5 ml	IM	Antero lateral side of mid thigh
Measles	9 completed months- 12 months (give up to 5 years f not receive at 9-12 months)	0.5 ml	SC	Right upper arm
Vitamin A (1 st dose)	At 9 months with measles	1 ml 1lakh IU	Oral	Oral
For children				
DPT booster	16-24 months	0.5 ml	IM	Antero lateral side of mid thigh
OPV booster	16-24 months	2 drops	Oral	Oral
Measles (2 nd dose)	16 -24 months	0.5 ml	SC	Right upper arm
Japanese Encephalitis	16-24 months with DPT/OPV booster	0.5 ml	SC	Left upper arm
Vit A 2 nd to 9 th dose	16 months with DPT/OPV booster . then 1 dose every 6 months up to age of 5 years	2ml 2lakh	Oral	Oral

TIERRA

		IU		
DPT booster	5-6 years	0.5 ml	IM	Upper arm
TT	10 years and 16 years	0.5 ml	IM	Upper arm

cold chain –

- 1)Vaccine storage temperature is 0-8 °C
- 2) Among the vaccines polio is the most sensitive to heat , require storage at -20 °C
- 3) Vaccine stored in deep freezer compartment – Polio, measles
- 4) vaccines must be stored in the cold part but never allowed to freeze – DPT, TT, DT, Hepatitis B , BCG, Typhoid, Diluents

Effects of noise exposure

Auditory fatigue – appear in 90db and greatest at 4000Hz

Temporary deafness – between 4000-6000Hz

Permanent hearing loss – repeated or continuous exposure to noise around 100db

Tympanic membrane rupture – noise above 160 db

Medicine –

Yellow fever – Aedes aegypti

H1N1 = swine flu

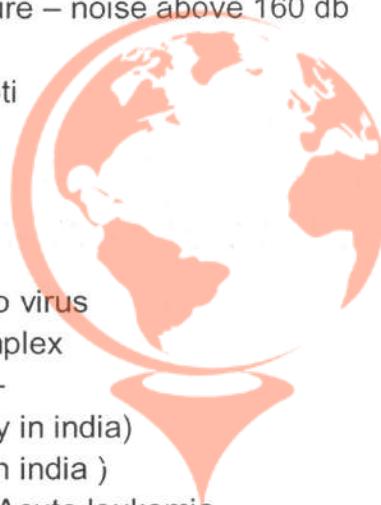
TORCH = T – toxoplasmosis

O – others

R – Rubella

C – cytomegalovirus

H – herpes simplex

**Common cancer in world –**

- 1)Men – prostate (oral cavity in india)
- 2) Female – breast (cervix in india)
- 3) Child – below 20 year = Acute leukemia

Tumor bio markers –

- 1)Alpha – fetoprotein – to see the birth defect in child , also in liver cancer
- 2) Carcinoembryonic antigen(CEA) = ca bowel, pancreas and breast
- 3) Prostate acid phosphatase (PAP) – prostate Ca
- 4) LDH – Lymphoma, Ewing's sarcoma
- 5) HCG – trophoblastic tumor
- 6) CA – 125 = ovary
- 7) CA 15-3 = Breast
- 8) CA 19-9 = colon, pancreas, breast
- 9) CD 30 = Hodgkin's disease
- 10) DC 25 = Hairy cell leukemia

Punctate basophilia is seen in aplastic anemia, thalassemia, lead poisoning.

Takayasu arteritis – pulses disease

Kawasaki disease – mucocutaneous lymph node syndrome

Cor pulmonale – disease of right side of heart due to disorder of lungs

Hydatid disease – due to echinococcus granulosus

Rheumatoid arthritis – HDADR4

Ankylosing spondylitis – HLAB27

चरक सिध्दी -12

यापन बस्ती-

- 1) मुस्तादी यापन बस्ती – शुक्रंमांसबलजनन, विषमज्वरधन, बस्तीकुंडल उदावर्त, सद्यो बलजनन, रसायन
- 2) एरंडमूलादी यापन – ललितसुकुमार स्त्री, स्थविर, चीरार्शयुक्त, क्षीणक्षत अपत्यकामना
- 3) हपुषादी यापन – वातहर, बुधीमेघा अग्निबलजनन
- 4) लघुपंचमूलादी यापन – विषमज्वर कर्शित में हितकर
- 5) प्रथम बलादी यापन – सद्योजननो रसायन, कासज्वरगुल्म अर्दितस्त्री मद्यकलीष्ट में
- 6) द्वितीय बलादी यापन – गुल्महुद्रोग आध्नान पार्श्वपृष्ठकटीग्रहसंज्ञानाश, बलक्षय में उपयुक्त
- 7) तृतीय बलादी यापन – स्थविरदुर्बल क्षीण शुक्ररूधिर में हितकर
- 8) चतुर्थ बलादे यापन – ज्वर में
- 9) स्थिरादी यापन/शालपण्यादी यापन – वृष्यतम बस्ती, बलवर्णजनन

शल्यतंत्र –

भग्नचिकित्सा-

सतीन यूष

आलेपनार्थ – मंजिष्ठा मधुक रक्तचंदन शाधौत सह

परिषेकार्थ – न्यग्रोधादी कषाय व चक्रतैल्

प्रातःकाल पानार्थ – गृष्णिक्षीर सर्पिसह

भग्नसाधनार्थ सुखकर ऋतु – शिशिर

पादतल भग्न में – व्याधाम निषेध

स्थानच्युत उर्वस्थी भग्न – चक्रयोग प्रयोग

कटीभग्न – उर्ध्व तथा अध आंछन पश्चात बस्ती प्रयोग

पर्शुका भग्न – द्रोणी में शयन

कूर्पर संधि विश्लेष – अंगुष्ठ से अनुमार्जन

हस्ततल भग्न – अमतैल परीषेक पश्चात मृतपिंड लवण पिंड व पाषाण पिंड धारण

हनुसंधि विसंहत होने पर = पंचांगी बंध

कपाल भग्न – 1 सप्ताह तक सर्पिपान

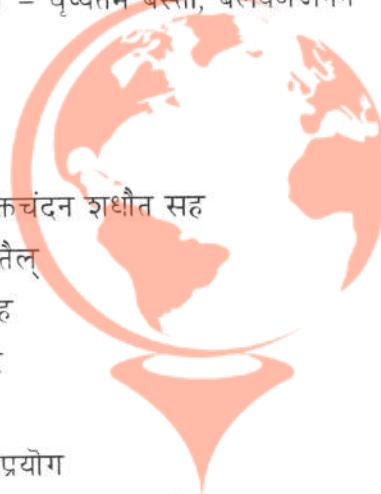
अथ जंघा उरुभग्नानां – कपाटशयनं हितं

श्रोणी पृष्ठवंशा व वक्ष व कक्षा में उपरोक्त विधि आचरण

उर्ध्वकाये तु भग्नानां मस्तिष्क्यं कर्णपूरणं ।

घृतपानं हितं नस्यं प्रशासु अनुवसनम् ॥

गंध तैल – सर्वभग्नप्रसाधकम् = पान नस्य अभ्यंग बस्ती आदी द्वारा उपयोग



TIERRA

Modern –**Fissure in Ano –**

90% occur at posterior part of anal canal

Surgery –

Lateral sphincterotomy (gold standard)

Lord's dilation

Fissorectomy

Pilonidal sinus –

Nest of hairs

Treatment – Z plasty or Rhomboid flap

Torsion of testis –

Derming's sign

Prehn's sign

Testicular tumor

Seminoma is common

Vas is never involved in tumor

Prostate –

Ca prostate is more common at peripheral zone (non adenomatous Zone)

Most common site of BPH is median lobe

Hodgkin's lymphoma –

Cause – infectious mononucleosis

Epstein bar virus

Classical triad of wilm's tumor –

Abdominal mass

Haematuria

Fever

Disease	Surgery
Varicose vein	Trenndlenberg operation
Haemorrhoids	Barron band ligation
Fissure in ano	Lords dilation
Pilonidal sinus	Z plasty
Pelvic appendicitis	Copes – obturator test
Retrocecal appendicitis	Psoas test
Femoral hernia (below)	Lock wood operation

inguinal canal)	
Femoral hernia (through inguinal canal)	Lotheissen's operation
Abdominal hysterectomy	Wortheim's operation
Congenital pyloric stenosis	Ramstedt's operation
Hiatus hernia	Nissen's fundoplication
Umbilical hernia	Mayo's umbilical herniotomy
Small size hydrocele	Lord placation
Big size hydrocele	Jabouly's operation
Undescended testis	Orchitopexy
Varicocele	Pclomo's operation
CA prostate	Bilateral orchidectomy
Polycystic kidney	Rovsing operation
Strangulated hernia	MC Evedy operation
Para umbilical hernia	Mayo's operation
Incisional hernia	Cattlee's operation
Partial prolapsed of rectum	Goodsal's operation
Prolapse uterus	Manchester's operation
Inverted uterus	Haultain's operation
Carcinoma breast	Halsted's operation
Volvulus	Colectomy

शारीरक्रिया

विविध न्याय-

ऐककाल धातुपोषण न्याय – अरूणदत्त

शिलापुनिक न्याय – डल्हण

घुणाक्षर न्याय – वार्गभट

गोबलीवर्द न्याय – चक्रपाणी (च.सू1)

विचितरंग न्याय व कदंबमुकुल न्याय – शब्द प्रसरण
शतपत्रकमलवेध न्याय – मन ऐकत्व

जाठराग्नी प्रमाण	भेल	भावप्रकाश
स्थूलकाय	यवमात्र	यवमात्र
हस्वकाय	त्रुटिमात्र	तिलमात्र
कृमीकीटपतंग	वायुमात्र	कैशप्रमाण

Physiology –

Morphological anemia

- 1) Normocytic normochromic – Aplastic anemia
- 2) Microcytic Hypochromic – Iron deficiency anemia
- 3) Macrocytic normochromic – Megaloblastic anemia

Life span –

- 1) Normal RBC – 120 days
- 2) Fetal / Neonatal RBC – 90 days
- 3) Platelets – 7-12 days
- 4) Transfused platelets – 36 hours
- 5) Lymphocytes – 100 -300 days

- Folic acid and Vitamin B12 are essential for synthesis of DNA and maturation of nucleus
- Phagocytosis is common function of neutrophil, Monocytes, and macrophages
- Vitamin B12 and bile salts are absorbed at terminal ileum

Cushing syndrome symptoms –

Due to hypersecretion of cortisol

Moon face, Buffalo hump

Hypertension

Bradycardia, Irregular respiration

Muscular weakness, osteoporosis,

Cushing triad includes = Hypertension, bradycardia, irregular respiration

ECG –

Total 12 leads

X axis = time and Y axis = indicate voltage

Speed of paper – 25 mm /sec

Waves –

- 1) P wave - Atrial depolarization
- 2) Q wave – Ventricular depolarization
- 3) T wave – ventricular repolarization
- 4) PR interval – Atrial depolarization
- 5) ST segment – continued ventricular depolarization

Normal values –

- 1) P wave – 0.1 sec
 - 2) PR interval – 0.18 sec
 - 3) QRS complex – within 0.11 sec
 - 4) ST segment – 0.08 sec
 - 5) QT – 0.4 sec
- Stroke volume – 70 ml
S.A node is supplied by Right vagus while
A.V node is supplied by Left vagus

MI - presence of Q wave

Inversion of T wave

ST elevation in acute stage and depression in chronic stage

Areas –

- 1) Hearing – 41,42 – Audio sensory
- 20,21,22 = Audio psychotic
- 2) Vision – 17 = visiosensory
18 = Visuopsychotic
19 = Motor
- 3) Taste - 1,2,3 interior part of central gyrus
- 4) Speech – 44 = Broca's area

Daily requirement –

- 1) Protein – 1 gm /Kg /day
- 2) Fat – 45 to 60 gm/day
- 3) Carbohydrate – 400-500 gm/day

Pressure –

- 1) Arterial – 120/80 mm of Hg
- 2) Jugular vein – 5.1 mm of Hg
- 3) Superior vena cava – 4.6 mm of Hg
- 4) CSF pressure – 50-150 mm of H₂O
- 5) Intra cranial pressure – 10 mm of Hg
- 6) Intra ocular pressure – 10-20 mm of Hg
- 7) Portal venous pressure – 8-12 mm of Hg

GABA (gamma aminobutyric acid) is principal inhibitory neurotransmitter in brain

Commonest transplant is – Keratoplasty (cornea)

Second commonest transplant – kidney

Myeloid tissue – red bone marrow

Intrauterine development – testes in 7th week and ovaries in 9th week

In Aplastic anemia – platelets maximum affected and in pernicious anemia remain normal

For measurement of Lung capacity – spirometry is done

Sago spleen – focal amyloidosis of spleen

शारीरचना-

ग्रंथकार	ऋतुकाल	रजःकाल
चरक	16 रात्रि	5 रात्रि
सुश्रुत, हुदय, अष्टांगसंग्रह	12 रात्रि	3 दिवस
भावप्रकाश	16 रात्रि	3 दिवस
काश्यप	ब्राह्मण – 12 क्षत्रिय – 11 वैश्य – 10 क्षुद्र – 9	
हारीत / भेल		7 दिवस

आयुर्वेद इतिहास –**ग्रंथकार-**

- 1) अभिनव शारीरम – द्व्योदर शार्म गौड
- 2) अनुपाम मजिरी – अचार्य विश्राम
- 3) प्रियनिधंटू – प्रियव्रत शर्मा
- 4) निधंटू आदर्श – बापालाल वैद्य
- 5) वनौषधी दर्शिका – ठाकूर बलवंत सिंह

AYUSH यह नामकरण – 2003 में किया गया

आयुष द्वारा निर्मित योग–

- 1) आयुष 8 = मैथादर्थक
- 2) आयुष 55 = मैदोरोग
- 3) आयुष 56 = अपस्मार
- 4) आयुष 57 = श्विनाशन
- 5) आयुष 82 = मधुमेह
- 6) आयुष 64 = मलेरिया व श्लीपद
- 7) AC 4 = गर्भनिरोधक
- 8) 777 ओइल् – सौरियसिस

रसरलसमुच्चय–

कर्ता – रसवाग्भट काल – 13 वी शती अध्याय – 30

टीका – डी ऐ कुलकर्णी की विज्ञानबोधीनी टीका

पारद फल–

- 1) मूर्च्छित पारद – रेगनाशन
- 2) बध्द पारद – मोक्षदायक

3) भस्मीभूत पारद – अमरत्व
 अभ्रक मारणाथ – अर्धगजपूट का प्रयोग है
 सुवर्णमाक्षिक सत्त्व – गुंजावर्ण होता है
 सस्यक सत्त्व – इन्द्रगौपाकृती होता है
 शूकचंचुसमान गन्धक श्रेष्ठ बताया है
 गन्धकद्रुती का सहपान 1 वल्ल पारद है
 सुवर्ण शोधनार्थ गैरिक व सैंधव के प्रयोग निर्देशीत है
 भूनाग सत्वपातन का प्रयोग पारद व हीरक का तेज वर्धनार्थ करते हैं
 रसलिंग स्थापना रसशाला में आग्नेय दिशा में करते हैं
 पातन पिष्ट निर्माणार्थ पारद 1 भाग व चतुर्थांश भाग सुवर्ण लेते हैं
 हिंगुलाकष्ट रस – हिंगुल को आर्द्रक स्वरस में मर्दन कर विद्याधर यंत्र में उर्ध्वपातन करते हैं
 कोकिल – द्रावण अथवा सत्वपातनार्थ मधुक व खदिर, स्वेदनार्थ बदर के कोयलों का प्रयोग
 चारण – पारद के उदर में ग्रास डाल देने के कर्म को चारण कहते हैं
 ग्रस्त यंत्र – पारद बंधनार्थ
 धूपन यंत्र – पारद जारणार्थ
 कास्य व पितल ये कृत्रिम लोह हैं

दिष्ट वर्ग में 5 द्रव्य = श्रुंगिक कालकूट वत्सनाभ सङ्कुक व पीत = इनका उपयोग पारद शोधनार्थ व बंधनार्थ बताया है

रसरलसमुच्च्यानुसार रसलिंग निर्माण –

शुद्ध स्वर्णपत्र = 3 भाग
 सुध्द पारद = 9 भाग
 निम्बु स्वरस = 32 भाग
 मयूरपत्रिकाभास पारद – मिश्रक पारद
 त्रिसूत – सूत + मिश्रक + पारद
 पारद के संस्कार –
 प्रथम – 8 देहसिध्दी के लिए
 18 संस्कार – लोहसिध्दी के लिए
 अर्क प्रकाशानुसार अग्नि प्रकार – 6

रसतरंगिनी –

अहिफेनासव – अहिफेन व मृतसंजीवनी सुरा
 रोगहता – अतिसार दन्तशूल कर्णशूल
 मात्रा – 5 ते 15 बिंदू
 क्षारसूत्र निर्माण – स्नुहीक्षीर व रजनी चूर्ण 7 बार लेपन

Pharmacovigilance –

Also known as drug safety
 Related to ADR – adverse drug reaction



TIERRA

Name given by ayush – **Ayush suraksha**

National pharmacovigilance programme under the control of central drug standard control organization (CDSCO) has initiated in 2003

- National pharmacovigilance programme for ASU drugs was started in December 2007
 - IPGT and RA Jamnagar is working as national pharmacovigilance resource center for ASU drugs
 - All India Institute of Ayurveda New Delhi has been designed as national pharmacovigilance center

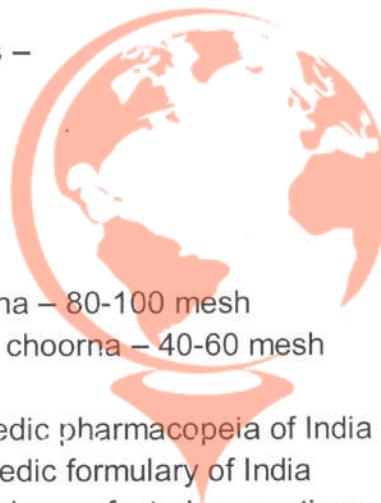
Bioinformatics –

- gene expression profile , analysis of DNA and RNA
 - protein structure
 - protein interaction
 - functional analysis of biomolecule
- drug designing

Intellectual property rights –

Related to –

Copyright
Patent
Trademark



Some limit –

Particle size of choorna – 80-100 mesh

Particle size of kwath choorna – 40-60 mesh

Full form –

- 1) API – Ayurvedic pharmacopeia of India
- 2) AFI – Ayurvedic formulary of India
- 3) GMP – Good manufacturing practices
- 4) GCP – good clinical practices
- 5) GLP – good laboratory practices

TIERRA

भावप्रकाश –

सर्पगंधा – रासनाभेद कहा है , पागलपन की जड़ी कहते हैं

कुचला – शय्यामूत्रता व पक्षाधात में उपयोगी

वत्सनाभ – गर्बिणी बाल वृद्ध हुद्रोग पित्तप्रकृती में वर्ज्य

प्रतिनिधि – जद्वार

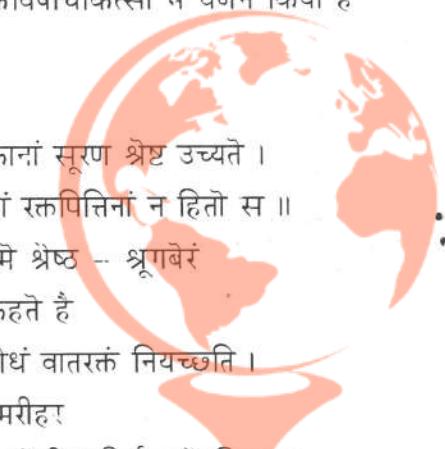
निलिनी – कैशरंजक व वर्धक है

अर्जुन – भग्न में गोधूम चूर्ण व पय व घृ के साथ निर्देशीत है

बिभितकी – उष्णवीर्य हीमस्पर्श

त्वक में जो सिनेमिक असिड होता है वह अन्तिक्षुबरक्युलर कार्य करता है

इलीपद में शाखोटक क्वाथ गूमून सह पान करना है
 अगस्त्य बीज – चातुर्थकज्वरहर पुष्प – नक्तांधनाशन
 सरल के निर्यास को = श्रीवेष्टक, श्रीवास, वृक्षधूपक कहते हैं
 पांशु वाचक पर्याय नाम – पर्फटक को है
 आर्द्रक – ग्राही है फिर भी विबंधभेदन करत है पर मलपातन नहीं करता
 अष्टांगहुदय अनुसार चित्रक तैल के साथ ऐक मास सेवन करने से दुस्तर वातव्याधी नाशन करता है
 मून के साथ श्विन्न व तत्र के साथ पायुज (अर्श) नाशन करता है
 स्वर्णक्षिरी के मूल को चूकमूल कहते हैं
 कुमारी– अर्शस्तं न् सेवेत् नालवर्ली न् पुष्णि ।
 न चासृगदरिणी नापि यकृदवृक्कादी रोगवान् ॥
 शल्लकी के निर्यास को कुन्दरु कहते हैं
 धन्तुर – यूकालिक्षाविनाशन (पत्र)
 फल को मातुलपुत्रक कहते हैं
 सुश्रुत ने अलर्कविषचिकित्सा में वर्णन किया है
 महानिम्ब– मूषिकाविषनाशन
 सूरण–
 सर्वेषां कन्दशकानां सूरण श्रेष्ठ उच्यते ।
 ददृणाम् कुष्ठिनां रक्पितिनां न हितो स ॥
 चरक के अनुसार कंद में श्रेष्ठ – श्रूगबेरं
 तालमूली – कृष्ण मूसली को कहते हैं
 कोकिलाक्ष – कृपाभ्यास इव क्रोधं वातरकं नियच्छति ।
 पित्ताश्मरीहा
 कपिकच्छु मूल क्वाथ – योनीसंकीर्णता में हितकर
 फलरोम – कृमीघ्न व बीजतैल – श्वेतप्रदार में हितकर
 कुष्ठ – मृगश्रुंगोपमं श्रेष्ठ
 उलटकंबल – अर्तवजनन, योनीव्यापदनाशन
 पत्रांग – धन्वन्तरी व राजनिधंटू में कुचंदन नाम से वर्णित
 हरिचन्दनवद् वैद्यं विशेषात दाहनाशन
 गोरक्षगांजा – अश्मरीनाशन, मून्तल
 सप्तचक्रा – मेदुमेहधन, यकृतरोगहरा परम्
 सहदेवी– ज्वरं हन्ति शिरोबधा सहदेवी जटा यथा
 सर्व चंदन में मलयज चंदन श्रेष्ठ है
 हरीतकी प्रकार चैतकी = नृपाणां सुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम ।
 चैतकी परम शस्त्रा हिता सुखविरेचने ॥
 सर्वश्रेष्ठ हरीतकी – विजया



TIERRA

हरीतकी अंगानुसार रस -

मज्जा – स्वादु, स्नायु – अम्ल, वृंत -- तिक्क, अस्थी – तुवर (कषाय)

आमलकी – रक्तपित्तप्रमोद्धनं परं वृष्यं रसायनं ।

अंकोल – सर्व आखुविष्णवाशन

सारिवा- दाढिमिपत्रा, शेतरेखांकितच्छदा

मंजिष्ठा मेह मे – मंजिष्ठा व चंदन कषाय

वसा मेह मे – शिंशापा कषाय

मुंडी- इलीपद, गंडमाला, अपची अपस्मार नाशन

स्वरस- सूर्यावर्त अर्धावबेदक नाशन

पृश्नीपर्णी – त्रिसप्ताहात् अस्थीभग्न अपोहती

वनन्रपुषी – रक्तार्बुदनाशन

अतिबला बीज को बीजबंद कहते हैं

कस्तुरी जांगम द्रव्य है व लताकस्तुरी वानस्पतीज द्रव्य है

सर्जनिर्यास को चन्द्रस या सफेद डामर कहते हैं

कृष्ण सारीवा = जम्बुपत्रा सारीवा

सदपुष्टा-Vincristin and Vinblastin are anticancer property

सबसे प्राचीन निघंटू – अष्टांग निघंटू – 8 वे शर्तक

धन्वन्तरी निघंटू – द्रव्यावली / गुणावली पर्याय नाम

शोदल निघंटू – नामगुणसंग्रह

राज निघंटू – अभिधान चूडामणि = महभूतानुसार द्रव्य वर्णन

कैयदेव निघंटू – पथ्यापथ्य विबोधक = नानार्थ वर्ग वर्णन

हिकमत प्रकाश – महादेव

शालीग्राम निघंटू – वनस्पती व रूग्ण जन्म नक्षत्र संबंध

वनौषधी गुणादर्श – शंकर दाजी शास्त्री पदे

प्रिय निघंटू – प्रयत्रत शर्मा = द्रव्य पर्यायों के अर्थ वर्णन

Indian Medicinal plants – kirtikara and Basu

Indian materia medica – Dr K .M. Nadkarni

Gynaecology –

Polyhydromnios – Amniotic fluid is more than twice the expected volume for Gestational age (2000 ml)

Oligohydromnios – when amniotic fluid volume is less than 300 ml at term or less

Less than 100 ml

Commonest complication of pregnancy in India – anemia

Commonest complication of forceps delivery – Bell's palsy

Complication of twin pregnancy – PPH

Commonest lie – longitudinal

Commonest presentation – Vertex

Commonest position – LOA

- Site of ectopic pregnancy – Amupilla
 Site of CA cervix – 6 and 12 o clock
 Site of pap smear – posterior fornix of vagina
 Cause of abortion in 1st trimester – congenital anomalies
 Cause of abortion in 2nd trimester – cervical incompetency

Investigations -

USG	Hydrocephalus, Hydatiform mole, neural tube defect
Amniocentesis	Foetal lung maturity, sex determination
Cervical biopsy	For Ca Cervix confirmation
Partogram	For recording labour
Coombs test	For Rh antibody, haemolytic anemia detection

Shirodker operation – cervical incompetence

Mc Donald's operation – purse string suture operation for cervical incompetence

Medical statistics –

Test	Use
Paired student t test	Comparing means (SD) in paired data (in same group of individuals before and after treatment)
Unpaired student t test	Comparing means in two different groups of individuals
Anova test (F test)	Comparing means (SD) in more than two different Groups of individuals
Wilcoxon test (signed rank)	Comparing percentage, proportions, fractions in paired data (in same group of individuals before and after treatment)
Wilcoxon rank sum test Or Mann Whitney test U test	For comparing between two medians
Chi –square test	Used to test significance of association /correlation/proportions between two or more qualitative characters
Z test	To test significance difference between sample mean and population mean. Sample should be more than 30

Essential requirements for Chi square test –

- 1) Random sample
- 2) Qualitative data
- 3) lowest expected frequency not less than 5
- 4) used in non normal distribution
- 5) used in test proportion
- 6) Test of goodness of fit

योगरत्नाकर

तैल बिंदु परीक्षा –

वात अधिक्य – सर्पकार

पित्ताधिक्य – छत्राकार

कफाधिक्य – मुक्ताकार

तैल शीघ्र फैलना – साध्य

तैल क न फैलना – कष्टसाध्य

तैल तल स्थान मे बैठना – असाध्य

दिशानुसार =

- 1) पूर्व – शीघ्र आरोग्य प्राप्ति
- 2) पश्चिम – आरोग्य + सुख प्राप्ति
- 3) दक्षिण – ज्वर पिडीत व व्याधी धीरे धीरे लाभ
- 4) उत्तर – निश्चित आरोग्य प्राप्ति
- 5) वायव्य – अमृत पान पर भी असाध्य
- 6) इशान्य – 1 मास मे मृत्यु
- 7) जाग्नेय व नैऋत्य – मृत्यु निश्चित

TIERRA

Paediatrics –

Failure to thrive – infant rate pf weight gain is sluggish, +ve length of the child may or may not be affected

Dyslexia – loss of reading skills

Gomez classification is for -PEM

Bag and mask ventilation –

Indication – After tactile stimulation

Infant is apnoeic or gasping and HR < 100

Contraindication – Diaphragmatic hernia

Chest compression –

Indication – if after 15-30 sec of ppv with 100% oxygen the HR < 60/min or between 60-80 and not increasing .

Endotracheal intubation –

Indication – prolong PPV required, for tracheal suction, diaphragmatic hernia

Cryptorchidism – undescended testes

Nada's criteria for – congenital heart disease

Essential criteria for Rheumatic fever –

1) increased anti streptolysin 'O' titre (ASO TITRE)

2) Positive throat culture

3) Recent scarlet fever

Cleft lip is operated at 3 months of age

Cleft palate is operated at one and half years of age

ENT –

Stridor – is a noise during respiration produced due to obstruction of the passage of air into or out from lower respiratory tract

Leukoplekia – white patch on the tongue or oral mucosa

It is a premalignant condition

Ludwig's angina – is an infection of the submandibular space with cellulitis or occasionally abscess formation

Commonest complication of ASOM is mastoiditis

Commonest complication of CSOM is conductive deafness

Complication of mastoidectomy operation is facial nerve palsy

Quincy – peritonsillar abscess

Adenoids – hypertrophoid nasopharyngeal tonsil

Age – 3-10 years

Tonsilectomy surgery – contraindicated below 5 years of age

Method – 1) Dissection –

2) Guillotine – only for large tonsils, contraindicated in quincy

Sjogrens syndrome – autoimmune disorder

Triad – swelling of salivary gland, xerostomia, xeroophthalmia

Deviated nasal septum operative

S.M.R operation	Septoplasty
Radical operation	Conservative operation
Not done in child	Can be done in children
Most of cartilages removed	Cartilages preserved
Revision surgery is difficult	Revision surgery is possible

Deafness –

1) Sensorineural deafness – AC and BC both reduced

2) Conductive deafness – AC reduced but BC normal

Mild deafness – loss of hearing 20-30db

Moderate deafness – 30-60db

Severe deafness – loss of hearing above 60db

Visual acuity – measured by snellen chart

Patient should be at a distance of 6 meters or 20 feet from chart

Normal visual acuity is 6/6 or 20/20

For near vision chart is placed at 25-0cm from patients eye

WHO classification of visual impairment

6/6 – 6/18 = normal

< 6/18 -6/60 = visual impairment

< 6/60 – 3/60 severe visual impairment

शालाक्य विशेष चिकित्सा-

जांगल मास सेवन – शंखक

इक्षुविकार, पयसा आर्द्रक – अपक्व प्रतिश्याय

विजया सेवन यवान्न सेवन – पक्व प्रतिश्याय

सन्तानिका सेवन – द्रूतहर्ष

औत्तरभक्ति क सर्पिणान – तालुशोष

नित्य त्रिफला सेवन – अव्रण शुक्र

जीवनीय घृत / अणुतैल् नस्य – शुष्काक्षिपाक

उष्ण दीपगिखा अंजन – अंजननामिका

मधुमस्तक, संयाव घृतपूर – अनन्तवात

औत्तरभक्ति क स्नेह – सूर्यावर्त

चतुर्स्नेह उत्तममात्र – अर्धावभेदक (चरक)

व्याधी ऐवं नस्य –

1) वातज शिरोरोग – वरुणादी गण सिद्ध घृत

2) कफज शिरोरोग – कटफल नस्य

3) कृमीज शिरोरोग – शोणित नस्य – सु.

वाग्भट – अजामूत्र नस्य

4) सूर्यावर्त – बृंहण नस्य

5) शंखक – क्षीरसर्पि नस्य

6) खालीत्य – निंब तैल नस्य – (वा)

7) वातज प्रतिश्याय – अदितोक्त नस्यविधि

8) पित्तज प्रतिश्याय – धवादी तैल् नस्य

9) कफज प्रतिश्याय – बलादी तैल् नस्य

10) सान्निपातज प्रतिश्याय – रसांजनादी तैल् नस्य

11) क्षवथु व भ्रंशथु – प्रथमन नस्य

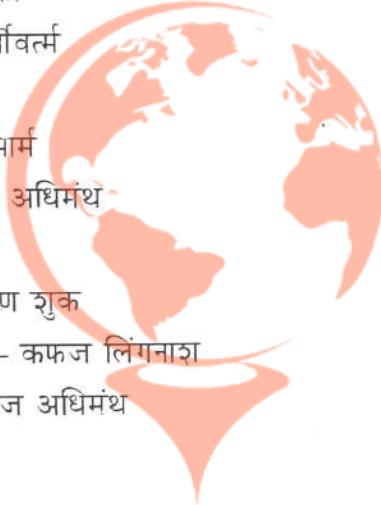
12) नासानाह – बला तिल व अणुतैल नस्य

130 नासार्श – गृहधूमादी, शिखरी तैल् नस्य

TIERRA

तुलनात्मक विवेचन-

- 1) कफज अधिमंथ – पांशुपूर्णमिवालिम
- 2) सशोफ पाक – पक्व उदुम्बर सन्निभ
- 3) पित्तज तिमिर – शिखिवर्हविचित्राणि, खद्योत
- 4) रक्तज तिमिर – हरितश्याव कृष्णानि
- 5) परिम्लायी तिमिर – खद्योत वत्
- 6) कफज लिंगनाश – चलपदमपलाशस्थ
- 7) रक्तज लिंगनाश – प्रवालपद्मपत्राभ
- 8) परिम्लायी तिमिर – स्थूलकाचानलप्रभ
- 9) अनिमित्तज लिंगनाश – वैदूर्य विमला दृष्टि
- 10) सरूजं यदि अरूजं – वातहत वर्त्म
- 11) अवेदना वापि सवेदना – सिरोत्पात
- 12) सरूजं वानिरूजं वापि – पूतीकर्ण
- 13) रक्तसर्षपसन्निभ – पौथकी
- 14) ऐर्वारूबीजप्रतिम – अर्शोवर्त्म
- 15) कोलप्रमान – लगण
- 16) यकृत्प्रकाशं – अधिमांसार्म
- 17) यकृतपिंडोपम – पित्तज अधिमंथ
- 18) पदमाभं – लोहितार्म
- 19) अच्छघनानुकारी – अव्रण शुक
- 20) शंख कुन्द इन्दुसमान – कफज लिंगनाश
- 21) बन्धुजीवप्रतिकाश – रक्तज अधिमंथ



Current affairs and General knowledge –

1) World Pneumonia day – 12 November

2) Asthma day – 2 May

Mission Indradhanush –

Launched in December 25, 2014 by ministry of Health and family welfare.

Aim – To immunize each and every child under 2 years of age and all those pregnant

Women who have been left uncovered under the routine immunization Programme.

Now intensified mission Indradhanush is launched in February 2022.

7 diseases are covered – measles, Polio, Pertussis, Tetanus, T.B., Diphtheria
Hepatitis B

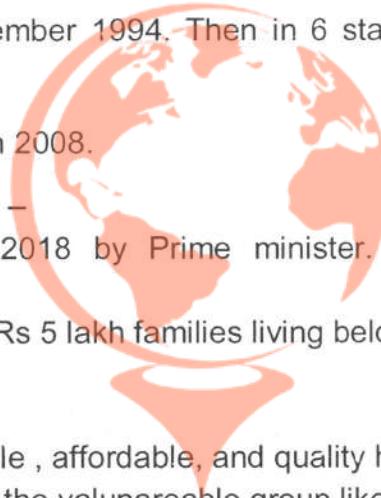
Vaccination of these diseases is covered under this mission

At birth	BCG, OPV, Hepatitis B
6 weeks	OPV, DPT, Hepatitis B
10 week	OPV, DPT, Hepatitis B
14 weeks	IPV, OPV, DPT, Hepatitis B
9-12 months	Measles, Vitamin A
14 – 16 Months	Measles, Vitamin A, OPV, DPT – booster
5 – 6 years	DPT – booster 2

Pulse polio immunization started on 2 October 1994.

IPV launched in India November 1994. Then in 6 states it was expanded in April 2016

माता बाल संगोपन केंद्र started in 2008.



Ayushman Bharat scheme –

Launched in September 2018 by Prime minister. It aims to cover 60 crore beneficiaries

It provides health cover of Rs 5 lakh families living below poverty line.

NRHM –

Launched in 12 April 2005.

Aim – is to provide accessible , affordable, and quality healthcare to the rural Population especially the valunareable group like women and children .

JSY (Jnani suraksha yojana)

Launched in 12 April 2005. It is being implemented with objective of reducing Maternal and neonatal mortality by promoting institutional delivery among poor Pregnant women.

PMMVY – Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana

Started in 2010.

Eligibility – all pregnant and lactating mothers who have their pregnancy on or After 1/1/2017 for first child.

Benefits – Receives cash 5000/ in three instalments. First instalment 1000/ Early registration In Anganwadi. Second instalment 2000/ after six Months on first ANC. Third instalment 2000/ after child birth

Registered child receives first cycle of BCG, OPV, DPT, and Hepatitis B Vaccines.

Ministry Of Ayush formed in 9 November 2014.

Previous name was ISM & H

Yoga Day – 1 june from 2015.

- Morarji Desai national institute of Yoga situated at New Delhi.
- Siddha system is originated from Tamilnadu .
- National institute of Siddha at – Chennai
- World Health organization Global center for traditional medicine in Gujarat
At – Lakha – Bawa! – Jamnagar on 9 th march 2022.
- Ayush Ministry decided to conduct clinical trials of Ashwagandha in collaboration With UK's London school of Hygiene and Tropical medicine (LSHTM)
 - A MOU (Memorandum of Understanding) was signed between AIIMS Delhi And LSHTM.
 - Ministry of Ayush declared to distribute Ayush 64 Tablets free for RTPCR Positive patients .
 - Ministry of India also approved pharmacopeia commission in june 2020.
 - In may 13. 2020 the council of scientific and industrial research and the ministry

Of AYUSH began clinical trials on four Ayurvedic drugs – Ashwagandha, guduchi +Pippali, Yashtimadhu and Ayush 64

- Fit india active day programme launched in april 14 , 2020.
- Ayush GRID started in march 6. 2020. = facilities to hospitals and laboratories
- 5 New portals on Ayush sector have been launched on 5 july 2021
 - 1)CTRI (Clinical trial registry of India)
 - 2) RMIS (Research management information system)
 - 3) SAHI (Showcase of Ayurveda historical imprints)
 - 4) AMAR (Ayush Manuscripts avanced repositories)
 - 5) e – Medha (Electronic medical Heritage Accession)

Clinical trial Registry of India (CTRI) -

Is a primary register of clinical trials under the world health organization;s International clinical trial registry platform.

Started in july 20 , 2007

Clinical trials can be registered under CTRI

Observational study can also be registered

TIERRA

National Ayush mission (NAM)

Started by department of ayush in 2014

Aim – promote ayush medical system through cost effective ayush services , quality control of ayurved unani and siddha drugs.

Various institutes of Ayurveda –

- 1)north eastern institute of Ayurveda and Homeopathy (NEIAH) – shilong
- 2) North eastern institute of folk medicine (NEIFM) – pasighat
- 3) National Ayurveda research institute for panchakarma – Cheruthuruthy

All subjects miscellaneous notes

आवरण भेद – चरक – 42. वाग्भट – 22, माधव – वर्णन नहीं किया
 शाल्य गति – सुश्रुत – 5, अष्टांग संग्रह – 3, अष्टांग हृदय – 5
 ऋतुकाल – चरक व सुश्रुत – 12 दिन भावप्रकाश – 16 दिन
 रजोदर्शन आयु (वर्ष) – सुश्रुत – 12, काश्यप – 16. भावप्रकाश – 16
 मैथुन निषिद्ध रात्र – सुश्रुत – प्रथम 3 दिन व 13 वीं रात्र, वाग्भट – प्रथम 3 दिन व 11 वीं व 13वीं रात्र
 मूच्छ – चरक – 4, सुश्रुत – 6, माधव – 6
 मद्य गुण – चरक – 10, सुश्रुत – 8, वाग्भट – 10
 मूत्राधात – चरक – 8/13, सुश्रुत – 12, माधव – 13, वाग्भट – 20
 स्वज्ञ भेद – चरक – 7, काश्यप – 10
 अन्तरिक्ष जल भेद – चरक – 3 धार कार हैम
 सुश्रुत – 4 धार कार तौष्णार हैम

गर्भिणी में यवागु देने का विधान – चरक – 8 वा मास, सुश्रुत – 6 वा मास,

गर्भनालछेदन – अर्धधार नामक शस्त्र से

चरक व सुश्रुत – 8 अंगुल अंतर पर वाग्भट – 4 अंगुल अंतर

कर्णविधन काल – सुश्रुत – 6 वा 7 वा मास

वाग्भट – 6/7/8 वे मास में शिशिरान्गम पर

दन्तोद्भेद काल – काश्यप – 4–8 मास, वाग्भट – 8 मास

नाम दोष चरक

1) बस्ती नेत्र दोष	8
2) बस्ती पुटक दोष	8
3) बस्ती दाता दोष	10
4) बस्ती दोष	12

सुश्रुतानुसार कुल बस्ती दोष – 76

सुश्रुत

11

5

6

–



1) वैद्यनिमित्त – 44 2) आतुरनिमित्त – 15

4) स्नेह वापस न आने के कारण – 8

पुटपाक (कर्मानुसार)

TIERRA

1) लेखन – 1 दिन तक = 100 मात्रा तक धारण

2) स्नेहन पुटपाक – 2 दिन तक = 200 मात्रा तक धारण

3) रोपण पुटपाक – 3 दिन तक = 300 मात्रा तक धारण

सेक (पुटपाक से दुगुना काल)

1) लेखन – 200 मात्रा तक धारण

2) स्नेहन – 400 मात्रा तक धारण

3) रोपण – 600 मात्रा तक धारण

आश्लोतन –

1) लेखन – 7 या 8 बिंदु

- 2) स्नेहन – 10 बिंदु
 3) रोपण – 12 बिंदु
 शिरोबस्ती धारण काल तर्पण से 10 गुणा होता है

अंजन –

गुटिकांजन व रसांजन की मात्रा	चूर्णांजन की मात्रा		
लेखन -1 हरेण	2 शलाका		
मानस प्रकृति	चरक	सुश्रुत	काश्यप
1) सात्विक	7	7	8
2) राजस	6	6	7
3) तामस	3	3	3
कुल	16	16	18

वर्धमान पिप्ली रसायन –

चरक – रसायन	सुश्रुत – वातरक्त	काश्यप – राजयक्षमा व शोथ	
मात्रा	चरक	सुश्रुत	कल्पना
उत्तम	10	10	पिघ
मध्यम	6	7	क्वाथ
हीन बल	3	5	चूर्ण
विषमज्वर भेद – चरक – 5	काश्यप – 7	वाग्भट – 8	
चरक केवल चतुर्थक विपर्यय मानते हैं			
सुश्रुत तृतीयक व अन्येवुष्क का विपर्यय भी मानते हैं			
गुल्म भेद – चरक, सुश्रुत, कश्यप – 5			

असाध्य महाकुष्ठ

चरक – काकणक कुष्ठ
 सुश्रुत – पुण्डरीक व काकणक कुष्ठ

सुश्रुत मतानुसार स्नेह मात्रा – 5

TIERRA

- 1) चतुर्भाग गते अहनि -- एक प्रहर में पचनेवाली – अग्निदीपक व अल्पदोषों में हितकर
- 2) अर्धकोदिवस – 6 घंटे में पचने वाली – वृष्टि, बृहण, मध्यम दोषों में हितकर
- 3) चतुर्भागावशेष – 9 घंटे में पचनेवाली – स्निग्धकारक = अधिक दोषों में हितकर
- 4) संपूर्ण अह – 12 घंटे में पचनेवाली = ग्लानी मूर्च्छा व मद को छोड़कर सभी रोगों में हितकर
- 5) अहकृत्स्न – 24 घंटे में पचनेवाली = कुष्ठ विष उन्माद अपस्मार व ग्रहरोग में हितकर

सर्पि संज्ञा –

- 1) चरक – पुराण धृत – 10 वर्ष तक का व उग्र गंध युक्त
 प्रपुराण धृत – 100 वर्ष तक का व लाक्षा रस समान, सर्वरोगापह, मेध्य, विरेचनेषु अग्र्य
- 2) सुश्रुत – कुम्भ सर्पि – 111 वर्ष तक का = रक्षोघ्न
 महासर्पि – 111 वर्ष से अधिक पुराण = तिमिर व वातनाशक

सूतिका काल –

- 1) चरक – वर्णन नहीं 2) सुश्रुत – 45 दिन या अध्यर्ध मास 3) हारीत = 45 दिन
 4) भावप्रकाश – 45 दिन या 4 मास 5) वाग्भट – 45 दिन
 6) शारंगधर – 1 1/2 मास या पुनः आर्तव दर्शन तक 7) काश्यप – 30 दिन या 6 मास

गुड हरीतकी – चरक – अर्श सुश्रुत – वातरक्त**इन्द्रायुधा जलौका से दष्ट होनेपर होनेवाला रोग – असाध्य****ओज मत मतांतर –**

- 1) अष्टांगसंग्रह – सार 2) वाग्भट – शुक्र का मल 3) डल्हण – शुक्र का स्नेह
 4) शारंगधर – शुक्र का उपधातु 5) ओज व बल सुश्रुतानुसार = समान परंतु डल्हणानुसार भिन्न
 6) ओज पंचरस युक्त – काश्यप

पंचकर्मात्तर परिहार काल –**चरक – द्विगुण काल सुश्रुत – 1 मास या पुनः बलवान होने तक****अलर्क विष – चरक – त्रिदोष सुश्रुत – वातकफज****सान्निपातज अतिसार मे प्रथम चिकित्सा –****चरक – प्रथम वात की सुश्रुत – प्रथम पित्त की****समसान्निपातज ज्वर चिकित्सा****चरक – प्रथम कफ की चिकित्सा सुश्रुत – प्रथम पित्त की चिकित्सा****अक्रियायां ध्रुवो मृत्यु क्रियायां संशयो भवेत सूत्र का संदर्भ
 चरक – सान्निपातज उदर सुश्रुत – अश्मरी निदान हारीत – जलोदर मे****फलो मे श्रेष्ठ – चरक – द्राक्षा सुश्रुत – अमलकी वाग्भट – द्राक्षा****विलेपी बहुसिक्था स्याद यवागु विरलद्रवा – सुश्रुत****यवागु बहुसिक्था स्याद विलेपी विरलद्रवा – शारंगधर****क्लोम मत मतांतर –**

- 1) फुफुस व उंडुक – गंगाधर 2) हृदय – चक्रपणी 3) पित्ताशय – डल्हण

4) कंठनाडी व शासनाडी – गणनाथ सेन**सर्पांगभिहत – सुश्रुत – वातप्रकोप****नवायस लोह – चरक – पांडु रोगाधिकार****शंकाविष वर्णन चरक – वातप्रकोप****सुश्रुत – प्रमेह पिङ्का अधिकार****मासानुमासिक परिचर्या – सुश्रुत**

- 1) तृतीय मास – इन्द्रिया सूक्ष्म 2) चतुर्थ मास – प्रव्यक्त 3) सप्तम मास – प्रव्यक्तर

दौहदावस्था – चरक – तृतीय सुश्रुत – चतुर्थ मास संग्रह – 3 पक्ष ते 5 मास काश्यप – 3 मा.**सिरा मूलस्थान – सुश्रुत – नाभी वाग्भट – हृदय****श्रेष्ठ अंजन – चरक – सौवीरांजन सुश्रुत – स्त्रोतोंजन****एको महागद – अतत्वाभिनिवेश****महागद महावेग अग्निवत शीघ्रकारी – रक्तपित्त****महामूला महावेग महाशब्दा महाबला – हिकका****महाब्याधी – हलीमक**

आयुर्वेदावतरण

1) चरकसंहिता (सू. 1)

ब्रह्मा - दक्ष प्रजापति - अश्विनीकुमार - इंद्र - भरद्वाज - आत्रेय - सहाशिष्य
षड्शिष्य - अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पराशर, हारीत, क्षारपाणी

2) सुश्रुत संहिता (सू. 1)

वरील प्रमाणेच :- आत्रेय ऐवजी धन्वंतरी

शिष्य - औपधेनव, वैतरण, औरभ्र, पौष्कलावत, करवीर्य, गौपुररक्षित,
सुश्रुत, निमी, कांकायन, गार्घ्य, गालव

3) काश्यप संहिता (वि. 1)

वरील प्रमाणेच :- इंद्र - 4 ऋषी - काश्यप, वशिष्ठ, अत्रि, भृगु

4) अष्टांगसंग्रह (सू. 1)

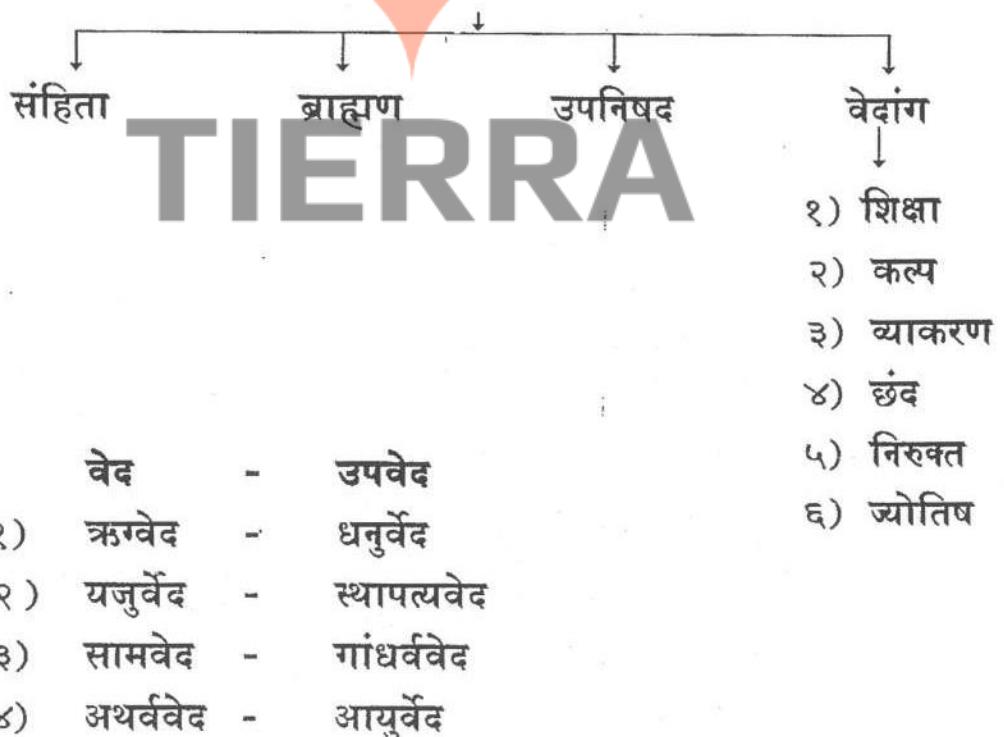
वरील प्रमाणेच :- इंद्र - पुनर्वसु आत्रेयांना नेता बनवून

धन्वन्तरी, भरद्वाज, निमी, कश्यप, आदि महर्षि तथा आलबायन आदि महात्मा
इंद्राकडे गेले.

5) अष्टांगहृदय (सू. 1)

ब्रह्मा स्मृत्वा इंद्र - आत्रेय आदि मुनि - त्यांचे शिष्य

वैदिक वाङ्मय - चार विभाग



- अथर्ववेद - 1) कल्पसूत्र - 5
 1) कौशिक 2) वैतान 3) नक्षत्र
 4) आंगिरस 5) शान्तिकल्प
 2) ब्राह्मण - गोपथब्राह्मण
 3) उपनिषद - 3
 1) प्रश्न 2) मण्डूक 3) माण्डूक्य

- अथर्ववेद पर्याय - [] ब्रह्मवेद
 [] भृगवाङ्गिरस
 [] अथर्वाङ्गिरस

- चिकित्सापद्धती - [] अर्थवन - दैवव्यपाश्रय चिकित्सा / शान्ति, सौम्यकर्म-
 कायचिकित्सेत परिणती
 [] अंगिरस - अंगरस संबंधी : युक्तिव्यपाश्रय / घोरकर्म /
 शत्यसंप्रदायात परिणती

ऋग्वेद काल - इ. पू. 4000 / 6000

अथर्ववेद - इ. पू. 1500

- 1) प्राचीन काल - 1 ते 7 वे शतक अंतिम संहिताकार अष्टांगहृदय
 2) मध्यकाल - 8 ते 15 / 16

मध्यकालातील एकमात्र संहिता = शाङ्गार्धर संहिता

3) आधुनिक काल

(आर्वाचीन) - 17 ते 20 भावप्रकाश - मध्य द आधुनिक काल यांच्या
 सीमारेषेवर स्थित 'आयुर्वेद विज्ञान' अंतिम संहिता

शिवदास सेन (15)

चक्रदत्तावर - तत्वचंद्रिका व्याख्या

अष्टांगहृदयावर - तत्वबोध व्याख्या

चक्रपाणीकृत द्रव्यगुणसंग्रह - टिका

भव्यदत्तकृत योगरत्नाकर - टिका

अन्त्रिदेव विद्यालंकार (20)

तीनही ग्रंथावर - (चरक, सुश्रुत, वाग्भट) - हिन्दी टिका

संपूर्ण अष्टांगसंग्रहावर एकमात्र हिन्दी टिका

१ चरक साहिता

तीन स्तर

अग्निवेश - 1500-1000 इ.पू.

चरक - २ वा ३ रे शतक इ.पू. (शृंग-मौर्यकाल)

दृढबल - ४ थे शतक

	टीकाकार	टीका	काल
१	भद्रार हरिश्चन्द्र	चरकन्यास	७-८ शतक
२	स्वामिकुमार	चरकपंजिका	७ वे शतक
३	जेज्जट	निरन्तरपदव्याख्या	९ वे शतक
४	चक्रपाणि	आयुर्वेदीपिका	११ वे शतक
५	शिवदास सेन	तत्त्वप्रदीपिका (सू. २९ पर्यंत)	१५
६	गंगाधर राय (दार्शनिक विषय)	जल्पकल्पतरु	१९
७	योगीन्द्रनाथ सेन	चरकोपस्कार	२०
८	ज्योतिषचन्द्र सरस्वती	चरकप्रदीपिका	२०
९	आषाढवर्मा	परिहारवार्तिक	
१०	झीरस्वामिदत्त	वार्तिक	
११	नरसिंह कविराज	चरकतत्त्वप्रकाशकौस्तुभ	१७ वे शतक

चरकचंद्रिका व्याख्या - गयदास

बृहत्तंत्रप्रदीप - नरदत्त (चक्रपाणीचे गुरु)

तत्त्वचंद्रिका - चक्रदत्तावरील टीका (शिवदास सेन)

2) सुश्रुत संहिता

४ स्तर

वृद्धसुश्रुत - पू. 1500-1000 आद्य ०४ १००० (उपनिषद्काल)

सुश्रुत (प्रतिसंस्कर्ता) - २ रे शतक

नागार्जुन (पुनःप्रतिसंस्करण-उत्तरतंत्र जोडले) ५ वे शतक (गुप्त काल)

चन्द्रट (पाठशुद्धिकर्ता) - १० वे शतक

	टीकाकार	टीका	काल
१	गयदास	बृहत्पंजिका / न्यायचन्द्रिका	११
२	भास्कर	पंजिका	१२
३	चक्रपाणिदत्त	भानुमती	११
४	डल्हण	निबंधसंग्रह	१२
५	हारणचन्द्र	सुश्रुतार्थसन्दीपन	२०
६	डॉ. धाणेकर	आयुर्वेद रहस्य दीपिका	२०

हिन्दी टीका :

अस्विकादत्त शास्त्री

अत्रिदेव विद्यालंकार

3) अष्टांगहृदय - 7 वे शतक

तीन स्तर

प्रथम (वृद्ध) वाग्भट - 6 वे शतक

माधव - 7 वे शतक

यामध्ये

7 व्या शतकातील प्रथम चरण

	टीकाकार	टीका	काल
१	अरुणदत्त	सर्वांगसुन्दरा	१३
२	हेमाद्रि	आयुर्वेदरसायन	१३
३	चन्द्रनन्दन	पदार्थचन्द्रिका	१०
४	आशाधर	अष्टांगहृदयोदयोत	
५	वैद्यतोरडमत्तलकाहप्रभु	मनोज / चिंतामणि	
६	रामनाथ	अष्टांगहृदयटीका	
७	हाटकाड्क	अष्टांगहृदयटीपिका	
८	शंकर	ललिता	
९	परमेश्वर	वाक्यप्रदीपिका	
१०	विश्वेश्वरपण्डित	विज्ञेयार्थप्रकाशिका	
११	दासपण्डित	हृदयबोधिका	
१२	श्रीकृष्णसेमलीक	वाग्भटार्थकौमुदी	
१३	दामोदर	संकेतमंजरी	
१४	यशोदानन्दसरकार	प्रदीपाख्या	
१५	भहनरहरि	वाग्भट खण्डन मण्डन	
१६	रामानुजाचार्य	आधटीका	
१७	जेज्जट	अष्टांगहृदयटीका	
१८	भट्टारहरिश्वन्द	अष्टांगहृदयटीका	
१९	वाचस्पतिमिश्र	अष्टांगहृदयटीका	
२०	मनोदयादित्य	मनोदयादित्य भट्टिया	
२१	भट्टश्रीहरीवर्धमान	सारोद्धार	
२२	पं. शिवशर्मा	शिवप्रदीपिका	
२३	वासवदेव	अन्वयमाला	
२४	पूरंदर (उदयादित्य)	दीपिका	
२५	वाग्भट	वैद्यर्यकभाष्य	
२६	विठ्ठलपण्डित	दीपिका	
२७	श्रीकण्ठ	अत्य बुद्धि प्रबोधन	
२८	शिवदास सेन	तत्त्वबोध	

४) अष्टांगसंग्रह

इन्दुकृत - शशिलेखा - (13 वे शतक)

हिन्दी टीका	अविदेवकृत	लालचन्द्र वैद्य
	गोवर्धनशर्मा छांगाणी	पद्मधर ज्ञा

५)

शाङ्गर्धरसंहिता

कर्ता - शाङ्गर्धर काल - 13 वे शतक रचना - 32 अध्याय, 2600 श्लोक
 पूर्वखण्ड - (1 ते 7)

- 1 - परिभाषा 2 - भैषजाख्यान, 3 - नाडीपरीक्षादिविधि,
- 4 - दीपनपाचन, 5-कलादिकाख्यान, 6 - आहारादिगती, 7 - रोगगणना

मध्यखण्ड - (1 ते 12)

स्वरस, क्वाथ, फाण्ट, हिम, कल्क, चूर्ण,
 गुटिका, लेह, स्नेहाक, संधान, धातुशोधन, रस

उत्तरखण्ड - (1 ते 13)

स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, स्नेहबस्ती, निरुह, उत्तरबस्ती,
 नस्य, धूमपान, गंडूष, लेप, शोणितविस्तुती, नेत्रकर्म

टीका - : 1) शाङ्गर्धरशारीर टीका
 2) दीपिका - आढमल्लकृत (14 वे शतक)
 3) गूढार्थदीपिका - काशीरामकृत (17 वे शतक)
 4) आयुर्वेददीपिका - रुद्रभट्टकृत (17 वे शतक)
 5) बोपदेवकृत

भावप्रकाश - लघुत्रयीचा अंतिम व महत्वपूर्ण ग्रंथ
 कर्ता - श्रीलटकननतनय भावमिश्र

काल - 16 वे शतक रचना - 3 खंड

पूर्वखंड - आयुर्वेदावतरण, सृष्टिउत्पत्ती, गर्भप्रकरण, बालप्रकरण
 दिनचर्या, क्रतुचर्या, मिस्त्रप्रकरण (निघण्टु भाग)

द्वितीय भाग - मानपरीभाषा, भैषजविधान, धातूशोधनमारण,
 पंचकर्म धूमपान, रोगपरीक्षा

मध्यम खंड - रोगवर्णन

उत्तरखंड - रसायन, वाजीकरण

टीका - पाण्डुलिपी - जम्मू पुस्तकालयात

हिन्दी टीका - दत्तराम चौबे, लालचन्द्र वैद्य

निघण्टु भाग टीका - कृष्णचंद्र चुनेकर, विश्वनाथ द्विवेदी

रोगविनिश्चय / रुग्विनिश्चय / माधवनिदान

एकुण अध्याय - 69
कर्ता - चन्द्रकरात्मज माधव
काल - ७ वे शतक

विजयरक्षित	मधुकोष (अश्मरीप्रकरणपर्यत)	१२
वाचस्पति	आतंकदर्पण	१४
नरसिंह कविराज	रोगविनिश्चय विवरण सिद्धांतचिंतामणि (सिद्धांत चिंतामणि / सिद्धांत चन्द्रिका)	१७
वासुदेव	सुबोधिनी	
भावमिश्र	माधवनिदानटिप्पणी	
भवानीसहाय	रुग्विनिर्णय टीका	
रामकृष्ण	वैद्ययमनोरमा	
विशारदसुत हारधन	रुग्विनिश्चय परिशिष्ट	
आधुनिक टीका -	शारदाव्याख्या - शारदाचरणसेनकृत विकासिनीव्याख्या - (हिन्दी) - दीनानाथ शर्मा शास्त्री विद्योतिनीव्याख्या - (हिन्दी) - सुदर्शनशास्त्री मधुरत्रवा - नरेन्द्रनाथ शास्त्री	

TIERRA

ग्रंथ – ग्रंथकार

१	खरनाद संहिता	भट्टारहरिश्चन्द्र
२	कल्याणकारक (९)	उग्रादित्याचार्य
३	सिद्धसार संहिता (९)	रविगुप्त
४	योगशतक (९)	नागार्जुन
५	शाङ्गर्धर संहिता (१३)	दामोदरसुनु शाङ्गर्धर
६	परहित संहिता (१५-१६)	श्रीनाथ पंडित
७	भावप्रकाश (१६)	श्रीलटकनतनय भावमिश्र
८	आयुर्वेद सौख्य (१६)	टोडरानन्द (टोडरमल)
९	योगतरंगिणी (१७)	त्रिमल्ल भट्ट
१०	आयुर्वेद विज्ञान (१९)	विनोदलाल सेनगुप्त
११	प्रश्नसहस्रविधान / सुश्रुतश्लोकवार्तिक (९)	माधव
१२	चिकित्साकलिका (१०)	तीसट
१३	निधण्टु रत्नाकर	वासुदेव गोडबोले
१४	दृह्णिधण्टु रत्नाकर	दत्तराम चौबे
१५	चक्रदत्तावरील रत्नप्रभा व्याख्या (१३)	निश्चलकर
१६	बृहत् संहिता	ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर
१७	चतुर्वर्ग चिंतामणि	हेमाद्रि
१८	विश्वप्रकाशकोष	महेश्वर
१९	अंजननिदान	अग्निवेश
२०	सिद्धांतनिदान	कविराज गणनाथ सेन
२१	चिकित्सासारसंग्रह	वंगसेन
२२	चिकित्साकलिका	तीसटाचार्य
२३	रत्नप्रभा (चक्रदत्तावरील व्याख्या)	निश्चलकर
२४	योगरत्नाकर (१७)	नयनशेखर / नारायण शेखर
२५	भैषज्यरत्नावली	गोविंदाससेन
२६	शतश्लोकी, हृदयदीपक	बोपदेव
२७	योगरत्नसमुच्चय	चंद्रट

ग्रंथ - ग्रंथकार

२८	गदनिग्रह	शोढल
२९	चिकित्साप्रदीप	भा. वि. गोखले
३०	वसवराजीयम्	नीलकंठ कोट्टरु वसवराज
३१	वैद्यजीवनम् (17)	लोलिम्बराज
३२	सिद्धयोग / वृंदमाधव	वृंद
३३	भैषज्यमणिमाला / सिद्धभेषजमणिमाला	कृष्णरामभट्ट
३४	सिद्धयोगसंग्रह	यादवजी त्रिकमजी आचार्य
३५	वैद्यकशब्दसिन्धु (कोष)	उमेशचन्द्र गुप्त
३६	अष्टाध्यायी (इ. पूर्व 7-8)	पाणिनी
३७	वार्तिकपाठ (इ. पूर्व 350)	कात्यायन
३८	महाभाष्य (इ. पूर्व 150)	पतंजली
३९	हर्षचरित्र (६ वे शतक)	बाणभट्ट
४०	बृहत्संहिता (६ वे शतक)	वराहमिहिर
४१	उद्भिजांग प्रत्यंग विज्ञान	यादवजी त्रिकमजी आचार्य
४२	आयुर्वेद प्रकाश	पंडित केशव
४३	हस्त्यायुर्वेद	पालकाण्ठ
४४	गजशास्त्र	पालकाण्ठ
४५	अश्वशास्त्र	नकुल
४६	शालिहोत्र	भोज
४७	अश्ववैद्यक	जयदत्त
४८	प्रत्यक्षशारीरम्	गणनाथ सेन
४९	सिद्धांतनिदान	गणनाथ सेन
५०	संज्ञापञ्चक विमर्श	गणनाथ सेन
५१	शरीर परिभाषा	गणनाथ सेन
५२	चिकित्सासारसंग्रह (वंगसेन)	वंगसेन
५३	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुङ्ड

TIERRA

सुशूत संहिता	5+1, 120	चरक संहिता	8, 120	भेल संहिता	8, 120	(उपलब्ध)	काश्यप संहिता	8+1, 120+80
सूत्र स्थान	46	सूत्र स्थान	30	सूत्र स्थान	30	4 - 28	सूत्र स्थान	30
निदान स्थान	16	निदान स्थान	8	निदान स्थान	8	2 - 8	निदान स्थान	8
शारीर स्थान	10	विमान स्थान	8	विमान स्थान	8	1 - 8	विमान स्थान	8
चिकित्सा स्थान	40	शारीर स्थान	3	शारीर स्थान	8	2 - 8	शारीर स्थान	8
कल्पस्थान	8	इंद्रिय स्थान	12	इंद्रिय स्थान	12	1 - 12	इंद्रिय स्थान	12
उत्तरांत्र	66	चिकित्सा स्थान	30	चिकित्सा स्थान	30	1 - 30	चिकित्सा स्थान	30
	186	कल्पस्थान	12	कल्पस्थान	12	1 - 9	कल्पस्थान	12
		सिद्धिस्थान	12	सिद्धिस्थान	12	1 - 8	सिद्धिस्थान	12
						खिल		80

अष्टाग हृदय	6, 120, 280
सूत्रस्थान	30
शारीर	6
निदान	16
चिकित्सास्थान	22
कल्पस्थान	6
उत्तरस्थान	40
	120

अष्टाग सप्तह	6, 150
सूत्रस्थान	40
शारीर	12
निदान	16
चिकित्सास्थान	24
कल्पस्थान	8
उत्तरस्थान	50
	150

हारित संहिता	6+1
प्रथम स्थान (अन्तपान)	23
द्वितीय स्थान (आरिष्ट)	9
तृतीय स्थान (चिकित्सा)	58
चतुर्थ स्थान (कल्प)	6
पंचम स्थान (सूत्र)	5
षष्ठ स्थान (शारीर)	1
परिशिष्टाघात्य	1
	103

पदार्थविज्ञान

दर्शननाम	कर्ता
सांख्यदर्शन	कपिलमुनी
योगदर्शन	पतंजली
न्यायदर्शन	गौतम (अक्षपाद)
वैशेषिक दर्शन	कणाद
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	महर्षि वेदव्यास
चर्वाक दर्शन	महर्षि चर्वाक
जैन दर्शन	वर्धमान महावीर
बौद्ध दर्शन	गौतम बुद्ध

दर्शननाम	पर्याय नाम
न्यायदर्शन	आन्वीक्षीकी दर्शन
योगदर्शन	पतंजली / सेश्वर सांख्य
वैशेषिक दर्शन	औलुक्य दर्शन
चर्वाक दर्शन	लोकायत / बाह्यस्पत्य
बौद्ध दर्शन	तथागत दर्शन
जैन दर्शन	आर्हत दर्शन
पूर्व मीमांसा	द्वादशलक्षणी
उत्तर मीमांसा	वेदांत दर्शन, ब्रह्मसूत्र, शांकर, भिक्षुसूत्र, शारीरीक सूत्र

प्रमाण संख्या :

दर्शन	प्रमाण संख्या	प्रमाण
चर्वाक	1	प्रत्यक्ष
जैन, बौद्ध	2	प्रत्यक्ष, अनुमान
वैशेषिक	2	प्रत्यक्ष, अनुमान
सांख्य, योग, रामानुज	3	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द
चरक	4	प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश, युक्ति
न्याय	4	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान
सुश्रुत	4	प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमान
पूर्व मीमांसा (प्रभाकर)	5	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति
उत्तर मीमांसा (वेदांत)	6	प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अभाव
पौराणिक	8	--- 7) संभव 8) ऐतिहय

दर्शननाम	वाद
सांख्यदर्शन	सत्कार्यवाद, परिणामवाद, द्वैतवाद
योगदर्शन	195 योगसूत्र वर्णन
न्यायदर्शन	असत्कार्यवाद, आरंभवाद, पिठरपाकवाद
वैशेषिक दर्शन	असत्कार्यवाद, आरंभवाद, पिलुपाकवाद, परमाणुवाद
पूर्व मीमांसा	कर्मकाण्ड, कर्मविपाक, पापपुण्य, अपूर्ववाद
उत्तर मीमांसा	विवर्तवाद.
चर्वक दर्शन	भौतिकवाद, चतुर्भुतसिद्धांत, शरीरआत्मवाद
बौद्ध दर्शन	क्षणभंगुरवाद, संघातवाद, शून्यवाद
जैन दर्शन	स्थादवाद/सप्तभंगीनयवाद, अनेकान्तवाद

पदार्थ संख्या

चरक, वैशेषिक - 6	बौद्ध - 6	जैन - 9	
1 द्रव्य	1 आश्रव	1 आश्रव	4 सुश्रुत, पतंजली, सांख्य - 25
2 गुण	2 बंध	2 बंध	6 वेदांत - 1 (ब्रह्म)
3 कर्म	3 संवर	3 संवर	6 रामानुजाचार्य - 3 चित्त अचित्त इश्वर
4 सामान्य	4 विर्जरा	4 निर्जरा	7 नव्य न्याय - 7, वैशेषिकोक्त 6 + अभाव
5 विशेष	5 मोक्ष	5 मोक्ष	
6 समवाय	6 जीव	6 जीव	9 माधव संप्रदाय - 8
		7 अजीव	10 भट्टारक - 8
		8 पाप	11 प्रभाकर मिश्र - 8
		9 पुण्य	

द्रव्य - गुण संख्या

पृथ्वी - 14	परमात्मा - 8
आप - 14	मन - 8
जीवात्मा - 14	आकाश - 6
तेज - 11	दिक् - 5
वायु - 9	काल - 5

दर्शन - गुण संख्या

वैशेषिक दर्शन - 17
न्याय दर्शन - 24
तर्क संग्रह - 24
सांख्य - 3 सत्त्व रज तम
आयुर्वेद - 41
योगीन्द्रनाथ सेन - 42

रसशास्त्र

ग्रंथ	ग्रंथकार	काल
रसेन्द्रमंगल व कक्षपुटंत्र	नागार्जुन द्वितीय	७-८
रसहृदयंत्र	भिक्षु गोविन्दपादाचार्य	१०
रसाणव	भैरवानंद योगी	१०
गोरक्ष संहिता	गोरखनाथ	१२
रसेन्द्रचूडामणि	आचार्य सोमदेव	१२
रसप्रकाश सुधाकर	यशोधर भट्ट	१२
रसरत्नसमुच्चय	वाग्मट	१३
रसरत्नाकर	नित्यनाथ	१३
रसपद्धति	आचार्य बिन्दु	१३
रसेश्वर दर्शन	माध्यवाचार्य	१४
शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर मिश्र	१३
रसचिन्तामणि	अनन्तदेव सूरि	१५
रसेन्द्रचिन्तामणि	आचार्य हुण्डुकनाथ	१५
रसमन्जरी	शालिनाथ	१५
लौहसर्वस्वम्	आचार्य सुरेश्वर	१५
रसेन्द्रसारसंग्रह	कृष्णगोपाल भट्ट	१६
सिद्धयोगसंग्रह	आचार्य यादवर्जीत्रिकमजी	२०
हिस्ट्री ओफ हिन्दू केमेस्ट्री - सर पी. सी. रॉय (कोलकाता)		

ग्रंथ	ग्रंथकार	काल
रसप्रदीप	प्राणनाथ सेन	१६
रसकामधेनु	चूडामणि मिश्र	१७
योगतंरंगिणी	त्रिमल्ल भट्ट	१७
आयुर्वेद प्रकाश	माध्यवाचार्य	१८
भैषज्यरत्नावली	गोविन्ददास सेन	१९
रसतंरंगिणी	सवानन्द शर्मा	२०
पारदविजानीयम्	वासुदेव मूलशंकर द्विवेदी	२०
आयुर्वेद सारसंग्रह	रामनारायण शर्मा	२०
सिद्धभेषज मणिमाला	कृष्णरामभट्ट	२०
रसामुत	यादवर्जी त्रिकमजी आचार्य	२०
भारतीयरसशास्त्र	वामन गणेश देसाई	२०
आनंद कंद	मंथान भैरव	
भारत भैषज्य रत्नाकर	गोपीनाथ गुप्त (उंझा)	
पारद संहिता	निरंजन प्रसाद गुप्त	
पारद संहिता	पारद संहिता	
रसचाण्डाशु	चित्तोद्भवत्स्वामी हंसराज	
रसचूण्डाशु (मराठी)	शङ्कर	
दत्तोबल्लाळ बोरकर		

रत्न	विशेष शोधन
माणिक्य	अमलकर्ण स्वरस
मौकितक	जयंती स्वरस
प्रवाठ	क्षारकणीय द्रव
ताक्ष्य - (पन्ना)	गोडुङ्घ
पुष्कराज	कांजी + कुलत्थवकाथ
हीरक	तण्डुलीय स्वरस
नीलम	नीली स्वरस
गोमेद	गोरोचन युक्तजल
वैदूर्य	त्रिफला वक्वाथ

रत्न	इंग्रजी नाम	काटिए	विशेष उपलब्धी
माणिक्य	Ruby	9	Al_2O_3
मौकितक	Pearl	3.5	CaCO_3
प्रवाठ	Coral	3.5	CaCO_3
ताक्ष्य - (पन्ना)	Emerald	7.5	$\text{Be}_3\text{Al}_2(\text{SiO}_3)_6$
पुष्कराज	Topaz	8	$\text{Al}(\text{FOH})_2 \text{SiO}_4$
हीरक	Diamond	10	C
नीलम	Sapphire	9	Al_2O_3
गोमेद	Zircon / Cinnamone Stone	7.5	ZrSiO_4
वैदूर्य	Cat's eye	8.5	BeoAl_2O_3

द्यातुवर्गीकरण

रसहृदय तंत्र

- सारलोह - सुवर्ण, रजत
- सत्चलोह - ताम्र, तीक्ष्णलोह, कांतलोह, अभक सत्च, पितल
- पूतीलोह - नाग, वंग

रसरत्नसमुच्चय

- शुंदलोह - सुवर्ण, रजत, ताम्र, कांतलोह
- मिश्रलोह - पितल, कांस्य, बर्त
- पूतीलोह - नाग, वंग

औषधी योग

अ.क्र.	योग - अधिकार	अ.क्र.	योग - अधिकार
१	अजीर्णकण्टक रस - अजीर्ण	१६	कफकेतु रस - ज्वर (भैर) कास (र.रा.सुं)
२	पुष्पधन्वारस - वाजीकरण (र.र.स/भै.र./योर)	१७	कस्तुरी भैरव रस - ज्वर (र.सा.सं)
३	प्रतापलंकेश्वर रस - सूतिका ज्वर (यो.र./रसचंडाङु)	१८	कुमारकल्याणो रस - बालरोग (भै.र.)
४	प्रवाळंपचामृत रस - गुल्म (बृनिर, र.चं/योर)	१९	क्रव्याद रस - अजीर्ण (र.रा.सुं, योर, रचं)
५	बोलबधंद रस - प्रद्वर (र.चं/बृयोता/बृत्तिर)	२०	गर्भपाल रस - खीरोग (रचं)
६	दुर्जिलजेता रस - ज्वर (बृनिर/र.चं.)	२१	चंद्रकला रस - मूत्रकृच्छ्रु / दाह (बृनि.र, रचं)
७	नाराच रस - गुल्म (र.चं/मि.र.) उदर (भै.र.)	२२	तारकेश्वर रस - मृत्रकृच्छ्रु (भै.र.)
८	नित्यानंद रस - श्लीपद (र.का.धे./भै.र.)	२३	तालकेश्वर रस - कुष्ठ
९	अश्वकंचुकी रस - श्वास (र.रा.सुं.)	२४	त्रिविक्रम रस - अश्वमरी (योर, र.चं)
१०	इच्छाभेदी रस - उदर (र.सा.सं.)	२५	चतुर्मुख रस - वातव्याधी (भैर, रचं)
११	आनंदभैरव रस - ज्वरातिसार / अतिसार (भै.र./बृनिर)	२६	चतुर्भुज रस - उम्माद (रचं, रसासं)
१२	एकांगवीर रस - वातव्याधी (बृनि.र.)	२७	जलोदयरि रस - उदर (रचं, योर)
१३	कन्दर्प रस - औपसर्गिक मेह (भै.र.)	२८	जयमंगल रस - ज्वर (भैर / र.रा.सुं)
१४	कनकसुदर रस - क्षय (बृ.नि.र.)	२९	त्रिभुवनकिर्ती रस - ज्वर (रचं/योर)
१५	कनकसुंदरो रस - ज्वर (बृ.नि.र.) यक्षमा (र.सा.सं.)	३०	त्रिपुरभैरव रस - ज्वर (भा.प्र)

अ.क्र.	योग - अधिकार	अ.क्र.	योग - अधिकार
३१	त्रैलोक्यनिंतामणि रस - राजयक्षमा / ऊर / वातव्याधी	४९	त्रैलोक्यसुंदर रस - वातिक उदर रोग
३२	शृंगारभूत रस - कास (र.चं / भैर)	५०	वारिशोषण रस - जलोदर
३३	समीरपञ्चरस - वातव्याधी (र.चं / योर)	५१	वसंतकुसुमाकर रस - प्रमेह
३४	सूतशेखररस - अम्लपित्त (र.चं / योर, बृ.नि.र)	५२	वसंतमालती रस (सुवर्णमालिनी वंसत) - जीणज्वर / क्षय
३५	हृदयापर्चिरस - हृद्रोग (र.सा.सं/भैर)	५३	वातकुलान्तक रस - अपस्मार / वातरोग
३६	श्वासकासचिंतामणि रस - श्वास (र.चं/ र.सा.सं)	५४	नीलकण्ठ रस - बमन
३७	श्वासकुठार रस - श्वास (भा.प्र., र.कम.धे, भैर)	५५	मृत्युजय रस - विषम ज्वर, सन्निपात ज्वर
३८	सूचिकाभरण रस - ज्वर (बृ.यो.त)	५६	योगेन्द्र रस - हृद्य व मस्तिष्करोग
३९	सूतिकाभरण रस - ल्वीरोग (र. चं / योर, भैर)	५७	ब्रह्म रस - कुष्ठ
४०	स्मृतीसागर रस - अपस्मार (योर / बृन्तिर)	५८	सर्वश्वर रस - कुष्ठ / प्रमेह (भै.र.)
४१	सुवर्णभूपती रस - राजयक्षमा (र.चं/बृ.नि.र)	५९	लक्ष्माविलास रस - जीर्ण ज्वर
४२	हरिशंकर रस - प्रमेह (र.सं.चिं)	६०	अर्धनारीनेश्वर रस - सन्निपात / मूळर्णी
४३	हेमगर्भपोइली रस - राजयक्षमा (र.चं,स्सासं)	६१	अमृताणव रस - अतिसार / ग्रहणी
४४	हिंगलेश्वर रस - ग्रहणी (र.र.स.)	६२	उदयादित्य रस - कुष्ठ
४५	भैरव रस - फिरंग	६३	नृपतिवत्त्वभ रस - ग्रहणी
४६	पूर्णचन्द्र रस - राजयक्षमा	६४	नागार्जुनाभ रस - हृदयरोग
४७	चन्द्रामृत रस - कफजकास	६५	नवरत्नराजमृगांक / राजमृगांक रस - राजयक्षमा (यो.र.)
४८	सुधानिधि रस - अलचि / मुळर्णी	६६	गंधक रसायन - रसायन (बृ.नि.र, यो.र. आ.प्र.)

लौह योग

अ.क्र.	योग - अधिकार	अ.क्र.
१	धात्री लौहम् - शूल (भैर/र.सां), कामला (वंगसेन/योर)	६
२	नवायस लौह - पाण्डू (च.सं)	७
३	ताप्यादि लौह - पाण्डू (र.चं/च सं)	८
४	सप्तामृत लौह - नेत्ररोग (योर. रचं, चक्रदत्त)	९
५	अमलपित्तात्तक लौह - अमलपित्त	१०

अ.क्र.	चूर्ण - अधिकार	अ.क्र.	चूर्ण - अधिकार
१	चोपचिन्यादि चूर्ण - उपदंश (यो.र./बृ.नि.र.)	१३	अलम्बुषादि चूर्ण - आमवात (भा.प्र.,यो.र.)
२	सितोपलादि चूर्ण - राजयक्षमा (च.सं,शा.,भै.र.)	१४	आमलकथादि चूर्ण - ज्वर (यो. र.)
३	हिंवाइक चूर्ण - अग्निमाय (भै.र.,भा.प्र.,च.द.)	१५	नारसिंह चूर्ण - वाजीकरण (ग.नि., भै.र., चं.द.)
४	सुदर्शन चूर्ण - ज्वर (शा.,यो.र.)	१६	नारथण चूर्ण - उदर (च.सं.,च.द.)
५	सामुद्रादि चूर्ण - शूल / परिणामशूल (वं.से.,भै.र.)	१७	दशनसंस्कार चूर्ण - मुखरोग (भै.र.)
६	द्विरुत्तर हिंवादि चूर्ण - आनाह (च.सं.)	१८	दाडिमाषक चूर्ण - अतिसार (ग.नि., वृ.नि.र.)
७	अविपत्तिकर चूर्ण - अमलपित्त (वं.से.,भै.र.)	१९	ब्योषादि चूर्ण - मूत्रकृच्छ्रु/मूत्राघात
८	अतिविषादि चूर्ण - रक्ततातिसार (यो.र.)	२०	आकारकरभादि चूर्ण - शुक्रसंभन (वाजीकरण)
९	कपितथाषक चूर्ण - ग्रहणी (च.द.)	२१	पीतक चूर्ण, कालक चूर्ण - मुखरोग (च सं)
१०	कर्पुरादि चूर्ण - कास (यो.र.) राजयक्षमा (वं.से.)	२२	हिंवादि चूर्ण - उदरशूल
११	अजमोदादि चूर्ण - आमवात / शूल (यो.र.)	२३	हरीतकथादि चूर्ण - अजीर्णजन्य आतिसार
१२	अर्कलवण - उदर (च.द.)	२४	तवणभारकर चूर्ण - मन्दानिन / अजीर्ण/गुल्म (शा.सं.,चं.द.,भै.र.)

अ.क्र.	चूर्ण - अधिकार	अ.क्र.	चूर्ण - अधिकार
२५	गंगाधर चूर्ण - अतिसार	३२	सारस्वत चूर्ण - उम्माद/अपस्मार
२६	कृष्णादि चूर्ण - बालातिसार / शोथ	३३	शुंग्यादि चूर्ण - कास (शा.सं., भै.र.)
२७	तलिसादि चूर्ण - यक्षमा/कास	३४	पंचनिक्षिदि चूर्ण - कुष्ठ (शा.सं., वृ.नि.र.)
२८	संधवादि चूर्ण - पाश्वशूल	३५	गोमत्र हरीतकी - पाण्डु/शोथ (च.सं., वृ.नि.र.)
२९	एलादि चूर्ण - छादि	३६	षड्धरण योग (षट्खरण योग) - आमाशयगत वात/वातव्याधी (सु.,भा.)
३०	गोक्षुरादि चूर्ण - रक्तप्रदर	३७	सामशक्तिरा चूर्ण - अर्श (भै.र., यो.र.)
३१	जातिफलादि चूर्ण - अतिसार / ग्रहणी		

घृत

१	चब्यादि घृत - अर्श (वं.से.च.द.)	१३	भूतराव घृत - उम्माद (ग.नि., वारभट)
२	शतावरी घृत - खीरोग (वं.से.च.द.)	१४	गुण्डु पञ्चतिक्त घृत - कुष्ठ (वं.से.वृ.मा)
३	विफला घृत - नेवरोग (वं.से., वृंमा.)	१५	धन्वन्तर घृत - प्रमेह पिङ्डका (सु.चि.,वा.चि.)
४	तिक्तक घृतम् - कुष्ठ (वं.से., ग.नि.)	१६	चांगोरी घृत - अतिसार / ग्रहणी
५	क्षीरषट्पलघृत - गुल्म (यो.र., भै.र.)	१७	जात्यादि घृत - ब्रण
६	षट्पलघृतम् - उदर (सु.सं.) कुष्ठ (यो.र.)	१८	कानदेव घृत - रक्ततिक्तार
७	षट्विन्दुघृत - शिरोरोग / पीनस (बृ.यो.त., वं.से.)	१९	महातिक्तक घृत - कुष्ठ (च.सं.)
८	कपटकारी घृत - कास (च.सं.)	२०	चित्रक घृत - शोथ / उदर
९	कल्याणक घृत - उम्माद (च.सं.)	२१	पंचग्र्व घृत - उम्माद
१०	काशमर्यादि घृत - योनिव्यापद (च.सं.)	२२	नीलवज्रक घृत - कुष्ठ
११	कुमुमादि घृत - शिरोरोग (च.द.)	२३	सुकुमार घृत - मूत्रकुच्छ / अश्मरी
१२	फलघृत - खीरोग / योनिरोग (वं.से.,यो.र.भा.प्र.)	२४	दाढिमादि घृत - पाण्डु (च.सं.)

तैल

१	दिपिका तैल - कणरोग (च.द., यो.र.)
२	दशमूलतैल - शिरोरोग (भी.र.)
३	दशमूलादि तैल - वातव्याधी (वं.से.)
४	नारायण तैल - वातव्याधी (च.द., भा.प्र.)
५	प्रसारिणी तैल - वातव्याधी (यो.र. यो.त.)
६	बिल्ब तैल - कणरोग (च.द., भी.र. वंसे.)
७	गंध तैल - भग्न (च.द., भी.र. वं.से.)
८	अपामार्गक्षारतैल - कणरोग (भी.र.)
९	कासिसादि तैल - अर्श (शा.स.)
१०	कुंकुमादि तैल - क्षुद्ररोग (च.द., यो.र., भी.र.)
११	षट्बिंदु तैल - शिरोरोग (ग.नि., च.द. भा.प्र.)
१२	स्थन्दन तैल - भग्नदर (बृ.नि.र.)
१३	सहचर तैल - मुखरोग (भी.र. वं.से., यो.र.)
१४	सहचरादि तैल - वातव्याधी (वं.से.)
१५	क्षारतैल - कणरोग (शा.सं. च.द., यो.र.)
१६	शतपाकी / सहखापाकी बला तैल - वातरक्त (च.स.)
१७	शतावरी तैल - वातव्याधी (वं.से.यो.र.)
१८	श्रीगोपाल तैल - वाजीकरण (भी.र.)

१९	जात्यादि तैल - मुखरोग (यो.र., वं.से.भा.प्र.)
२०	चंदनबलालाक्षादि तैल - ज्वर (बृ.नि.र.यो.र.)
२१	अणु तैल - प्रतिश्याया / शिरोरोग
२२	हरिमेदादि तैल - मुखरोग
२३	विषगर्भ तैल - संधिगत वात / आमवात
२४	जपाकुशुम तैल - इन्द्रलुप
२५	मूषक तैल - योनिभ्रंश
२६	अर्क तैल - पाददारि
२७	बाकुची तैल - श्विन
२८	तुवरक तैल - कुष
२९	चुकु तैल - गुदभ्रंश
३०	जुड़च्यादि तैल - वातरक्त
३१	पंचगुण तैल - वातव्याधी
३२	पंचगुण तैल - नपुंसकता / वातरोग
३३	मोरच्यादि तैल / महामिच्यादि तैल - कुष
३४	महामाष तैल - पक्षाद्यात
३५	बृ. सैथवादि तैल - आमवात

ગુટી - વર્તી

અ.ક્ર.	ગુટી - વર્તી - અધિકાર	અ.ક્ર.	ગુટી - વર્તી - અધિકાર
૧	પાનીય ભવત વર્તી - રસાયન (વં સે)	૧૯	ક્ષારગુટિકા - શોથ (ચ.સ., ચ.દ. ગ.નિ)
૨	પ્રભાકર વર્તી - હદ્રોગ (ભે. ર)	૨૦	સ્ફૂરણ વટક - અર્શ (શા.સં.)
૩	ખદિરાદિ ગુટિકા - મુખરોગ કામસ (યો. ર, ચ. સં)	૨૧	સપ્તશાળી વર્તી - ફિરંગ
૪	અનિનુંડી વર્તી - અગ્નિમાંદ્ય (ભે. ર)	૨૨	લાંગાદિ વર્તી - જીર્ણ કાસ
૫	અભ્યાદિ મોદક - રસાયન મનીતનાશન (શા.સં.)	૨૩	મણદુરાદિ વટક - કામલા
૬	આરોગ્યવધિની - કુષ્ઠ (ર. ર. સ.)	૨૪	મારિચ્યાદિ ગુટિકા - કાસ
૭	એલાદિ ગુટિકા - ઇક્તાપિત્ત (ચ.દ.) ક્ષતક્ષીળ (ચ.સ.)	૨૫	પિપળી મોદક - જરીણ જવર
૮	કાંકાયન ગુટિકા - અર્શ (યો. ર.)	૨૬	સ્વર્ણ મોદક - અર્શ
૯	કુબેરાક્ષ વર્તી - શુલ (બૃ.નિ.ર.)	૨૭	ગંધક વર્તી - અજીર્ણ
૧૦	ચિત્રકાદિ ગુટી - ગ્રહણો (ચ.સં.)	૨૮	પ્રાણદા ગુટિકા - અર્શ
૧૧	શિવા ગુટિકા - રાજયક્ષમા (ચ.દ.વં.સે.અ.સં.)	૨૯	ચાન્દનાદિ વર્તી - મૂત્રરોગ
૧૨	શંખવર્તી - અજીર્ણ (યો.ર., ર.ચ., ભે.ર.)	૩૦	વ્યોષાદિ ગુટિકા - પ્રતિશ્યાય
૧૩	તાલિસાદિ ગુટિકા - રાજયક્ષમા (વં.સે., ચ.સં.)	૩૧	ત્રિફલા મોદક - કૃષ્ણ
૧૪	શશિલેખા વર્તી - કુષ્ઠ (યો.ર.)	૩૨	ક્ષાર ગુટિકા / વર્તી - ઉદર રોગ
૧૫	શીફલકુસુમાવર્તી - રૂખીરોગ (ર.ચં.)	૩૩	દુધ વર્તી - શોથ
૧૬	ચંદ્રપ્રભા ગુટિકા - પ્રમેહ (હા.)	૩૪	સૌંભાગ્ય વર્તી - પ્રસૂતિ રોગ
૧૭	ચંદ્રપ્રભા વર્તી - પ્રમેહ (શા.સં., ભે.ર.)	૩૫	બાહુશાલ ગુડ - ગ્રહણી (વં.સે.) અર્શ (શા.સં., ચ.દ.)
૧૮	સંજીવની વર્તી - અગ્નિમાંદ્ય (યો.ત.) અજીર્ણ (યો.ર.)		

ગુણુલ કલ્ય

અવલેહ

૧	કાંચનાર ગુણુલ - ગંડમાલા (બુ.નિ.ર.)
૨	કૈશોર ગુણુલ - વાતરકત (ભે.ર.)
૩	અમૃતાદિ ગુણુલ - વાતરકત (ભા.પ્ર.)
૪	આભા ગુણુલ - ભગ્ન (ચ.ડ.)
૫	નવક ગુણુલ - મેદોરેગ, સ્થીલ્ય (યો.ર., બુ.નિ.ર., ભે.ર.)
૬	નવકાર્ષિક ગુણુલ - ભગંદર (યો.ર., ભે.ર.)
૭	ત્રયોદશાંગ ગુણુલ - વાતવ્યાધી (ભે.ર., ચં.સે.)
૮	ત્રિફલા ગુણુલ - વાતવ્યાધી (ભાગંદર) (શા.સં.)
૯	સિંહનાદ ગુણુલ - આમવાત (ભે.ર., ચ.ડ્ર., ભા.પ્ર.)
૧૦	ગોકુરાદિ ગુણુલ - મૂત્રરેગ
૧૧	પંચતિકત ઘૃત ગુણુલ - કુષ
૧૨	મહાયોગરાજ ગુણુલ - વાતવ્યાધી
૧૩	લાક્ષાદિ ગુણુલ - અસ્થિરેગ

૧	દંતી હરીતકી અવલેહ - ગુલમ (વં.સે., ભે.ર., ગ.નિ.)
૨	દુરાલમાદિવલેહ - કાસ (ગ.નિ.)
૩	કંસહરીતકી લેહ - શોથ (ચ.સં.)
૪	કણટકાયાવલેહ - કાસ (યો.ર., ચં.સે.)
૫	કલ્યાણકાવલેહ - ગ્રહણી (યો.ર.)
૬	કુષાળકાવલેહ - રક્તપિત (બુ.નિ.ર.)
૭	અગ્ન્ય હરીતકી અવલેહ - ક્ષ૟ (બુ.નિ.ર.)
૮	ચિત્રક હરીતકી અવલેહ - નાસારેગ (યો.ર., ભે.ર., ચ.ડ.)
૯	ચ્યવનપ્રાશ - રસારયન (ચ.સં.)
૧૦	કુર્તાવલેહ - ગ્રવાહિકા
૧૧	વાસાવલેહ - રક્તપિત
૧૨	અમૃતમલ્લાતકાવલેહ - કુષ
૧૩	એળડપાક - વાતરેગ / આમવાત (યો.ર.)
૧૪	વ્યાઘીહરીતકી અવલેહ - કાસ / શ્વાસ
૧૫	સૌભાગ્ય શુણી પાક - ખીરોગ (યો.ર.)
૧૬	હરિદ્રા ખંડ - (નાગરખંડ) - શીતપિત (ભે.ર.)

आसव अरिष्ट

१	सारिवाद्यासव - प्रमेह (भै.र.)
२	सारस्वतारिष्ट - मस्तिष्क रोग (भै.र.)
३	गण्डीराद्यारिष्ट - शोथ (च.सं.)
४	चंदनासव - प्रमेह (भै.र.)
५	जीरकाद्यारिष्ट - सूक्तिकारोग / गृहणी / अतिसार (भै.र.)
६	तक्रारिष्ट - ग्रहणी (ग.नि., च.सं., भै.र.)
७	अभयारिष्ट - अर्श (च.सं.)
८	अनुतारिष्ट - ज्वर (आ.सा.सं.)
९	अरविंदासव - बालरोग (आ.सा.सं., भै.र.)
१०	अशोकारिष्ट - प्रदर (आ.से.सं.)
११	अश्वगंधारिष्ट - मस्तिष्क रोग (भै.र.)
१२	अहिफेनासव - अतिसार (भै.र.)
१३	उशीरासव - रक्तपित (भै.र.)
१४	कनकारिष्ट - अर्श (च.सं.)
१५	कनकासव - हिक्का (भै.र.)
१६	कुमार्यासव - गुल्म (यो.र.) / उदर
१७	पिण्डासव - ग्रहणी (च.सं.)

१८	पुनर्नवासव - शोथ (च.सं., भै.र.)
१९	खदिरारिष्ट - कुष्ठ (ग.नि.)
२०	दन्त्यारिष्ट - अर्श (च.स., च.द., वं.से.)
२१	दशमूलारिष्ट - वाजीकरण (भै.र., शा.सं.)
२२	द्राक्षारिष्ट - यक्षमा (यो.र., भै.र.)
२३	द्राक्षासव - वाजीकरण (शा.बं.नि.र., भै.र.)
२४	पत्रांगासव - खीरोग (भै.र.)
२५	अर्जुनारिष्ट - हृदयरोग
२६	कर्पुरासव - अतिसार
२७	कुटजारिष्ट - ग्रहणी
२८	देवदाव्यारिष्ट - प्रमेह
२९	धात्र्यारिष्ट - पाण्डु / कामला
३०	मुगमदासव - अतिसार
३१	रोहितकारिष्ट - यकृत प्लीहारोग
३२	लोध्रासव - मूत्ररोग / आर्तवरोग
३३	लोहासव - पाण्डु

क्वाथ

१	शाखोटक क्वाथ - शलीपद (शा.सं.)
२	एंडमूलादि क्वाथ - शूल (बृ.नि.र.)
३	दशमूलक्वाथ - सूतिका (ग.नि.), स्त्रीरोग (वं.से.)
४	देवदाव्यादिक्वाथ - सूतिका (यो.त.), स्त्रीरोग (बृ.नि., रु.वं.से.)
५	निदिगिधिकादि क्वाथ - ज्वर (ग.नि., यै.र.)
६	पुनर्नवादि क्वाथ - शोथ / उदर (बृनिर, वं.मा.)
७	फलत्रिकादि क्वाथ - प्रमेह (च.सं.यो.त.)
८	भूनिम्बादि क्वाथ - अम्लपित्त (यो.र., बृनिर)

पर्पटी कल्प

१	पंचामृत पर्पटी - ग्रहणी / अतिसार
२	ताप्र पर्पटी - कास, यकृतलीहा रोग, उदर (बृ.नि.र., यो.र.)
३	स्वर्ण पर्पटी - ग्रहणी / राजयक्षमा (यो.र., बृ.नि.र.)
४	बोल पर्पटी - प्रदर (र.चं., यो.र.)
५	रस पर्पटी - ग्रहणी / रसायन
६	गगन पर्पटी - मंदानिन / पाण्डु
७	श्वेत पर्पटी - मूत्ररोग
८	मल्ल पर्पटी - ज्वर

इतर योग

१	गोजिब्लादि क्वाथ - प्रतिश्वाय
२०	पटेलादि क्वाथ - ज्वर
२२	वलुणादि क्वाथ - अशमरी
२२	महामंजिष्ठादि क्वाथ - कुष्ठ (शा.सं.)
२३.	लघुमंजिष्ठादि क्वाथ - वातरवत (शा.सं.)
२४	महारसनादि क्वाथ - वातव्याधी
२५	पथ्यादि क्वाथ - शिरोरोग / ज्वर

धातु	ग्रह	रत्न	उपरत
ताम्र	सूर्य	माणिक्य	सूर्यकान्त
रजत	चंद्र	मुस्ता	चन्द्रकान्त
पीतळ	मंगल	प्रवाल (विद्रुम)	--
नाग	बुध	पन्ना	--
सुवर्ण	गुरु	पुष्कराज	--
वंग	शुक्र	हीरक	--
तीक्ष्णलोह	शनि	नीलम	राजावर्त
कांस्य	राहु	गोमेद	--
कांतलोह	केतु	वैदूर्य	पेरोजक

धातु	ज्वाला वर्ण	भस्मवर्ण	मारण द्रव्य
सुवर्ण	पीत	गैरिफ़ चम्पक पुष्प	नाग
रजत	श्वेत	कृष्ण	माध्सिक
ताम्र	नील	कृष्ण	गंधक
लोह	कपिल	जम्बुफल	हिंगुळ/स्त्री दुग्ध
तीक्ष्णलोह	कृष्ण	जम्बुफल	---
नाग	धूम्र	पानावत	मनशिला
वंग	कपोताभ	श्वेत	हरताल
हीरक	मिश्रित	श्वेत	---
शिलाजतु	धूसर	---	---
अभ्रक	पाण्डूवर्ण	इष्टिका चूर्ण	हिंगुळ/स्त्री दुग्ध
कास्य	---	धूसर	---
यशद	---	ज्वलद अंगारवर्ण	---
उपलोह	---	---	गंधक
पारद	---	---	हीरक

Blood clinical Chemistry

1	Bilirubin		
	Total -	0.3 - 1.0 mg / dl	
	Direct (conjugated)	0.1 - 0.3 mg / dl	
	Indirect (Unconjugated)	0.2 - 0.7 mg / dl	
2	Total blood volume -	60 - 80 ml / kg body wt.	
	Calcium (total)	9.2 - 11.00 mg / dl	
3	Cholesterol	Total desirable for adults borderline high high	140 - 200 mg/dl 200 - 239 mg/dl > 240 mg/dl
4	LDL Cholesterol desirable range	< 130 mg/dl	
	HDL Cholesterol protective range	> 40 mg/dl	
	Triglycerides	< 160 mg/dl	
5	Serum creatinine	0.5 - 1.5 mg/dl	
6	pH of blood	7.38 - 7.44	
7	Renal blood flow	1200 ml / min	
8	Thyroid function tests		
	Radioactive iodine uptake (RAIU) 24 hrs -	5 - 30%	
	Thyroxine (T4)	4 - 12 µg/dl	
	Triiodothyronine (T ₃)	80 - 100 ng / dl	
	Thyroid stimulating hormone (TSH)	0.4 - 5 µIU / ml	
9	Blood urea	15 - 40 mg / dl	
10	Serum uric acid		
	Males	2.5 - 8.0 mg / dl	
	Females	1.5 - 6.0 mg / dl	
11	Cerebrospinal fluid (CSF)		
	Volume	120 - 150 ml	
	pressure	60 - 150 mm of water	
	pH	7.31 - 7.34	
12	PH of gastric juice	1.6 - 1.8	
13	Seminal fluid		
	liquefaction - within 20 mins.		
	Sperm morphology > 70% normal mature spermatozoa		
	sperm motility > 60%		
	pH - > 7.0 (average - 7.7)		
	Sperm count - 60 - 150 million / ml		
	Volume - 1.5 - 5 ml		
14	Specific gravity of urine - 1.003 - 1.030 (average - 1.018)		
15	Erythrocytes -		
	Count : Males - $4.5 - 6.5 \times 10^{12} / L$ (mean $5.5 \times 10^{12} / L$)		
	Feales - $3.8 - 5.8 \times 10^{12} / L$ (mean $4.8 \times 10^{12} / L$)		
	Mean corpuscular haemoglobin (MCH) - 27 - 32 pg (picogram)		
	Mean corpuscular volume (MCV) - 77 - 93 fl (femtolitre)		
	Mean corpuscular haemoglobin concentration (MCHC) - 30 - 35 g/dl		
	Erythrocyte life span - 120 days		
	Erythrocyte sedimentation rate (ESR)		
	Males - 0 - 9 mm (Wintrobe) 0 - 15 (Westergreen)		
	Females - 0 - 20 mm		

16	Haemoglobin Males - 13.0 - 18.0 g/dl Females - 11.5 - 16.5 g/dl
17	Total leucocyte count (TLC) Adults - 4000 - 11000 / μ l infants (at birth) - 10,000 - 25,000 μ l infants (at 1 year) - 6,000 - 16,000 μ l Differential leucocyte count (DLC) P (Polymorphs / Neutrophils) - 40 - 75% L (Lymphocytes) - 20 - 50% M (Monocytes) - 2 - 10% E (Eosinophils) - 1 - 6% B (Basophils) - < 1%
18	Bleeding time (BT) - 2 - 7 min. Clotting time (CT) - 4 - 9 min at 37°C Prothrombine time (PT) - 10 - 14 sec. Thrombin time - (TT) - < 20 sec. Platelet count : 1,50,000 - 4,00,000 / μ l Clot retraction time qualitative - visible 60 min (complete in < 24 hrs) quantitative - 48 - 64% (55%)

Sr. No.	Disease	Etiological agent
1	Typhoid	Salmonella typhi
2	Plague	Yersinia pestis
3	Whooping cough (Pertusis)	Bordetella pertussis
4	Gonorrhoea	Neisseria gonorrhoea
5	Cholera	Vibrio cholerae
6	Diphtheria	Corynebacterium diphtheriae
7	Tuberculosis	Mycobacterium tuberculosis
8	Leprosy	Mycobacterium leprae
9	Syphilis	Treponema pallidum
10	Actinomycosis	Actinomyces israelii

Clostridial Disease

Sr. No.	Disease	Etiological agent
1	Gas gangrene	c. Perfringens
2	Tetanus	c. Tetani
3	Botulism	c. Botulinum
4	Clostridial food poisoning	c. Perfringens
5	Necrotising enterocolitis	c. Perfringens

SGOT 8 to 33 IU/L

SGPT 8 to 36 IU/L

Serum Calcium - 4.0 - 4.8 mg / dl

(87.5 - 10.2 g/100 ml)

Glomerular filtration rate - (GFR) - 180 L / day

Diseases caused by viruses

Sr. No.	Disease	Etiological agent
1	Viral haemorrhagic fever	Anthropod - borne (arbo) virus
2	Viral encephalitis	Anthropod - borne (arbo) virus
3	Rabies	Rabies virus (arboviruses)
4	Poliomyelitis	Poliovirus
5	Small pox (variola)	Variola virus
6	Chicken pox (varicella)	Varicella zoster viruses
7	Herpes simplex and herpes genitalis	herpes simplex virus (HSV-I & HSV - II)
8	Herpes zoster	Varicella zoster viruses
9	Lymphogranuloma venereum	Chlamydia trachomatis
10	Cat scratch disease	Bartonella henselae
11	Viral hepatitis	Hepatotropic virus
12	Cytomegalovirus inclusion disease	Cytomegalovirus (CMV)
13	Infectious mononucleosis	Epstein Barr Virus (EBV)
14	German measles (Rubella)	Rubella virus
15	Measles (Rubeola)	Measles virus
16	Mumps	Mumps virus
17	Viral respiratory infections	Adenovirus, echovirus, rhinovirus Coxsackie virus, influenza A,BC,
18	Viral gastro enteritis	Rotavirus, Norwalk like viruses

Protozoal Diseases

1	Chaga's disease (Trypanosamiasis) Trypanosoma cruzi
2	Leishmaniasis (kala Azar) - L. tropica, L. brasiliensis, L. donovani
3	Malaria - P. vivax, P. falciparum, P. ovale, P. malariae
4	Toxoplasmosis - Toxoplasma gondii
5	Pneumocytosis - Pneumocystis carinii
6	Amoebiasis - Entamoeba histolytica
7	Giardiasis - Giardia lamblia

TIERRA Helminthic diseases

1	Ascariasis - Ascaris lumbricoides
2	Enterobiasis (oxyuriasis) - Enterobius vermicularis
3	Hookworm disease - Ancylostoma
4	Trichinosis - Trichinella spiralis
5	Filariasis - Wuchereria bancrofti
6	Echinococcosis (Hydatid disease) - Echinococcus granulosus

अग्रयसंग्रह (च.सू. 25)

- १ अन्नं वृत्तिकराणां । (शरीर यापन) (शरीरस्थितिकराणां)
- २ उदकं आश्वासकराणां । (आप्यायनकराणां) 81
- ३ सुरा श्रमहराणां
- ४ क्षीरं जीवनीयानां
- ५ मासं बृहणीयानां
- ६ रसः तर्पणीयानां (मांसरस)
- ७ लवणं अनन्द्रव्यरुचिकराणाम्
- ८ अम्लं हृदयानां
- ९ कुकुटो बल्यानां
- १० नक्ररेतो वृष्याणा
- ११ मधु श्लेष्मपित्तप्रशमनानां 58
- १२ सर्पिः वातपित्तप्रशमनानां
- १३ तैलं वातश्लेष्मप्रशमनानां
- १४ वमनं श्लोषमहराणां
- १५ विरेचनं पित्तहराणां
- १६ बस्ति: वातहराणां
- १७ स्वेदो मार्दवकराणां
- १८ व्यायामः स्थैर्यकराणां
- १९ क्षारः पुस्त्वोपघातिनां
- २० तिन्दुकम् अनन्द्रव्यरुचिकराणाम् (टेंबुरणी)
- २१ आमं कपित्थं अकण्ठचाणाम्
- २२ आविकं सर्पिः अहृद्याणाम्
- २३ अजाक्षीरं शोष्ण्वधनस्तन्यं सात्यरक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम् ।
- २४ अविक्षीरं श्लेष्मपित्तजननानां - 32, 34
- २५ माहिषीक्षीरं स्वज्ञजननानां

- २६ मन्दकं दधि अभिष्यन्दकराणां
- २७ गवेधुकानं कर्शनीयानाम् (गोजिहवा) (मकई), 97
- २८ उद्वालकानं विरुक्षणीयानाम् (वनकोद्रव)
- २९ इक्षुः मूत्रजननानां
- ३० यवाः पुरीषजननानां
- ३१ जाम्बवं वातजननानां
- ३२ शष्कुल्यः श्लेष्मपित्तजननानां
- ३३ कुलत्था अम्लपित्तजननानां
- ३४ माषाः श्लेष्मपित्तजननानां
- ३५ मदनफलं वमनास्थापनानुवासनोपयोगिनां
- ३६ त्रिवृत् सुखविरेचनानां
- ३७ चतुरद्वयुलो मृदूविरेचनानां
- ३८ स्नुकपयः तीक्ष्णविरेचनानां
- ३९ प्रत्यक्षुष्मा शिरोविरेचनानां
- ४० विडड़ग्ं क्रिमिज्ञानां
- ४१ शिरीषो विषज्ञानां
- ४२ खदिरः कुष्ठज्ञानां
- ४३ रास्ना वातहराणाम्
- ४४ आमलकं वयःस्थापनानां
- ४५ हरीतकी पथ्यानाम्
- ४६ एरण्डमूलं वृष्ववातहराणां
- ४७ पिण्डलीमूलं दीपनीयपाचनीयानाह प्रशमनानां
- ४८ चित्रकमूलं दीपनीयपाचनीयगुदशोथार्शःशूलहराणां
- ४९ पुष्करमूलं हिकाश्वासकासपाश्वर्शूलहराणां
- ५० मुस्तं सांग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम् । 52
- ५१ उदीच्यं निर्वापिणदीपनीयपाचनीयच्छर्दर्यतीसारहराणां (सुगंधवाला) ५२
- ५२ कट्टवड्ग्ं सांग्राहिकपाचनीयदीपनीयानाम् (अरलु) 50

- ५३ अनन्ता सांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम् ५७
- ५४ अमृता सांग्राहिकवातहरदीपनीय श्लेष्मशोणितविबन्धप्रशमनानां
- ५५ बिल्वं सांग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमनानाम्
- ५६ अतिविषा दीपनीयपाचनीय सांग्राहिकसर्वदोषहरणाम्
- ५७ उत्पलकुमुदपद्मकि जल्कः सांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानां ५३
- ५८ दुरालभा पित्तश्लेष्मप्रशमनानां
- ५९ गन्धप्रियंगुः शोणितपित्तातियोगप्रशमनानां
- ६० कुटजत्वक् श्लेष्मपित्तरक्तसांग्राहिकोपशोषणानां
- ६१ काशमर्यफलं रक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानां
- ६२ पृश्निपर्णी सांग्राहिकवातहरदीपनीयवृष्ट्याणां
- ६३ विदारीगन्धा वृष्ट्यसर्वदोषहरणां
- ६४ बला सांग्राहिकबल्यवातहरणां
- ६५ गोक्षुरको मूत्रकृच्छानिलहरणां
- ६६ हिंगुनिर्यासो छेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातकफप्रशमनानाम्
- ६७ अम्लवेतसो भेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातश्लेष्महरणां
- ६८ यावशूकः स्वंसनीयपाचनीयार्शोज्ज्ञानां (यवक्षार)
- ६९ तक्राभ्यासो ग्रहणीदोषशोफार्शोघृतव्यापत्प्रशमनानां
- ७० क्रव्यान्मांसरसाभ्यासो ग्रहणीदोषशोषार्शोज्ज्ञानां (क्रव्य - व्याघ्रादि)
- ७१ क्षीरघृताभ्यासो रसायनानां ✓
- ७२ समूत्तसक्तुप्राशाभ्यासो वृष्योदावर्तहरणां
- ७३ तैलगण्डूषाभ्यासो दन्तबलरुचिकरणां ✓
- ७४ चन्दनं दुर्गन्धहरदाहनिर्वापिणलेपनानां ✓
- ७५ रास्नागुरुणी शीतापनयनप्रलेपनानां
- ७६ लामज्जकोशीरं दाहत्वग्दोषस्वेदापनयनप्रलेपनानां (सुगंधवोळा)
- ७७ कुष्ठं वातहराभ्यङ्गोपनाहोपयोगिनां
- ७८ मधुकं चक्षुष्यवृष्ट्यकेश्यकण्ठयवर्णविरजनीयरोपणीयानां (यष्टि) रजन
- ७९ वायुः प्राणसंज्ञाप्रदानहेतूनाम्

TIERRA

- ८० अग्निः आमस्तंभशीतशूलोद्वेपनप्रशमनानां
- ८१ जलं स्तम्भनीयानां
- ८२ मृद्भृष्टलोष्टनिर्वापितमुदकं तृष्णाच्छर्द्यतियोगप्रशमनानाम्
- ८३ अतिमात्राशनम् आमप्रदोषहेतूनां
- ८४ यथा अग्निः अभ्यवहारे अग्निसन्ध्युक्षणानां
- ८५ यथा सात्यं चेष्टाभ्यवहारौ सेव्यानां
- ८६ कालभोजनम् आरोग्यकराणां
- ८७ तृप्तिः आहारगुणानां
- ८८ वेगसंधारणं अनारोग्यकराणां
- ८९ मद्यं सौमनस्यजननानां
- ९० मद्याक्षेपो धीधृतिस्मृतीहराणां (अयोग्य रितिने मद्य सेवन)
- ९१ गुरुभोजनं दुर्विपाककराणाम्
- ९२ पृक्षाशनभोजनं सुखपरिणामकराणां
- ९३ खीषु अतिप्रसंगः शोषकराणां
- ९४ शुक्रवेगनिग्रहः षाण्ड्यकराणां
- ९५ पराधातनम् अन्न अश्रद्धाजननानाम् (वर्धस्थान)
- ९६ अनशनम् आयुषोन्हासकराणां
- ९७ प्रमिताशनं कर्शनीयानाम् - (अतीतकालभोजन / स्तोकभोजन)
- ९८ अजीर्णाध्यशनं ग्रहणीदूषणानां
- ९९ विष्माशनम् अग्निवैषम्यकराणां
- १०० विरुद्धवीर्यशनं निन्दितव्याधीकराणां (श्वित्रकुष्ठादि)
- १०१ प्रशमः पथ्यानाम् (शान्ति, कामादिपासून निवृत्ती)
- १०२ आयासः सर्वापथ्यानां
- १०३ मिथ्यायोगो व्याधिकराणां
- १०४ रजस्वलाभिगमनम् अलक्ष्मीमुखानां (अलक्ष्मीकारणानाम्)
- १०५ ब्रह्मचर्यम् आयुष्याणां
- १०६ परदाराभिगमनम् अनायुष्याणां

TIERRA

- १०७ सङ्कल्पो वृष्याणां (खीसंगसंकल्प)
- १०८ दौर्मनस्यम् अवृष्याणाम्
- १०९ अयथाबलमारम्भः प्राणोपरोधिनां (लक्ष्मीहारा ज्ञात्वा न कर्तुम्)
- ११० विषादो रोगवर्धनानां
- १११ स्त्रानं श्रमहराणां
- ११२ हर्षः प्रीणनानां
- ११३ शोकः शोषणानां
- ११४ निवृत्तिः पुष्टिकराणां (मनःशांती)
- ११५ पुष्टिः स्वज्ञकराणाम्
- ११६ अतिस्वज्ञः तन्द्राकराणां
- ११७ सर्वरसाभ्यासो बलकराणाम्
- ११८ एकरसाभ्यासो दौर्बल्यकराणां
- ११९ गर्भशल्यम् आहार्यणाम्
- १२० अजीर्णम् उद्धार्यणां (निवारणीय)
- १२१ बालो मृदूभेषजनीयानां
- १२२ वृद्धो याप्यानां (प्राप्ति व्याप्ति)
- १२३ गर्भिणी तीक्ष्णौषधव्यवायव्यायामवर्जनीयानां
- १२४ सौमनस्यं गर्भधारणानां (मत्तानीति लाभेन शान्ति)
- १२५ सन्निपातो दुष्चिकित्स्यानाम्
- १२६ अस्त्रो विषमचिकित्स्यानां
- १२७ ज्वरो रोगाणां
- १२८ कुष्ठं दीर्घरोगाणां
- १२९ राजयक्षमा रोगसमूहानां
- १३० प्रमेहो अनुषड्गिणां (पुनर्भवी) (प्रमेहो अनुषड्गिणां)
- १३१ जलौकसो अनुशस्त्राणां
- १३२ बस्तिः तन्त्राणां (कर्मणाम्)
- १३३ हिमवानौषधीभूमीनां (हिमवानौषधीभूमीनां)

TIERRA

- १३४ सोम औषधीनां 145
 १३५ मरुभूमिः आरोग्यदेशानाम्
 १३६ अनुपो अहितदेशानां
 १३७ निर्देशकारित्वम् आतुरगुणानां 141
 १३८ भिषक् चिकित्सागडानां
 १३९ नास्तिको वज्यनां
 १४० लौल्यं क्लेशकरणाम्
 १४१ अनिर्देशकारित्वम् अरिष्टानाम् 137
 १४२ अनिर्वेदो वार्तलक्षणानां (मनात खेद नसणे) (आरोग्यलक्षणानां)
 १४३ वैद्यसंमूहो निःसंशयकराणां 149
 १४४ योगो वैद्यगुणानां
 १४५ विज्ञानम् औषधीनां (औषधादिज्ञान)
 १४६ शास्त्रसहितस्तर्कः साधनानां (ज्ञानसाधनानां)
 १४७ संप्रतिपत्तिः कालज्ञानप्रयोजनाम् (कर्तव्यतानुष्ठानम्)
 १४८ अव्यवसायः कालातिपत्तिहेतूनां
 १४९ दृष्टकर्मता निःसंशयकराणाम् 143
 १५० असमर्थता भयकराणां
 १५१ तद्विद्यसंभाषा बुद्धिवर्धनानाम्
 १५२ आचार्यः शास्त्राधिगमहेतूनाम्
 १५३ अस्युर्वेदो अमृतानां
 १५४ सद्वचन अनुष्टेयानाम्
 १५५ असद्ग्रहणं सर्वाहितानां
 १५६ सर्वसन्यासः सुखानामिति (सर्वक्रियात्याग)

TIERRA

व्याधी प्रकार (सु.सू. 24)

1) आध्यात्मिक : - आत्म्याचे अधिष्ठान शरीर व मन यांच्या आश्रयाने होणारे.

अ) आदिबलप्रवृत्त : कुलज / क्षेत्रीय व्याधी

शुक्रशोणितदोषान्वया : - कुष्ठ, अर्श, प्रमेह

- 1) मातृज
- 2) पितृज

ब) जन्मबलप्रवृत्त : गर्भावस्थाकाले मातुः अपचारात्

पंगू, जात्यंध, बधिर, मूक, मिन्मिन, वामन

- 1) रसकृत
- 2) दौहृदापचारकृत

क) दोषबलप्रवृत्त : आतःडक्समुत्पन्न व मिथ्याहारचारकृत

- 1) आमाशयसमुत्पन्न
- 2) शारीर

- 3) पक्वाशयसमुत्पन्न
- 4) मानस

2) आधिभौतिक : - मनुष्याखेरीज इतर घटकांमुळे उत्पन्न होणारे (संघातबलप्रवृत्त)

- 1) शख्कृत
- 2) व्यालकृत (सर्प, इ. विषारी ग्राण्यांमुळे)

1) आधिदैविक : - देव, गंधर्व, राक्षसादि कारणांमुळे उत्पन्न होणारे.

अ) कालबलप्रवृत्त - शीतोष्णावातवषर्णनिमित्तज

1) व्यापनक्रतुकृत : - क्रतूविपरीत लक्षणांमुळे
उत्पन्न होणारे

2) अव्यापनक्रतुकृत : - क्रतूकालीन अतियोग
लक्षणांमुळे होणारे

ब) दैवबलप्रवृत्त : - अभिशप्तक, अर्थर्वणकृत, उपसर्गकृत (भूत पिशाच)

- 1) विद्युदशननिकृत
- 2) संसर्गज

- 3) पिशाचादिकृत
- 4) आकस्मिक

क) स्वभावबलप्रवृत्त - क्षुत्पिपासाजरामृत्यूनिद्राप्रभृतय :

1) कालज : - स्वस्थवृत्तपालन करूनही योग्य काली होणारे
परिरक्षणकृत

2) अकालज : स्वस्थवृत्तोक्त नियम मोडल्याने होणारे
अपरिरक्षणकृत

धातुप्रदोषज विका (च.सू. 28 सु.सू. 24)

विष्णुरसः

- 1) रस - अश्रदूधा चारुचिश्चास्यवैरस्यमरसज्जता ।
 पाण्डुत्वं^{अवसान} स्वातसां राधि कलैब्यं सादः कृशताङ्गता ॥
 नाशोऽग्नेरथाकालं वलयः पलितानि च ॥ च.सू. 28/9
 अन्नाश्रध्वारोचकाविपाक अङ्गरगदज्वरहल्लासं तृप्ति
 गौखृष्टपाण्डूमार्गेऽपरोध काश्वरैरस्याङ्गसादाकाल वलिपलित दर्शनप्रभृतयो
 रसदोषना विकाराः । सु. सू. 24/10
- 2) रक्त - कुष्ठ वीसर्पपिडकारकतपित्तमसृग्दरः ।
 गुदमेट्रास्यपाकश्च प्लीहा^{गुल्मोयऽथ} विद्रधिः ॥
 नीलिका कामला व्यङ्ग पित्तवस्तिलकालकाः ।
 दद्रुश्चर्मदलं शिवत्रं पामा कोठास्त्रमण्डलम् ॥ च.सू. 28/10
- 3) मांस - अधिमांसार्बुदं कीलं गलशालूकशप्तिङ्के ।
 पूतिमांसालजीगण्डगण्डमालापजिह्विका^{उपेत्तिका} ॥ च.सू. 28/13-14
 अधिमांसार्बुदार्शोऽधिजिह्वोपजिह्वोपकुशगलशुण्डिकाऽलजीमांससंघात
 ओळुप्रकोपगलगण्डगण्डमालाप्रभृतयो मांसदोषजाः ॥ सु. सू. 24/12
- 4) मेद - अष्टौनिन्दित, प्रमेह पूर्वरुपे
 ग्रन्थिवृद्धिगलगण्डार्बुदमेदोजौष्ठप्रकोपमधुमेहातिस्थौत्य
 अतिस्वेदप्रभृतयो मेदोदोषजा ॥ सु. सू. 24/13
- 5) अस्थी - अध्यास्थिदन्तौ दन्तास्थिभेदशूलं विवर्णता ।
 केशलोमनखश्मश्रूदोषाश्च अस्थिप्रदोषजाः ॥ च.सू. 28/
 अध्यस्थ्यधिदन्तोस्थितोदशुलकुनखप्रभृतयो अस्थिदोषजा ॥ सु. सू. 24/

6) मज्जा - रुक् पर्वणां भ्रमो मूच्छा दर्शनं तमसस्तथा ।

नर्मुलाच्चां छिणी
त्रैरुचा.

अरुषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम् ॥ च.सू. 28/17

तमोदर्शनं मूच्छाभ्रमं पर्वस्थूलमूलारुजन्मनेत्राभिस्यन्द

प्रभृतयो मज्जदोषजा ॥ सु. सू. 24/15

7) शुक्र - शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यमहर्षणम् ।

रोगि वा क्लीबमत्पायुर्विरूपं वा प्रजायते ॥

शुक्रं हि दुष्टं सापत्यं सदारं बाधते नरम् । च.सू. 28/18

क्लैब्याप्रहर्षं शुक्राश्मरी शुक्रदोषादयश्य तदोषजा ॥ सु. सू. 24/16

मलगत दोषज रोग

मलाचा - नेद्, रोप, पुद्धुण

मलानाश्रित कुपित भेदशोषप्रदूषण् ।

दोषा मलानां कुर्वन्ति सङ्गोत्सर्गावितीव च ॥ च.सू. 28/22

त्वग्दोषाः सङ्गतिप्रवृत्तिरयथाप्रवृत्तिर्का मलायतनदोषः ॥

सु. सू. 24/17

इन्द्रियदोषज रोग

इन्द्रियाणि समाश्रित्य प्रकुप्यन्ति यदा मलाः ।

^①उपघातोपतीपाभ्यां योजयन्तीन्द्रियाणि ते ॥ च.सू. 28/20

इन्द्रियाणामप्रवृत्तिः अयथाप्रवृत्तिर्वैन्द्रियायतनदोषः ॥ सु. सू. 24/18

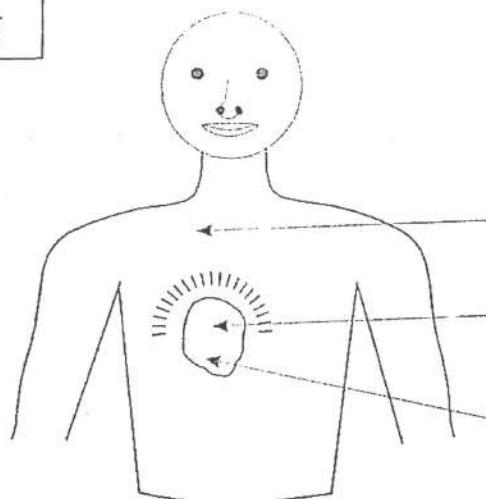
स्नायुआदि दोषज रोग

स्नायौ सिराकण्डराभ्यौ दुष्टाः क्लिश्रन्ति मानवम् ।

स्तम्भसंकोच्खललीभिर्ग्रन्थिस्फुरणसुप्तिभिः ॥ च.सू. 28/21

अस्थाय no
MCQ बद्क्रियाकाल सु.सू. 21 ब्रणप्रश्नाच्याय
name -

वात

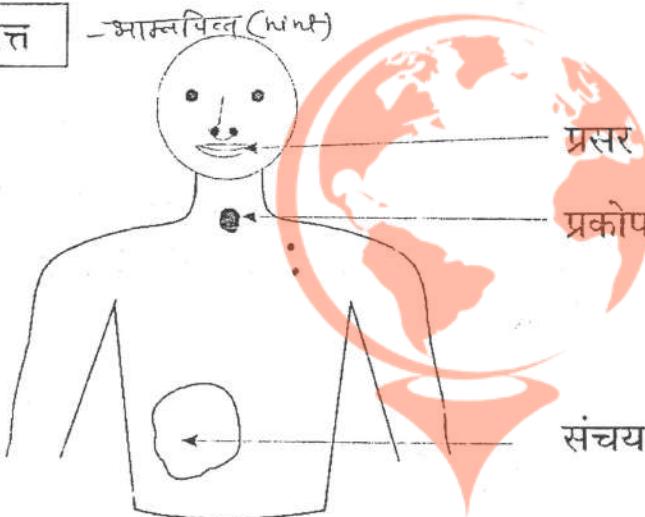


प्रसर - विमार्गगमन, आटोप (उत्सर्जन)

प्रकोप - कोष्ठतोदसंचरण
(कोपस्तु उत्मार्गगमना)

संचय - स्तब्धपूर्णकोष्ठता
(स्वस्थानात् घृदधी)

पित्त



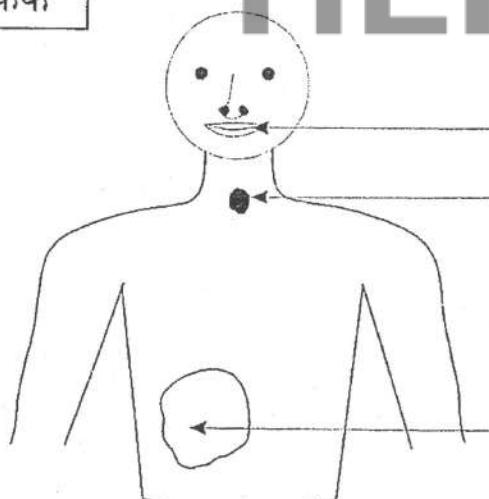
जीवेण-चिकित्सा

प्रसर - ओष, चोष, परिदाह, धूमायन
(मुख)

प्रकोप - अम्लिका, पिपासा, परिदाह

संचय - पीतावभासता

कफ



प्रसर - अरोचक, अविपाक, अुंगसाद, छर्दि

प्रकोप - अन्लद्वेष, हृदयोत्क्लेद

संचय - मंदोष्टता, अुंगानां गौरव आलस्य

चयकारणविद्रोष - सर्व दोषांच्या पश्चात

અવાદાન સ્તપત્તા

Appendixes (VI)

v

- १) यकृतप्लीहा - यकृतप्लीहानो शोणितज्ञो ।

२) फुफुस - शोणितफेनप्रभव - फुफुसः ।

३) उण्डक - शोणितकिंहप्रभवः उण्डकः ।

४) जिह्वा - कफञ्चोणितमांसानां सारे जिह्वा प्रजायते ।

५) सिराव रनायु - मोहर् एनेटमादाय सिरा रनायुत्वमानुयात् ।
सिराणां तु मृद्याकः रनायुनां च ततः रवरः ॥

६) आशय - आशयाभ्यासयोगेन करोति अशयसम्भवम् ।

७) वृक्ष - रक्तमेदप्रसादात् वृक्षो ।

८) वृष्ण - मासजस्त्वं कृष्णमेदप्रसादम् वृष्णो ।

९) हृदय - शोणितकपुंचसादज्ञे हृदयः ।

१०) आम, गुद, वस्ती - काफल रक्ताच्च } पैतादारे पन्न
गारमारा } वायुदारे अनुधावन ।

अस्थीप्रकार - ५

- क्यालास्थी - जानू, जितन, अंस
 - गड, तालू, शश्व, शिर
 - रचकास्थी - दंत
 - तज्जास्थी - धाण, कर्ण, ग्रीवा
 - अस्त्रिमेष
 - वलयास्थी - उर, पार्व, पृष्ठ
 - नलकास्थी - शोध

संषिप्त प्रकार-

- १) कोइ (Hinge) - अंगुली, मणिघंघ, गुल्फ़, जानू, कुर्फ़र.
 - २) उल्लुखेल (ball socket) - कक्षा, वेस्ट्रिया, दशन.
 - ३) सामुदग् (cavity fit) - अंसर्पीट, ग्रुद, मग, नितेव.
 - ४) प्रतर - ग्रीवा, पृष्ठवंश.
 - ५) लुज्जसेकनी (lap joint) - शिर, कटी, कपाल.
 - ६) वायसलुफ्ट - हिंड्चा उमटामारी.
 - ७) मंडल - कंठ (रुदय), नंज, कलोमजाडी.
 - ८) वांश्वानर्त - जा, श्रोम, वृंगाटक.

असरव्या शारारम् (सु.शाम)

१) संधि - २७०

शारवा - ६०

कोष्ठ - ५५

जन्मद्वय - ४८३

२) सनातु - १००

शारवा - ६०० (१५०×४)

कोष्ठ - २३०

जन्मद्वय - ५० (ग्रीवा - ३६ मूद्दार्थ)

३) पेशी - ५०० (सु.) ४०० (-व.)

शारवा - ४०० (१००×४)

कोष्ठ - ६६

जन्मद्वय - ३४

४) सिंशा - ५७०

शारवागत - ५७०

कोष्ठ - १३६

उद्वेजन्मुगत - १६४

मूलसिंशा - ५० (सु.)

५) धमनी -

मूलधमनी - सुखुत - २४

दारुन - ५०

६) अद्वेष्य सिंशा - ८०

शारवागत - ८०

कोष्ठगत - ३२

उद्वेजन्मुगत - ५०

७) कंपडरा - षोडश कंपडरा (१६)

८) जाल - षोडरा जालानि (१६)

९) कुर्ची - बटु कुर्ची (६)

१०) रज्जु - चतुर्स्नो रज्जवः (४)

११) सेवनी - साप्त सेवनी (६)

१२) संघात - चतुर्दश संघातः (१४)

१३) सीमित - चतुर्दश सीमितः (१४)

१४) दोगवाली स्नोतसे - २२

१५) उंगल - २

TIERRA

मर्मशारीरम् (सु.शा. ६)

(2)

- मर्मणि नाम मांस सिश रन्ध्र अथि संधि सन्तिपात। सु.शा. ६।२२
- मारयन्ति इति मर्मणि। डल्हण
- विषमं स्पेदनं यन पीडिते शक्त एव मर्मितत्। सु.शा. ६।३५.

प्रचलनानुसार प्रकार

प्रकार	संख्या	वास्तव
मांसमर्म	७७	७०
सिशमर्म	४७	३०
रन्ध्रमर्म	२०	२३
अस्थीमर्म	c	c
संधिमर्म	२०	२०
दैमनिमर्म	-	e

स्थानानुसार विभाग

शाश्वा - ७७ × ४ = ८४	कोष्ठ - २४
हृदय औदर - ७२	
पृष्ठ - १४	

उदय - ४ उदर - १

परिमाणानुसार प्रकार

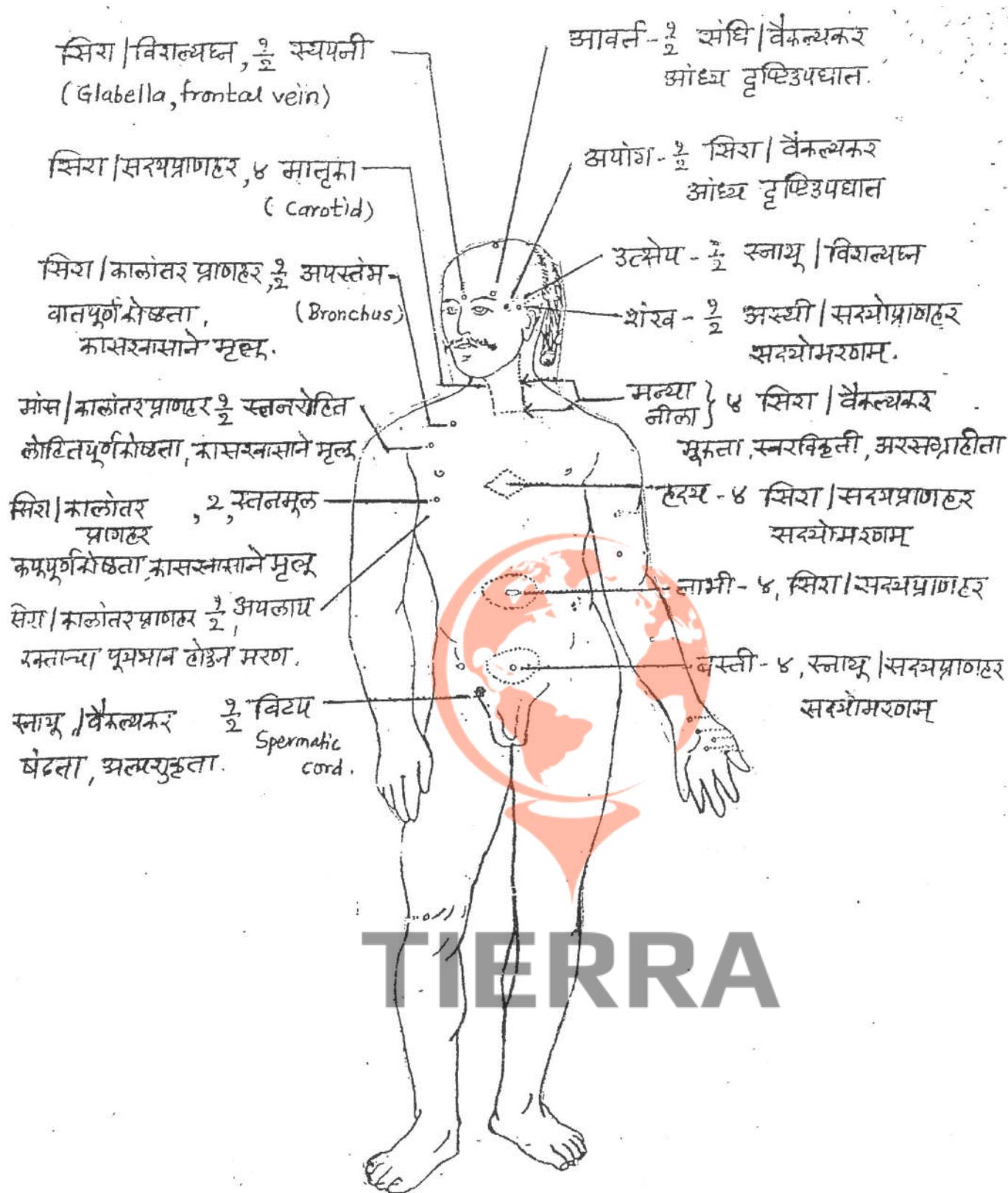
परिमिति	मर्म	संख्या
१ अंगुल	उर्वी+नाही (५), कुर्चिशि (५) विटप (२), कम्पाघर (२)	९२
२ अंगुल	स्तनमूल (२), मणिकंघ (२), गुल्म (२)	६
३ अंगुल	कुर्यश (२), जान्म (२)	४
४ अंगुल	हृदय (१), बस्ती (१), कुर्ची (४), गुदा (१) नाभी (१), नीला (२), शृंगाकर (४) सीमंत (५), मन्त्रा (२), मातृका (८)	२९
५/२ अंगुल	इतर	५६

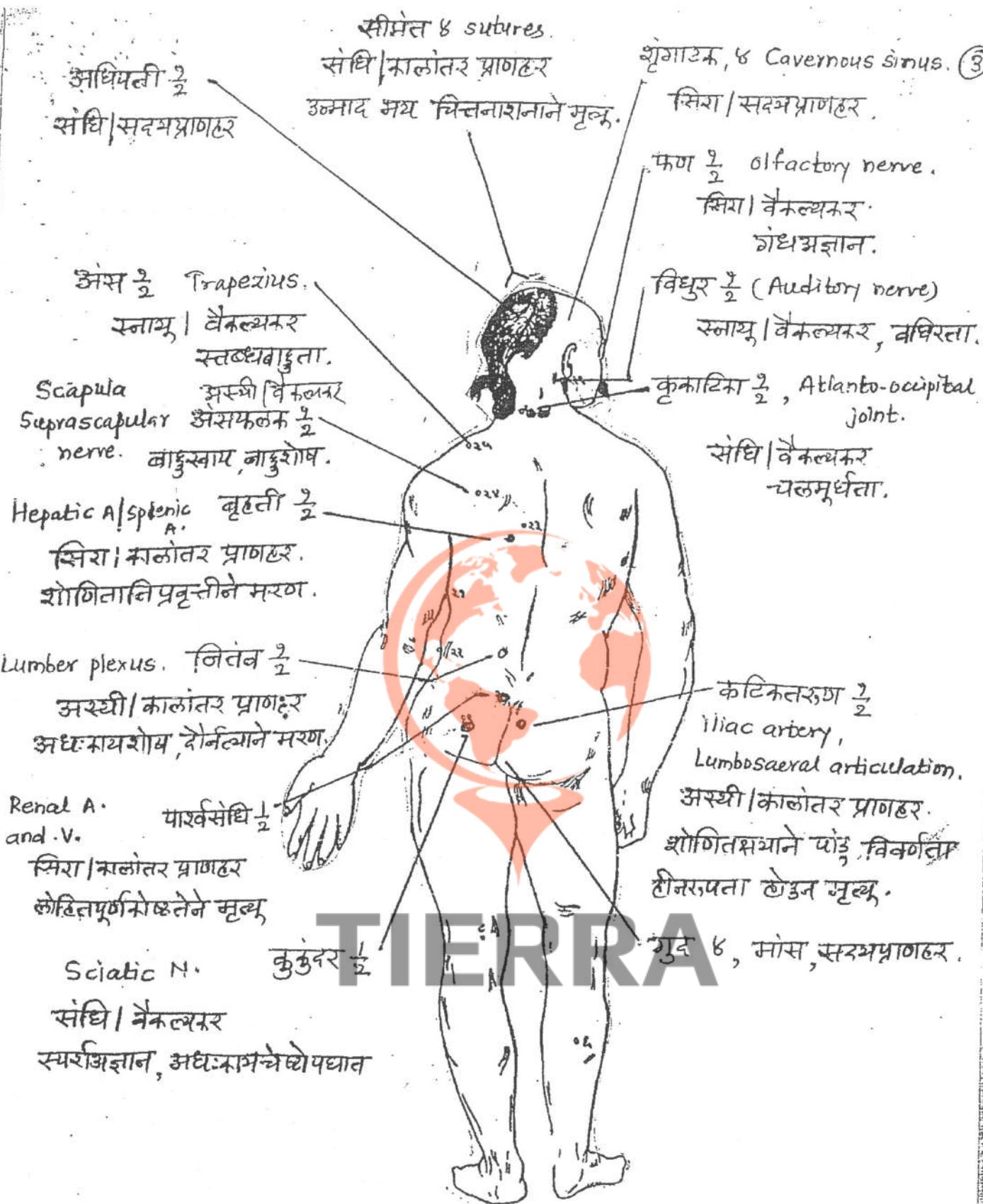
मर्म - मालाभूताधिकरं वं परिणामं.

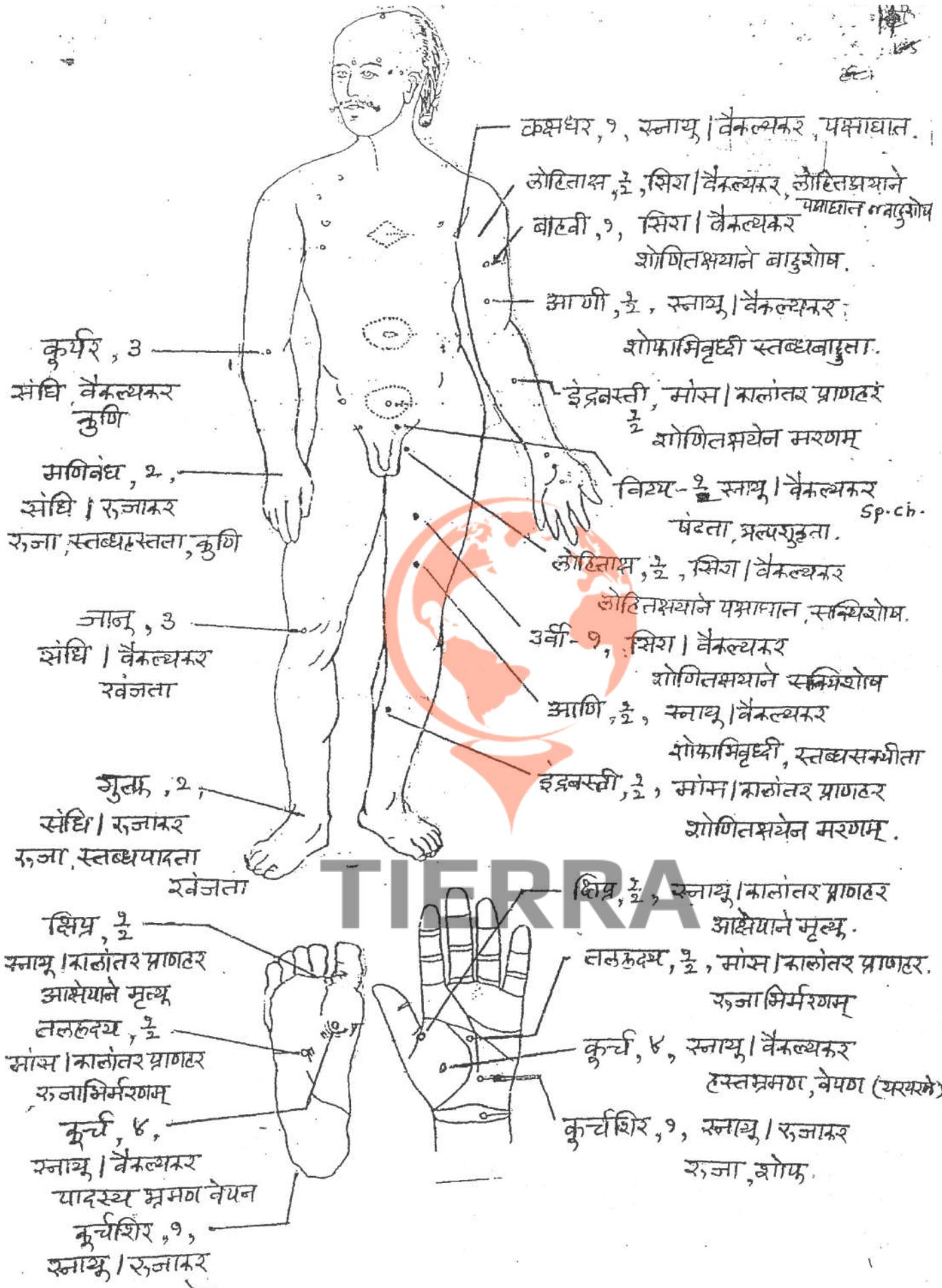
सदयप्राणहर - ७४
कालोत्तर प्राणहर - ३३
विशल्यधन - ३
वैकल्यकर - ४४
रजाकर - c

सदयप्राणहर	अग्नि	आधातांगे वरित वा ७ दिवसात मृत्यु.
कालोत्तर प्राणहर	अग्नि + सोम	१ महिन्यात मृत्यु। १५ दिनसात
विशल्यधन	वायु	शालथ ब्रह्म असोष्यर्थं जीवेत.
वैकल्यकर	सोम	केवळ विकलता.
रजाकर	अग्नि + वायु	केवळ वेदना (मृत्यु येत नाही.)









अष्टांगहृदय (उत्तरस्थान -40)

१	मुस्तापर्पटकं ज्वरे ।	१७	उन्मादं घृतमनवम् ।
२	बस्तिजेषु गिरिजम् ।	१८	शोकं मद्यम् ।
३	मेहेषु धात्रीनिशे ।	१९	व्यपत स्मृतिं ब्राह्मी ।
४	अभया अनिलकफे ।	२०	रसाला प्रतिश्यायम् ।
५	प्लीहामये पिप्पली ।	२१	लशुनः प्रभडजनम् । (वायू)
६	संधाने कृमिजा (लाक्षा)	२२	स्तव्यं गात्रतां स्वेदः ।
७	विषे शुकतरु (शिरीष)	२३	गुडमण्जर्याः खपुरोनस्यात् स्कंधांसबाहुरुजाम् । (जिंगिणी तथा सुपारी, मोचरस ?)
८	कुटजो अतिसारे ।	२४	नवनीतखण्डम् अर्दितम् ।
९	भल्लातको अर्शसु ।	२५	ओष्ठं मूत्रं पथश्च हन्ति उदरम् ।
१०	गरेषु हेम (सुवर्ण)	२६	विद्रधिम् अचिरोत्थम् अस्त्रविस्त्रावः ।
११	स्थुलेषु ताक्ष्य (रसांजन)	२७	नस्यं कवलो मुखजान् ।
१२	कृमिषु कृमिन्नं । (विडंग)	२८	नस्य अण्जन तर्पणानि नेत्ररुजः ।
१३	शोषे सुरा छागपयोऽथ मांसम् । ① ② ③ ④	२९	वृद्धत्वं क्षीरघृते
१४	गुडुची वातास्त्ररोगे ।	३०	मुच्छा शीताम्बुमारुतच्छायाः ।
१५	मथितं ग्रहण्याम् । तद्दृ	३१	समशुक्त आर्द्रकं मात्रा मन्दे वह्नौ ।
१६	सर्वेषु रोगेषु शिलाहवयं ।	३२	दुःखसहत्वे स्थैर्ये व्यायामो ।

अध्ययसंग्रह (अष्टांगसंग्रह सू. 13) - 155

१	माषा : शष्कुल्योऽविक्षीरं च पित्तश्लेष्मजननानाम् ।
२	उपवासो ज्वरहरणाम्
३	वृषो रक्तपित्तप्रशमनानाम् । (वासा) वृषो अस्त्रपित्ते । (अ.हृदय)
४	कण्टकारिका कासघानानाम् । निदिग्धिका कासे (अ.हृदय)
५	लाक्षा सदयः क्षतघानानाम् ।
६	नागबलाभ्यासः क्षयक्षतघानानाम् ।
७	अरुष्करश्चित्रकमूलं च शुष्कार्शः प्रशमनानाम् ।
८	कुटजो रक्तार्शः प्रशमनानाम् ।
९	लाजा छर्दिघानानाम् ।
१०	हरिद्रा प्रमेहहरणाम् ।
११	रक्तावसेको विद्रधिविसर्पिटिकागङ्डमालापहरणाम् ।
१२	एरंडतैलाभ्यासो वर्ध्मगुल्मानिलशूलहरणाम् ।
१३	अयोरजः पांडुरोगघानानाम् ।
१४	गुग्गुलुः मेदोऽनिलहरणाम् ।
१५	त्रिफला तिमिरघानानाम् ।
१६	त्रिफला गुग्गुलुः ब्रण्यानाम् ।
१७	चंदनोदुंबरे निवापण आलेपनानाम् ।
१८	सूनादर्शनम् अल्लथश्चाजननानाम् । - पराधातनम् (च.) वर्धस्थान कञ्जलखोना
१९	ज्वरः शीघ्ररोगाणाम् । चरक - ज्वरो रोगाणाम् ।
२०	बस्ति: यन्त्राणाम् । चरक - बस्ति: तन्त्राणाम् ।
२१	आत्मवत् तोषकारिणाम् । आत्मवान असणे - संतोषकारक गोष्टीत श्रेष्ठ

कृपयाद्विद्वेषः

निघण्टु

अ.क्र.	निघण्टु	लेखक	वर्ग	काल (शतक)
१	अष्टांग निघण्टु (स्वावनि-पुराण)	वाहटाचार्य		८
२	पर्यायरत्नमाला	माधवकर		८
३	धन्वन्तरी निघण्टु (द्रव्यावली समुच्चय)	महेन्द्रभौगीक	७	१०-१३
४	द्रव्यगुणसंग्रह + चरण टीका	चक्रपाणीदत्त	१५	११ ✓
५	सिद्धमंत्र	केशव		१३
६	शोढलनिघण्टु (नामगुणसंग्रह)	शोढल	२७	१२
७	मदनपाल निघण्टु	मदनपाल	१३	१४
८	राजनिघण्टु (अभिधान चिंतामणि)	नरहरी	२३	१५
९	कैथदेव निघण्टु (पथ्यापथ्यविबोधक)	कैथदेव	९	१५
१०	क्षेमकुतुहल	क्षेमशर्मा		१६
११	भावप्रकाशनिघण्टु (हरीतक्यादि निघण्टु)	भावमिश्र	२३	१६ ✓
१२	शिवकोश	शिवदासमिश्र		१७
१३	वैद्यामृत	मोरेश्वर		१७
१४	राजवल्लभनिघण्टु	राजवल्लभ		१८
१५	शालीग्रामनिघण्टु	शालीग्राम वैश्य / वैद्य	२३	१९
१६	अभिनव निघण्टु	दत्ताराम चौबे		२०
१७	अमरकोष	अमरसिंह		४-५

द्रव्यशोधन

अ.क्र.	द्रव्य	शोधन
१	गुगुल	त्रिफला क्वाथात १ प्रहर स्वेदन (गोदुरधात स्वेदन)
२	वसनाभ	गोमूत्रात ठेवून तीन दिवस उन्हात ठेवणे (प्रतिदिन गोमूत्र बदलणे) तीक्ष्णता कमी करण्यासाठी - <u>गोदुरध</u> / <u>अजादुरधात</u> स्वेदन
३	कारस्कर	गोदुरध - १ प्रहर स्वेदन. तीक्ष्णता कमी करण्यासाठी गोघृतात भर्जन
४	अहिफेन	आर्द्रक स्वरस २१ भावना
५	जयपाल	गोदुरध - १ प्रहर सेवन
६	धत्तुर	गोदुरध - १ प्रहर सेवन
७	विजया (भंगा):	पाण्यात धूवून गोघृतात भर्जन / <u>बब्लुलत्वक</u> क्वाथात शिजवणे - गोदुरधाची शावना
८	गुंजा	कांजी / गोदुरध - १ ते २ प्रहर स्वेदन
९	भल्लातक	इष्टीका चूर्ण (तेलीव भंगा ड. नीमजनाळ.)
१०	सूहुहोक्कीर	चिंचापत्र स्वरस मिसळून उन्हात ठेवणे
११	रक्तचित्रक	चूर्णोदकात ठेवून उन्हात सुकवणे
१२	हिंगू	समभाग घृतात भर्जन
१३	लांगली	गोमूत्रात स्वेदन
१४	करवीर	गोदुरधात स्वेदन
१५	अतिवीषा	गोदुरध / गोमय रसात स्वेदन
१६	पिष्पली	चित्रक क्वाथ
१७	बाकुची	गोमूत्र / आर्द्रक रसात १ आठवडा ठेवून रोज द्रव्य बदलणे
१८	विषे (सामान्यशुद्धी)	दोलायंत्र पद्धतीने <u>गोमूत्रात</u> स्वेदन
१९	उपविषे	पंचगव्य
२०	हिंगुल	निम्बु स्वरस ७ भावना
२१	धातू (सामान्यशुद्धी)	तैले तकृं गवामूत्रे आरनाले कुलत्थजे
२२	रल (सामान्यशुद्धी)	जयंती पत्र स्वरसात १ प्रहर स्वेदन

द्रव्यप्रकार

क्र.	द्रव्य	क्र.	द्रव्य
१	कदंब - ३ धाराकदंब, धूलिकदंब भूमिकदंब	१२	करवीर - २ (भा.प्र.) श्वेत, रक्त रा.नि. ४ + पीत, कृष्ण
२	एरंड - २ श्वेत, रक्त / वर्षायु, बहुवर्षायु	१३	अग्निमंथ - २ बृहत अग्निमंथ, लघु अग्निमंथ (तर्कारी)
३	निर्गुण्डी - २ श्वेतपुष्पा (सिन्दुवार) निलपुष्पा (निर्गुण्डी)	१४	कांचनार - ३ श्वेत, पीत, रक्त
४	करंज - ३ पूतीक (चिरबिल्व), नक्तमाल (करंज), कण्टकीकरंज	१५	त्वक - ३ चीनी, सिंहली (दारुसीता), भारतीय
५	सर्षप - २ श्वेत (सिद्धार्थक, गौर) - औषधार्थ, रक्त	१६	यष्टीमधू - ३ मिळी - उत्तम, अरबी, तुर्की - अधम
६	केशर - ३ काश्मीरज - श्रेष्ठ, बाल्हीकज-मध्यम, पारसीक-कनिष्ठ	१७	पिष्टली - ४ (रा.नि.) पिष्टली, गजपिष्टली (चविका फल), सिंहली, बनपिष्टली
७	खदिर - ३ खदिर, कदर, विट्खदिर (इरिमेद)	१८	शुंठी - ४ जमैकन, भारतीय, अफ्रिकी, चिनी
८	हरिद्रा - ३ हरिद्रा, कर्पूर हरिद्रा (आम्रगंधी), बनहरिद्रा	१९	चित्रक - २ श्वेत, रक्त,
९	सैरेयक - ४ श्वेत, पीत, रक्त, नील	२०	अतिविषा - २ अतिविषा, प्रतिविषा
१०	कर्पूर - देशभेदाने-३ भीमसेनी, चिनी, भारतीय	२१	जीरक - ३ जीरक, कृष्णजीरक, कारवी (पृथ्वीका) उपकुचिका

क्र.	द्रव्य	क्र.	द्रव्य
२१	निर्माणभेदाने - 2 पक्व, अपक्व (प्राकृतिक)	२२	मुस्ता - 3 (ध.नि., रा.नि.) नागरमुस्तक मुस्तक (भद्रमुस्तक), जलमुस्तक (कैवर्तमुस्तक)
२३	कमल - 3 श्वेत (पुण्डरीक), रक्त (कोकनद), नील (इन्दीवर)	३६	हरीतकी - 7 विजया, रोहिणी पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती, चेतकी
२४	अगरु - 4 (रा.नि.) कृष्णागुरु, काष्ठगुरु, दाहागुरु, मांगल्यागुरु - श्रेष्ठ	३७	बला - द्रुय - बला, अतिबला चतुष्ट्य - महाबल, नाबला, पंच-राज
२५	दाढ़िम - 3 मधुर, मधुराम्ल, अम्ल	३८	गुगुळ - 5 महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, हिरण्याख्य
२६	कांचनार - 3 श्वेत, पीत, रक्त	३९	कुटज - 2 भा.प्र. श्वेत, कृष्ण च - पुकुंटज स्त्रीकुटज
२७	अगस्त्य - 4 श्वेत, पीत, नील, रक्त	४०	त्रिवृत - 2 व्यावहारीक - कृष्ण (तीव्र रेचक), श्वेत अरुण (सुख रेचक) - शाम
२८	जाती - 2 श्वेत, पीत	४१	मुण्डी - 2 मुण्डी, महाश्रावणी (महामुण्डी)
२९	भृंगराज - 3 श्वेत, पीत, नील	४२	तुलसी - 2 श्वेत, कृष्ण अपामार्ग - 2 श्वेत, कृष्ण
३०	धामार्गव - 2 तिक्त, मधुर	४३	मुशाली - 2 श्वेत, कृष्ण
३१	कंटकारी - 2 श्वेत, नील	४४	सुही - 2 (च.) अत्यकंटक, बहुकंटक (श्रेष्ठ)
३२	बिस्बी - 2 मधुर (ग्राम्य), कटू (वन्य)	४५	शात्मली - 2 शात्मली, कुटशात्मली
३३	पटोल - 2 मधुर (ग्राम्य), तिक्त (वन्य)	४६	सूरण - 2 वन्य, ग्राम्य

क्र.	द्रव्य	क्र.	द्रव्य
३४	आमलकी - 2 वन्य, ग्राम्य	४७	पाठा - 2 पाठा, राजपाठा
३५	चंदन - 2 चंदनद्वय श्वेत, रक्त, उल्लेख - पीत, हरी चंदन	४८	पुनर्नवा - 2 श्वेत, रक्त,
४९	विदारी - 2 विदारी, क्षीरविदारी	५६	सारीवा - 2 श्वेत, कृष्ण
५०	प्रियंगु - 2 प्रियंगु, गंधप्रियंगु	५७	बिल्व - 2 वन्य, ग्राम्य
५१	गुडुची - 2 गुडुची, पञ्चगुडुची	५८	दंती - 2 दंती, द्रवंती
५२	जीवंती - 2 जीवंती, स्वर्णजीवंती	५९	अर्क - 2 श्वेत (अलर्क, मदार्क, राजार्क), रक्त
५३	गुंजा - 2 श्वेत, रक्त	६०	एला - 2 सूक्ष्म, बहद्
५४	कशेरुक - 2 राजकशेरुक, लघुकशेरुक	६१	गोक्षुर - 2 गोक्षुर, बृहद् गोक्षुर .
५५	दूर्वा - 2 श्वेत, नील		पाटला - 2 श्वेत, रक्त
५६	वचा - 4 वचा (घोड वचा) पारसीक वचा (बाल वचा) महाभरी वचा (कुलंजन) द्वीपान्तर वचा (चोपचिनी)		बर्बरी - 3 अर्जक, कुठेरक, बटपत्र
५७	हरमल - 2 श्वेत, रक्त		शतावरी - 2 शतावरी, महाशतावरी
५८	कुलत्थ - 4 श्वेत, रक्त, कृष्ण, चित्रक		जम्बु - 3 राज, क्षुद्र, भूमी
५९	अपामार्ग - 2 श्वेत, रक्त		

द्रव्य-प्रभाव

अ.क्र.	द्रव्य-प्रभाव
१	रासा - विषज्ञ
२	पद्मकाष्ठ - वेदनास्थापन
३	वेतस - वेदनास्थापन
४	पारसीक यवानी - मादक / वेदनास्थापन
५	गुगुल - त्रिदोषहर
६	भूर्जपत्र - त्रिदोषहर
७	चक्षुष्या - चक्षुष्य
८	कतक - चक्षुष्य
९	श्लेष्मातक - विषज्ञ
१०	खदिर - कुष्ठज्ञ
११	अर्जुन - हृदय
१२	हृत्पत्री - हृदय
१३	तरुणी - हृदय
१४	कांचनार - गंडमालानाशन
१५	मदनफल - वामक
१६	धामार्गवि - उभयतोभागहर
१७	कृतवेधन - उभयतोभागहर
१८	अरिष्टक - वामक
१९	हिज्जल - वामक
२०	शणपुष्पी - वामक

अ.क्र.	द्रव्य-प्रभाव
३१	विडंग - कृमीज्ञ
३२	चौहार - कृमीज्ञ
३३	इंगुदी - कृमीज्ञ
३४	तुलसी - कृमीज्ञ
३५	अफसन्तीन - कृमीज्ञ
३६	आखुकर्णी - कृमीज्ञ
३७	महानिष्म्ब - अशोज्ञ
३८	सूरण - अशोज्ञ
३९	रोहितक - प्लीहज्ञ
४०	शरपुंखा - प्लीहज्ञ
४१	सुनिष्पण्णक - त्रिदोषज्ञ
४२	पुत्रंजीवक - गर्भकर
४३	लांगली - गर्भपातन
४४	पातालगारुडी - विषज्ञ (छिलहिंट)
४५	अंकोल - विषज्ञ
४६	शिरीष - विषज्ञ
४७	पाषाणभेद - अश्मरीभेदन
४८	वरुण - अश्मरीभेदन
४९	कुलत्थ - अश्मरीभेदन
५०	गोरक्षगण्जा - अश्मरीभेदन

TIERRA

चुतिवार - उत्तमलक्षण

२१	कंकुष्ठ - रेचक
२२	दंती - रेचक
२३	धत्तुर - मादक (उत्तमलक्षण)
२४	अहिफेन - मादक
२५	सूचि - मादक (astropabacilli o dene)
२६	भंगा - मादक
२७	ताम्रपर्ण - मादक (तेलाक)
२८	कदंब - वेदनास्थापन
२९	सर्पगंधा - निद्राजनन
३०	जटामांसी - भूतच्छ (मानस दोषहर)

५१	शाल - वेदनास्थापन
५२	हरीतकी - त्रिदोषहर
५३	मण्डूकपर्णी - मेध
५४	ऐन्द्री - मेध
५५	शंखपुष्टी - मेध
५६	ज्योतिष्मती - मेध
५७	उस्तुखुदुस - मेध
५८	कुष्माण्ड - मेध
५९	वेतस - वेदनास्थापन
६०	पद्मक - वेदनास्थापन



TIERRA

अनेकार्थ नामवर्ग (भावप्रकाश)

क्र.	द्रव्य - पर्याय नाम	क्र.	द्रव्य - पर्याय नाम
१	कठिल्लक - कारवेल्ल, रक्तपुर्नवा	३४	अरिष्ट - निम्ब, रसोन, मद्द
२	दीथक - यवानी, अजमोदा	३५	अम्बष्टा - पाठा, चांगेरी, माचिका, यूथि
३	स्वादुकण्टक - गोक्षुर, विकंकत	३६	मधुपर्णी - गुडूची, गंभारी, नील
४	अग्निशिखा - केशर, कुसुभ	३७	मरुबक - फणिज्जक, पिण्डितक
५	समग्ना - मंजिष्ठा, लज्जालु	३८	बाल्हीक - केशर, हिंगू
६	त्रिपुटा - त्रिवृत, सूक्ष्म एला	३९	अग्निमुखी - भल्लातक, लांगली
७	अरुणा - मंजिष्ठा, अतिविषा	४०	अजशृंगी - मेषशृंगी, कर्कटशृंगी
८	आस्कोता - अपराजिता, सारीवा	४१	अमोदा - विंडंग, पाटला
९	उग्रगंधा - वचा, यवानी	४२	शटी - कर्चूर, गंधपलाशी
१०	कृमीच - विंडंग, हरिद्रा	४३	कणा - पिष्टली, जीरक
११	गोलोमी - श्वेतदूर्वा, वचा	४४	पारावतपदी - ज्योतिष्मती, काकजंघा
१२	कटभरा - कुटकी, श्योनाक	४५	अग्नि - चित्रक, भल्लातक
१३	धीरा - गुडूची, क्षीरकाकोली	४६	शकुलादनी - कुटकी, जलपिष्टली
१४	दीर्घमुल - यवास, शालपर्णी	४७	श्यामा - सारीवा, प्रियंगु
१५	सिंही - बहती, वासा	४८	तुण्डीकेरी - कार्पास, बिस्बी
१६	नट - श्योनाक, अशोक	४९	बालपत्र - खदिर, यवासा
१७	वरतिक्तक - पाठा, पर्पटक	५०	विश्वा - शुण्ठी, अतिविषा
१८	विषमुष्टिक - महानिम्ब, विषतिदुंक	५१	द्राविडी - शटी, सूक्ष्मएला
१९	क्रमुक - पूग, तूद, पट्टिकालोध	५२	वनस्पति - वट, नन्दिवृक्ष
२०	क्षुरक - कोकिलाक्ष, गोक्षुर, तितक	५३	यज्ञिय - खदिर, पलाश
२१	सोमवल्क - कट्टफल, श्वेतखदिर, घृतपूर्णकरण्ज	५४	श्रीपर्णी - गम्भारी, गणिकारिका, कट्ट
२२	अमृता - गुडूची, हरितकी, आमलकी	५५	षड्ग्रन्था - कपूरकाचरी, वचा करण्जी
२३	ऋष्यप्रोक्ता - अतिबला, महाशतावरी, कपिकच्छु	५६	शतपर्वा - वंश, दूर्वा, वचा
२४	समुद्रान्ता - धमासा, कार्पास, सृक्का	५७	सहस्रवेधी - अम्लवेतस, कस्तुरी हिंगु
२५	महौषध - शुंठी, रसोन, विष	५८	मधुरसा - द्राक्षा, मूर्वा, गंभारी
२६	ताम्रपुष्टी - धातकी, पाटला, श्यामात्रिवृत	५९	दत्तशठ - जम्बीर, कपिथ
२७	इन्द्रद्रुः - अर्जुन, देवदार, कुटज	६०	रोचन - कम्पिल्लक, गोरोचन
२८	पारिभद्र - निम्ब, पारिजात, देवदारु	६१	सहस्रवीर्या - नीलदुर्वा, महाशतावरी
२९	सोमवल्ली - बाकुची, गुडूची, ब्राह्मी	६२	कुण्डली - गुडूची, कोविदार
३०	दुःस्पर्श - यवास, कपिकच्छु, कण्टकारी	६३	यवफल - कुटज, वंश
३१	कालमेषी - मंजिष्ठा, बाकुची, श्यामा त्रिवृत	६४	मृदूरेचनी - त्रिवृत, मार्कंडिका
३२	पलड़कषा - गुगुल, गोक्षुर, लाक्षा	६५	मर्कटी - कपिकच्छु, अपामार्ग, करण्जी
३३	कारवी - पृथ्वीका, शतपुष्टा, कालाजाजी, अजमोदा		

अभाव वर्ग (योगरत्नाकर) उपाय पंचविधि में

⁴ Another - 1960

अ.क्र.	द्रव्य - अभाव द्रव्य	अ.क्र.	द्रव्य - अभाव द्रव्य
१	चित्रक - दंती, अपामार्गक्षार	२४	द्राक्षा - काश्मरी फल
२	धन्वयास - दुरालभा	२५	गंभारी फल - मधुक पुष्प
३	मुर्वा - मंजिष्ठा	२६	नखी - लवंग
४	तगर - कुछ	२७	कस्तुरी - कंकोल
५	अहिंसा - मानकंद	२८	कंकोल - जातीपुष्प
६	लक्षणा - मयूरशिखा	२९	कुंकुम - नवकुसुम पुष्प
७	बकुलपुष्प - नीलकुमुदिनी पुष्प, रक्तकुमुदिनी, पद्म	३०	श्वेतचंदन - कर्पूर
८	बकुलत्वक् - बबुलत्वक	३१	रक्तचंदन - नव उशीर
९	नीलोत्पल - कुमुद	३२	अतिविषा - मुस्ता
१०	जातीपत्र - लवंग, जाती फल	३३	हरीतकी - कर्कटशंखी, बाढ़हिरडा
११	अर्कक्षीर - अर्कपत्ररस	३४	नागकेशर - पद्मकेशर (कमलकेशर)
१२	पुष्करमूल - कुष्ठ, एरंडमूल	३५	मेदा, महामेदा - शतावरी
१३	लांगली - कुष्ठ	३६	जीवक, ऋषभक - विदारी
१४	स्थौणेयक - कुष्ठ	३७	काकोली, क्षीरकाकोली - अश्वगंधा
१५	चविका, गजपिण्डी - पिण्डीमूल	३८	ऋष्टि, वृदि - वाराही
१६	सोमुराजी - चक्रमर्दफल (प्रपुन्नाट)	३९	भल्लातक - चित्रक, नदीभाल्लातक
१७	दारुहरिद्रा - हरिद्रा	४०	ईक्षु - नल
१८	रसांजन - दारुहरिद्रा	४१	गुडुची सत्व - गुडुची स्वरंस
१९	सौराष्ट्री - स्फुटिका	४२	कमल - कमल बीज
२०	तालीसपत्र - स्वर्णलता	४३	रुचक लवण - पांशु लवण
२१	भारंगी - तालीस, रिंगणीमूल	४४	सर्व लवण - सैंधव
२२	यष्टीमधू - धातकी	४५	चुक्र - जम्बीरादिचा रस
२३	अम्लवेतस - चुक्र	४६	कर्पूर - सुगंधी मुस्ता

४७	श्रीखण्डचन्दन (मलयगिरी) - कर्पूर
४८	वाराही - चर्मकारालुक
४९	कुश - काश

५०	मध्य - पुराण गुड
५१	मत्स्यण्डिका - खण्डशर्करा
५२	खण्डशर्करा - सिता

परस्परस्थाभावे परस्पर योजनीयम्

अ.क्र.	द्रव्य - अभाव द्रव्य
५३	निर्गुण्डी - सुरसा
५४	सुरसा - निर्गुण्डी
५५	कुठेरिका (अजबला) सुरसा
५६	श्वेत पुनर्नवा - रक्त पुनर्नवा, वसु
५७	रासा - कोलिंजन
५८	सुवर्ण - सुवर्णमालिक
५९	सुवर्णमालिक - तारमालिक, गैरिक
६०	कान्तलोह - तीक्ष्णलोह
६१	मौकितिक - मुक्ताशुकिति
६२	वैदूर्यादि रले - मुक्ता आदि
६३	पारदभस्म - रससिंदूर
६४	रससिंदूर - हिंगुठ
६५	गोदुग्ध - अजादुग्ध
६६	गोधृत - अजाघृत

अ.क्र.	
१	शतावरी - विदारी कंद
२	श्वेत मुसली - कृष्ण मुसली
३	जिरे - शहाजिरे
४	हरिद्रा - दारुहरिद्रा
५	ओवा (यवानी) - अजमोदा
६	काष्ठदारु - देवदारु
७	कण्टकारी - बृहती
८	शालपर्णी - पृश्नपर्णी
९	मिश्रेया - शतपुष्पा
१०	वाळा - काळा वाळा
११	मुद्रगपर्णी - माषपर्णी
१२	लघु अग्निमंथ - बृहत अग्निमंथ

TIERRA

योनिव्यापद

चरक	सुश्रुत	वाग्भट
वातला	वातिकी	वातजा
पित्तला	पैत्तिकी	पित्तजा
श्लेष्मला	कफजा	कफजा
सन्निपातजा	सन्निपातजा	सन्निपातजा
उदावर्तिनी (वा.)	उदावर्ता (वा.)	उदावर्ता (वा.)
परिष्लुता (वा.पि.)	परिष्लुता (वा.)	परिष्लुता (वा.पि.)
वामिनी (वा.पि.)	वामिनी (पि.)	वामिनी (वा.)
पुत्रघ्नी (वा.)	पुत्रघ्नी (पि.)	जातघ्नी (पि.)
कर्णिनी (वा.क.)	कर्णिनी (क.)	कर्णिनी (वा.क.)
अचरणा (वा.)	अचरणा (क.)	अतिचरणा (वा.)
अतिचरणा (वा.)	अतिचरणा (क.)	षण्ठी (वा.)
षण्ठी (वा.)	षण्ठी (वा.पि.क.)	महायोनि (वा.)
महायोनि (वा.)	विवृत्ता (वा.पि.क.)	सुचीमुखी (वा.)
सुचीमुखी (वा.)	संवृता (वा.पि.क.)	
	वस्त्या (वा.)	
	विष्लुता (वा.)	विष्लुता (वा.)
असृजा (पि.)	लोहितक्षया (पि.)	लोहितक्षया (पि.)
	प्रस्त्रंसिनी (पि.)	
अरजस्का (पि.)	अत्यानन्दा (क.)	
प्राक्चरणा (वा.)	फलिनी (वा.पि.क.)	
उपस्लुता (वा.क.)		प्राक्चरणा (वा.)
अन्तर्मुखी (वा.)		उपस्लुता (वा.क.)
शुष्का (वा.)		अन्तर्मुखी (वा.)
चरक - चि 30	सुश्रुत उ. 38	शुष्का (वा.)
योनिव्यापदच्चिकित्साध्याय	योनिव्यापद प्रतिषेध	रक्तयोनि (पि.)
		अ.सं.उ. 38 हृदय 33
		गुह्यरोगविज्ञानीय

गर्भिणी परिचय

च. जातीसूत्रीय शारीर (च.शा. 8 / 32)
सु. गर्भिणीव्याकरणीय शा. (सु. शा. 10 / 3)

मास	चरक संहिता	सुश्रुत संहिता
प्रथम	शीत अनुपसंस्कृत (संस्कारीत नसलेले) क्षीर	मधुरशीतद्रवप्राय आहार
द्वितीय	मधुरौषधसिद्ध क्षीर	मधुरशीतद्रवप्राय आहार
तृतीय	मधुघृतासह क्षीर	मधुरशीतद्रवप्राय आहार, षष्ठीकौदन पयासह
चतुर्थ	नवनीतासह क्षीर (1 अक्षमात्र) - 2 तोळे	पयोनवनीतसंसृष्ट आहार, जांगलमांससंहित हृदय अन्न भोजन, षष्ठीकौदन दधीसह
पंचम	सर्पिसह क्षीर :	सर्पिसह क्षीर, षष्ठीकौदन पयासह
षष्ठ	क्षीरसर्पि - मधुरौषधसिद्ध	इवदंष्ट्रा सिद्ध सर्पिमात्रा किंवा यवागूपात्र
सप्तम	क्षीरसर्पि - मधुरौषधसिद्ध	पृथक्पण्यादिसिद्ध सर्पि
अष्टम	क्षीरयवागू सर्पिसह	बदरादि आस्थापन, पयोमधुरकषायसिद्ध तैलाने अनुवासन
नवम	मधुरौषध सिद्ध तैलाने अनुवासन मूत्रिकागार प्रवेश, योनीपिचू	सूतिकागार प्रवेश

सुश्रुतोक्त गण व कर्म

अ.क्र	गण	कर्म
1	विदारिंगधादि	पित्तवातशामक, राजयक्षमा, गुल्म, कास, उर्ध्वश्वास, अंगार्द
2	आरग्वधादि	कफघ्न, विषघ्न, प्रमेह कुष्ठ, ज्वर, ब्रण, वमन, कण्डू
3	बरुणादि	कफघ्न, मेदोघ्न, शिरःशूल, गुल्म, आभ्यन्तर विद्रधि
4	वीरतर्वादि	वातविकारनुत्, अश्मरी, शर्करा, मुत्रकृच्छ्र, मूत्राधात
5	सालसारादि	कफमेदोविशोषण, कुष्ठ, प्रमेह, पाण्डू
6	रोधादि	मेदकफहर, योनिदोषहर, स्तंभक, वर्ण्य, विषनाशक
7	अर्कादि	कफनेवनाशक, विषघ्न, कृमी कुष्ठनाशन, ब्रणशोधन
8	सुरसादि	कफहर, कृमीज्ज, प्रतिशयाय, अरुचि, श्वास, कास, ब्रणशोधन
9	मुष्ककादि	मेदोध्न, शुक्रदोषहत, प्रमेह, अर्श, पाण्डू शर्करानाशन
10	पिष्टत्यादि	कफहर, प्रतिशय, वातविकार, अरुचि, गुल्म, शुलनाशन, दीपन आमदोषपाचन
11	एलादिगण	वातकफघ्न, विषघ्न, तर्णप्रसादन, कण्डूपिडकाकोठनाशन
12	वचादि	दुष्टस्तन्वशोधन, आमातिमारनाशन, आमदोषपाचक
13	हरिद्रादि	
14	श्यामादि	गुल्मविषनाशन, आनाह, उद्दर, विद्भेदी उदावर्तनाशन
15	बृहत्यादि	पित्तवातघ्न, कफ, अरुचि, हृदयरोग, मूत्रकृच्छ्र, रुजानाशन
16	पटोलादि	पित्तकफशामक, अरुचि, ज्वर, ब्रण, छर्दी, कण्डू, विष
17	काकोत्यादि	पित्त, रक्त, वातनाशन, जीवनीय, बृहणीय, वृष्य, स्तन्यश्लेषकर
18	उषकादि	कफमेदनाशन, अश्मरी, शर्करा, मुत्रकृच्छ्र, गुल्म
19	सारिवादि	रक्तपित्तहर, तृष्णा, पित्तज्वर, दाहनाशन
20	अञ्जनादि	रक्तपित्तनाशन, विषनाशन, दाहशामक

अ.क्र	राण	कर्म
21	परुषकादि	वातनाशान, मूत्रदोषहर, हृदय, पिपासाघ, रुचिप्रद
22	प्रियङ्गवादि	पक्वातिसारनाशान, संधानीय, ब्रणरोपक
23	अम्बष्टादि	
24	न्यग्रोधादि	रक्तपित्त, मेदोहर, संग्राही, भग्नसंधानकर, योनिदोषहत्, ब्रण्य
25	गुडुच्यादि	ज्वर, अरुचि, हूलास, वमन, तृष्णा, दाह
26	उत्पलादि	दाह, रक्तपित्त, तृष्णा, विषविकार, हृद्रोग, वमन, मुर्छा
27	मुस्तादि	कफशामक, योनिदोषहर, स्तन्यशोधन, आमपाचक
28	आमलवयादि	सर्वज्वरापह, चक्षुष्य, दीपन, वृष्य, कफशामक, अरुचीनाशान
29	ध्राष्टादि	गरदोष, कृमीहर, पिपासा, विष, हृद्रोग, पाण्डू, प्रमेह
30	लाक्षादि	कफपित्तराशन, कुष कृमीहर, दुष्ट्रवणशोधन
31	बल्लीपंचमूळ	रक्तपित्तहर, शोफहर, सर्वमेहहर, शुद्धिदोषविनाशान
32	कंटकपंचमूळ	
33	तृणपंचमूळ	मूत्रदोष, रक्तपित्तराशन
34	लघुपंचमूळ	कथाय तिक्त मुधर, वातपित्तशामक, दुःहण
35	बृहतपंचमूळ	तिक्त, अनुरस-मधुर लघु (कटु) पाकी, कफवातशामक, दीपन

TIERRA

रणा - तुलना

सं.क्र.	चरकालत गण	मुश्तोरत गण	अ.क्र.	चरको इति गण	मुश्तोरत गण
1	जीवनीय	काकोत्यादि	24	ज्वानहर	पिपल्यादि, सुरसादि
2	बृहणीय	विदरिगंधादि	25	शोषहर	दशमूल
3	लेखनीय	मुस्तादि	26	ज्वरहर	सारिवादि, पटोलादि आमनकथादि
4	भेदनीय	झयमादि	27	शमहर	परुषकादि
5	सधानीय	अमबट्टादि, प्रियवादि	28	स्त्रवजनात	काकोत्यादि
6	दीपनीय	पिपत्यादि	29	त्वचयोधन	मुस्तादि, चवादि, हरिद्रादि
7	बल्य	तमुपचमूल	30	युक्तजनात	वालीपंचमूल, कंटकपंचमूल
8	वर्ण	एतादि, रोधादि	31	युक्तसौधन	परुषकादि
9	हृदय	परुषकादि	32	द्विजगोपग	काकोत्यादि, विदरिगंधादि
10	तृष्णिष्ठ	पटोलादि	33	वयुजनापत	उर्ध्वभावाहर
11	अशोष्य	मुखकादि	34	वयम्	अधोभावाहर
12	कुपुन	आरावधादि, सालसारादि, अवादि, तासादि	35	विरेचन	उमयतो भागहर
13	कण्डहर	एतादि, आरवथादि	36	चाँड़त	सारिवादि, अजनादि उत्तरादि
14	कृमिल	सुरसादि, लक्षादि	37	दाहप्रशमन	पिपल्यादि, सुरसादि
15	निष्पन्न	रोधादि, आरवधादि, अकर्दि, अलनाटि	38	शीतप्रशमन	सालसारादि
16	छर्दिनिध्रण	त्वयोर्धादि	39	उदर्द्वप्रशमन	विदरिगंधादि
17	तृष्णानिध्रण	गुडक्यादि, उत्तरादि सारिवादि, पक्षवकादि	40	अंगमद्वप्रशमन	पिपल्यादि
18	हिक्कानिध्रण	बुहसादि, विदरिगंधादि	41	शूलप्रशमन	प्रियवादि
19	पुरीषसंग्रहणीय	त्वयोर्धादि	42	शोणितरथापन	रोधादि
20	मूत्रसंग्रहणीय	त्वयोर्धादि, सालसारादि	43	चेदनाश्थापन	प्रियवादि
21	मूत्रविरचनीय	तुण्णपत्तमूल, वीरतवादि	44	संज्ञालवपन	विदरिगंधादि
22	मूत्रविरचनीय	उत्पत्तादि	45	प्रजास्थापन	विदरिगंधादि, कोकोत्यादि
23	कासहर	विदरिगंधादि			

रसवाद च.सू. 26

ऋग्वीनाम		रस
भद्रकाष्य	१	जिहवाविषयक भाव / जलासमान
शाकुल्तेय ब्राह्मण	२	छेदनीय उपशमनीय
पूर्णाक्ष मौद्रगत्य	३	छेदनीय उपशमनीय साधारण
हिरण्याक्ष कौशिक	४	स्वादुहित स्वादुअहित अस्वादुहित अस्वादुअहित
कुमारशिरा भरद्वाज	५	भौम जलीय आग्नेय वायव्य आकाशीय
राजर्षि - वार्योविद	६	गुरु लघु शीत उषा सिंधु रुक्ष
वैदेह निमी	७	मधुर अस्त्व लवण कटु तिक्त कषाय क्षार
बडिश धामार्गव	८	मधुर अस्त्व लवण कटु तिक्त कषाय क्षार अचक्त
कांकायन		अनेकरसवाद
पुनर्वसु आत्रेय		षड्ग्रसवाद
वारभट नामार्जुन		षड्ग्रसवाद

पुरुष तथा रोगोऽस्ती सिद्धांत (च.सू. 25 / 25)

महर्षी	वादनाम
मौद्रगत्य पारीक्षि	आत्मवाद
शरत्तोमा	सत्ववाद
वार्योविद	रसवाद
हिरण्याक्ष	षड्ग्रातुवाद
कौशिक (शौनक)	मातृपितृवाद
भद्रकाष्य	कर्मवाद
भरद्वाज	स्वभाववाद
कांकायन	प्रजापतिवाद
आत्रेय भिक्षु	कालवाद

गर्भातील सर्वप्रथम अंग उत्सर्ती

च.शा. 6 /

सु.शा. 3 / 30

	अंग	चरक संहिता	सुश्रुत संहिता
१	शिर	कुमारशिराभरद्वाज	शौनक
२	हृदय	कांकायन बाल्हिक	कृतवीर्य
३	नाभि	भद्रकाष्य	पाराशर
४	हस्तपाद	बडिश	मार्कण्डेय
५	पक्वाशय गुद	भद्रशौनक	
६	मध्यशरीर		सुभूती गौतम
७	इंद्रियाणि	वैदेह जनक	
८	अविचार्य	मारिच काश्यप	
९	सर्वांग युग्मपत	धन्वन्तरी	धन्वन्तरी

चरक संहिता

उदकधूरा	:
असूरधूरा	
तृतीय त्वचा - सिघ्म, किलास	
चतुर्थ त्वचा - ददु व कुष्ठ	
पंचमी त्वचा - अलजी व विनाधि	
षष्ठी त्वचा - पनसिका आश्रय, आघाताने तमःप्रवेश	

सुश्रुत संहिता

TIERRA

क्र.	नाम	प्रमाण	स्थान
१	अवभासिनी	1 / 18 ब्रीहि	वर्णविभासन, सिघ्म, पद्मकंटक छायाप्रकाशन
२	लोहित	1 / 16 ब्रीहि	तिलकालक, न्यच्छ, व्यङ्ग
३	श्वेता	1 / 12 ब्रीहि	चर्पदल, मशक, अजगल्लिका
४	ताम्रा	1 / 8 ब्रीहि	किलास, कुष्ठ
५	वेदिनी	1 / 5 ब्रीहि	कुष्ठ, विसर्प
६	रोहिणी	1 ब्रीहि	ग्रंथी, अपची, अर्बुद, श्लीपद, गलगंड
७	मांसधूरा	2 ब्रीहि	अर्श, विद्रधि, भगंदर

रस - पांचभौतिकत्व व उत्पत्ति

	रस	पांचभौतिकत्व	ऋतू (उत्पत्ति)
१	मधुर	पृथ्वी + जल	हेमंत
२	अम्ल	पृथ्वी + अग्नि जल + अग्नि (सुश्रुत)	वर्षा
३	लवण	जल + अग्नि पृथ्वी + अग्नि (सुश्रुत)	शरद
४	कटु	वायु + अग्नि	ग्रीष्म
५	तिक्त	वायु + आकाश	शिशिर
६	कर्पाय	वायु + पृथ्वी	वसंत

भैषज्य कल्पना - सामान्य मात्रा

	कल्पना	मात्रा	कल्पना	मात्रा
१	स्वरस	1 / 2 पल	यूष	2 पल
२	कार्क	1 कर्ष	अब्दलेह	1 पल
३	चूर्ण	1 कर्ष / कोल	बड़ी / गृही	1 कर्ष
४	क्वाय	1 कर्ष	तैल	1 पल
५	फाष्ट	2 पल	घृत	1 पल
६	हिय	2 पल	आसद - अरिष्ट	1 पल
७	प्रभया	2 पल		

गर्भवर्णोत्पत्ति

	वर्ण	चरक	सुश्रुत
१	शौर वर्ण	तेज + जल + आकाश (तेजआ)	तेज + जल (तेज)
२	कृष्ण वर्ण	तेज + पृथ्वी + वायु (तेपृआ)	तेज + पृथ्वी (तेपृ)
३	श्याम वर्ण	समसर्वधातुप्रायः	----
४	गौरश्याम	----	तेज + जल + आकाश (तेजआ)
५	कृष्णश्याम	----	तेज + पृथ्वी + आकाश (तेपृआ)

	श्रेष्ठ हितकर	श्रेष्ठ अहितकर
१	लोहितशालयः शुकधान्यानां	यवका: शुकधान्यानाम्
२	मुद्रगाः शमीधान्यानाम्	माषाः शमीधान्यानाम्
३	आन्तरिक्षम् उदकानाम्	वर्षानादेयम् उदकानाम्
४	सैध्वं लवणानाम्	ओषरं लवणानाम्
५	जीवत्तीशाकं शाकानाम्	सर्षपशाकं शाकानाम्
६	ऐणेयं मृगमांसानाम्	गोमांसं मृगमासानाम्
७	लावः पक्षिणाम्	काणकपोतः पक्षिणाम्
८	गोधा बिलेशयानाम्	भेको बिलेशयानाम्
९	रोहितो मत्स्यानाम्	चिलचिमो मत्स्यानाम्
१०	गवं सर्पिः सर्पिषाम्	आविकं सर्पिः सर्पिषाम्
११	गोक्षीरं क्षीराणाम्	आविक्षीरं क्षीराणाम्
१२	तिलतैलं स्थावरजातानां तैलाणाम्	कुसुमस्तेह स्थावरस्तेहाणाम्
१३	बराहवसा आनूपमृगवसानाम्	महिंपवसा आनूपमृगवसाणाम्
१४	चुलुकीवसा मत्स्यवसानाम्	कुम्भीरवसा मत्स्यवसानाम्
१५	पाकहंसवसा जलचरविहङ्गवसानाम्	काकमद्गुवसा जलचरविहङ्गवसानाम्
१६	कुकुटवसा विष्किरशकुनिवसानाम्	चटकवसा विष्किरशकुनिवसानाम्
१७	अजमेदः शाखादमेदसाम्	हस्तिमेदः शाखादमेदसाम्
१८	शृणुवेरं कन्दानाम्	आलुकं (पा. भूलुकं) कन्दानाम्
१९	मृद्धीका फलांताम्	निकुचं फलानाम्
२०	शर्करा इक्षुविकाराणाम्	फाणितम् इक्षुविकाराणाम् ।

अक्षितपर्ण काल

अस्यंग प्रसरण काल

(स्लेह) - डल्हण

मात्रा	अंग
१००	वर्त्सगत रोग
३००	संधिगत रोग
५००	शुक्लगत रोग
७००	कृष्णगत रोग
८००	दृष्टिगत रोग
१०००	अधिसंय रोग
१००००	दात रोग
६००	पित रोग
५००	कफ रोग
६००	स्वस्थ व्यक्ति

मात्रा	अंग
३००	त्वक्रोमस्थानी प्रसरण
४००	त्वचेत
५००	रक्तात
६००	सांसात
७००	सैदात
८००	अस्थिगत
९००	मज्जागत

विरेचनयोग

६०० वमन योग - ३५५

रेचन योग - २४५

वमन योग	
सदनकल	१३३
जौमूतक	३८
इक्ष्वाकु	४५
धामत्वाव	६०
कृतवैधन	६०
वत्सक	१८

तिरेनन योग	
श्वासा त्रिवृत	११०
चतुर्सुल	१२
तिल्वक	१६
सुधा	२०
सतला शंखिनी	३९
दत्ता द्रवंती	४८

TIERRA
पंचकर्मकाल

प्रतिमशी -	आजन्म सात्य
मर्श -	७ ते ८० वर्ष
धूमपान -	१८ वर्षापेक्षा कमी निषेध
कवल -	५ नंतर
वमन -	
रेचन -	१०-७०

नस्य

चरक - 5

१	नावन 1) स्नेहन 2) शोधन (वनात स्नेह शोधने)
२	अवपीड 1) शोधन 2) स्तंभन (पीडा शोधून थांबवणे)
३	ध्मापन
४	धूमनस्य 1) प्रायोगिक 2) स्नैहिक 3) वैरेचनिक
५	प्रतिमर्श 1) स्नेहन 2) विरेचन (प्रिति -स्नेह, मर्श-रेचन)
सुश्रुत	- 2 1) शिराविरेचन 2) स्नेहन
	- 5 1) नस्य 2) शिरोविरेचन 3) प्रतिमर्श 4) अवपीड 5) प्रथमन
वाग्भट	- 3 1) विरेचन 2) बृहण 3) शमन
काश्यप	- 2 1) बृहण - पूरण 2) कर्षण - शोधन
शाढगर्धर	- 2 1) रेचन-कर्षण 2) स्नेहन-बृहण
मोज	- 2 1) प्रायोगीक 2) स्नैहिक
विदेह	- 2 1) संज्ञाप्रबोधक 2) स्तंभक

आशय भेदाने - 7 फल, पत्र, पुष्प, कंद, निर्यास, त्वक्

मर्श नस्य - उत्तम - 10 बिंदू काल - सुश्रुत - 14 वय - 7 ते 80 वर्षे

मध्यम - 8 बिंदू वाग्भट - 15

हीन - 6 बिंदू

प्रतिमर्श - 2 बिंदू

जन्मापासून मृत्युपर्यंत

धूमपान

TIERRA

चरक - 3 1) प्रायोगिक (शमन) 2) वैरेचनिक 3) स्नैहिक

सुश्रुत - 5 1) प्रायोगिक 2) स्नैहिक 3) वैरेचनिक 4) कासघ 5) वामनीय

वाग्भट - 3 1) स्निग्ध-वातविकार 2) मध्यम - वातकफविकार 3) तीक्ष्ण-कफविकार

शाढगर्धर - 6 1) शमन 2) बृहण 3) रेचन 4) कासहा 5) वामन 6) ब्रणधूपन

धूमपान काल - चरक - 8 वाग्भट - 8 सुश्रुत - 12

धुमनेत्र लांबी - प्रायोगीक - 48 (36 च.), स्नैहिक - 32 वैरेचनिक - 24 कासघ /वामक - 16
परिणाह - कनिष्ठिका अंगुलीसमान

स्थानमात्रा

स्थानमात्रा	गुण	योग्य व्यक्ति	जीर्णता कालावधी
१ हस्त	सुखपरिहार, स्वेहन, ब्रह्मण वृष्ण, वार्ष, निराकाश, चौरअनुदर्तिची	वृद्ध, वाल, सुकुमार, सुखोचित, मंदानी, निवृतकोऽनुबमाहितं येषां, चौरस मुलितज्जरकासअतिशार	२ याम (६ तास) अधीह
२ मध्यम	मदविशेषा (अधिक उभयद्रव व करणारी) च अतिवलहारिणी सुखेन, सेहागति, शोधनार्थ युज्यते	अहोक, रक्षोद, पिदिका, कण्डु, पाता, कुषु, प्रसेह, वातापोषित, तातिक्खहाशिन, प्रदुवोपु	४ याम (१२ तास) अहकृत्वा
३ उत्तम	दोषानुकरिणी, सर्वसामुदारिणी, चर्या, पुनर्नवकारीइत्तियचेतताम्	प्रभूतेवेत्तिग्रस्य, शुतिपासासह, शारीरिक व अविवलुत्तम असणारे, गुल्म, सर्पदृष्ट, विरुद्ध, उच्चाद, मूत्रकूळ्ह, गाढवच्चिस,	८ याम (२४ तास) अहोरात्र

TIERRA

स्वेहमात्रा (च.सृ. 13)

स्थेह	गणधर्म	योग्य व्यक्ती	सेवनकाल	अनुपात
१ घृत	दातपितहर, निर्वापण (दाहशामक) मुद्दकर, स्वरचणप्रसादक	वातपितविकारी, वातपित्तवृत्ती उरःक्षती, क्षीण, चक्षु अःयुबल वर्णस्वरंयी, दीसी ओजस्मृतीमेघाअनिबृहिदियवलार्थी, वृद्ध, इव्वल, बाल, अखता, पुष्टिप्रजासौकुमायर्थी, दाह, शख्त, चिष अनिन्पीडित	शरद ऋतु	उछोदक
२ तेल	मारुतम्ब, न च शर्वेषांवर्धनं, बलकर, लच्छ, स्थिरकर, योनिविशेषधन	वातव्याधीं, वातप्रकृति, खल तनुत्व, लघुता दृहतातिथरवात्राकाधीं, स्थाधश्वलक्षण तनुत्वक् आकांक्षी क्लानीकोषु, फैकागु, गडागे, तैलाभ्यासी, शीतकाले	प्रावृद्ध (वर्षा)	यष
३ वसा	विष्व, भाव, हत, योनिष्य, शिरःशुल, कण्ठशुल च पौरुषोपचयार्थ, व्यायामशुलणार	वातातपलह, रुक्ष भार अव्यक्तिश्वत, संशुष्करेतोरुधिर, तिथितकफमेद (इट)	माधव (वैशाख)	मण्ड
४ मज्जा	बलशुद्धकरत्तलेष्वमेदमज्जावर्धन विशेषतो अस्त च बलकृत	दीस्तामित, वलेशसह, घस्मर, सेहसेवी, वातार्ति, कुरकोट्टी	माधव (वैशाख)	मण्ड

सार्वि - मज्जा - वसा - तैत्ति (च.वि. 8 / ३।८.)

यथोत्तर वातकफस्त
यथापूर्व पिताम् -

द्युति द्युति वसा मज्जा - अधोन्तर गुण (अन्तर्भुक्त)

स्त्रेहप्रकार

स्त्रेहप्रकार	चरक	सुश्रुत	वागभट	शाङ्खर्धर
नस्य	मृदू	मध्य	मृदू	मृदू
पान	मध्य	मृदू	चिकित्सा	मध्य
बस्ती	मध्य	रवर	चिकित्सा	मध्य
अध्यंग	रवर	मध्य	रवर	मध्य
कर्णपूरण		खर		मध्य



TIERRA

महाश्वास	उद्धर्व श्वास	प्रिणन श्वास	क्षुद्र श्वास
<p>उद्धुयमानवातोः यः शब्दवद् कुर्वितो नरः । उन्मेः श्वसिते संसाक्षद्वे मत्तर्षभ इवानिगम् ॥</p> <p>प्रनालज्जनविज्ञान विभ्रानलोचनः विकृताद्यन्तनः</p> <p>वृद्धमनवर्चर्चा प्रिणीर्विक दीनः प्रश्वसिते चास्य द्रशाद् विज्ञायते भूषाम् । सहायामोपसुषुषुः ए क्षिप्तमेव विषद्यते ॥</p>	<p>वीर्यं श्वसिति थस्तुर्वर्द्ध ल न भ्रयाहरत्ययः । कृतेभावस्तमुरकर्मोत्ता: कृददण्डवर्धितः ॥</p> <p>विकृताद्यन्तनः</p> <p>विकृतिविषयप्रवर्त्ती मुकुर्मन देवतार्तकम् शूष्यमानेत वस्तिना ।</p> <p>उद्धर्वसमे प्रकृपिते उद्धर्वसमे निकृध्यते । मुख्यतस्तम्यतं-योर्वर्द्ध क्षिप्तमेव विषद्यते ॥</p>	<p>अस्तु वर्षसिति वित्तिनः सर्वप्राणेन परोऽिनः । न वा श्वसिति तु रक्षते मर्मलेपेद्वागदितः ॥</p> <p>विकृताद्यन्तनः</p> <p>विकृतिविषयप्रवर्त्ती आनादस्वेदप्रवर्त्ती दृश्यमानेत वस्तिना ।</p> <p>विकृताद्यन्तनः परिशुषुकामो विकृताद्यन्तनः ।</p> <p>विकृताद्यन्तनः प्रज्ञायते ॥</p>	<p>कोर्जे शुद्धो वाता उद्दीरयत् । न सोडत्यर्थं द्विरेत्ताक्षबाधकः ॥</p> <p>हिनस्ति न स ग्रामगि न च तुर्तो उमेतर न च भ्रोजनपानानां जिरुणादयुक्तिता गतिम् ।</p> <p>न इन्द्रियाग्ना अयाः न अपि काञ्जिदापादये दुर्जम् म चाष्टो उक्तो वलिनः यर्वे चाव्यक्तस्तम्याः ॥</p> <p>म शिथ्यं प्रज्ञायत्तम् ॥</p>

स्वप्नादी
 प्रतिलोमं अदा वाऽः क्षोतासु प्रतिपदयेत् ।
 वरीवां शिरस्त्वं स्थृतेऽप्यनुभूतिं न ॥
 करोति पीनसं तेजं रुद्धो घट्टुकं तथा ।
 असीपि तीव्रेण च अस्माकं प्रणापेऽकम् ॥

उत्तिष्ठुताक्षो छलादेन स्विदध्यता भूषामर्तिंगन् ।
 विषुपास्यो मुःः वग्मो मुडुख्येवधायते ॥ ३६ ॥
 देहमध्यमुख्याने चु मश भवति दुरिक्तः ।
 तस्येव च विमोशान्ते मुडुर्त लभते सुखम् ॥ ३५ ॥

प्रगोहुं कासमावृच्य च शशधति मुडुर्तुः ॥ ३७ ॥
 अधास्योदृष्ट्यस्ते दृष्ट्यः कुच्छ्याद्यक्षोति भाषितुम् ।
 न चाप्य निद्वा लभते शशानः श्वासपीडितः ॥ ३८ ॥
 याऽर्थं तद्यावृत्यात्तिं शशानम्य सपरिणः ।
 ऊसीनो लभते मोरमुषां चैवाभिनन्दति ॥ ३९ ॥

वेयामनुशीतप्राप्यवातेः इलेष्वलेङ्चाभिवर्यते ।
 स याप्यस्तमकद्वासः साधो वा द्याज्ञवोऽयितः ॥ ३२ ॥

TIERRA

लडाएं

तमकरवाहा

महाहिका	गमधीरा हिका	श्वेषेला हिका	कुद्रा हिका	अळनेंजा हिका
स्थिरासंसबलप्राणतेजसः च्यवसीन उत्पन्नः उच्चेदोषवर्ती मूर्खम् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संसर्वद्योग्यमाणमेव च ।	प्रवृक्षस्तु कृशो दीक्षमना नः - नर्जिरेणोरसा कृच्छ्र गमधीरमनुना दद्यन् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संज्ञानां सुष्णानि वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- त्रौप्रयते याइलापाते रातुरिधे - आवारपरिणामाल्ले मूर्खरय लमते बल्लम् । सञ्ज्ञमन् रेणुक्षिपंस्येव तयाऽङ्गाने प्रेषरयन् । पार्वत्यौर्जे सामाध्यरय कुनन् चतुर्भुजाद्वितीः । गामे: पर्वताद वाऽपि हिका सारस्यायते । वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- कृद्रवातो यदा कोशाद् श्वाचामपरिधिहितः कृष्णे प्रपदयते अगतितुर्वका न सा त्विद्य विचेतनः । तं च उदोशिः सम्प्रवाचिनी भारातिवर्तनः: पानभेदम्	१) सदस्या अतिअस्यहते: यात्तेन २) मदयोः वाऽतिमद्व्रेदः: → पिदितोऽनिलः उर्ध्व प्रपदयते ३) त्याडतिरोषभाष्याद्वास्य- भारातिवर्तनः: पानभेदम्
स्वीपिनांसबलप्राणतेजसः च्यवसीन उत्पन्नः उच्चेदोषवर्ती मूर्खम् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संसर्वद्योग्यमाणमेव च ।	प्रवृक्षस्तु कृशो दीक्षमना नः - नर्जिरेणोरसा कृच्छ्र गमधीरमनुना दद्यन् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संज्ञानां सुष्णानि वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- त्रौप्रयते याइलापाते रातुरिधे - आवारपरिणामाल्ले मूर्खरय लमते बल्लम् । सञ्ज्ञमन् रेणुक्षिपंस्येव तयाऽङ्गाने प्रेषरयन् । पार्वत्यौर्जे सामाध्यरय कुनन् चतुर्भुजाद्वितीः । गामे: पर्वताद वाऽपि हिका सारस्यायते । वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- त्रौप्रयते याइलापाते रातुरिधे - आवारपरिणामाल्ले मूर्खरय लमते बल्लम् । सञ्ज्ञमन् रेणुक्षिपंस्येव तयाऽङ्गाने प्रेषरयन् । पार्वत्यौर्जे सामाध्यरय कुनन् चतुर्भुजाद्वितीः । गामे: पर्वताद वाऽपि हिका सारस्यायते । वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	पीडितः → वायुः कोऽध्यातो धावन्तु उःकोत समाकिंव्य कुर्याद् अनन्जादिः - असाक्षन्दृ द्युवर्चयादि च हिकते - न सम्बाधाजनन्ती - त इन्द्रियाणां प्रवाचिनी - पीडिते तथा शुक्ले - शामं चाति ।
स्वीपिनांसबलप्राणतेजसः च्यवसीन उत्पन्नः उच्चेदोषवर्ती मूर्खम् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संसर्वद्योग्यमाणमेव च ।	प्रवृक्षस्तु कृशो दीक्षमना नः - नर्जिरेणोरसा कृच्छ्र गमधीरमनुना दद्यन् । करोति सततं दिक्कामेन द्विनिशुणां तथा । प्राणाः स्वोत्तंसि मर्मणि संज्ञानां सुष्णानि वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- त्रौप्रयते याइलापाते रातुरिधे - आवारपरिणामाल्ले मूर्खरय लमते बल्लम् । सञ्ज्ञमन् रेणुक्षिपंस्येव तयाऽङ्गाने प्रेषरयन् । पार्वत्यौर्जे सामाध्यरय कुनन् चतुर्भुजाद्वितीः । गामे: पर्वताद वाऽपि हिका सारस्यायते । वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	- त्रौप्रयते याइलापाते रातुरिधे - आवारपरिणामाल्ले मूर्खरय लमते बल्लम् । सञ्ज्ञमन् रेणुक्षिपंस्येव तयाऽङ्गाने प्रेषरयन् । पार्वत्यौर्जे सामाध्यरय कुनन् चतुर्भुजाद्वितीः । गामे: पर्वताद वाऽपि हिका सारस्यायते । वात्प्राणां स्तम्भं अङ्गजनयति स्मार्भं देवान्नपानानां रुणिदि सायुविष्फूतेनसभ्यस्त्वयाद्युप्तः स्वकर्तनेत्तम्भान्तम्भान्तः	प्राणोपदेशिनी

वातन कास	पिचंज कास	कपुञ्ज कास	द्रवतज कास	द्रवंज कास
<p>द्रवंजःशिरःशूल स्वरमेवकरो भृशम् । शुकुरुःकृष्णस्त्रयः हृष्ट्वान्नः प्रताप्यतः निदेष्वेदेव्यस्तन्नेत्विन्देश्येष्वृत्ते शुकुरः वृक्षं</p>	<p>पीतनिष्ठितनादिव्व तिक्तास्त्रव्वत्व स्वरामयः उरोध्यमायनः तुष्णा वाह सोर अरनि शुभम् शुकुरः वृक्षं</p>	<p>कर्णदानिल अरचि छटि चिनयः उत्केलन ओरन् लोमहर्ष आस्यमाधुर्य वृक्षेवदेव्यस्तन्नेत्विन्देश्येष्वृत्ते करमान्दो उत्तराय प्रततं करमान्देश्य व्योतीषीव च प्रश्नति मुक्तपीतेः प्राप्यतिनः शुकुरवृत्त्वय जीर्णिङ्गो देवगवाल्मारातो भ्रवेत् ।</p>	<p>स युर्व कामते शुक्क ततः पर्णिवेत् सशोणितम् । कठेन राजताऽत्यधि विरागेनेव चौरसा आस्यमाधुर्य वृक्षेवदेव्यस्तन्नेत्विन्देश्येष्वृत्ते करमान्दो उत्तराय प्रततं करमान्देश्य व्योतीषीव च प्रश्नति मुक्तपीतेः प्राप्यतिनः शुकुरवृत्त्वय जीर्णिङ्गो देवगवाल्मारातो भ्रवेत् ।</p>	<p>दुर्गां शीरित वृक्षं च्छिवेत् फूगोपमम् करम् । द्रवानादुक्तकासमानेत्व हृदयं मन्यते रथुत्तम् । अकम्पादुल्लाशीतात्मे ब्रह्माशी दुर्बलः दृशः । स्त्रियादादुम्पुवनाऽत्यवक श्रीमद्वृष्णिनोच्चनः । पविष्ठादत्तेः इत्क्षेपः याणीपादत्तेः इत्क्षेपः मत्तवृष्णिमुक्तिस्त्रय पार्वत्यकुमित्येऽद्वृष्णिः । मिन्नसेतत्वमित्येऽद्वृष्णिः । कुरुत-विष्मयसाद्यगामान्न अतिलवान् शोकतां दृशाः । द्रुष्णिनां शोकतां दृशाः ।</p>

ज्ञानावधि विषय	ज्ञानावधि विषय	उत्तराधिकारी	उत्तराधिकारी	परीक्षा
1) कार्यालय	तत्र कारणं जाम तद अदृ करोति, स एव हेतुः स कर्ता । व्याधी शामनार्थं कार्यं करहाणा वैद्य तोच हेतु व कर्ता होय.	कार्यं प्राप्तोऽ कारणं मिथक । कार्यं प्राप्तीभासीचा कारण- मिथक	आः सूत्रार्थप्रयोगाकृष्टाः यत्त्व चायुः सर्वभा विदितं यथावत् ।	परीक्षणा
2) कर्मण	करणं युनस्तदृ अदुपकरणामोपकल्पते कर्तुः कार्योनिर्वृत्तोऽ स्वयत्मानप्य । कार्यसिद्धिभासी कर्माकर्त्तव्यं वापरक्तेज्ञानारे भाष्यन् (उपकरण)	करणं पुनर्भवन्त करणं करणं उपकरणं उपकरणं करणं करणं उपकरणं	भैषजं नौम तेव धृदृ उपकरणायोग्यम् भैषजो धातुसाम्यामिनिर्वृत्तो प्रयत्नमानप्य विशेषतोपाग्रान्तेऽप्यः । धातुसाम्य निर्मितीकारी वैद्यव्यास देश काळ उपाय यमनं सहायक ।	उत्तराधिकारी
3) कार्ययोग्यता	कार्ययोनिस्तु ज्ञा विक्रियमाणा कार्यविम्- आपदयते । कार्यं लिपिदिचासी होगारी विकारप्राप्ती ।	कार्ययोग्यता कार्ययोग्य ।	तत्त्वं लक्षणं विकारागमः ।	परीक्षणा

प्रारंभिक	लक्षण	परीक्षण
५) कार्य कर्ता प्रवर्ती। उच्चार्या आग्निवृत्तिसाठी (उत्पन्नी) कर्ता प्रवृत्त लेतो।	कार्य धारु सामय तस्य लक्षणं विकाशोपशमः। कार्य धारु सामय तस्य लक्षणं विकाशोपशमः।	परीक्षण
६) कार्यफल निर्विचिरिष्टते। उच्चार्या प्रयोजनासम्बन्धे कार्य केळे जाते।	कार्यफलं पुनरुत्तरं सत्याज्ञना कार्याभिन्नं सुरवावादिः। कार्य निर्विचिरिष्टते। उच्चार्या प्रयोजनासम्बन्धे कार्य केळे जाते।	तस्य लक्षणं विकाशोपशमः। बारीरत्वष्टि।
७) अनुबन्धः कार्याद्विज्ञानकालं कार्यचिनिमित्तः शुभोवाहपिशुभो ग्रावः। कार्याद्विज्ञानकालं कर्तीयवाचित् शुभं वा अशुभं भावः।	अनुबन्धः रेवलु याथः कर्तारस्वव्यवहुवक्षाति कार्याद्विज्ञानकालं कार्यचिनिमित्तः शुभोवाहपिशुभो ग्रावः। कार्याद्विज्ञानकालं कर्तीयवाचित् शुभं वा अशुभं भावः।	तस्य लक्षणं प्राप्तोः अस्त्रसंयोगः। तस्य भूमिपरीक्षा अत्युपचित्यानहेतोर्वा देशाद्वयविभाजनेतोर्वा। आदुरस्तु रक्तु कार्यदेशः तस्य परीक्षा आयुषः प्रमाणाजानेतोर्वा स्थाद नलदोष प्राप्ताणानहेतोर्वा।
८) देश	देशाद्वयविभाजनम्।	देशस्तु मृगिरात्रश्च

8) क्रान्ति	कालः पुनः परिपामः	क्रान्तः पूतः स्ववल्सरः च आतुशवधा च	प्रदृष्टिरस्तु रब्दु चेष्टा काचीर्णि, सेव क्रिया कर्म, यत्नः, काचीरमारमध्ये। कार्यं करुण्यासाठी केळी जाणारी चेष्टा, क्रिया कर्म, प्रयत्न किंवा काचेसमारम.	प्रदृष्टिरस्तु ग्रन्तिकर्म समपरामा। करुणावर विकिता आयोग करण्यां.	तस्य लक्षणं ब्रिजातोषधातरु परिचारकाणां क्रियास्तनाशेताः। विकिता आरम्भ करतान्ता चतुष्पादांचा समायोग करण्ये।
9) प्रवृत्ति					
10) उपायः			i) उपायः पुनःभ्राण्डा करुणादीनां मौखिकमिविद्या च सम्यक् । - कारणादि (कारण, करण, कारणोदी चे सोळव व उमिविधान (कार्य उत्पन्न करण्या योग्य स्थिती) सम्यक् असां। ii) कार्यकार्यकलानुबन्धवर्म्मनां कार्यालाभ उमिविर्तिक इत्यतस्तुपायः। कार्यकल व अनुबन्ध सोडून कार्यात्ते असां मृष्टणजे उपाय होय।		तस्य लक्षणं प्रियगादीनां यथोक्तं गुणसम्पद् देशकाल प्रमाणसाक्ष्य क्रियादिविश्च स्थिदिकारणः; सम्यक् उपादितस्योषधस्यावचारणमिति । - मिष्ठकादि - चतुष्पाद यथोक्तं गुणः सम्पदयुक्त असां, देश काल प्रमाण साम्य ग्रेड्या आदि सिद्धी कारणांनी क्रनवले ओलेले उचित औषध व ध्याची योजना।

चरक संहिता	सुधुत संहिता
<p><u>रस-</u> स्निग्ध व्लक्षण मृदु प्रसन्न सूक्ष्म अलम गंभीर सुकुमारलोमा सप्रभेव। सुखसोमाग्नेश्वर्यप्रसोमा बुद्धि विद्या आरोग्य प्रार्थणानि आयुष्मत्वं चाचये।</p> <p><u>रक्त-</u> कण्ठिस्तिमुखजिखानासोषपाणिपादतलनरवल्लाट मेहनं स्निग्ध रक्तवर्ण, ब्रीमिद् भ्राजिष्णु। सुखमुद्धतां मेघा, मनस्वितं, सौकुमार्यम्, अनतिक्लं अक्लेशासहिष्णुत्वं उपग्रहसहिष्णुत्वं</p> <p><u>मांस-</u> शङ्खललाटकृकाटिका भक्षिगड्डहनुग्रीवा स्केदउदर कक्ष वक्ष पाणिपादसन्धयः स्थिर गुरु, शुभ मांसोपचिता। क्षमा धृति अलोल्य विचंविद्यो सुखमार्जिभारोग्य दीर्घविलक्ष्य</p> <p><u>मेंट्र-</u> वर्षस्वरनेनकेशलोमनरवदन्तोष्ठमूषपुरीषेषु पिशेषः स्नेहो। वित्त रोक्षर्म सुखोपभोगं प्रदानानि आज्ञिं सुकुमारोपचारता।</p> <p><u>उर्थ्या-</u> पार्पिणिगुल्फलानु अरविन्दुचितुकशिरः पर्विस्मूलः स्थूलस्थिनरवदन्ताऽच्य। मठोत्साहा, क्रियावृत्तः, वलेशासाहाः, स्मारस्मिरशशीरा, भवन्ति आयुष्मन्तश्च।</p> <p><u>मज्जा-</u> मृद्दङ्गा, ब्लवृत्तः, स्निग्धवर्णस्वराः, स्थूलदीर्घवृत्तसामन्धयश्च।</p> <p><u>शुक्र-</u> सौम्या, सौम्यप्रेक्षिणः, द्विरपूर्णिमेना, इव प्रत्येकुलाः, स्निग्धवृत्तसारसामसमसंतत शिरवरदशना, प्रसन्नस्निग्धवर्णस्वरा, भ्राजिष्णावो, मठास्फिचश्च। ते स्त्रीप्रियोपभोगा ब्लवृत्तः सुखोरवर्भिभारोग्य समानापवश्च भवन्ति।</p> <p><u>सत्त्व-</u> स्मृतिमन्तो भवितमन्तः कृतज्ञाः, प्राज्ञाः शुचमो मठोत्साहा, दक्षाः, धीराः, समरविद्वान्मोघिनः त्यक्तविषादाः, सुव्यवस्थितगती, ग्रामीश्वुद्धिचेष्टा कल्पाणाभिनिवेशश्च।</p>	<p>सुप्रसन्नमृद्दत्तरोमाणं त्वक्सारं विद्यत।</p> <p>स्निग्धताम्नारवनपन्तलाङ् जिखाओषुपाणिपादतलं</p> <p>आच्छिद्वग्नं गृहस्थिस्थिः मोसोपचितं च मासेन।</p> <p>स्निग्धमनस्वेदस्वरं हृष्टद्धर्याशीरं आयासमस्तिष्य</p> <p>मठाशिरस्कृतो हृष्टद्वन्द्वन्द्विवरसमस्थिभिः</p> <p>अकृतमुत्तमवतः, स्निग्धगम्भीर स्वर, सौभ्राम्योपपत्नं, मठानेभं स्निग्धसंहतश्वेतास्मिदन्तनरवं वहुलकामप्रजं</p> <p>स्मृतिभवितप्रजाशोर्यचोपेतं कल्पाणाभिनिवेश</p>

स्नेहबृती
व्योपदे

व्यापद	हेतु	लक्षण	चिकित्सा
१) वातावृत	वाताधिक्य अस्तोना शीत वा अल्प मांगेत बस्ती दान	अंगमर्द, ज्वर, आघात स्तंभ, उर, पीड़िन, पाश्वरुचा,	स्लिघ्य, अम्ल उष्ण द्रव्य सिद्ध शोस्ना टैंक लिंगा पीतद्रु तेलाना निरुट बस्ती
२) पित्तावृत	पित्ताधिक्य अस्तोना उष्ण अनुवासन	दाठ, राग, तृष्णा, मोह तमकश्वास, ज्वर	स्वादु निक्त द्रव्यसिद्ध निरुट बस्ती दान
३) कफावृत	कफाधिक्यात मृद अनुवासन बस्ती	तेंद्रा, शीतज्वर, प्रसेक आलस्य, अरुचि बौंगव, मूर्च्छा, ग्लानी	कषाय कटु तीक्ष्ण उष्ण सुरामूर्खोपसाधित अम्ल कल्कथुक्त निरुट बस्ती.
४) अन्नावृत	अनिभुक्त अवस्थेत गुण, अनुवासन बस्ती	छर्दि, मूर्च्छा, अरुचि ग्लानि, उदरशुल, निव्रा, अंगमर्द, दाठ आमदोष लक्षण.	कटु, लवण रसगुक्ता द्रव्योन्नी पाचन. मृदु विरेचन आमपाचन चिकित्सा.
५) मतावृत	वर्चसिंचय अस्तोना अल्प नील अनुवासन	विद्मुन अनिलसंग, आघात, वृद्ध्यरु	स्नेहन, स्वेदन, वर्ती अमानिलादि सिद्ध निरुट व अनुवासन, उदाचर्त्तर किंवा.
६) अग्नुक्त	रिक्त कोष्ठ अस्तोना अनुवासन	बस्ती उद्धवामी उद्धरु ऊतसात्तुन स्नेहागम.	गोमूरशामानिवृत, धवकोल कुलत्व सिद्ध निरुट व पश्चात तत्सिद्ध अनुवासन. स्तंभ (मुखवरशीतजलसेचन) कण्ठश्वर (कंठपीड़िन) छर्दिभूमित्रिमास, विरेचन

बस्तिदाता दोष | बस्तीप्रणेतृ दोष | बस्तिप्रणिधान दोष . च- ७०
सु- E

दोष	लक्षणे	चिकित्सा.
१) सावात	छूल, तोद	गुदज्ञाने अभ्यंग, स्वेद वातध्न मोजन.
२) अतिद्रुत ३) उस्तिस्त	कटि, गुदज्ञाति बस्तिस्तंभ, उर, वेदना.	वातध्न मोजन, स्नेहन स्वेदन वातहर बस्ती प्रभोग.
४) तिर्थक	आवृतद्वार झाल्याने ओषध आत प्रवेश करीत नाही.	नेन मेज़ (संरक) करन पुनः गुदप्रवेशन करणे.
५) उत्तुप्त बस्तीपुटक पुनः (न: दावतसोळे)	उर, शिरोति, उर, सदन	मिळाली पंचमुल, स्मार्मादि कलं व शोभूमसिद्ध वातहर बस्ती.
६) कंप	दाढ, दवयु, शोफ.	कषाय मधुर शीत-शेक/बस्ती.
७) अति भ पुनःपुनः देशन वनिघासन	क्षणनादुक्लेः, अर्ति, दाट निस्तोद गुर, वर्चप्रवर्तन.	सर्पि, विचु, क्षीर पिच्छाबस्ती.
८) लाघव अ नोटेस्य राठणे	आशु निवर्तते	पुनः सम्यक बस्ती प्रभोग
९) मन्द संदेगाने प्रोष्ठध प्रवैरा	न भावन्ति पवकाशमापर्वतं पोष्ठोचत नाही.	
१०) अतिवेग	कोषे तिष्ठति , झाडाति का गलम्	बस्ती विरेचन गलपीडादि कर्म

TIERRA

शोधन व्यापद

चरक - 10 → अयोग- ७
 अतियोग- ३
 वृंदाम्बट- १२ → अयोग- ८
 अतियोग- ४
 सुधुत- १५

व्यापद	हेतु	लक्षण	चिकित्सा
१) आधान	बहुदोष, रक्ष, मंदाग्नि उदावर्त अवस्थेत अल्प औषध पान.	मूरा आधान, पृष्ठ-पाइव शिरोरजा, श्वास विटम् नवातसग	अश्येंग, स्वेदन, फलवर्ती निरह- अनुवासन उदावर्तहर चिकित्सा.
२) परिकर्तिका	स्निग्ध, गुरुकोष व्यक्ति व सामावस्ते बलवान् औषध → क्षाम, मृदुकोष, आन्त अल्पबल व्यक्तीत बलवान् औषध पान.	तीव्र उदरशुल स पिच्छ अस्त गमनास्त परिकर्तिका उत्पत्ती	लंघन, पाचन रक्ष उणा लघु भोजन कूरणीय विधि मधुर रस.
३) परिम्बाव	बहुदोष व्यक्तीत अल्प औषध पान	अल्पाल्पस्नाव, कण्ठ शोफ कुष, गोरव, अग्निबलनाश उत्कलेश, स्तैमित्य अरुचि	दोषशमन वैमन स्नेहसहित तीक्ष्णरेचन शशिशुद्दीपश्चात सेरूत चूर्ण आसवारिष पान.
४) हृदयग्रह	शोधनार्थ औषधपान पश्चात वेगप्रवर्तनसमये वेगावरोध.	हृदयग्रह हिक्का, कास पाशर्ति, दैन्य, लाला अक्षिविप्रम, जित्वारखादवि निःसंडो दन्तान् किटिक्कियपमन	पिनजमूर्च्छा- मधुर न्नाने वैमन कफज मूर्च्छा- कढ़ द्रव्याने वैमन. ठैपीडा असतोना मधुर अस्त लवण स्नेहमुक्त द्रव्यसेवन.
५) अंगग्रह	पीतौषधस्य वेगानाँ निग्रहेष कफेन वा	स्तोम, वेपयु, निस्तोद अंगसाद, उद्देष्य मथनवत पीडा	वातस्त्र व स्नेहस्वेदादि क्रम

6) नीवाहान	मृद्गकोष्ठ। लघुदोष व्यक्तीत अतिरीक्षण औषध पान.	जीवं हरति शोणितम्। तृष्णा, मूर्च्छा, मद	पितहर चिकित्सा मृग-गो-माहिष-अजा आंचे स्वदयशक रक्तपान.
7) a) शुद्धंश्रा b) संज्ञानाश (संज्ञाम्रंश) c) कष्ठादी लप्रणे	विरेचन अतियोग -	-	कषायेश्च स्तम्भयित्वा शुद्ध अन्तप्रवेशन सामग्रांधवराद्वाश्च कारयेत। यथाव्याधी भेषज.
8) स्तंभ	स्निग्ध व्यक्तीत सस्तेह द्वौषध दिल्याने मृद्गतेपुगे दोषोनी आवृत्त होते.	नं वाह्यनि दोषान् सवस्थाजात् स्तंभयेद्। वातसंग शुद्धस्तंभ, शुलास्त अल्पाल्प मलशरण।	लेघन पाचन परचात तीक्ष्ण विरेचन किंवा वस्ती।
9) उपद्रव	रुक्त, अल्पबल व्यक्तीत रक्षा विरेचक द्रव्यपान	घोर उपद्रव, स्तंभ, शूल, सर्वगाम मोह	स्नेहन, स्वेदन वातहर विधी।
10) क्लम	स्निग्ध, मृद्गकोष्ठ व्यक्तीत मृद्ग औषध पान.	कफ पित्त उख्त्क्लेश तंड्रा, गौरव, क्लम दोर्बल्य, अंगसाद	लेघन पाचन परचात स्निग्ध द्रव्याद्वारे तीक्ष्ण शोधन (विरेचन)

TIERRA

निरुह वस्ती व्यापद - १२

व्यापद	हेतु	लक्षण	चिकित्सा
१) अयोग <i>क्रोधाद्या क्रोधाद्या क्रोधाद्या</i>	गुरुः (क्रुरकोष), रक्षा, वाताधिक व्यक्तीत श्रीत, अम्ल लवणस्नेह द्रवा धन वस्ती.	वातमूत्रशक्तिश्व	दीपन-पचनकार्य उष्ण प्रसंग्घापन फलवर्ती, विरेचन बिल्वादी निरुह वस्ती
२) अतियोग	स्नेहन स्वेदन परचात मृद्ग कोषी व्यक्तीत अतितीक्षण उष्ण वस्ती	विरेचन अंतियोग समान.	पृश्निपर्णी, स्त्रिया इ.चा क्षीर। तडुलोदकासह वस्ती.
३) कलम	आमदोष शोष असतांना मृद्ग निरुह वस्ती.	कलम, विदाह, ठक्कर, मोह उद्देश्यन: गोरक्ष	रक्ष स्वेद, पाचन पिप्पलभादिवाय, वचादि योग, दावादि योग.
४) आघ्मान	रक्ष, क्रुरकोष व्यक्तीत मलादोष असतांना अम्लवीर्य वस्ती दान.	आघ्मान, मर्मपीडन, विदाह गुरुकोष, मुख्यवेशगवेदना रुपादित कदयं	व्यामान-मदनफल इ.युक्त वर्ती, बिल्वादी औषध वाय निरुह.
५) हिक्का	मृद्ग कोष वा दुर्बल व्यक्तीत अतितीक्षण वस्ती	हिक्का.	हिक्कानाशन वृहत् चि. द्रव्यादि अनुवासन वस्ती.
६) हृत्प्राप्ति. वा. हृतीडा सु. हृत्सोपसरण वृग्निष्ट्रै.	सवात वा अतितीक्षण वस्तीदान. वस्ती सम्बूक प्रपुडिन ज करणे. बल्जी वल्ती जानो क हृत्याचा छिठा धूम्रपात्र	घट्टयेद् नद्यम्	कुश, काश, इक्कट अम्ल लवण स्केध सिद्ध निरुट वा वातनाशक द्रव्य सिद्ध अनुवासन.

१) उद्घगमन	<u>विरुद्ध बस्ती दान पश्चात् वेगधारण.</u> <u>बस्तीपुटक तीव्र पीड़िन</u>	<u>बस्ती उद्घगमन मुखद्वारे औषध उगमन मूर्छणी</u>	<u>मुखस्माने शीताम्बु झेह पाश्वे उदर अधो स्माने मर्दन क्रमुक कल्क भ्रम्लसह पान बिल्कादी पंचमूल निरुद्ध</u>
४) प्रभाणिका	<u>स्नेहन स्वेदन पश्चात् महादोष व्यक्तित्वे भव्य अवैषयिका उपचार</u> <u>महादोष व्यक्तित्वे भव्य अवैषयिका उपचार</u>	<u>दोष उत्क्लेश होड़न प्रवाटण जंघाउरु सदन बस्तीपायुर्गोफ</u>	<u>लंघनपश्चात् स्वेदन अभ्येष तत्पश्चात् अनुलोमक निरुद्ध विरिक्तवत् वृत्ति:</u>
५) शिरःरुल	<u>दुर्बल, कुरुकोष्ठ, तीव्रोष</u> <u>व्यक्तित्वे - तनु, मृदु शीत, अल्प बस्ती:</u>	<u>दोषाद्वारे बस्ती आवृत्त वं मूर्छीगमन, शीवामल ग्रह, शिरःकंभेदन, काधीर्व कर्णनाद, पीनस, नोन्हिम्बन</u>	<u>लवणयुक्त तेल अभ्येष, प्रधमन नश्य वैरेचनिक धूम, तीष्णामनुलोमिक हृष्ट मनुनासन</u>
१०) अंगमर्द	<u>स्नेहन स्वेदन न करता गुरु, तीष्णा व अति मान्यता निरुद्ध दान.</u>	<u>(बस्तीद्वारे भृत्यमानेत दोष प्रवर्तन - कातप्रकोप) निस्तोद्ध भैद, स्फुरण, गौमंवेष्टन</u>	<u>लवणयुक्त तेलाभ्येष, पश्चात् उष्णाजल सेचन, हुरेडपनक्वाय प्रस्तर स्वेद</u>
११) परिकर्तिका	<u>मृदुकोष्ठ अल्प दोष व्यक्तित्वे रक्त, तीष्णा अतिमान्यता निरुद्ध दान</u>	<u>बस्ती निर्टरणसम्बन्ध परिकर्तिका उत्पत्ति, भ्रिकवंसांवस्तीतोद्ध नोमीष्णायेरुजा, विविध</u>	<u>स्वादुशीत औषधसिद्ध शीर + यष्टीनिलकल्काचा बस्ती, शीरभोजिन: सापो</u>
१२) परिस्त्रव	<u>पित्तरोग पितीत व्यक्तित्वे अम्ल, उष्ण तीष्णा लवणयुक्त निरुद्ध.</u>	<u>बस्तीद्वारे गुद झेणन → दौष, स्नाव - परिस्त्रव अनेकर्वा लाव निर्गमित मोह.</u>	<u>शाल्मलीवृत्त पश्चृत घृतास्त (पिच्छानस्ती) निरुद्ध वटादि पल्लव सिद्ध तुङ्ध बस्ती, गुदसेक, मधुरश्चित प्रदेह रक्तपित्तातिसारद्वीक्रिया.</u>

अतिमीठा - अतियातु अतियातु - अतिप्रत्येत - अंगमर्दी बलो, परिकर्तिका

स्थान	लक्षण	चिकित्सा
१) कोष्ठगत	मून्हवर्चनिग्रह, बैज्ञ, हृद्रोग, शुल्म, अर्श, पाश्वशूल	ध्वार, दीपन याचने युक्त अम्ल द्रव्य.
२) सर्वांगगत	आगस्फुरणमज्जन, वेदनाभिः परीतश्च स्फुटन्तीवास्य संन्यमः	अम्बेग, निराले अनुवासन.
३) शुद्धगत	विषमुभवातग्रह, शूल, आघ्यान, अस्मरी, शक्ति, जंघात्,- भ्रिकपादपृष्ठरोग, शोष	उदावर्तित्र चि.
४) मामारमगत	ठेण्णामिपाश्वेदिरस्क, तृष्णा, उद्ग्राह, विसूचिका कास, कण्ठास्मशोष, श्वास	शोधनपर्याद यथादोषहर चिकित्सा
५) पक्वाराय - गतवात	उरोनकुब्जन, शुल, आटोप, कृच्छ्रमूभपुरीषत्व आनाहत, ग्रिकवेदना.	उदावर्तित्र चि.
६) इंद्रियगत	-शोभादिषु इंद्रियवद्य	
७) त्वक्गता	त्वचूक्षा स्फुटिता ॥ सुप्ता कृशा कृष्णा च तुक्षते आतव्यते सराशा च पर्वस्क	स्वेद अम्बेग अवगोहत कृदय अच्छ.
८) रक्तगत	तीक्ष्णज्वासंज्ञाप, वैवर्ष्य, कृशता, अस्थि, गांडे असंष्टि, भुक्तस्थ रसाय	शीतप्रदेत्र, विरेचन रक्तमोक्षणा
९) मांसमेऽगत	गुर्वङ्ग, तुक्षतेभव्यर्भ, दण्डमुष्टीहतं तथा सरस्क च्छमितमत्यर्थं.	विरेचन, निराल वातरामन.
१०) अस्थि- मज्जागत	भोदोऽस्मिपर्विवां, सन्पिशूल, मांसबलक्षण, अस्वाक्ष संततारूप	द्वाष्ट्राभ्यन्तरतः स्नेहन.
११) शूक्रगत	क्षिप्रं मुञ्चति बैद्धाति शुक्रं गोम्भिभापि वा। विकृतिं जनमेत् चापि.	टर्षण, बलशुक्रहर अन पान वै औषध
१२) स्नायुगत	वाट्ट्राभ्यन्तरमायामं रवलिं कुञ्जत्वमेव च। स्वर्विं एकांगरोगाश्च	
१३) सिरागत	शशीरं मन्दश्चकृशोफं शुञ्चति स्पन्दते तथा सुप्ताः तन्यो महत्यो वा सिरा	
१४) संधिगत	वातपूर्णहितिस्पर्शः शोषः सन्धिगतेऽनिले । प्रसारणाकृच्छनयोः प्रवृत्तिश्च सवेदना ॥	

प्रकार	लक्षण	चिकित्सा
पित्तावृत वात	दाढ़, नृणा, बुल, क्रम, व्यायामिता कट्टव्यमल्लवण्णोष्ठेश्च विदाह	शीतउष्णव्यसासात् क्रिया जीवनीयसर्पि भाषनबहती
कफावृत वात	शैव्य, गौरव, शुल, कैदवादि उपशयोऽधिकम् लङ्घनायासर, क्षोणकामिता	विरेचन, पंचमूलीनिलाशृत भीर तीसाखवेद, निरह, वमन
रक्तावृत वात	सदाहृतिस्त्वः मांसान्तरजो भूशम् सरागः इवयथुर्जायन्ते मण्डलानि	वातशोणितकां क्रियाम्
मांसावृत वात	कठिनाश्च विवर्णश्च पिठका: इवयथुस्तया रुषः पिपीलिकानां च सञ्चार इव मांसगे	स्वेदन, अम्बिंग, मांसरस, क्षीर, स्नेह
मेदावृत वात	चलः स्निग्धो मृद्गः शीतः शोफो अड्डेषु, भरवि आढयवात्, इति अथः, कल्पसाहय	प्रमेहवातमेदोद्धीयि
अस्थावृत वात	उष्णस्पर्श, पीडनं चामिनदति, सम्मज्यते शीदति, सूचीभिरिद दूषयते:	मठास्नेह (चतुर्विधस्नेह) प्रयोगा
मज्जावृत वात	विनाम, जृम्भण, परिवेष्टन, बुल पीड्यमाने च पाणिम्यां लमते सुरक्षम्	मठास्नेह (चतुर्विधस्नेह) प्रयोग.
शुक्रावृत वात	शुक्र अवेगो अतिवेगो इव विष्फलत्वं	रुष, बलशुक्रर अन्वयन.
अन्नावृत वात	मुद्दते कुक्षो च र, ग्, जीर्ण शास्त्रति	उल्लेखन, पाचन, दीपन तद्युअन्न सेवन
मूभावृत वात	मून अप्रवृत्ति. (वस्ती) आध्मान	मुत्रलोपघ, स्वेदन, उत्तरबस्ती
मलावृत वात	वर्चसोऽतिविवन्धो अथः स्वे स्पाने परिकृन्तति त्रजत्याशु जशो स्नेहो, मुक्ते चानत्यते वरः चिरात् पीडितमन्नेन दुःखं शुक्रं व्याकृत् सृजेत् शोणिवड्यशणपृष्ठेषु जग्न् विलोमश्च मारतः अस्वस्य रुदयं चैव वर्चसा त्वावृते अनिले	एरेड्स्नेह पान स्निग्धद्रव्य सेवन उद्दाक्तवित क्रिया.

आवरण	लक्षण	चिकित्सा
प्राणावृत व्यान	सर्वेन्द्रियाणां शून्यत्वं, स्मृतिबलशय	उद्घजन्मुग्त कर्म
प्राणावृत समान	जड गदर्गद मृकता	चतुःपुक्तार फ्लैट, यापनाकस्ती
प्राणावृत उदान	शिरोग्रह, प्रतिश्याय, निश्वासउच्छ्वाससंग्रह, हृद्रोग, मुखशोष	उर्ध्वमाणिक कर्म, आश्वासन
उदानावृत प्राण	कर्मओजबलवर्णनाश, मृत्यु	शीतजलसेचन, आश्वासन
उदानावृत अपान	छोर्दिश्वासादि रोग	वातानुकोमक्तमाहार, बैस्ती
उदानावृत व्यान	स्तब्धता, अल्पाग्निता, अस्वेद, चौराहानी, जिमीलन	पथमितलधुआत्मार
व्यानावृत प्राण	स्वेवोइत्यर्थ, लोमर्थ, लग्दोष, सुस्तगाभता <small>(पक्षांगी)</small>	स्नेहयुक्त विरेचन
व्यानावृत अपान	वमन, आध्यान, उदार्वति, शुल्म, परिकर्त्ता	स्निग्धे: अनुकोमयेत्
समानावृत अपान	घृणी, पार्वर्त्त, हृदगति: आमाशय इत्युक्त	दीपनीय सर्पि
समानावृत व्यान	मूच्छि, तंद्रा, प्रलाप, अंगसाद, <small>अग्निझोजबलशय</small> <small>ताइवाय्य = वातानु</small>	व्यामाम, लघुभोजन
अपानावृत उदान	मोह, अल्पाग्नि, अतिसार	वमन, दीपनशाही भशन
अपानावृत व्यान	विद्मूनरेतसाम् अतिप्रवृत्ति	संश्लेषण.

आंदरण	लाभण
पितावृत प्राण	मूर्च्छा, दाह, भ्रम, शुल, विदाह, शीतकामिता, धर्दनि विद्युधर्दन
कफावृत प्राण	ष्टविन, दत्तवयु, उदगार, लिङ्वासउच्चाससंग्रह, अर, चि, छर्दि
पितावृत उदान	मूर्च्छादभानि च र, पाणि, दाह, नाय्युरसः कलम, ओजोभ्रंश, स्नाद
कफावृत उदान	बैवर्ष्य, वाक्स्वरग्रह, दोर्नित्य, गुरु, ग्रामत्व, अर, चि
पितावृत समान	मतिस्वेद, लृणा, दाह, मूर्च्छा, अर, चि, उपधातस्तयोष्माणः
कफावृत समान	भैस्वेद, वैत्तिमांदय, लोमहर्षि, गात्राणां मतिजीतना
पितावृत व्यान	दाह, सर्वोड, कलम, शान्तिविशेषसंग, ससेताप, सोवेदनः
कफावृत व्यान	गुरु, ता सर्वग्रामाणां, सर्वसन्धास्यिरुजा, गतिसंगस्तव्याधिकः
पितावृत अपान	हारिद्रमुभवचीत्व, तौपत्रव गुरुमेत्रयोः, रजसर्वातिवर्तिनम्
कफावृत अपान	मिञ्जामक्लेषसंसृष्टगुरु, वर्चः प्रवर्तनिम् कफमेष्ट्य चागमः

communicable disease

perfectly contagious + transmissible = 2-5 min

($\frac{1}{2}$ per.) ($\frac{1}{2}$ per.)

Disease	causing organism	Incubation Period	Age group
Influenza/swine flu	H1N1, H2N2	18-72 hrs	
Diphtheria	Corynebacterium	2-6 days	1-5
Pertussis (whooping cough)	Bordetella pertussis	7-14 days	<5
SARS (severe)	Coronavirus	2-7 days	
Poliomyelitis	Genotype 1, 2, 3 virus	7-14 days	months to 3 yrs
Hepatitis A	HAV	21-150 days	
Hepatitis B	HBV	45-180 days	
Hepatitis C	HCV	6-7 wk	
Hepatitis E	HEV	2-9 wk	
Small pox	Variola virus	7-17 days from (12 days)	
Chicken Pox	Varicell. zoster Virus	7-21 (15) days	<10 yrs
Measles/Rubeola	RNA Paramyxoivirus	10-14 days	8 months - 3 yrs
Rubella/German measles	RNA virus of Togaviridae family	2-3 wks (12 days)	8-10 yrs
Mumps	Myxovirus paramyxo	2-3 wks (12 days)	5-15 yrs
TB	mycobact. Tuberculosis	3-6 wk	
Cholera	Vibrio Cholerae/ EI Tor biotype	Few hrs to 5 days (1-2 days)	
Typhoid	Salmonella typhi	10-14 days	
Leptospirosis	mycobact. Leprae	3-5 yrs	
Tetanus	Clostridium tetani	6-10 days	
AIDS	HIV	Few months to 10 yrs	

Disease	causing organism	Incubation period	Age of onset
Syphilis	Treponema pallidum	21 days	
Gonorrhoea	Neisseria gonorrhoeae	10-14 days	
Chancroid	Haemophilus Ducreyi	2-3 days	
Filariasis	Wuchereria bancrofti	8-16 months	
Dengue		3-10 days	
malaria	Plasmodium Vivax	14 days	(8-17)
(not < 10 days as long as 3 month)	P. falciparum	12 days	(9-14)
	P. quartan	28 days	(18-40)
	P. ovale	17 days	(16-18)
Meningococcal meningitis	N. meningitidis	3-4 days	
Ascariasis	Ascaris lumbricoides	2 months	
Hookworm	① Ancylostoma duodenale ② Necator americanus	→ 5 wk - 3 months → 7 wk	
Filariasis	microfilaria	8-16 months	
Rabies	Lyssavirus type 1	3-8 wk	
Leptospirosis	Spirochaetes	10 days	
Plague	Y. Pestis	Bubonic plague - 2-7 days Septicemic plague - 2-7 days pneumonic plague - 1-3 days	
<i>Dengue - 3-10 days</i>			
<i>Rabies - 3-8 wk</i>			

APPENDICES

16
F

APPENDIX 1

- Sulphuric Acid
 Nitric Acid
 Hydrochloric acid
 OH-, NaOH
 Alkali Carbonates
 Oxalic Acid
 Carbolic Acid
 Hydrocyanic acid
 Phosphorous
 Iodine
 Arsenic
 Lead
 Copper sulphate
 Mercury
 Nitro prussiate
 Marking nut
 Croton Seed
 Castor Seed
 Opium
 Morphine
 Petidine
 Absolute Alcohol
 Methyl alcohol
 Barbiturates
 Liquid anaesthetics
 Kerosene
 Petrol
 Organo phosphorous
 Acetone
 C P P
 opium

FATAL DOSE OF POISONS

Singhal's Toxicology At A Glance

<u>Copper</u>	Potassium ferricyanide and penicillamine
<u>Mercury</u>	Sodium formaldehyde sulphoxylethyl and penicillamine / BAL
<u>Amber</u>	Antabrin
<u>Snakes</u>	Anti snake venom serum
<u>Scorpion</u>	Anivenin and local anaesthetics
<u>Methyl alcohol</u>	Ethyl alcohol
<u>Fuels</u>	Barbiturates
<u>Organophosphorous compounds</u>	Fuels (Kerosene, petrol)
<u>D. D. T.</u>	Opium
<u>Endrine</u>	Opium (chronic)
<u>Zinc phosphide</u>	Organophosphorus
<u>Aluminium phosphide</u>	Barbiturates
<u>Datura</u>	Zinc phosphide
<u>Cannabis</u>	Aluminium phosphide
<u>Cocaine</u>	Chatura
<u>Stychnine</u>	Cocaine
<u>Curare</u>	Stychnine
<u>Conium</u>	Oleander
<u>Digitalis</u>	
<u>Aconite</u>	
<u>Nicotine</u>	Tranquillisers
<u>Oleander</u>	Flumazenil

APPENDIX 3

- Mineral acids
 - Alkalies
 - Oxalic acid
 - Carbonic acid
 - ^{water} Sulfuric acid
 - ^{water} Phosphorous acid
 - ^{water} Iodine
 - Arsenic acid
 - Lead

ANTIDOTES

- CaO (MgO) Weak acids, acetic acid, vinegar, lemon juice
 Lime Magnesium sulphate (C. & M)
 Nitrates, Kalocyanon PAPP, Hypo.
 Copper sulphate
 Starch, Hypo - sodium thiosulphide
 Ferric oxide and BaI₂
 Sodium or Magnesium sulphate and EDTA

مکالمہ اخلاقی

A 84

APPENDIX 5 : POISONS LEADING TO ALTERNATE CONSTRICTION AND DILATATION OF PUPIL (Helps in Oxyg.)

- Barbiturates
- Acetone

APPENDIX 6 : POISONS LEADING TO DILATATION OF PUPIL (Helps in Oxyg.)

- Cyanides
- Dinitro
- Corrosives except carabolic acid
- Alcohol (initial stages)
- Digitalis
- Cannabis
- Atropa belladonna
- Hyoscyamus
- Cocaine
- CO
- (Nicotine (large doses))
- Antihistaminics
- Stockpines
- Captoxoids
- Fuels (final stages)
- Oleander

TIERRA

APPENDIX 5 : POISONS LEADING TO ALTERNATE CONSTRICTION AND DILATATION OF PUPIL (Helps in Oxyg.)

- Barbiturates
- Acetone

APPENDIX 6 : POISONS LEADING TO DILATATION OF PUPIL (Helps in Oxyg.)

- Cyanides
- Dinitro
- Corrosives except carabolic acid
- Alcohol (initial stages)
- Digitalis
- Cannabis
- Atropa belladonna
- Hyoscyamus
- Cocaine
- CO
- (Nicotine (large doses))
- Antihistaminics
- Stockpines
- Captoxoids
- Fuels (final stages)
- Oleander

APPENDIX 7 : POISONS WITH CHARACTERISTIC SMELL

- Bitter almond
- Garlic
- Phenolic
- Aromatic (fruity) *
- Kerosene like or garlicky
- Garlicky or fishy
- Choking C.
- Suffocating S.
- Iodine
- Mousy M.
- Raw flesh R.

Singhal's Toxicology At A Glance

- Tobacco
- Acetic acid
- Salicylic acid
- Anesthetics
- Kerosene
- Cannabis (Bhang, Ganji, charas)
- H₂S

APPENDIX 8 : POISONS LEADING TO CHARACTERISTIC MANIFESTATION IN STOMACH

- | | |
|-------------------------------|--|
| - Sulphuric acid | - Black perforation common (Carbonisation) |
| - Nitric acid | - Yellow (Xanthopotic acid) |
| - Phenol | - Leather bottle appearance |
| - Arsenic | - Red Velvety appearance |
| - Copper sulphate | - Bluish green contents, haemorrhages present |
| - Phosphorous | - Garlicky, luminescent, erosions |
| - Iodine | - Mucous membrane brown, contents blue |
| - Organophosphorous and fuels | - Congestion, haemorrhages and smell of kerosene |
| - Alcohol | - Hyperaemia and oedema |
| - Oxalic acid | - Cloudy deposition of calcium oxalate |
| - Alkalies hydroxides | - Sliminess and congestion. |

APPENDIX 9 : POISONS THAT CAN BE ABSORBED THROUGH SKIN

- Carbolic acid
- Organophosphorous compounds
- Phosphorous
- Nicotine
- Arsenic
- Lead
- Mercury
- Cyanides
- Steroids
- Lewisite gas

► APPENDIX 10 : POISONING BY INHALATION

- Organophosphorous compounds
- Cyanides
- Phosphorous
- Lead
- Anaesthetics
- Asphyxiants
- Nitric acid
- Carbolic acid
- Alcohol
- Arsenic
- Mercury
- Conium
- Nicotine
- Fuels

- Aconite
- Carbon Monoxide

► APPENDIX 12 : POISONS CAUSING TREMORS

- Alcohol
- Mercury
- Phosphorous
- Carbon monoxide
- Organophosphorous

► APPENDIX 13 : POISONS USED AS ARRCCW POISONS

- Abrus precatorius
- Aconite
- Strychnine
- Croton
- Snake venom
- Scorpion venom
- Curare
- Calotropis

► APPENDIX 11 : POISONS CAUSING CONVULSIONS

- Cyanides
- Strychnine
- Phosphorous
- Copper sulphate
- Lead
- Opium
- Oxalic acid
- Dhatura in children
- Cobra snakes
- Scorpion
- Arsenic
- Alcohol
- Organophosphorous compounds
- DDT
- Endrine
- Fuels

► APPENDIX 14 : POISONS LEADING TO PRESENCE OF FROTH AT NOSE AND MOUTH

- Cyanides (Cocaine)
- Strychnine (Neuroleptic)
- Opium (Neuroleptic)
- Copper sulphate (Inhalant)
- Organophosphorous compounds (Inhalant)
- Carbon monoxide (Asphyxiants)
- Barbiturates (Inhalant)
- D.D.T.
- Endrine

► APPENDIX 15 : POISONS CAUSING BLISTERS

- Barbiturates
- Carbon monoxide
- Tricyclic anti depressants
- Arsenic
- Iodine
- Viper snake
- Croton Oil
- Marking nut juice
- Calotropis
- Oleander
- Mustard gas and lewisite gas

► APPENDIX 16 : POISONS CAUSING TYPICAL P.M. LIVIDITY

- ✓ Pink
- ✓ Almost black
- ✓ Bright cherry red
- ✓ Bluish green
- ✓ Dark brown (burnt orange)
- ✓ Chocolate brown
- ✓ Reddish brown
- ✓ Yellow brown
- Cyanides ✓
- Opium ✓
- CO ✓
- Hydrogen sulphide
- ✓ Phosphorous ✓
- Potassium chlorate
- Nitrites ✓
- Cu

► APPENDIX 17 : POISONS ACTING ON ENZYME SYSTEM (-SH group)

- Phosphorous } (Peptoplasmic poisons) AS
- Cyanides }
- Organophosphorous compounds
- Carbamates
- Metallic poisons (Lead, Mercury, Arsenic, Cu)

► APPENDIX 18 : POISONS RESISTING PUTREFACTION

- Datura
- Phosphorous

All metals

Strychnine

Nicotine

Endrine

D. D. T.

Alcohol

► APPENDIX 19 : POISONS THAT ARE STORED IN BODY

- Organophosphorous compounds
- Organochlorous compounds
- Strychnine
- Thiopentone
- Heavy metals
- Radioactive substances

► APPENDIX 19 : POISONS THAT ARE STORED IN BODY (L.P.)

- Lead ✓
- Datura ✓
- Antihistamines
- Shrillulants
- Antidepressants

► APPENDIX 20 : POISONS CAUSING DRYNESS OF MOUTH (L.P.)

- Mineral acids
- Croton oil and seeds
- Arsenic
- Copper
- Mercury
- Elapid snakes
- Alcohol
- Organophosphorous
- Anaesthetics
- Aconite
- Tobacco

► APPENDIX 22 : POISONS PRODUCING CHANGE IN PULSE RATE

- Tachycardia
- Alcohol, Dhatura, Nicotine ,As
- Bradycardia
- Aconite, Digitalis, Opium; Organo phosphorous

► APPENDIX 23 : POISONS CAUSING NEPHROTOXICITY

- Carbolic acid
- Oxalic acid
- Methanol
- Heavy metals
- EDTA
- Penicillamine
- Salicylates

► APPENDIX 24 : POISONS CAUSING HEPATOTOXICITY

- Alcohol
- Phosporous
- Arsenic
- Paracetamol
- Steroids
- BAL
- Jop,
- Naphthalene

► APPENDIX 25 : TESTS OF POISONING

- Sulphuric acid
- Nitric acid
- Carbolic acid (Phenol)
- Arsenic
- Lead
- Opium
- Alcohol
- Dhatura
- CO gas

- Carbonisation *
- Xanthoproteic reaction *
- Green urine, prussian blue test
- Marsh's test, Reinh's test
- Punctate basophilia
- Marquis test
- Mac ewan's test *
- Mydriatic test.
- Spectroscopic test

► APPENDIX 26 : QUESTIONS THAT MAY BE PUT TO A MEDICAL WITNESS IN CASE OF SUSPECTED POISONING

1. Did you examine the body of late..... a resident of and if so what did you observe?
2. What do you consider to have been the cause of death? State your reasons.
3. Did you find any external marks of violence on the body? If so, describe them.
4. Did you observe any unusual appearances, on further examination of the body? If so, describe them.
5. To what do you attribute these appearances; to disease, poison or other cause?
6. If to poison, then to what class of poison?
7. Have you formed an opinion as to what particular poison was used?
8. Did you find any morbid appearances in the body besides those which are usually found in cases of poisoning by? If so, describe them.
9. Do you know of any disease, in which the postmortem appearances resemble those which you observed in the present case?
10. In what respects do the postmortem appearances of that disease differ from those which you observed in the present case?
11. What are the symptoms of that disease in the living?
12. Are there any postmortem appearances usual in case of poisoning by but which you did not discover in this instance?
13. Is it possible that the appearances you mention have been the result of spontaneous changes in the stomach after death?
14. Was the state of the stomach and bowels compatible or incompatible with vomiting or purging?
15. What are the usual symptoms of poisoning by?
16. What is the usual interval between the time of taking the poison and the commencement of the symptoms?
17. In what time does generally prove fatal?
18. Did you send the contents of the stomach and bowel (or other materials) to the Forensic Science Laboratory (FSL)?
19. Were the contents of the stomach and bowel (or other materials) sealed in your presence immediately on removal from the body?
20. Describe the vessel in which they were sealed and what impression did the seal give?
21. Have you received a reply from the FSL? If so, is the report now produced that which you received?
22. (If a female adult) What was the state of uterus?

चिकित्सा सूत्राणि

ज्वरः

लङ्घनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रसः ।
पाचनान्यविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरे ॥

(च.चि. ३/१४२)

ज्वरादौ लङ्घनं शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम् ।
ज्वरान्ते रेचनं प्रोक्तमेतत्ज्वचिकित्सितम् ॥

(यो.र.ज्वर चिकित्सा.१)

धातुगत ज्वर

सेकप्रदेहौ रक्तस्थे तथा संशमनानि च ।
विरेचनं सोपवासं मांसमेदः स्थिते हितम् ॥
अस्थिमज्जगते देया निरुहाः सानुवासनाः ।

(च.चि. ३/३१६)



रक्तपित्तम्

अक्षीणबलमांसस्य रक्तपित्तं यदशनतः ।
तद्वोषदुष्टमुत्क्लिष्टं नादौ स्तम्भनमर्हति ॥

(च.चि. ४/२५)

लङ्घनं for रक्तपित्तं

प्रायेण हि समुत्क्लिष्टमामदोषाच्छरीरिणाम् ।
वृद्धिं प्रयाति पित्तासृक्तस्मात्तल्लङ्घ्यमादितः ॥
मार्गो दोषानुबन्धं च निदानं प्रसमीक्ष्य च ।
लङ्घनं रक्तपितादौ तर्पणं वा प्रयोजयेत् ॥

(च.चि. ४/२९,३०)

शोधनं for रक्तपित्तं

अक्षीणबलमांसस्य यस्य सन्तर्पणोत्थितम् ।
बहुदोषं बलवतो रक्तपित्तं शरीरिणः ॥

काले संशोधनार्हस्य तद्वरेनिरुपद्रवम् ।
विरेचनेनोर्ध्वभागमधोगं वमनेन च ॥

(च.चि. ४/५५,५६)

गुल्मम्

स्नेहपानं हितं गुल्मे विशेषेणोर्ध्वनाभिजे ।
पक्वाशयगते बस्तिरुभयं जठराश्रये ॥

(च.चि. ५/२४)

रक्तगुल्मं

रौधिरस्य तु गुल्मस्य गर्भकालव्यतिक्रमे ।
स्निग्धस्विन्नशरीरायै दद्यात् स्नेहविरेचनम् ॥

(च.चि. ५/१७२)

प्रमेहः

स्थूलः प्रमेही बलवानिहैकः कृशरत्थैकः परिदुर्बलश्च ।
संबूङ्हणं तत्र कृशस्य कार्यं संशोधनं दोषबलाधिकस्य ॥

(च.चि. ६/१५)

विशेष चिकित्सा for प्रमेह

संशोधनोल्लेखनलड्घनानि काले प्रयुक्तानि कफप्रमेहान् ।
जयन्तिपित्तप्रभवान् विरेकः संतर्पणः संशमनो विधिश्च ॥

(च.चि.६/२५)

कुष्ठः

वातोत्तरेषु सर्पिर्वमनं श्लेषोत्तरेषु कुष्ठेषु ।
पित्तोरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं चाग्रे ॥

(च.चि. ७/३९)

षष्ठे मासे सिरामोक्षं प्रतिमासं विरेचनम् ।
प्रतिपक्षं च वमनं कुष्ठे लेपं त्यहाच्चरेत् ॥

(भै.र.कुष्ठ.५४)

श्वित्रम्

श्वित्रे स्रंसनमग्रयं यं मलपूयरस इष्यते सगुडः ।
 तं पीत्वा सुस्निग्धो यथाबलं सूर्यपादसंतापम् ॥
 संसेवेत विरिक्तस्त्र्यहं पिपासुः पिबेत् पेयाम् ॥

(च.चि. ७/१६३)

राजयक्षम

पीनसे स्वेदमभ्यङ्गं धूममालेपनानि च ।
 परिषेकावगाहांश्च यावकं वाट्यमेव च ॥
 लवणाम्लकटूष्णांश्च रसान् स्नेहोपबृहितान् ।
 लावतित्तिरदक्षाणां वर्तकानां च कल्पयेत् ॥
 सयिष्पलीकं सयवं सकुलत्थं सनागरम् ।
 दाढिमामलकोपेतं स्निग्धमाजं रसं पिबेत् ॥
 तेन षड्डिवनिवर्तन्ते विकाराः पीनसादयः ।
 मूलकानां कुलत्थानां यूषैर्वा सूपकल्पितैः ॥

(च.चि. ८/६५ -६८)

शोधनं for राजयक्षमा

दोषाधिकानां वमनं शास्यते सविरेचनम् ।
 स्नेहस्वेदोपपन्नानां सस्नेहं यन्न कर्शनम् ॥
 शोषीमुञ्चति गात्राणि पुरीषस्रंसनादपि ।
 अबलापेक्षिणीं मात्रां किं पुनर्यो विरिच्यते ॥

(च.चि. ८/८७ / ८८)

उन्मादः

उन्मादे वातजे पूर्वे स्नेहपानं विशेषवित् ।
 कुर्याद् आवृतमार्गं तु सस्नेहं मृदुशोधनम् ॥
 कफपित्तोद्भवे अपि आदौ वमनं सविरेचनम् ।
 स्निग्धस्विन्नस्य कर्तव्यं शङ्खे संसर्जनक्रमः ॥
 निरुहं स्नेहबस्तिं च शिरसश्च विरेचनम् ।
 ततः कुर्याद् यथादोषं तेषां भूयस्त्वमाचरेत् ॥

(च.चि. ९/२५-२७)

अपस्मारः

तैरावृतानां हृत्स्रोतोमनसां संप्रबोधनम् ।
 तीक्षणैरादौ भिषक् कुर्यात् कर्मभिः वमनादिभिः ॥
 वातिकं बस्तिभूयिष्ठैः पैत्तं प्रायो विरेचनैः ।
 श्लेष्मिकं वमनप्रायैः अपस्मारमुपाचरेत् ॥

(च.चि. १०/१४, १५)

अतत्वाभिनिवेशः

स्नेहस्वेदोपपन्नं तं संशोध्यवमनदिभिः ।
 कृतसंसर्जनं मेध्यैरन्नपानैरुपाचरेत् ॥

(च.चि. १०/६१)

क्षतक्षीणः

उरो मत्वा क्षतं लाक्षां पयसा मधुसंयुताम् ।
 सद्य एव पिबेज्जीर्णे पयसादधात् सशर्करम् ॥

(च.चि. ११. १५)

श्वयथुः

अथामजं लङ्घनपाचनक्रमैविशोधनैः ऊर्ल्बणदोषमादितः ।
 शिरोगतं शीर्षविरेचनैः अधोविरेचनैः ऊर्ध्वहरैः तथा ऊर्ध्वजम् ॥
 उपाचरेत् स्नेहभवं विरुक्षणैः प्रकल्पयेत् स्नेहविधिं च रुक्षजे ।
 विबद्धविद्धके अनिलजे निरुहणं घृतं तु पित्तानिलजे सतिक्तकम् ॥
 पयश्च मूर्च्छारतिदाहतर्षिते विशोधनीये तु समूत्रमिष्यते ।
 कफोत्थितं क्षारकटूष्णसंयुतैः समूत्रतक्रासवयुक्तिभिर्जयेत् ॥

(च.चि. १२. १७, १८)

उदरम्

सर्वमेवोदरं प्रायो दोषसङ्घातजं मतम् ।
 तस्मात्रिदोषशमनीं क्रियां सर्वत्र कारयेत् ॥

(च.चि. १३/१५)

जलोदरम्

अपां दोषहराण्यादौ प्रदद्यादुदकोदरे ।
 मूत्रयुक्तानि तीक्ष्णानि विविधक्षारवन्ति च ॥
 दीपनीयैः कफघ्नैश्च तमाहारैरुपाचरेत् ।
 द्रवेभ्यश्चोदकादिभ्यो नियच्छेदनुपूर्वशः ॥

(च.चि.१३/१३-१४)

अर्शस्

स्निग्धशीतं हितं वाते रुक्षशीतं कफानुगे ।
 चिकित्सितमिदं तस्मात् संप्रधार्य प्रयोजयेत् ॥
 पित्तश्लेष्माधिकं मत्वा शोधनेनोपपादयेत् ।
 स्रवणं चाप्युपेक्षेत लड्घनैर्वा समाचरेत् ॥

(च.चि.१४/१७५-१७६)

ग्रहणी

आमलिङ्घान्वितं दृष्ट्वा सुखोष्णोनाम्बुनोद्धरेत् ।
 फलानां वा कषायेण पिप्पलीसर्षपैस्तथा ॥
 लीं पक्वाशयस्थं वा प्यायामं स्राव्यं सदींपनैः ।
 शरीरानुगते सामे रसे लड्घनपाचनम् ॥

(च.चि.१५/७४-७५)

पाण्डुः

तत्र पाण्डवामयी स्निग्धस्तीक्ष्णैरुर्ध्वानुलोभिकैः ।
 संशोध्यो मृदुभिस्तिकैः कामली तु विरेचनैः ॥
 ताभ्यां संशुद्धकोष्ठाभ्यां पथ्यान्यन्नानि दापयेत् ।
 शालीन् सयवगोधूमान् पुराणान् यूषसंहितान् ॥
 मुद्गाढकीमसूरैश्च जाङ्गलैश्च रसैर्हितैः ।
 यथादोष विशिष्टं च तयोर्भेषज्यमाचरेत् ॥
 पञ्चगव्यं महातिक्तकं कलयाणकमथापि वा ।
 स्नेहनार्थं घृतं दद्यात् कामलापाण्डुरोगिणे ॥

(च.चि.१६/४०-४३)

वातिके स्नेहभूयिष्ठं, पैतिके तिक्तशीतलम् ।

श्लेष्मिके कटुतिक्तोष्णं, विमिश्रं सान्निपातिके ॥ (च. चि.१६/११६)

हिकका श्वासौ

हिकका श्वासादितं स्निग्धैरादौ स्वेदैरुपाचरेत् ।
 आक्तं लवणतैलेन नाडिप्रस्तरसंकरैः ॥
 तैरस्य ग्रथितः श्लेष्मा स्रोतः स्वभिविलीयते ।
 खानि मार्दवमायान्ति ततो वातानुलोमता ॥
 यथा अद्रिकृञ्जेषु अर्काशुतप्तं विष्णन्दते हिमम् ।
 श्लेष्मा तप्तः स्थिरो देहे स्वेदैर्विष्णन्दते तथा ॥
 स्विन्नं ज्ञात्वा ततस्तूर्णं भोजयेत् स्निग्धमोदनम् ।
 मत्स्यानां शूकराणां वा रसै दधि उत्तरेण वा ॥
 ततः श्लेष्मणि संवृद्धे वमनं पाययेत् तम् ।
 पिप्पली सैन्धव क्षौद्रयुक्त वाताविरोधि यत् ॥

कासिने छर्दनं दद्यात् स्वरभड्गे च बुद्धिमान् ।
 वातश्लेष्महरैर्युक्तं तमके तु विरेचनम् ॥

(च. चि. १७/७७-७५)

कासः

वातज कासः

रुक्षस्यानिलजं कासमादौ स्नेहैरुपाचरेत् ।
 सर्पिभिः वस्तिभिः पेया यूष रसादिभिः ॥
 वातघ्नसिध्दैः स्नेहाद्यैः धूमैः लेहैश्च युक्तिः ॥

(च. चि. १८/३२)

पित्तज कासः

पैतिके सकफे कासे वमनं सर्पिषा हितम् ।

(च. चि. १८/८३)

कफज कासः

बलिनं वमनैरादौ शोधितं कफकासिनम् ।

(च. चि. १८/१०८)

क्षतज कासः

कासमात्ययिकं मत्वा क्षतजं त्वरया जयेत् ।

मधुरैः जीवनीयैश्च बलमांसविवर्धनैः ॥

(च. चि. १८/१३४)

क्षयज कासः

संपूर्णरूपं क्षयजं दुर्बलस्य विवर्णयेत् ।

नवोत्थितं तं बलवतः प्रत्याख्यायाचरेत् क्रियाम् ॥

तस्मैः बृंहणमेवादौ कुर्याद् अग्नेश्च दीपनम् ।

बहुदोषाय सस्नेहं मृदु दद्यात् विरेचनम् ॥

(च. चि. १८/१४९-१५०)

अतिसारः

दोषाः सन्निचिता यस्य विदग्ध आहार मूर्च्छिताः ।

अतीसाराय कल्पन्ते भूयस्तान् संप्रवर्तयेत् ॥

न तु संग्रहणं देयं पूर्वं आमातिसारिणे ।

विबध्यमानाः प्राग्दोषा जनयन्ति आमयान् बहुन् ॥

दण्डकालसक आध्मान ग्रहणी अर्शोगदांस्तथा ।

शोथ पाण्डवामय प्लीह कुष्ठ गुल्म उदरज्वरान् ।

तस्मात् उपेक्षेत् उत्क्लिष्टान् वर्तमानान् स्वयं मलान् ॥

कृच्छ्रां वा वहतां दद्यादभयां संप्रवर्तिनीम् ।

तया प्रवाहिते दोषे प्रशास्यति उदरामयः ।

जायते देहलघुता जठराग्निश्च वर्धते ॥

प्रमथ्यां मध्यदोषाणां दद्याद्विपनपाचनीम् ।

लड्घनं चाल्पदोषाणां प्रशस्तं अतिसारिणाम् ॥

(च. चि. १९/१४-१९)

छर्दिः

आमाशयोत्वलेशभवाहि सर्वाश्छर्द्योमता लड्घनमेव तस्मात् ।

पाककारयेन् मारुतजां विमुच्य संशोधनं वा कफपित्तहारी ॥

(च. चि. २०/२०)

अम्लपित्तम्

पूर्वं तु वमनं कार्यं पश्चान्मृदुं विरेचनम् ।
कृतवान्तिविरेकस्य सुस्निग्धस्य अनुवासनम् ॥
स्थापनं चिरोत्थे अस्मिन्देयं दोषाद्यपेक्षया ॥

(यो.र.अम्लपित्त चिकित्सा.१६)

विसर्पः

कफस्थानगतः

लड्घन उल्लेखने शस्ते तिक्तकानां च सेवनम् ।
कफस्थानगते सामे रक्षशीतैः प्रलेपयेत् ॥

(च. चि.२१/४४)

पित्तस्थानगतः

पित्तस्थानगते अपि एतत् सामे कुर्यात् चिकित्सितम् ।
शोणितस्य अवसेकं च विरेकं च विशेषतः ॥

(च. चि.२१/४५)

मारुतस्थानगतः

मारुताशयसंभूते अपि आदितः स्याद् विरुक्षणम् ।
रक्तपित्तान्वयऽप्यादौ स्नेहनं न हितं मम् ॥

(च. चि.२१/४६)

वातोल्बणे तिक्तघृतं पैतिके च प्रशस्यते ।
लघुदोषे, महादोषे पैतिके स्याद् विरेचनम् ॥

(च. चि.२१/४७)

शीतपित्त

शीतपित्ते तु वमनं पटोलारिष्टवासकैः ।
त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्च प्रशस्यते ॥
अभ्यङ्गः कटुतैलेन सेकश्चोष्णेन वारिणा ।
त्रिफलां क्षौद्रसंयुक्तां खादेच्च नवकार्षिकम् ॥

(भा.प्र.५५/७-८)

उदावर्तम्

तं तैलं शीतज्वरनाशनात्कं स्वेदैः यथोक्तैः प्रविलीनदोषम् ।
उपाचरेत् वर्ति निरुहबस्ति स्नेहै विरेक अनुलोमन अन्नैः ॥

(च. चि. २६/११)

ऊरुस्तम्भः

तस्य संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा ।
युक्ति अपेक्षी भिषक् कुर्यात् अधिकत्वात् कफामयोः ॥

(च. चि. २७/२५)

श्लेष्मणः क्षपणं यत्स्याद् न च मारुतमावहेत् ।
तत् सर्वं सर्वदा कार्यं ऊरुस्तम्भस्य भेषजम् ॥
शरीरं बलमग्निं च कार्येषा रक्षता क्रिया ॥

(च. चि. २७/६१)

वातव्याधिः

केवलं निरुपस्तम्भमादौ स्नेहैरुपाचरेत् ।
वायुं सर्पिर्वसातैलमज्जपानैर्नरं ततः ॥
स्नेहक्लान्तं समाश्वास्य पेयाभिः स्नेहयेत् पुनः ।
यूषैर्ग्राम्याम्बुजानूपरसैर्वा स्नेहसंयुतैः ॥
पायसैः कृशरैः साम्ललवणैरनुवासनैः ।
नावनैस्तर्पणैश्चान्नैः

(च. चि. २८/७५-७७)

पक्षाघात

स्वेदनं स्नेहसंयुक्तं पक्षाघाते विरेचनम् ।

(च. चि. २८/१००)

गृध्रसी

अन्तराकण्डरागुल्फं सिरा बस्त्यग्निकर्म च ।
गृध्रसीषु प्रयुज्जीत ।

(च. चि. २८/१०१)

अर्दित

अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं तर्पणमेव च ।
नाडीस्वेदोपनाहश्चापि आनूपपिण्ठितैर्हिताः ॥

(च.चि.२८/९९)

वातरक्तम्

विरेच्यः स्नेहयित्वा आदौ स्नेहयुक्तैर्विरेचतैः ।
रुक्षैर्वा मृदुभिः शस्तमसृक् बस्तिकर्म च ॥
सेकं अभ्यङ्ग प्रदेह अन्नस्नेहा प्रायो अविदाहिनः ।
वातरक्ते प्रशस्यन्ते.....

(च. चि.२९)

उत्थान वातरक्तम्

बाह्य आलेपनं अभ्यङ्ग परिषेक उपनाहैनः ।

(च. चि.२९)

गम्भीर वातरक्तम्

विरेक आस्थापनं स्नेहपानैः गम्भीरमाचरेत् ।

(च. चि.२९)

मूत्रकृच्छ्रम्

वातजम्

अभ्यङ्गनस्नेहनिरुहबस्तिस्नेह उपनाहोत्तरबस्तिसेकान् ।

स्थिरादिभिः वातहरैश्च सिद्धान्दधात् रसांश्च अनिलमूत्रकृच्छ्रे ॥

(च.चि.२६ ।४५)

पित्तजम्

सेकावगाहाः शिशिराः प्रदेहा ग्रैष्मो विधिर्बस्तिपयोविरेकाः ।
द्राक्षाविदारीक्षुरसैर्घृतैश्च कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवेषु कार्याः ॥

(च.चि.२६ ।४९)

कफजम्

क्षारोष्णतीक्ष्णौषधमन्नपानानां स्वेदो यवान्नं वमनं निरुहाः ।
तत्रं सतित्कौषधसिद्धं तैलमभ्यङ्गपानं कफमूत्रकृच्छे ॥

(च.चि.२६/५४)

सन्त्रिपातजम्

सर्वं त्रिदोषप्रभवे तु वायोः स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम् ।
त्रिभ्यो धिके प्राग्वमनं कफे स्यात् पित्ते विरेकः पवने तु बस्तिः ॥

(च.चि.२६/५८)

हृद्रोगःवातजः

तैलं ससौवीरकमस्तुतक्रं वाते प्रपेयं लवणं सुखोष्णाम् ।
मूत्राम्बुसिद्धं लवणैश्च तैलं आनाहगुल्मार्तिहृदामयघ्नम् ॥

(च.चि.२६/७१)

पित्तजः

शीताः प्रदेहाः परिषेचनानि तथा विरेको हृदि पित्तदुष्टे ।
द्राक्षासिताक्षौद्रपरुषकैःस्यात् शुद्धे तु पित्तापहं अन्नपानम् ॥

(च.चि.२६/९०)

कफजः

स्विन्नस्य वान्तस्य विलङ्घितस्य क्रिया कफध्नी कफमर्मरोगे ।
कौलत्थधान्यैश्च रसैर्यवान्नं पानानि तीक्ष्णानि च शङ्कराणि ॥

(च.चि.२६/९६)

सन्त्रिपातजः

त्रिदोषजे लङ्घनमादितः स्यादन्नं च सर्वेषु हितं विधेयम् ।
हीनातिमध्यत्वमवेक्ष्य चैव कार्यं त्रयाणामपि कर्म शस्तम् ॥

(च.चि.२६/१००)

योनिव्यापत्

स्निग्धस्विन्नां तथा योर्नि दुःस्थितां स्थापयेत्पुनः।
पाणिना नमयेत्जिज्ञामां संवृतां वर्धयेत् पुनः॥
प्रवेशयेत् निसृतां च विवृतां परिवर्तयेत्॥

(च.चि.३०/४३-४४)

आध्मानः

आध्मानेष्वपतर्पणं पाणिताप फलवर्तिक्रिया।
पाचनीय दीपनीय बस्तिभिरुपाचरेत्॥

(सु.चि)

आध्माने लंघनं पूर्वं दीपनं पाचनं ततः।
फलवर्ति क्रियां कुर्यात् बस्तिकर्म च शोधनम्॥

(भा.प्र)

प्रत्याध्मानः

प्रत्याध्माने छर्दनापतर्पणं दीपनानि कुर्यात्॥

(सु.चि)

उपदंशः

स्निग्धस्विन्नस्य तेष्वादौ ध्वजमध्ये सिराव्यथः।
जलौकापातनं वा स्यादूर्धव्यथः शोधनं तथा॥
सद्योऽपहृतदोषस्य रुक्षोफावुपशाम्यतः।
पाको रक्ष्यः प्रयलेन शिस्न क्षयकरश्च सः॥

(यो.रता.१०-११)

श्लीपदम्

लंघनलेपनस्वेदरेचनैः रक्तसेचनैः।
प्रायः लेष्महरैरुष्णैः श्लीपदं समुपाचरेत्॥

(यो.रता.९ श्लोकः)

शूलः

वमनं लंघनं स्वेदः पाचनं फलवर्तयः।
क्षाराः चूर्णं च गुटिकाः शस्यन्ते शूलनाशना॥

(सु.उ.४२)

गुल्मावस्था क्रिया कार्याः यथावत् सर्वशूलिनाम्॥

(यो.रत्ना)

परिणाम शूलः

लंघनं प्रथमं कुर्यात् वमनं च विरेचनम्।
बस्तिकर्म परं चात्र पक्तिशूलोप शान्तये॥

(यो.रत्ना.१६ श्लोकः)

वातजं स्नेहयोगेन पित्तजं रेचनादिना।
कफजं वमनाद्यैश्च पक्तिशूलमुपाचरेत्॥
द्वन्द्वजं स्नेहयोगेन तत्रियोगेन सर्वजम्।

(यो.रत्ना.१७ श्लोकः)

अन्नद्रव शूलः

पित्तान्तं वमनं कृत्वा कफान्तं च विरेचनम्।
आमपक्वाशये शुद्धे गच्छेत् अन्नद्रवः शमम्॥

(भै.रत्नावलि)

मृद्दक्षणजन्य पाण्डुः

मृदं निर्वापयेत् कायात्तीक्ष्णैः संशोधनैः पुरः।
बलादानानि सर्पीषि शुद्धकोष्ठे तु योजयेत्॥

(अ.हृ.चि.१६/३५)

कामला:-

कामलायां तु पित्तधनं पाण्डुरोगाविरोधि यत्।

(अ.हृ.चि. १६/४०)

रेचनं कामलार्तस्य स्निग्धस्यादो प्रयोजयेत्।

ततः प्रशमनी कार्या क्रिया वैद्येन जानता॥

(भै.रलावलि)

तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्चः सृजति कामली।

श्लेष्मणारुद्धमार्गं तं पित्तं कफहरैर्जयेत्॥

(च.चि. १६/१२४)

मूत्रवेगनिरोधज उदावर्त चिकित्साः-

स्वेदावगाहाभ्यशन् सर्पीषांश्चावपीडकाः।

मूत्रे प्रतिहते कुर्यात् त्रिविधं बस्तिकर्म च॥

:

(च.चि.)

अवपीडकस्नेहपानम्:-

अवपीडको बहुमात्रप्रयोगः मात्राधिकत्वेन हि।

भेषजं दोषान् पीडयतीति कृत्वा॥

TIERRA

(च.चि.)

प्लीहोदरम्:-

स्नेहस्वेदं विरेकं च निरूहमनुवासनम्।

समीक्ष्य कारयेत् बाहौ वामे वा व्यथयेत् सिराम्॥

(च.चि. १३/७७)

यकृतोदरम्:-

यकृति प्लीहवत् सर्वं तुल्यत्वात् भेषजं श्रुतम्॥

(च.चि. १३/८८)

विषप्रयोगः उदरम्:-

अक्रियायां द्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयं भवेत्।
एवमाख्याय तस्येतमनु~ तः सुहृत्याणैः॥
पानभोजनसंयुक्तं विषमस्मै प्रयोजयेत्॥

(च.चि. १३/१७७)

अजीर्णम्:-

लंघनं कार्यमामे तु विष्टब्धे स्वेदनं भृशम्।
विदग्धे वमनं यद्वा यथावस्थं हितं भवेत्॥

(अ.सं.सू. ११/३४)

तत्रामे वमनं कार्यं विदग्धे लंघनं हितम्।
विष्टब्धे स्वेदनं शस्तम्।

(यो.रत्ना. ५६ श्लोकः) :

कृमिः:-

तत्र सर्वकृमीणां अपकर्षणमेव कार्यः ततः प्रकृतिविधातः
अनन्तरं निदानोक्तानां भावानां अनुप्सेवनमिति ॥

TIERRA

(च. नि)

मूत्राधातः:-

स्नेहस्वेदोपपन्नानां हितम् तेषु विरेचनम्।
ततः संशुद्धदेहानां हिताश्रोत्तरबस्तयः॥

(सु.उ. ५८/५०)

प्रवाहिकाः:-

तासामतीसारवदादिशेच्च लिंगम् ऋमं चामविपक्वतांच।

(सु.उ. ४०/१४०)

अश्मरीः:-

क्रिया हिता साऽ श्मरीशक्राभ्यां कृच्छ्रे यथैवेहं कफानिलाभ्याम्।
कार्याऽश्मरीभेदनपातनाय विशेषयुक्तं श्रुणु कर्म सिद्धम्॥

(च.चि. २६/५९)

अष्मरी दारुणो व्याधिरन्तकप्रतिमो मतः।
तरुणो भेषजैः साध्य प्रवृद्धश्छेदमहति ॥
तस्य पूर्वेषु रूपेषु स्नाहादिक्रम इष्यते ॥

(अ.हृ. चि ११)

आमवातः:-

नीते निरामतां सामे स्वेदलड्घनं पाचनैः।
रुक्षैष्व आलेप सेकाध्यैः कुर्यात् केवल वातनुत् ॥

(अ.हृ. चि २२)

शीतपित्त, उदर्द, कोठः-

अभ्यङ्गः कटुतैलेन स्वदष्योष्णेन वारिणा।
तथा शूषु वमनं कार्यं पठोलारिष्टवासकैः ॥

(यो. र)

TIERRA